रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05 REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

सत्यमेव जयते

# भारत का राजपत्र
# The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

## प्राधिकार से प्रकाशित
## PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 48] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 26—दिसम्बर 2, 2016 (अग्रहायण 5, 1938)

No. 48] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 26—DECEMBER 2, 2016 (AGRAHAYANA 5, 1938)

**इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके**

**(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)**

## विषय-सूची


| | पृष्ठ सं. |
|---|---|
| भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं. | 855 |
| भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं. | 1043 |
| भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं. | 7 |
| भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं. | 2497 |
| भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम. | * |
| भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ. | * |
| भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट. | * |
| भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं). | * |
| भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं. | * |
| भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं). | * |
| भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश. | * |
| भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं. | 1709 |
| भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस | * |
| भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं. | * |
| भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं. | 559 |
| भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस. | 2207 |
| भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक. | * |


*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

## CONTENTS


| | Page No. |
|---|---|
| PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court | 855 |
| PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court | 1043 |
| PART I—SECTION 3—Notifications relating to resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence | 7 |
| PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence | 2497 |
| PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations | * |
| PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations | * |
| PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) | * |
| PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence | * |
| PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India | 1709 |
| PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs | * |
| PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners | * |
| PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies | 559 |
| PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies | 2207 |
| PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi | * |


*Folios not received.

# भाग I — खण्ड 1

## [PART I—SECTION 1]

## [(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

## [Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 2016

सं. 111—प्रेज/2016——राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस, 2016 के अवसर पर निम्नलिखित अफसर को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का तटरक्षक पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

उपमहानिरीक्षक गुरुपदेश सिंह, तटरक्षक पदक (0083—एम)

2. विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का तटरक्षक पदक प्रदान करने संबंधी नियम 4(iv) के तहत राष्ट्रपति का तटरक्षक पदक (विशिष्ट सेवा) प्रदान किया जाता है।

अ. राय
विशेष कार्यकारी अधिकारी

———————————

सं. 112—प्रेज/2016——राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस, 2016 के अवसर पर कमांडेंट राधाकृष्ण राजेश नांबिराज (0568—पी) को बहादुरी के लिए तटरक्षक पदक (शौर्य) सहर्ष प्रदान करते हैं।

प्रशस्ति उल्लेख

कमांडेंट राधाकृष्ण राजेश नांबिराज (0568—पी) ने 03 जनवरी 2000 को भारतीय तटरक्षक में सेवा आरंभ की । अफसर, चेतक हेलिकॉप्टर का एक उत्कृष्ट पायलट है और 480 घंटों की अनुदेशात्मक उड़ान सहित 3300 घंटों की उड़ान के साथ एक योग्यताप्राप्त उड़ान अनुदेशक है।

2. 12 जून, 2016 को, पोर्ट ब्लेयर चेतक फ्लाईट को, पोर्ट ब्लेयर के 40 समुद्री मील दक्षिण की स्थिति में जलाधीन हो रहे पोत एमएसवी सफीना अल गीलानी से 07 कर्मियों का बचाव करने के लिए चेतक हेलिकॉप्टर भेजने का कार्यभार सौंपा गया। समुद्र में सशक्त झकझोर हवाओं, लगभग 700 फुट की ऊचांई तक बादलों के रहने तथा खराब दृश्यता के साथ, हेलिकॉप्टर उड़ान के लिए मौसम की स्थिति हाशिये पर भी, कमांडेंट नांबिराज सूचना मिलने के 15 मिनट के अंतर्गत खोज एवं बचाव (एस ए आर) के विन्यास में 1245 बजे विमानवाहित हो गये।

3. खराब दृश्यता में लगभग 25 मिनट की उड़ान भरने के उपरांत, अफसर को पोर्ट ब्लेयर के 39 समुद्री मील दक्षिण की स्थिति में डूब रहा पोत दिखाई दिया। पोत 60: तक जलमग्न हो चुका था। पोत के पार्श्व में 07 कार्मिकों को ढूंढ लिया गया। हवाओं का वेग इतना शक्तिशाली था कि हेलिकॉप्टर मुश्किल से मंडरा रहा था। अफसर ने तेजी से 03 कार्मिकों को हेलिकॉप्टर में चढ़ाया तथा उनको पास में मौजूद तटरक्षक पोत पर स्थानांतरित कर दिया। समुद्र में भारी उठाव और 30 समुद्री मील से अधिक गति की हवा में पोत के ऊपर सटीक स्थिति बनाये रखना, जिसमें एक मार्शलर के बिना उच्च दर्जे की परिशुद्वता अपेक्षित है, जो पायलट के उत्साह और व्यावसायिक कौशल की पुष्टि करता है। तत्पश्चात, अफसर शेष कर्मियों के बचाव के लिए डूब रहे पोत की ओर बढ़ा। नजदीकी तटीय स्थान पर 02 उत्तरजीवियों को स्थानांतरित करने के उपरांत, त्वरित बदलाव के लिए बेस की ओर रवाना हुआ। तत्पश्चात, विमान पुनः वायुवाहित हो गया तथा उसके द्वारा शेष 02 उत्तरजीवियों का बचाव किया गया। अफसर ने अपने समर्पण और अनुकरणीय व्यावसायिक कौशल से समुद्र में 07 बहुमूल्य जीवन का बचाव किया।

4. विपरीत और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अफसर द्वारा प्रदर्शित व्यावसायिक सक्षमता, प्रतिबद्धता और उत्साह अत्यंत सराहनीय है तथा एक समुद्री सेवा की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप हैं।

5. कमांडेंट राधाकृष्ण राजेश नांबिराज (0568—पी) ने स्वयं को बखूबी सिद्ध किया है, फलस्वरूप इन्हें तटरक्षक पदक (शौर्य) प्रदान किया जाता है।

6. तटरक्षक प्रदान करने संबंधी नियम 11(i) के तहत तटरक्षक (शौर्य) प्रदान किया जाता है तथा परिणामस्वरूप नियम 13 के अधीन तटरक्षक पदक (शौर्य) प्राप्त करने वाले तटरक्षक कार्मिकों को विशेष भत्ता स्वीकार्य है।

अ. राय
विशेष कार्यकारी अधिकारी

सं. 113—प्रेज/2016——राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस, 2016 के अवसर पर कुलदीप, प्रधान यांत्रिक (पॉवर), 08156—क्यू को बहादुरी के लिए तटरक्षक पदक (शौर्य) सहर्ष प्रदान करते हैं।

प्रशस्ति उल्लेख

कुलदीप, प्रधान यांत्रिक (पॉवर), 08156—क्यू ने 22 जुलाई, 2009 को भारतीय तटरक्षक में सेवा आरंभ की। अधीनस्थ अधिकारी ने 11 जनवरी, 2016 को होवरक्रॉफ्ट में कार्यग्रहण करने के उपरांत बहुत से चुनौतीपूर्ण, नवाचारी कौशल और अध्यवसाय के साथ कई कार्य निष्पादित किए।

2. 15 फरवरी, 2016 को जब होवरक्रॉफ्ट कोंटई (पश्चिम बंगाल) के पास अपनी नियमित गश्त पर था, क्रॉफ्ट के पास एक डिंगी खराब मौसम और पतवार की विफलता के कारण उलट गयी थी। डिंगी में पानी घुसने के कारण, चार मछुवारों ने अपना बचाव करने के लिए हुगली नदी में कूद गये थे। तीन मछुवारे, क्रॉफ्ट के कर्मियों द्वारा फेंकी गयी जीवन रक्षी पेटी को पकड़ सके। एक मछुवारा जीवन—रक्षी पेटी को पकड़ने में कामयाब नहीं हो सका। नदी की तेज धारा इस मछुवारे को गहरे समुद्र की ओर ले जा रही थी। यह महसूस करते हुए कि बीत रहा हर क्षण उत्तरजीवी के जीवन को खतरे में डाल रहा है, कुलदीप ने तुंरत ही हुगली नदी के अस्थिर जल में छलांग लगा दी। हालांकि, 5 से 6 समुद्री मील की गति का शक्तिशाली प्रवाह होने के कारण, डूब रहे मछुवारे, जोकि बहुत तेज गति से बह रहा था, के पास पहुंचना अत्यंत मुश्किल था। 5 से 6 समुद्री मील की गति की जलधारा तथा लगभग 0.7 मीटर से ऊंची लहरों की इन विद्ममान परिस्थितियों में, कुलदीप ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, कीमती जीवन का बचाव करने के एकमात्र उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, अपनी व्यावसायिक कुशाग्रता और अंतर्निहित जोश के साथ लगातार पीछा किया और डूब रहे मछुवारे की ओर तैरने में समर्थता हासिल की। इस बीच मौका मिलते ही, कुलदीप ने डूब रहे मछुवारे की ओर जीवन—रक्षी पेटी, फेंकी जिसे वह अपने साथ लिए हुए था, फैंकी मछुवारे, जिसने पहले से ही काफी पानी निगल लिया था, ने जीवन—रक्षी पेटी को पकड़ लिया । कुलदीप, जो खुद भी अब तक काफी थक चुका था, ने हिम्मत नहीं छोड़ी। तत्पश्चात, उसने मछुवारे की क्रॉफ्ट तक सुरक्षित पहुंचने में सहायता की। उसके बाद क्रॉफ्ट के कर्मियों ने मछुवारे को क्रॉफ्ट पर चढ़ा लिया, फलस्वरूप प्रतिकूल समुद्री परिस्थितियों में एक बहुमूल्य जीवन को बचाया जा सका।

3. कुलदीप ने अपने परिशुद्ध उत्साह, सहनशक्ति और अध्यवसाय के द्वारा प्रकृति के घटकों के विरूद्ध लड़ते हुए सफलता प्राप्त की, जिसके परिणामस्वरूप समुद्र में एक बहुमूल्य जीवन का बचाव किया गया। अनुकरणीय उत्साह के लिए कुलदीप के प्रयास, व्यावसायिक कुशाग्रता और डूब रहे मछुवारे के जीवन के बचाव में प्रदर्शित कौशल, तटरक्षक की उच्च परंपराओं के अनुरूप है।

4. कुलदीप, प्रधान यांत्रिक (पावर), 08156—क्यू ने स्वयं को बखूबी सिद्ध किया है, फलस्वरूप इन्हें तटरक्षक पदक (शौर्य) प्रदान किया जाता है।

5. तटरक्षक पदक प्रदान करने संबंधी नियम 11(i) के तहत तटरक्षक (शौर्य) प्रदान किया जाता है तथा परिणामस्वरूप नियम 13 के अधीन तटरक्षक पदक (शौर्य) प्राप्त करने वाले तटरक्षक कार्मिकों को विशेष भत्ता स्वीकार्य है।

अ. राय
विशेष कार्यकारी अधिकारी

———————————

सं. 114—प्रेज/2016——राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस, 2016 के अवसर पर निम्नलिखित अफसरों को सराहनीय सेवा के लिए तटरक्षक पदक सहर्ष प्रदान करते हैं—

(i) उपमहानिरीक्षक मोहम्मद अबु तलहा (0068—डी)

(ii) उपमहानिरीक्षक मोहम्मद अतिक वारसी (0206—क्यू)

(iii) उपमहानिरीक्षक संजीव दीवान (0152—एस)

2. सराहनीय सेवा के लिए तटरक्षक पदक प्रदान करने संबंधी नियम 11(ii) के तहत तटरक्षक पदक (सराहनीय सेवा) प्रदान किया जाता है।

अ. राय
विशेष कार्यकारी अधिकारी

———————————

दिनांक 4 नवम्बर 2016

सं. 115—प्रेज/2016——राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. डॉ. प्रदीप सैकिया,
सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी

02. दिनेश बर्मन,
नायक

03. पवन दोहुतिया,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

वीरतापूर्ण कार्रवाई से पूर्व, दिनांक 19.05.2014 को पूर्वाह्न लगभग 2.30 बजे श्री माणिक दोहुतिया ऊर्फ मेघन, पुत्र नोगेन दोहुतिया, नं.2 हॉलोंग नौगांव, (उबन चुबरी), पुलिस थाना बोर्दुम्सा, जिला—तिनसुकिया, असम नामक आत्मसमर्पण कर चुके उल्फा उग्रवादी ने अपने साथियों के साथ पेंगेरी चरियाली में "बीहू" कार्यक्रम में ड्यूटी पर तैनात श्री कुलेश्वर सोनोवाल नामक द्वितीय ए पी बटालियन के हेड कांस्टेबल से एक सर्विस एके—47 राइफल छीन ली। इस संबंध में पुलिस थाना पेंगेरी में आयुध अधिनियम की धारा 25 (i) (क)/27 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 392/307/34 के तहत मामला सं. 19/2014 दर्ज किया गया। तत्काल पेंगेरी पुलिस थाने के अधीन संवेदनशील और छिपने के संभावित ठिकानों के आस—पास तलाशी अभियान चलाए गए। इसी बीच, दिनांक 11.06.2014 को अपराह्न लगभग 8.30 बजे उक्त अभियुक्त माणिक दोहुतिया उर्फ मेघन ने अपने 2 (दो) अन्य साथियों के साथ श्री जय प्रकाश अग्रवाल नामक व्यक्ति की किराने की दुकान के अंदर प्रवेश करके दुमदुमा पुलिस थाने के अंतर्गत शिव मंदिर के निकट रूपई सिडिंग में लूटपाट की तथा बंदूक की नोंक पर नकद—पेटी से 75,000/—रु. (पचहत्तर हजार रुपए) लूट लिए। क्लोज सर्किट कैमरे की फुटेज से पुष्टि हुई कि बदमाश अभियुक्त माणिक दोहुतिया उर्फ नेधान और श्री प्रकाश मोरन पुत्र तिलक मोरन, निवासी रंगाजन (बोरजन) गांव, पुलिस थाना दुमदुमा, जिला— तिनसुकिया हैं। इसलिए दुमदुमा पुलिस थाने में आत्मसमर्पण कर चुके अभियुक्त उल्फा कार्यकर्ता माणिक दोहुतिया ऊर्फ नेधान और अन्य सहयोगियों के खिलाफ आयुध अधिनियम की धारा 25(i) (क) के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 392 के तहत मामला सं. 338/2014 दर्ज किया गया।

आयुध अधिनियम की धारा 25 (i) (क)/27 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 392/307/34 के तहत दर्ज पेंगेरी पुलिस थाने के मामला सं. 19/2014 और आयुध अधिनियम की धारा 25 (i) (क) के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 392 के तहत दर्ज दुमदुमा पुलिस थाने के मामला सं. 338/2014 की जांच के दौरान, सेना, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, कोबरा बटालियन और असम पुलिस के कार्मिकों द्वारा संयुक्त रूप से अभियुक्त माणिक उर्फ नेधान को पकड़ने तथा सर्विस एके—47 राइफल बरामद करने के अनेक प्रयास किए गए। अंततरू दिनांक 15 जून,2014 को पूर्वाह्न लगभग 10 बजे अभियुक्त माणिक दोहुतिया उर्फ मेघन और उसके साथियों के बोर्दुम्सा पुलिस थाना, जिला—चांगलांग (अरुणाचल प्रदेश) के अधीन दिरक पाथर गांव में होने के बारे में गुप्त सूचना प्राप्त हुई। यह सूचना तत्काल ओध्सी बोर्दुम्सा पुलिस थाना, जिला—चांगलांग (अरुणाचल प्रदेश) को दी गई और तदनुसार, सूचना के आधार पर तिनसुकिया जिले के ओध्सी बोर्दुम्सा पुलिस थाना अर्थात उप निरीक्षक जय शंकर वारी, ओध्सी पेंगेरी पुलिस थाना अर्थात् उप निरीक्षक संजीब सैकिया और पुलिस थाना स्टाफ के साथ डॉ. प्रदीप सैकिया, ए पी एस, एस डी पी ओ के नेतृत्व में एक अभियान आरंभ किया गया और यह दल दिरकपाथर क्षेत्र की तरफ बढ़ चला। छिपने के संभावित ठिकाने के पास पहुंचने पर, उत्तर की ओर से डॉ. प्रदीप सैकिया, ए पी एस, एस डी पी ओ, मार्गघेरिटा और तिनसुकिया जिले के ओध्सी पेंगेरी पुलिस थाना तथा पूर्व की ओर से उप निरीक्षक (पी) अनुपम गोवाला के साथ तिनसुकिया जिले के ओ/सी बोदुम्सा पुलिस थाना के नेतृत्व में अभियान दल को दो दलों में विभाजित किया गया क्योंकि वे बदमाश दिकर पाथर गांव के कोने में अलग—थलग पड़े एक छप्परदार मकान में शरण लिए हुए पाए गए थे। छिपने की जगह के निकट पहुंचने पर, अभियुक्त माणिक दोहुतिया उर्फ मेघन ने एक एके—47 असॉल्ट राइफल तथा अपने सहयोगियों प्रकाश मोहन और अन्य के साथ वहां से बचकर भागने का प्रयास किया, किन्तु अभियान दलों ने उनका पीछा किया। पीछा करने के दौरान माणिक दोहुतिया उर्फ मेघन ने दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की और इसके फलस्वरूप अभियान दल ने आस—पास की आबादी की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इसका जवाब दिया। दोनों ओर से हुई गोलीबारी में माणिक दोहुतिया को गोली लगी और वह कुछ दूरी पर धान के खेत में जा गिरा। कुछ समय पश्चात् अभियान दल ने सभी ओर से अभियुक्त मणिक दोहुतिया को घेर लिया और नजदीक जाने पर उसे एक एके—47 असॉल्ट राइफल के साथ धान के खेत में गिरा हुआ पाया गया। लेकिन माणिक दोहुतिया के अन्य साथी घने जंगल का लाभ उठाकर भागने में सफल हो गए। आत्मसमर्पण करने वाले घायल उल्फा उग्रवादी अर्थात् श्री माणिक दोहुतिया उर्फ मेघन की अस्पताल ले जाते समय रास्ते में मृत्यु हो गई। इस संबंध में, आयुध अधिनियम की धारा 25 (i—क) (ख)/27 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 307/121/34 के तहत बोर्दुम्सा पुलिस थाना के मामला सं. 18/2014 के माध्यम से चांगलांग जिला (अरुणाचल प्रदेश) के अधीन बोर्दुम्सा पुलिस थाने में एक मामला दर्ज किया गया।

उपर्युक्त तथ्यों और परिस्थितियों से यह स्पष्ट है कि डॉ. प्रदीप सैकिया, ए पी एस, एन.के. दिनेश बर्मन और यू बी सी पवन दोहुतिया ने तत्काल कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए उग्रवादियों को मार गिराने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया। इस प्रकार उन्होंने शौर्य, साहस और कर्तव्यपरायणता के उच्चतम शिखर को छुआ, जिसकी राष्ट्र के सच्चे सिपाही से अपेक्षा की जाती है।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री डॉ. प्रदीप सैकिया, सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी, दिनेश बर्मन, नायक और पवन दोहुतिया, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.06.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्यकारी अधिकारी

सं. 116—प्रेज/2016——राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. धर्मेन्द्र कुमार,
उप निरीक्षक

02. गुलशन कुमार,
कांस्टेबल

03. दीनानाथ दिवाकर,

कांस्टेबल

04. कुमार गौरव,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 18.04.2013 को, यात्रियों को लूटने और उनकी हत्या के इरादे से अगमकुंआ (पटना सिटी) के निकट रेलवे ओवर ब्रिज पर कुछ अपराधियों के जमा होने के बारे में गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के आदेशानुसार उप निरीक्षक धर्मेन्द्र कुमार के नेतृत्व में कांस्टेबल गुलशन कुमार, कांस्टेबल दीनानाथ दिवाकर, कांस्टेबल कुमार गौरव को शामिल करते हुए विशेष आसूचना इकाई, पटना का एक विशेष छापामार सह कार्य दल लगभग 13:10 बजे रेलवे ओवर ब्रिज के पास पहुंचा। उप निरीक्षक धर्मेन्द्र कुमार ने आने—जाने वाले लोगों पर कड़ी नजर रखते हुए काले रंग की पल्सर मोटरसाइकिल पर बैठे एक युवक को गुलजारबाग की ओर जाने वाले रास्ते पर देखा जो कार्य को अंजाम देने के लिए लगभग तैयार था। उसके पीछे खड़े दो युवक प्रत्येक वाहन और उस पर बैठी सवारियों पर नजर रखे हुए थे। उनके व्यवहार को संदिग्ध पाकर कांस्टेबल दीनानाथ के साथ उप निरीक्षक कुमार, जो सादे कपड़ों में थे, उनकी ओर बढ़े। दो अन्य कांस्टेबलों, जो वर्दी में थे, ने अपने दल के नेता का अनुसरण किया। जैसे ही तीनों युवकों ने पुलिस कार्मियों को अपनी ओर आते देखा, वे सभी मोटरसाइकिल पर बैठ गए और पूरी गति के साथ गुलजारबाग की ओर भागे। पुलिस दल के सभी चार सदस्यों ने दो मोटरसाइकिलों पर उनका पीछा किया और उन्हें अपनी पहचान बताने तथा रूकने के लिए कहा। वे भगोड़े उत्साह में एक सकरी गली में घुस गए। यह पाते हुए कि पुलिस दल उनका पीछा करते हुए निकट चला आया है, उनमें से एक अपराधी ने उन पर गोलियां चलानी आरंभ कर दी। मोटरसाइकिल को छोड़कर उन्होंने राली में आंगनबाड़ी केन्द्र के निकट एक मकान में पोजिशन ले ली और पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। यहां गली में घनी आबादी रहती है। दिन का समय होने के कारण पुरुष, महिला और बच्चे गली में ही थे। उनकी सुरक्षा को भांपते हुए पुलिस दल ने हिंसक हो उठे अपराधियों को बार—बार गोलियां चलाना बंद करने तथा आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी लेकिन हर चेतावनी का जवाब गोलियों की नई बौछार से दिया जाता रहा। स्थिति को खतरनाक, गली में मौजूद लोगों और पुलिस कर्मियों की जान को खतरा देखते हुए पुलिस दल के नेता उप निरीक्षक कुमार ने गोली चला दी। इसी बीच, अपराधी पीछा कर रहे पुलिस दल को लक्ष्य बनाकर अंधाधुंध गोलियां चलाते रहे। उप निरीक्षक कुमार और कांस्टेबल गुलशन कुमार को चोटें आईं। इसके बावजूद, पुलिस दल ने स्थिति पर अपनी पकड़ बनाए रखी और भयावह जोखिम से तनिक भी विचलित नहीं हुआ। हठी अपराधियों ने गली के अंत में एक मकान की कंक्रीट की दीवार के पीछे अपनी पोजिशन बदल ली और ताबड़तोड़ गोलियां चलाते रहे। इस पर, उप निरीक्षक कुमार और उनके अधीनस्थ जवानों ने (05) राउंड गोलिया दागीं जो अपराधियों में से एक को जा लगीं। इसे देखकर, अन्य अपराधी ने भागने का प्रयास किया लेकिन पुलिस दल ने तेजी से उसका पीछाकर उसे धर—दबोचा। तीसरा अपराधी भागने में सफल हो गया।

अभियान स्थल की तलाशी के बाद, एक तालाब के निकट गंभीर रूप से घायल एवं खून से लथपथ एक अपराधी दीवार के सहारे गिरा हुआ पाया गया। उसके दाहिने हाथ में एक जिंदा कारतूस से लैस इटली निर्मित एक स्वचालित 7.65 एम एम पिस्तौल पाई गई। उसकी पहचान कुख्यात अपराधी डिस्को उर्फ फैयाज, पुलिस थाना—सुल्तानगंज, पटना के रूप में हुई। वह पटना और उसके आस—पास के जिलों में आतंक का पर्याय बन चुका था।

गिरफ्तार अपराधी, जिसका पहचान हत्या और आयुध अधिनियम के मामलों के शातिर कुख्यात अपराधी इम्तियाज उर्फ काली, निवासी बगुआ गंज, पुलिस थाना—आलमगंज, जिला पटना के रूप में हुई, के कब्जे से .315 बोर के 04 (चार) जिंदा कारतूस से लैस एक देशी कट्टा बरामद हुआ।

इन कुख्यात अपराधियों से नजदीकी मुठभेड़ में उपर्युक्तं पुलिस कर्मियों ने अत्यधिक विश्वास, अदम्य प्रतिबद्धता और अनुकरणीय साहस एवं बहादुरी का परिचय दिया। उन्होंने अपराधियों द्वारा उनकी ओर की जा रही लगातार गोलीबारी का डटकर सामना किया। स्थानीय निवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए संकट की घड़ी में उनका आचरण तथा साथ ही साथ हिंसक अपराधियों पर काबू पाना वस्तुतरू सराहनीय था।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री धर्मेन्द्र कुमार, उप निरीक्षक, गुलशन कुमार, कांस्टेबल, दीनानाथ दिवाकर, कांस्टेबल और कुमार गौरव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.04.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 117—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अमित लोढ़ा,
पुलिस अधीक्षक

02. पंकज कुमार,
सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी

03. बिनोद कुमार,
उप निरीक्षक

04. राम दुलार प्रसाद,
उप निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 28 मार्च, 2008 को 14रू00 बजे श्री अमित लोढ़ा, पुलिस अधीक्षक, बेगुसराय को विशिष्ट खुफिया जानकारी मिली कि पुलिस कर्मियों पर हमला बोलकर हथियारों को लूटने के लिए बीरपुर पुलिस थाने पर हमला बोलने की मंशा से दयानंद मलाकार के नेतृत्व में एक पूर्णतरू सशस्त्र नक्सली दस्ता गांव सरौंजा में डेरा डाले हुए है। सी पी आई (माओवादी) का दुर्दांत एरिया कमांडर दयानंद मलाकार, नक्सलियों के महिला विंग की नेता ममता देवी, मंजु कुमारी और दुर्दांत नक्सली दस्ते के अन्य सदस्यों ने बेगुसराय, खगड़िया और आस—पास के अन्य जिलों में आतंक का साम्राज्य कायम कर रखा था। उनकी खतरनाक कार्रवाइयों में पुलिस थानों पर हमला बोलना, रेलवे लाइनें उड़ाना, पुलिस कर्मियों और आम नागरिकों की हत्या करना तथा जबरन धन वसूली करना आदि शामिल था। दयानंद मलाकार की अगुवाई में नक्सली परिष्कृत हथियारों जिनमें से कुछ पुलिस से लूटे गए थे, से पूरी तरह लैस होकर प्रशासन के लिए सीधी चुनौती बने हुए थे।

इस सूचना के आधार पर पुलिस अधीक्षक, बेगुसराय के नेतृत्व में जिला पुलिस ने नक्स्ली खतरे का मुकाबला करने के लिए खुफिया जानकारी जुटाना आरंभ किया। यह महसूस करते हुए कि प्रत्येक क्षण महत्वपूर्ण है, पुलिस अधीक्षक ने तत्काल श्री पंकज कुमार, एस डी पी ओ, सदर, बेगुसराय पुलिस थाना के नेतृत्व में बीरपुर पुलिस थाने के सबसे समीप पुलिस दल को सरगौंजा की तरफ भेजा। उचित प्रकार से जानकारी दिए जाने के बाद सभी पुलिस अधिकारी और कांस्टेबल सरगौंजा मल्लाहटोली के लिए चल पड़े। 15:30 बजे सरगौंजा पहुंचने पर पुलिस दल गांव की घेराबन्दी करने के लिए तीन समूहों में विभाजित हो गया। पुलिस दल को तत्काल नक्सलियों की ओर से अंधाधुंध गोलीबारी का सामना करना पड़ा, जो पहले से लाभ की स्थिति में थे। अपने जवानों और सरकारी हथियारों की सुरक्षा को खतरा भांपते हुए श्री पंकज कुमार ने पुलिस दल को सीमित एवं नियंत्रित जवाबी गोलीबारी करने का निदेश दिया। इसी बीच पुलिस दल का नेतृत्व करने के लिए श्री अमित लोढ़ा, पुलिस अधीक्षक, बेगुसराय मुठभेड़ वाली जगह पर पहुंच गए। इससे बल का मनोबल काफी बढ़ा। पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में पुलिस दल नक्सलियों को आत्मसमर्पण करने का निर्देश देता रहा लेकिन इसका कुछ भी परिणाम नहीं निकला। नक्सली बेहद परिष्कृत हथियारों से लैस थे। उन्होंने पुलिस दल पर बम भी फेंके। परिस्थिति को भयावह बनाने के लिए उन्होंने महिलाओं और बच्चों को मानव कवच बना लिया था। वहॉ पर हुई गोलीबारी में एस ए पी गणेश राय और कांस्टेबल हरेन्द्र कुमार राय नामक दो पुलिस कर्मी गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बावजूद, पुलिस अधीक्षक और उनके दल ने अपनी जवाबी गोलीबारी में अदभुत संयम और धैर्य बनाए रखा ताकि निर्दोष नागरिकों को कोई चोट न पहुंचे। यह देखते हुए कि पुलिस अधीक्षक और उनका दल घायल पुलिस कर्मियों को बचाने का प्रयास कर रहा है, नक्सलियों ने उन पर फिर से गोलियों की बौछार की। गोलियों का सामना करते हुए तथा अपनी जान की परवाह न करते हुए पुलिस अधीक्षक और उनका दल दोनों घायल कांस्टेबलों को सुरक्षित स्थान पर ले गया। दोनों तरफ से गोलीबारी 17रू00 बजे तक जारी रही। जवाबी गोलीबारी में कुछ शीर्षस्थ नक्सली घायल हो गए और उनके काडरों का मनोबल टूट गया। उनमें से कुछ अंधेरे तथा मानव कवच का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गए।

जब गोलीबारी रूकी, तब पुलिस अधीक्षक बेगुसराय के नेतृत्व में पुलिस कर्मियों द्वारा विधिसम्मत तलाशी की कार्रवाई की गई। नक्सलियों ने चतुराई से अपनी झोपड़ियों की फर्श पर लेटकर अपने आपको छिपा रखा था और अन्दर मौजूद अंधकार का फायदा उठा रखा था। यदि बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से तलाशी नहीं की गई होती, जिससे नक्सली भी चौंक गए, तो पुलिस को और क्षति होती। इस अभियान में बारह नक्सली गिरफ्तार किए गए।

इन कुख्यात नक्सलियों से बरामद हथियारों के बड़े जखीरे से पुलिस के साथ—साथ आम नागरिकों को होने वाले गंभीर खतरे का पता चलता है। इनमें मैगजीन सहित लूटी गई पुलिस राइफल—01, मैगजीन सहित सामान्य राइफल—03, मस्कट—01, .9मिमी की

देशी पिस्तौल–01, देशी पिर्स्तौल–01 जिंदा बम–01, कारतूस–92, फ्यूज सहित डेटोनेटर–03, डेटोनेटर रहित फ्यूज–01, चार्जर सहित नोकिया मोबाइल सेट–01, नकद–14,565 रु., सोने और चांदी के कुछ पुराने गहने शामिल थे। मुठभेड़ स्थल के निकट खेत से नक्सली साहित्य और पुलिस की वर्दी भी पाई गई। दोनों ओर से हुई इस खतरनाक गोलीबारी में पुलिस कार्मिकों ने 115 राउंड तथा कुख्यात नक्सलियों द्वारा लगभग 150 राउंड गोलियां चलाई गईं।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अमित लोढ़ा, पुलिस अधीक्षक, पंकज कुमार, सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी, बिनोद कुमार,उप निरीक्षक और राम दुलार प्रसाद,उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.03.2008 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 118–प्रेज/2016–राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:––

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. प्रशांत अग्रवाल,
पुलिस अधीक्षक

02. लक्ष्मण केवट,
उप निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीजापुर जिले के गंगलूर पुलिस थाने के अधीन पलनार, सवनार और तोडका क्षेत्र में सी पी आई माओवादी काडरों की उपस्थिति के बारे में जानकारी होने पर, कमांडर के रूप में पुलिस अधीक्षक प्रशांत अग्रवाल और उप कमांडर के रूप में उप निरीक्षक लक्ष्मण केवट सहित कुल 67 की संख्या में डी ई एफ बीजापुर के तीन दलों को सम्मिलित करते हुए 25 अप्रैल, 2014 की रात्रि में एक अभियान दल का गठन किया गया।

26 अप्रैल की सुबह लगभग 10:00 बजे जैसे ही पुलिस दल तोडका के जंगलों के पास पहुंचा, वैसे ही घात लगाए हुए माओवादियों, जिनकी संख्या लगभग 35 से 40 के बीच रही होगी, ने पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलियां चलाना आरंभ कर दिया। श्री अग्रवाल, दल कमांडर ने अपने जवानों को सावधान किया और उन्हें गोलीबारी को नियंत्रित रखने तथा जब तक शत्रु सीधा दिखाई न पड़े, तब तक गोलियां चलाकर अपने स्थान की जानकारी न होने देने तथा गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की नीति पर अमल करने का आदेश दिया। श्री अग्रवाल स्वयं अगुवाई करते हुए उप निरीक्षक लक्ष्मण केवट और 4 जवानों के साथ आड़ लेते हुए तथा गोलियां दागते हुए शत्रु की ओर आगे बढ़े। दूसरे दल को भी आगे बढ़ने तथा माओवादियों को दूसरी ओर से घेरने का प्रयास करने के लिए कहा गया। माओवादी जैसे ही कोई आवाजाही देखने में समर्थ हुए, उन्होंने पुलिस दल पर गोलीबारी करना जारी रखा। दल कमांडर और उप कमांडर साहस के साथ आगे बढ़े और अपने जवानों को भी अपने पीछे–पीछे आने के लिए प्रोत्साहित किया। पुलिस दल को बिना विचलित हुए गोलीबारी करते हुए अपने समीप आते देख माओवादियों को लगा कि उन्हें घेर लिया जाएगा। पुलिस दल के जोरदार जवाब के कारण, माओवादियों के पांव उखड़ गए और वे जंगलों का फायदा उठाकर भाग खड़े हुए।

जब गोलीबारी पूरी तरह से रूक गई, तब पुलिस दल द्वारा उस क्षेत्र की तलाशी ली गई। तलाशी में पुलिस दल को एक माओवादी का शव, उक्त शव के पास एक .303 हथियार, .303 के 11 जिंदा राउंड वाला एक पाउच, खाली खोखे, अन्य जिंदा राउंड, एक प्रेशर आई ई डी, माओवादियों द्वारा इस्तेमाल किया गया रेडियो सेट, माओवादी वर्दी, साहित्य एवं अन्य वस्तुएं बरामद हुईं। वहां खून के धब्बे मौजूद थे जो यह बता रहे थे कि और माओवादी मारे गए होंगे या घायल हुए होंगे। अधिक समय गंवाए बिना पुलिस दल ने वापस आना शुरू किया। इस बात की आशंका थी कि माओवादी अपने नुकसान से अत्यधिक क्रोधित होकर दोबारा हमला करेंगे या घात लगाएंगे और चूंकि पुलिस दल को अपने साथ मृतक का शव भी वापस ले जाना था इसलिए उनकी गति भी धीमी थी। यह क्षेत्र माओवादियों द्वारा बिछाए जाने वाले बूबी ट्रैप्स के कारण भी कुख्यात है। दल कमांडर ने बहादुरी के साथ अपने जवानों का नेतृत्व किया और सावधानीपूर्वक आगे बढ़ते रहे और सुरक्षित बीजापुर पहुंच गए। बाद में मृतक की पहचान पुनेम बिच्चम उर्फ बुद्धू के रूप में हुई जो पिछले 5 वर्षों से क्षेत्र में सक्रिय माओवादी था।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री प्रशांत अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक और लक्ष्मण केवट, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.04.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 119—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. दौलत राम पोर्ते,
एस.डी.ओ. (पुलिस)

02. गैंद सिंह ठाकुर,
निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.08.2014 को श्री दौलत राम पोर्ते को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि नक्सली घुमसीमुंडा के जंगल और पहाड़ी पर मौजूद हैं और कुछ नक्सली घुमसीमुंडा गांव में मंगल सिंह सोरी के खेत में स्वतंत्रता दिवस का बहिष्कार करने के लिए एक बैनर लगाने वाले हैं। एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते के पास अभियान में साथ चलने वाले अधीनस्थ अधिकारियों और जवानों की संख्या कम थी। सफलता सुनिश्चित करने के लिए, उन्होंने अंटागढ़ बी एस एफ को तत्काल आने को कहा क्योंकि मुखाबिर ने उन्हें सूचित किया था कि नक्सलियों की संख्या अधिक है। एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते ने योजना की जानकारी दी और बल को तीन दलों में विभाजित कर दिया। जिला बल और सी ए एफ वाले एक दल का नेतृत्व दौलत राम पोर्ते ने, जिला बल के सहायक उप निरीक्षक तुलसी राम कोसिमा सहित बी एस एफ वाले दूसरे दल का नेतृत्व बी एस एफ सहायक कमांडेंट, के.के.शर्मा ने तथा जिला बल एवं सी ए एफ वाले तीसरे दल का नेतृत्व निरीक्षक जी.एस.ठाकुर ने संभाला। पहले दल ने पूर्व दिशा में बायीं ओर से नक्सलियों के छिपने के ठिकाने की घेराबन्दी की, वहीं दूसरे दल ने उत्तर दिशा में मध्य से तथा तीसरे दल ने पश्चिम दिशा में दाहिनी ओर से नक्सलियों के छिपने के ठिकाने की घेराबन्दी की। जब एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते के नेतृत्व वाला दल मुखबिर द्वारा बताए गए क्षेत्र की ओर बढ़ रहा था, तब कुछ दूरी पर तलाशी लेने और आगे बढ़ने के क्रम में नक्सलियों ने पुलिस दल को देख लिया और 12 बोर और भरमार सहित एके—47, एल एम जी, एस एल आर, इन्सास, कार्बाइन जैसे स्वचालित हथियारों से पुलिस दल पर अंधाधुंध और भारी गोलाबारी करने लगे। दौलत राम पोर्ते ने अपने दल को आत्मरक्षा में गोलियां चलाने का आदेश दिया। एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते ने यह सुनिश्चित किया कि उनका दल रणनीतिक दृष्टिकोण से सही स्थान पर मौजूद हो। एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते ने आगे की कार्रवाई की योजना से जवानों को पहले ही अवगत करा दिया। नक्सली पहाड़ी की चोटी पर थे तथा लाभदायक स्थिति में थे। दौलत राम पोर्ते ने बाकी लोगों को ठोस आड़ लेने का आदेश दिया और तत्पश्चात् वे निरीक्षक जी.एस.ठाकुर, उप निरीक्षक के.पी. राठौड़, उप निरीक्षक अमोल खाल्खो, सहायक उप निरीक्षक खेतराज साहु, कांस्टेबल श्रवण कुलदीप, सहायक कांस्टेबल बुद्धु राम दुग्गा के साथ चलाई जा रही गोलियों की आड़ लेकर रेंगते हुए आगे बढ़े। अपने सिर के ऊपर से गुजर रही गोलियों के बावजूद, एस डी ओ पी, निरीक्षक जी.एस. ठाकुर, उप निरीक्षक के.पी.राठौड़, उप निरीक्षक अमोल खाल्खो, सहायक उप निरीक्षक खेमराज साहु, कांस्टेबल श्रवण कुलदीप, सहायक कांस्टेबल बुद्धु राम दुग्गा के साथ नक्सलियों के छिपने के ठिकाने के समीप पहुंच गए। उन्होंने स्थलाकृति और नक्सलियों की अवस्थिति का जायजा लिया और बाद में अपने जवानों को रेंगते हुए तथा एकदम नीचे रहते हुए सावधानीपूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, जो पहले से ही इस कार्य को अंजाम देने के लिए तैयार बैठे थे क्योंकि उनके नेता ने उनके लिए रास्ता बना रखा था। एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते ने अपने जवानों को जोरदार जवाब देने का आदेश दिया और स्वयं भी बिना किसी आड़ के खड़ी चट्टान पर खतरनाक ढंग से रेंगते हुए गोलियां चलाने लगे। यह नक्सलियों पर सीधा हमला था, जिसमें उन्होंने अपनी जान और सुरक्षा की तनिक भी परवाह नहीं की। एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते की इस साहसपूर्ण और युक्तिसंगत कार्रवाई से न केवल उनके दल की सुरक्षा सुनिश्चित हुई बल्कि इससे नक्सली भी अपनी लाभ वाली स्थिति खो बैठे। इस कार्रवाई से नक्सली घबरा गए और उन्होंने तेजी से उस जगह से भागना शुरू किया। नक्सलियों को भागते हुए देख एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते और सहायक कांस्टेबल बुद्धु राम दुग्गा ने अपने प्राणों और सुरक्षा की परवाह न करते हुए उनका पीछा किया। एस डी ओ पी दौलत राम पोर्ते द्वारा ए के—47 से चलाई जा रही गोलियों से, भागने के दौरान एक नक्सली गोली लगने से घायल हो गया और उसके बाद उस नक्सली को 25 कारतूस सहित उसकी एके—47 स्वचालित हथियार के साथ पकड़ लिया गया। सहायक कमांडेंट बी एस एफ, के.के. शर्मा के नेतृत्व वाले दूसरे दल तथा निरीक्षक जी.एस.ठाकुर के नेतृत्व वाले तीसरे दल ने बहादुरी के साथ सामना करते हुए गोलियां चलाईं जिससे नक्सलियों में भय और आतंक फैल गया और वे घने जंगलों का फायदा उठाकर पहाड़ी के पीछे से छिपने के ठिकाने से भागने लगे। आधे घंटे की गोलीबारी के पश्चात् पुलिस ने घटना—स्थल की तलाशी की और वहां से एक पॉलिथीन पैकेट में लपेटे गए एके—47 के दस राउंड, 07 राउंड के साथ एक देशी कट्टा 5220 रु. नकद, एक स्विच, एक मल्टीमीटर, सूती कपड़े के दो नक्सली बैनर, 30 नक्सली पैम्फलेट और भारी संख्या में दैनिक इस्तेमाल की वस्तुएं बरामद की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री दौलत राम पोर्ते, एस.डी.ओ. (पुलिस) और गैंद सिंह ठाकुर, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 120—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | अजीत कुमार ओग्रे,<br>निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार) |
| 02. | मुकेश यादव,<br>उप—निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 03. | सुबोध कुमार,<br>हेड कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 15 मई, 2014 को निरीक्षक अजीत कुमार ओग्रे को सूचना प्राप्त हुई कि पुलिस थाना औंधी के अधीन छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र सीमा के निकट नक्सलवादी इकट्ठा हुए हैं और चल रहे लोक सभा निर्वाचन की अवधि के दौरान सुरक्षा बलों पर घात लगाकर हमला करने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने जिला पुलिस बल और एस टी एफ कार्मिकों के साथ मिलकर तलाशी अभियान चलाने की एक विस्तृत योजना तैयार की। उन्होंने दो दल बनाए। एक दल का नेतृत्व निरीक्षक ओग्रे तथा दूसरे दल का नेतृत्व उप निरीक्षक मुकेश यादव कर रहे थे और वे सुनियोजित ढंग से आगे बढ़े। जैसे ही पुलिस दल घोटिया कन्हार गांव के निकट पहुंचे, नक्सलियों ने उन्हें देख लिया जिन्होंने उनके ऊपर ऑटोमेटिक और सेमी—ऑटोमेटिक हथियारों से भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। हेड कांस्टेबल सुबोध कुमार के साथ निरीक्षक ओग्रे ने इस अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थिति में संयम, नेतृत्व और साहस का परिचय दिया। अपने जवानों को अत्यधिक खतरे में देखकर उन्होंने एक साहसिक निर्णय लिया जिसमें उनकी भी जान को गंभीर खतरा था। वे अपने दल का नेतृत्व करते हुए और हमले का एक नया मोर्चा खोलते हुए सुनियोजित ढंग से नक्सली पोजिशनों की ओर बढ़े। केवल अपनी चपलता, अभियानों के बारे में विशाल अनुभव, नेतृत्व क्षमता और अत्यधिक साहस के कारण ही वे अपनी जान को पूरी तरीके से जोखिम में डालकर साहसिक निर्णय ले सके। तत्पश्चात् उनके दल ने इस नई पोजिशन से नक्सलियों को चुनौती दी और नक्सलियों की भारी गोलीबारी में फंसे अपने साथी पुलिस कर्मियों के प्राणों की रक्षा करने के उद्देश्य से उन पर भारी गोलीबारी करने लगे। वे कार्रवाई में पूर्ण समन्वय बनाए रखने के लिए अपने जवानों को प्रेरित और उनका मार्ग—निर्देशन करते रहे। एक निर्णायक मौके पर निरीक्षक ओग्रे भारी गोलीबारी के बीच नक्सलियों की पकड़ भेदने में सफल हो गए तथा उनके कमांडर सहित दो नक्सलियों को मार गिराया। इसके साथ उप निरीक्षक मुकेश कुमार ने सी पी आई (माओवादी) काडर को घेर लिया। अचानक माओवादी काडरों ने अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। इसके जवाब में आत्म रक्षा हेतु सुरक्षा बलों ने भी गोलियां चलाईं। दोनों ओर से चल रही गोलीबारी में एक माओवादी काडर गोली लगने से घायल हो गया, उप निरीक्षक मुकेश यादव ने अपनी जान को गंभीर खतरे में डालते हुए उस घायल नक्सली को पकड़ लिया। नक्सली पुलिस के इस सुनियोजित और साहसिक हमले का सामना नहीं कर सके और उन्होंने वहां से भागना आरंभ कर दिया। उसके बाद पुलिस दल ने उनका पीछा किया और हथियारों से लैस एक घायल नक्सली को जिंदा पकड़ लिया। यदि निरीक्षक ओग्रे द्वारा शौर्यपूर्ण कार्रवाई न की गई होती, तो घिरे हुए पुलिस दल को पुलिस कार्मिकों की जान और हथियारों की क्षति से बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती।

मुठभेड़ के बाद हुई तलाशी में, मुठभेड़ स्थल से एक 7.62 एस एल आर राइफल, 03 मैगजीन और एक बैकपैक सहित नक्सली कमांडर पंकज का शव बरामद हुआ। पंकज माओवादियों की राजनंदगांव कांकेर बार्डर कमेटी की प्लाटून सं. 23 का कुख्यात नक्सली कमांडर था। गिरफ्तार नक्सली प्रताप टेकम से एक सिंगल शॉट 12 बोर राइफल, 01 बारूदी सुरंग, 01 बैकपैक जब्त किया गया। इसके साथ मारे गए अन्य नक्सली से एक अन्य सिंगल शाट राइफल बरामद की गई जिसका शव नक्सली अपने साथ लेते गए। पुलिस दल ने तब अपने मानवीय पक्ष का पूर्ण परिचय दिया जब वे घायल नक्सली को अपने कंधों पर उठाकर उसे चिकित्सकीय उपचार हेतु निकटतम अस्पताल ले गए।

निरीक्षक अजीत कुमार ओग्रे, उप निरीक्षक मुकेश यादव और हेड कांस्टेबल सुबोध कुमार ने अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थिति में असाधारण साहस, विशिष्ट नेतृत्व क्षमता और प्रयास का प्रदर्शन किया जिससे न केवल उनके साथी पुलिस कर्मियों के प्राणों की रक्षा हुई बल्कि इससे क्षेत्र में चल रही अवैध नक्सली गतिविधियों को भी बहुत बड़ा झटका लगा। अपनी जान को जोखिम में डालकर अपने साथियों की रक्षा करने के लिए वे अपने कर्तव्य की सीमा को भी लांघ गए।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अजीत कुमार ओग्रे, निरीक्षक, मुकेश यादव, उप निरीक्षक और सुबोध कुमार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का तृतीय बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.05.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 121—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अब्दुल समीर, (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
उप—निरीक्षक

02. अम्बिका प्रसाद ध्रुव, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
सहायक उप—निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पिडिया—अंद्री में भारी संख्या में नक्सलियों के बड़े जमावड़े और उस क्षेत्र के आस—पास छोटे दलों के होने की जानकारी मिलने पर विभिन्न शिविरों से चलने वाले अलग—अलग दलों को शामिल करते हुए एक अभियान चलाया गया। डी ई एफ और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बीजापुर वाले एक दल को किरनडुल की ओर से पुरन्गल, वेंगुर क्षेत्र को घेरने के लिए भेजा गया। दल मई, 2013 की 17 तारीख को रात में किरनडुल से चल पड़ा। अगले दिन सायं लगभग 1830 बजे ठीक पुरन्गल पहुंचने से पहले नक्सलियों और उनके बीच गोलीबारी हुई जिसमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो जवान घायल हो गए। अगले दिन यानि 19.05.2013 की सुबह घायल जवानों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए हेलीकॉप्टर भेजा जाना था। हेलीकॉप्टर को सुरक्षित उतारने के लिए क्षेत्र को सुरक्षित करने हेतु छोटे दल भेजे गए। पहाड़ी और झाड़ीदार क्षेत्र में घात लगाकर प्रतीक्षा कर रहे नक्सलियों ने उप—निरीक्षक अब्दुल समीर और सहायक उप—निरीक्षक अम्बिका प्रसाद ध्रुव के नेतृत्व वाले डी ई एफ और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और अभियान से जुड़े राज्य पुलिस कार्मिकों वाले छोटे दल पर स्वचालित, अर्द्ध—स्वचालित और देशी हथियारों से भारी गोलीबारी करना आरंभ कर दिया। जब दल पर नक्सलियों द्वारा हमला किया गया, तब उन्होंने आगे बढ़कर आक्रमण करते हुए अत्यधिक सूझ—बूझ कुशल नेतृत्व, अभियान संबंधी चीजों की जबरदस्त पकड़, असाधारण साहस, बहादुरी और उत्कृष्ट शौर्य का परिचय दिया। नक्सली हमले के प्रति उनकी कार्रवाई से न केवल उनके जवानों के प्राणों की रक्षा हुई बल्कि नक्सली हमले को भी विफल कर दिया गया और उन्होंने नक्सलियों के मार गिराए जाने तथा 01 एयर गन, 05 ब्लैक पिठ्ठू, नक्सली साहित्य, दवाइयों आदि सहित मासी मुदामी पुत्र पांडु, गांव—गामपुर, पुलिस थाना—गंगलूर, जिला—बीजापुर (छत्तीसगढ़) नामक एक वर्दीधारी नक्सली का शव बरामद करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह भांपते हुए कि छोटा दल पूरी तरह से नक्सलियों की भीषण गोलीबारी की चपेट में गया है, उप निरीक्षक अब्दुल समीर, सहायक उप निरीक्षक ध्रुव नक्सलियों पर दनादन गोलियां चलाते हुए तथा अपने जवानों को मिलाकर गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने के लिए कहते हुए निडरता के साथ आगे बढ़े। उप निरीक्षक अब्दुल समीर, सहायक उप निरीक्षक अम्बिका प्रसाद ध्रुव की साहसपूर्ण कार्रवाई से प्रेरित होकर अन्य जवान भी गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने लगे। भीषण गोलीबारी तथा पुलिस दल को आगे आते देख नक्सली भौंचक होकर पहाड़ी क्षेत्र में वापस भागने लगे। जैसे ही गोलीबारी रूकी घटना—स्थल की तलाशी ली गई जिसमें एक नक्सली का शव, एक एयरगन, नक्सली साहित्य और अन्य वस्तुएं बरामद हुईं।

उप निरीक्षक अब्दुल समीर, सहायक उप निरीक्षक अम्बिका प्रसाद ध्रुव अपनी जान की परवाह न करते हुए गोलीबारी का निर्भीक होकर जवाब दिया तथा जोरदार तरीके से प्रत्युतर देते हुए नक्सली पोजिशनों की तरफ बढ़ने के लिए अपने साथियों को प्रेरित किया तथा नक्सलियों का सुनियोजित ढ़ंग से मुकाबला किया जो पुलिस दल को घेरने और उन्हें मार गिराने के लिए प्रयासरत थे। नक्सलियों द्वारा दल पर हमला किए जाने के दौरान पुलिस बल ने आगे बढ़कर आक्रमण करते हुए अत्यधिक सूझ—बूझ कुशल नेतृत्व, अभियान संबंधी चीजों की जबरदस्त पकड़ एवं असाधारण साहस का परिचय दिया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अब्दुल समीर, उप—निरीक्षक और अम्बिका प्रसाद ध्रुव, सहायक उप—निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बारध्पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.05.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 122—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. कृष्ण कुमार,
उप—निरीक्षक

02. अजयबीर सिंह,
सहायक उप—निरीक्षक

03. राज कुमार,
हेड कांस्टेबल

04. उमेश कुमार,
हेड कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यह मामला, विशेष प्रकोष्ठ/दिल्ली पुलिस की टीम द्वारा दिनांक 05.07.2015 को सायं लगभग 07.35 बजे खजूरी से निर्माणाधीन सिग्नेचर ब्रिज, नई दिल्ली तक जाने वाले लिंक रोड पर हुई खतरनाक आमने—सामने की मुठभेड़ में छोटू कुमार उर्फ छोटे फौजी पुत्र शालीग्राम निवासी गांव कचोटपुरा, पुलिस थाना गोण्डा, जिला अलीगढ़, उत्तर प्रदेश नामक एक दुर्दांत अपराधी से मुकाबला करने तथा उसे निष्क्रिय करने में प्रदर्शित उनकी अनुकरणीय शौर्यपूर्ण कार्रवाई और असाधारण कार्य से संबंधित है। विशेष प्रकोष्ठ का दल वांछित अपराधियों का पीछा कर रहा था, जो हरियाणा, दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कुख्यात अपराधियों तक अवैध हथियारों की खेप पहुंचाने के लिए आया हुआ था। उसका पीछा किया गया और निर्माणाधीन सिग्नेचर ब्रिज, नई दिल्ली के बिलकुल अंत में उसे घेर लिया गया। भागने का कोई मार्ग न पाकर, अभियुक्त ने भरी पिस्तौल उठाई और पुलिस दल के समक्ष आत्मसमर्पण के लिए कहे जाने के बावजूद पुलिस दल की तरफ पिस्तौल तान दी। आत्मसमर्पण करने के बजाय अभियुक्त अपनी कार से बाहर निकला और अपने साथ मौजूद अवैध परिष्कृत हथियारों से पुलिस दल पर गोलियां दागनी शुरू कर दी। पुलिस दल ने फिर से चेतावनी दी लेकिन अभियुक्त पुलिस दल पर गोलियां चलाता रहा। उसने कुल मिलाकर 5 राउंड गोलियां दागी। इनमें से एक गोली सरकारी वाहन पर जा लगी और बाकी छापामार दल के कार्मिकों को लगीं। सौभाग्यवश सभी गोलियां छापामार दल द्वारा पहने गए बुलेट प्रूफ जैकेटों के कारण निष्फल हो गईं। पुलिस दल ने भी अभियुक्त को पकड़ने के लिए गोलियां चलाई और उसे दबोच लिया। तलाशी में उसके हाथ से 01 भरी पिस्तौल, जिसके चौम्बर में 01 कारतूस मौजूद था, 06 जिंदा कारतूसों वाली 01 मैगजीन बरामद हुई। जबकि घटना स्थल से 01 खाली करतूस और 5 चले हुए कारतूस बरामद हुए। कार की तलाशी लेने पर उसमें रखे ट्रैवलिंग बैग से 30 परिष्कृत पिस्तौलें मिलीं। अवैध हथियारों को ले जाने में इस्तेमाल की गई वैगन—आर कार नं. डी एल—3 सीजेड—3444 भी पुलिस थाना ग्रेटर कैलाश—I, नई दिल्ली क्षेत्र से चोरी की गई पाई गई।

कृष्ण कुमार, उप निरीक्षक, अजयवीर सिंह, सहायक उप निरीक्षक, राज कुमार, हेड कांस्टेबल और उमेश कुमार, हेड कांस्टेबल ने आम लोगों तथा अपने दल के साथियों के प्राणों को क्षति पहुंचाए बिना वांछित दुर्दांत अपराधी को पकड़ने के लिए चलाए गए उपर्युक्त अभियान में अपनी जानों को जोखिम में डाला तथा सतत अनुकरणीय साहस, बहादुरी और प्रतिबद्धता का परिचय दिया। दिल्ली पुलिस की इस साहसपूर्ण कार्रवाई की न केवल विभिन्न राज्यों के शीर्षस्थ पुलिस अधिकारियों ने बल्कि आम नागरिकों ने भी सराहना की। उन्होंने वीरता और अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री कृष्ण कुमार, उप—निरीक्षक, अजयबीर सिंह, सहायक उप—निरीक्षक, राज कुमार, हेड कांस्टेबल और उमेश कुमार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.07.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 123—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, हरियाणा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता,
पुलिस अधीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

माननीय पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय द्वारा न्यायालय के आदेश की अवमानना करने के दोषी रामपाल के खिलाफ जारी गैर—जमानती वारंटों की तामील के लिए श्री अनिल कुमार राव, आई पी एस, पुलिस महानिरीक्षकधहिसार रेंज, हिसार की अध्यक्षता में हरियाणा पुलिस द्वारा 'ऑपरेशन सम्वेदी' चलाया गया। रामपाल और उसके समर्थकों ने रामपाल को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस द्वारा किए जाने वाले प्रयास की स्थिति में पुलिस के खिलाफ लड़ाई लड़ने की योजना बना रखी थी। सतलोक आश्रम, बरवाला, जिला हिसार के अन्दर लगभग 30,000 से 40,000 लोग मौजूद थे। रामपाल ने अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए महिलाओं और बच्चों को मानव ढ़ाल बना रखा था। रामपाल की गिरफ्तारी के लिए पुलिस द्वारा किए जाने वाले किसी भी प्रयास को रोकने के लिए दंगा—रोधी साज—सामान, आग्नेयास्त्रों, पेट्रोल बमों, एसिड पाउचों, स्लिंग—शॉट और कंकड़ों/पत्थरों से लैस कमांडरों की निजी सेना तैयार और प्रशिक्षित की गई थी। भारी मात्रा में होने वाली क्षति की संभावना को ध्यान में रखते हुए, पुलिस ने इनके नेतृत्व में पेशेवर तरीके से अभियान आरंभ किया। दिनांक 17 नवम्बर, 2014 तक सतलोक आश्रम की पूरी घेराबन्दी कर ली गई और तत्पश्चात् दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के तहत एक आदेश जिला मजिस्ट्रेट, हिसार द्वारा प्रख्यापित किया गया था। आश्रम के अनुयायियों को आश्रम शांतिपूर्वक छोड़ देने के बारे में किए गए सभी प्रयास निष्फल रहे। दिनांक 18 नवम्बर, 2014 को दोपहर लगभग 12:00 बजे आश्रम

की मजबूत दीवारों के भीतर से सुनियोजित और समन्वित हमले आरंभ हुए। श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, आई पी एस, पुलिस अधीक्षकधहिसार, श्री सुमित कुमार, एचपीएस, तत्कालीन डीसीपी/फरीदाबाद, श्री राजवीर सिंह, एच पी एस, उप पुलिस अधीक्षक/बरवाला, श्री भगवान दास, उप पुलिस अधीक्षकधसिवानी (अब उप पुलिस अधीक्षक/हिसार), निरीक्षक जीत सिंह, गुणपाल सिंह, ओ आर पीध्ए एस आई (साइबर सेल प्रभारी, हिसार रेंज, हिसार) और अन्य पुलिस बल सहित श्री अनिल कुमार राव, आई पी एस ने बंदूकों, लाठियों, एसिड पाउचों, चिली बमों और स्लिंग आदि जैसे घातक हथियारों से लैस आश्रम के मुख्य गेट के सामने खड़े रामपाल के अनुयायियों को चेतावनी दी। ऑपरेशन "सम्वेदी" के प्रमुख श्री अनिल कुमार राव, आई पी एस, पुलिस महानिरीक्षकधहिसार रेंज, हिसार तथा श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक/हिसार द्वारा अनुयायियों को आश्रम खाली करने के बारे में बार—बार उद्घोषणाएं की गईं। इसी बीच, अनुयायियों ने पुलिस अधिकारियों पर हमला बोल दिया और लोग पत्थर और एसिड पाउच फेंकने लगे तथा चिली बमों और स्लिंग शॉटों आदि का इस्तेमाल करने लगे। साथ ही साथ आश्रम के अंदर से रूक—रूक कर गोलीबारी की जा रही थी। पुलिस महानिरीक्षक, हिसार को निशाना बनाकर एक गोली चलाई गई लेकिन सौभाग्यवश गोली उन्हें नहीं लगी। यह पूरा अभियान, पुलिस द्वारा अपनाए गए पेशेवर दृष्टिकोण के कारण किसी भी पक्ष की ओर से जान—माल के नुकसान के बिना सफलतापूर्वक संपन्न हो गया।

श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, हिसार भी अभियान के दौरान आश्रम के मुख्य गेट पर मौजूद थे। उन्होंने उक्त अभियान को निष्पादित करने में पुलिस दल का नेतृत्व किया। जहां वे मौजूद थे वहां रामपाल के कुछ अनुयायी अचानक अपने हाथों में किरासन तेल के डिब्बे लेकर आ गए। उन्होंने अपने शरीर पर किरासन तेल डाल लिया और आत्मदाह करने के उद्देश्य से अपने शरीर में आग लगा ली।। श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता और उनके दल के प्रयासों से इन अनुयायियों को बचाया और उस स्थान से ले जाया गया।

श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, हिंसक और हमलावर भीड़ के बेहद निकट थे। हमलावरों ने उन पर तथा अन्य पुलिस बल पर हमला किया, लेकिन उन्होंने उनके उद्देश्य को विफल करने में बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने जोरदार मुकाबला किया और सामने की चारदीवारी और आश्रम के पहले गेट को तोड़ने में सफल रहे। उन्हें चोट भी लगी लेकिन पुलिस बल के मनोबल को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपना कोई चिकित्सकीय उपचार नहीं करवाया। उनके सिर पर चोट लगी थी और उनका चश्मा और मोबाइल फोन, दोनों टूट गए थे। उनके सिर से खून बह रहा था, इसके बावजूद उन्होंने अपनी चोट और जान की परवाह नहीं की और बहादुरी से लड़ते रहे। अधिकारी द्वारा प्रदर्शित अत्यधिक साहस और विशिष्ट शौर्य के कारण किसी भी ओर से किसी के हताहत हुए बिना पूरा अभियान सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। उपर्युक्त के अतिरिक्त, वे आश्रम से हजारों लोगों को उनके घरों तक पहुंचाने में सफल रहे।

इस संबंध में, प्रारंभ में रामपाल और उसके साथियों (अनुयायियों) के खिलाफ पुलिस थाना बरवाला में भारतीय दंड संहिता की धारा 107/147/148/149/186/ 188/120ख/ 121/ 121क/122/123/224/225/307/332/342/353/436 और आयुध अधिनियम की धारा 25, विस्फोटक सामग्री अधिनियम पीडीपीपी अधिनियम की धारा 3/4 और विधि—विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 16/18/20/22—ग/23 के तहत दिनांक 18.11.2014 की प्राथमिकी सं. 428 के माध्यम से एक मामला दर्ज किया गया था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त मामले की जांच के लिए एक विशेष जांच दल का गठन किया गया था। जांच के दौरान, आश्रम से 18 आग्नेयास्त्र, 19 एयर गन, 45 पेट्रोल बम, एक चिली ग्रेनेड, 04 बुलेट प्रुफ जैकेट, 9675 लाठी, 228 हेल्मेट और 26 केन शील्ड बरामद हुई। जांच के पश्चात् उपर्युक्त मामले में चालान, प्राथमिकी दर्ज की गई है और यह मामला आरोप तय किए जाने पर विचार करने हेतु अपर सत्र न्यायाधीश, हिसार के समक्ष लंबित है।

इस एक्शन में श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.11.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 124—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | रईस मोहम्मद भट्ट,<br>पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 02. | सज्जाद अहमद शाह,<br>उप पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 03. | नजीर अहमद तीली,<br>निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |

04. आरिफ अहमद शेख, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
उप निरीक्षक

05. निसार अहमद डार, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
हेड कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.04.2014 को श्रीनगर के अहमद नगर क्षेत्र में एल ई टी के बाबर उर्फ हाफीज उकासा और अनस (उर्फ) परवेज की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना होने के आधार पर 23वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की सहायता से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्रीनगर, पुलिस अधीक्षक दक्षिण, पुलिस अधीक्षक अभियान, उप पुलिस अधीक्षक अभियान और प्रभारी, ई एस यू श्रीनगर के पर्यवेक्षण में एक संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई। अभियान दल को तीन दलों में बाँटा गया, पहले दल में बाहरी घेराबन्दी के लिए एस एच ओ सौरा और 23वीं बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान शामिल थे, दूसरे दल का नेतृत्व निशाने पर मौजूद मोहल्ले की घेराबन्दी करने के लिए श्री इम्तियाज इस्माइल, पुलिस अधीक्षक दक्षिण श्रीनगर कर रहे थे तथा तीसरे दल का नेतृत्व पुलिस अधीक्षक रईस मोहम्मद भट्ट, पुलिस अधीक्षक हजरतबल कर रहे थे जिनके साथ उप पुलिस अधीक्षक सज्जाद अहमद शाह, निरीक्षक नजीर अहमद तीली, उप निरीक्षक अरिफ अहमद शेख और हेड कांस्टेबल निसार अहमद डार थे ताकि अन्दरूनी घेराबन्दी तथा घर—घर जाकर तलाशी ली जा सके। अभियान दल की उपस्थिति देखते हुए आतंकवादी अब माजिद पुत्र गुलाम अहमद निवासी शादाब कॉलोनी, अहमदनगर नामक व्यक्ति के रिहायशी मकान में प्रवेश करने में सफल हो गए तथा घर के अंदर मौजूद लोगों को बंधक बना लिया। आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने तथा बंधकों को छोड़ने का प्रस्ताव किया गया लेकिन उन्होंने इसे मना कर दिया और तलाशी/अग्रिम दल पर ग्रेनेड फेंके तथा अंधाधुंध गोलियां बरसाने लगे। गोलियों की आवाज सुनकर आस—पास के घरों में रहने वाले लोग सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए उतावले हो उठे। आतंकवादियों द्वारा की जा रही अंधाधुंध गोलीबारी के बीच उप पुलिस अधीक्षक सज्जाद अहमद शाह, निरीक्षक नजीर अहमद तीली, उप निरीक्षक आरिफ अहमद शेख और हेड कांस्टेबल निसार अहमद डार सहित पुलिस अधीक्षक रईस मोहम्मद भट्ट, पुलिस अधीक्षक हजरतबल के नेतृत्व वाले दल उक्त काम के लिए स्वयं आगे आए और अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर बंधकों सहित आम लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले गए। तत्पश्चात् दल ने छिपे हुए आतंकवादियों को समाप्त करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। अपने गलों के आगे फंदा झूलता हुआ पाकर आतंकवादियों ने भ्रामक गोलीबारी शुरू की ताकि भागने के लिए जगह मिल सके और अभियान दल को उलझाया जा सके लेकिन अग्रिम दल द्वारा बारीकी से बनाई गई योजना ने आतंकवादियों को अपने नापाक मंसूबों को सफल नहीं होने दिया और उन्होंने निर्भीक तरीके से इसका जवाब दिया तथा जबाबी गोलीबारी करते हुए लक्षित मकान की ओर बढ़े जिसके कारण दो दुर्दांत आतंकवादी, जिनकी पहचान बाद में बाबर उर्फ उकासा और अनस उर्फ परवेज के रूप में हुई, मार गिराए गए। इन दो दुर्दांत आतंकवादियों को मार गिराया जाना केवल पुलिस अधीक्षक रईस मोहम्मद भट्ट, पुलिस अधीक्षक हजरतबल, उप पुलिस अधीक्षक सज्जाद अहमद शाह, निरीक्षक नजीर अहमद तीली, उप निरीक्षक डार की जबरदस्त बहादुरी और उत्कट जोश से ही संभव हो सका।

1. एके—47 राइफल : 02
2. मैगजीन एके—47 : 06
3. एके—47 के खाली कारतूस : 35

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रईस मोहम्मद भट्ट, पुलिस अधीक्षक, सज्जाद अहमद शाह, उप पुलिस अधीक्षक, नजीर अहमद तीली, निरीक्षक, आरिफ अहमद शेख, उप निरीक्षक और निसार अहमद डार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.04.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 125—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. आशिक हुसैन टाक, (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
उप पुलिस अधीक्षक

02. दिलराज सिंह, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
उप निरीक्षक

03. नजीर अहमद डार, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.11.2012 को, चतलूरा सोपोर में पाकिस्तानी आतंकवादी कमांडर के होने के बारे में प्राप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए, 22 आर आर और 179 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सहित श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक (अभियान) हंदवाड़ा के नेतृत्व में हंदवाड़ा पुलिस तथा उप निरीक्षक दिलराज सिंह के नेतृत्व में सोपोर पुलिस का एक छोटा दल रात्रि के समय संदिग्ध मकान, जहां आतंकवादी छिपा हुआ समझा गया था, की घेराबन्दी हेतु तत्काल चल पड़ा और सुबह पौ फटते ही श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक, उप निरीक्षक दिलराज सिंह और कांस्टेबल नजीर अहमद वाले पुलिस दल ने मकान की तलाशी लेने का निर्णय लिया। पहली प्राथमिकता महिलाओं एवं बच्चों सहित परिवार के 12 सदस्यों, जो घर में मौजूद थे, की सुरक्षा सुनिश्चित करनी थी। पुलिस दल ने सामने के दरवाजे से प्रवेश किया और परिवार के लोगों को आवाज दी लेकिन उनमें से कोई भी बाहर नहीं आया और इसके बदले पुलिस दल को मकान के गलियारे से लगे कमरे से चीखने और रोने की आवाज सुनाई दी। पुलिस दल ने तुरंत भांप लिया कि घर के लोगों को आतंकवादियों ने एक कमरे में बंधक बनाया हुआ है।

चूंकि कमरा भूतल पर था और उसकी खिड़की मकान के बाड़े की ओर थी, पुलिस दल ने एक साथ दरवाजे और खिड़की से कमरे में एकाएक घुसने तथा आतंकवादी को काबू में लेने का निर्णय लिया। तदनुसार, उप निरीक्षक दिलराज सिंह ने खिड़की तोड़ी जबकि अन्य दो सदस्य श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक और कांस्टेबल नजीर दरवाजे पर जोर से धक्का देते हुए आतंकवादी को काबू में करने के लिए तेजी से कमरे में घुसे जिसका ध्यान उस समय उस खिड़की की ओर था जहां से उप निरीक्षक दिलराज प्रवेश कर रहे थे। आतंकवादी ने खिड़की की तरफ गोली चलाई और उप निरीक्षक दिलराज सिंह घायल हो गए लेकिन इससे पहले कि आतंकवादी और क्षति पहुंचाता अन्य दो पदक विजेताओं ने उस पर काबू पाने का प्रयास किया तथा उससे हाथापाई करने लगे और पसलियों में गोली लगने के बावजूद उप निरीक्षक दिलराज सिंह आतंकवादी को पकड़ने तथा उसे हराने के लिए प्रयासरत अपने साथियों की मदद के लिए कूद पड़े। इस कार्रवाई के दौरान बाहरी घेराबन्दी वाली पुलिसध्सेना द्वारा मकान के अन्दर मौजूद लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। आतंकवादी से बार—बार आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन उसने इसकी बजाय पुलिस कर्मियों पर गोली चला दी जो सौभाग्यवश उन्हें नहीं लगी। इससे पहले कि वह दूसरी गोली चलाता श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक ने उस पर गोली चला दी और वह मौके पर मारा गया। मारा गया आतंकवादी पाकिस्तान आधारित आतंकवादी संगठन जैश—ए—मोहममद का चीफ ऑपरेशनल कमांडर था और वह आम नागरिकों और सुरक्षा कार्मिकों की हत्या सहित आतंकवाद की अनेक घटनाओं में वांछित था।

बरामदगी :

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | एके—47 राइफल | : | 01 |
| 2. | एके—मैगजीन | : | 02 |
| 3. | एके—गोलाबारूद | : | 15 राउंड |
| 4. | पिस्तौल | : | 01 |
| 5. | पिस्तौल मैगजीन | : | 01 |
| 6. | पिस्तौल कारतूस | : | 02 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक, दिलराज सिंह, उप निरीक्षक और नजीर अहमद डार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बारध्पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.11.2012 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 126—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गजनफर सैयद,
निरीक्षक

02. मोहम्मद अकबर,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22—23.07.2013 को, एक विशिष्ट सूचना पर कार्रवाई करते हुए गांव गड़वाड़ डाइवर लोलाब (कुपवाड़ा) में, पुलिस और सेना (18 आर आर) द्वारा एक संयुक्त अभियान चलाया गया। प्रारंभ में भागने के सभी मार्ग बन्द कर दिए गए और महत्त्वपूर्ण

स्थानों पर तैनातियां की गईं। पुलिसध्सेना के संयुक्त तलाशी दल बनाए गए और तलाशी अभियान दिनांक 23.07.2013 की सुबह आरंभ हुआ। आतंकवादियों से होने वाले सभी संभावित जोखिमों का मूल्यांकन करने के बाद श्री अब्दुल जब्बार, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक कुपवाड़ा, श्री राजेन्द्र सिंह राही, उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) कुपवाड़ा और निरीक्षक गजनफर सईद के नेतृत्व में दुर्दांत आतंकवादी के छिपने की जगह का सही—सही पता लगाने और आस—पास के रिहाइशी मकानों में फंसे आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के स्पष्ट उद्देश्य के साथ तीन दल गठित किए गए। जैसे ही पुलिस ने लक्षित मकान को घेरने का प्रयास किया, लक्षित मकान के दक्षिणी ओर स्थित एक गौशाला से दनादन गोलियां चलने लगीं और उनके निशाने पर पूर्वी ओर से आ रहा दल था। इस दल ने उचित आड़ लेकर समुचित गोलियां चलाकर प्रत्युत्तर दिया, जिसके कारण आतंकवादी गौशाला में वापस जाने के लिए विवश हो गए। श्री राजेन्द्र सिंह राही, उप पुलिस अधीक्षक (पीसी), कुपवाड़ा के नेतृत्व वाले दल ने उक्त गौशाला को दायरे में लेने के लिए उत्तर की ओर से लक्षित मकान में प्रवेश किया। इसी बीच श्री गजनफर सईद, निरीक्षक के नेतृत्व वाले दल ने पश्चिम की ओर से मकान को घेर लिया। श्री राजेन्द्र सिंह राही, उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) कुपवाड़ा की अगुवाई वाले दल ने लक्षित मकान में प्रवेश किया तथा उस कमरे की ओर बढ़ा जो गौशाला के निकट था, जहां उन लोगों ने शरण ले रखी थी। आतंकवादी ने दल को आगे बढ़ता भांपकर उक्त कमरे की ओर ताबड़तोड़ गोलियां चलाना आरंभ कर दिया। संकट जानकर अन्य दो दल खुले में आ गए और अपनी—अपनी ओर से आतंकवादी से जूझने लगे जिससे वह आड़ लेने के लिए भागने पर विवश हो गया। तत्पश्चात् सभी तीन दलों ने निर्णायक हमला आरंभ किया और लक्षित क्षेत्र को चारों ओर से घेर लिया। आतंकवादी गौशाला से कूद पड़ा और दक्षिण की ओर से खुले मैदान की ओर भागा और कवर फायर करना जारी रखा। तत्क्षण पुलिस दल के सदस्यों ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा और अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना आतंकवादी द्वारा की जा रही अंधाधुंध गोलीबारी के बीच दो दिशाओं से जोड़ी बनाकर रेंगना आरंभ कर दिया और आतंकवादी को बिलकुल नजदीक से मार गिराया।

की गई बरामदगी :

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | एके—56 राइफल | : | 01 |
| 2. | एके—56 मैगजीन | : | 03 |
| 3. | एके—56 राउंड | : | 147 |
| 4. | हैंड ग्रेनेड | : | 01 |
| 5. | खाली कारतूस | : | 31 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री गजनफर सैयद, निरीक्षक और मोहम्मद अकबर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (प) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.07.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 127—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. तेजेन्द्र सिंह,
पुलिस अधीक्षक

02. सैयद मंसूर,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 31.01.2014 को लगभग 1545 बजे, एक सुराग पर कार्रवाई करते हुए एक रिहाइशी मकान में छिपे आतंकवादियों का खात्मा करने के लिए पुलवामा जिले के कंगन गांव में सेना और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ पुलवामा पुलिस द्वारा एक संयुक्त अभियान आरंभ किया गया। तत्काल स्थिति का जायजा लेने के बाद, अभियान दल का नेतृत्व कर रहे श्री तेजेन्द्र सिंह, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, पुलवामा ने छिपे हुए आतंकवादी पर हमला करने की योजना तैयार की। जहां पुलवामा पुलिस ने लक्षित मकानों की पश्चिम दिशा से घेराबन्दी की, वहीं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को पूर्व दिशा और सेना को दक्षिण दिशा का दायित्व सौंपा गया। घेराबन्दी किए जाने के बाद, श्री तेजेन्द्र सिंह, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक पुलवामा, कांस्टेबल सैयद मंसूर के साथ लक्षित मकान की ओर बढ़े, लेकिन लक्षित मकानों में से एक मकान में छिपे आतंकवादियों ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। अनुकरणीय साहस और सूझ—बूझ का परिचय देते हुए श्री तेजेन्द्र सिंह, आई पी एस और कांस्टेबल सैयद मंसूर ने तत्काल पोजिशन ली और गोलियों का प्रभावी तरीके से जवाब दिया जिससे आतंकवादी रक्षात्मक हो गए और लक्षित स्थल से भागने का उसका प्रयास निष्फल हो गया। चूंकि आतंकवादियों की उपस्थिति का पता चल गया था, हो गई थी इसलिए लक्षित मकानों की घेराबन्दी मजबूत की गई।

अब तक यह भी पता चल चुका था कि लक्षित मकान और आस–पास के कुछ मकानों के अन्दर कुछ आम लोग फंसे पड़े हैं, जिसके कारण अभियान दल का कार्य और कठिन हो चला था। लेकिन श्री तेजेन्द्र सिंह, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक पुलवामा की पेशेवर दक्षता और अभियान संबंधी अनुभव के सहारे घेराबन्दी के अंदर फंसे सभी आम लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। इसी बीच रात का अंधेरा घिरने लगा था जिसके कारण रोशनी की व्यवस्था की गई ताकि कोई भी आतंकवादी अंधेरे का फायदा उठाकर दल के हाथ से निकल न जाए। श्री तेजेन्द्र सिंह, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, पुलवामा, जिनकी सहायता कांस्टेबल मंसूर अहमद कर रहे थे, रात भर चौकसी बरतते रहे और यह सुनिश्चित किया कि पूरी रात घेराबन्दी मजबूत रहे। सुबह के समय निर्णायक हमले के लिए एस ओ जी पुलवामा एवं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा सेना को लेकर दो दल बनाए गए। श्री तेजेन्द्र सिंह, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक पुलवामा और कांस्टेबल सैयद मंसूर, जो पुलिस दल का हिस्सा थे, आगे से अभियान की अगुवाई करने के लिए सामने आए और अपने प्राणों की परवाह न करते हुए आतंकवादी को मारने तक उस छिपे हुए आतंकवादी को भीषण गोलीबारी में उलझा दिया। मारे गए आतंकवादी की पहचान बाद में एल ई टी संगठन के एजाज अहमद भट पुत्र जलालउद्दीन भट निवासी चारसू, अवंतीपुरा (श्रेणी "क") के रूप में हुई। उक्त आतंकवादी काफी लंबे समय से पुलवामा जिले में सक्रिय था और क्षेत्र में होने वाली अनेक उग्रवादी घटनाओं में संलिप्त था। उक्त आतंकवादी का मारा जाना एल ई टी संगठन के पूरे ढांचे के लिए जोरदार झटका था।

बरामदगीः

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | एके–56 राइफल | : | 01 |
| 2. | एके–56 मैगजीन | : | 02 |
| 3. | एके–56 राउंड | : | 46 |
| 4. | पाउच | : | 01 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री तेजेन्द्र सिंह, पुलिस अधीक्षक और सैयद मंसूर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.01.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 128–प्रेज/2016–राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैंः––

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री राकेश पंडिता,
सहायक उप निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10.06.2013 को लगभग 2000 बजे, अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा को गांव निलूरा के इलाके में आतंकवादियों की आवाजाही के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना पर कार्रवाई करते हुए, श्री जाविद हसन भट, अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा के पर्यवेक्षण में निलूरा में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 182वीं बटालियन और 55 आर आर के साथ पुलिस शिविर लिट्टर, पुलवामा द्वारा अनेक नाका स्थापित किए गए। इसी बीच, मोटरसाइकिल पर सवार तीन लोग निलूरा मुख्य सड़क की ओर बढ़े। पहले नाका दल ने उनसे रूकने के लिए कहा जिस पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया और भाग गए। दूसरे दल ने भी आतंकवादियों को रूकने तथा अपनी पहचान बताने के लिए कहा लेकिन उन्होंने नाका दल पर गोली चला दी। नाका दल द्वारा इन गोलियों का जवाब दिया गया और दोनों पक्षों के बीच भीषण मुठभेड़ होने लगी। मोटर साइकिल पर सवार लोगों ने नाका दल पर ग्रेनेड फेंके और अंधाधुंध गोलियां चलाई जिसके परिणामस्वरूप दो पुलिस कर्मी घायल हो गए जिन्हें मुठभेड़–स्थल से सुरक्षित बाहर निकाला जाना था। दो पुलिस कर्मियों के घायल होने तथा मुठभेड़–स्थल के आस–पास आम लोगों के फंसे होने के कारण स्थिति गंभीर हो जाने को महसूस करते हुए सहायक उप निरीक्षक राकेश पंडिता की सहायता से अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा ने अपने प्राणों को जोखिम में डालकर आतंकवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के बीच मुठभेड़–स्थल से सभी आम नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाला। तत्पश्चात् अपर पुलिस अधीक्षक, पुलवामा के नेतृत्व वाले दल, जिसमें सहायक उप निरीक्षक राकेश पंडिता शामिल थे, ने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित किया और अपनी जानों को ताक पर रखकर आतंकवादियों के साथ नजदीक से गोलीबारी करने लगे जिससे एक आंतकवादी घटना–स्थल पर ही मारा गया। बाद में मारे गए आतंकवादी की पहचान एल ई टी संगठन के डिस्ट्रिक्ट कमांडर आशिक अहमद लोन उर्फ छोटा रहमान पुत्र गुल मोहम्मद लोन निवासी हेफ शिरमल के रूप में हुई, जबकि दूसरा आतंकवादी अंधेरे और घनी झाड़ियों का लाभ उठाकर मुठभेड़–स्थल से भागने में सफल रहा। तीसरा व्यक्ति इरशाद अहमद मीर पुत्र मोहम्मद रमजान निवासी चकोरा नामक एक आम नागरिक था जिसे पकड़ लिया गया और उसकी बाइक जब्त कर ली गई। अगली सुबह, घटना–स्थल से भागे आतंकवादी को पकड़ने के लिए निलूरा और पिरटकी गांवों में बलों द्वारा अभियान चलाया गया। बलों ने दोनों गांवों के प्रत्येक मकान की तलाशी ली लेकिन दूसरे आतंकवादी का पता नहीं लगाया जा सका।

बरामदगी:

| | | |
|---|---|---|
| 1. | एके–47 राइफल | : 01 |
| 2. | एके–47 मैगजीन | : 02 |
| 3. | एके–47 राउंड | : 26 |
| 4. | पाउच | : 01 |
| 5. | पिस्तौल मैगजीन | : 02 |
| 6. | पिसतौल राउंड | : 09 |

इस मुठभेड़ में श्री राकेश पंडिता, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.06.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 129–प्रेज/2016–राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:––

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | प्रभात रंजन बरवार,<br>उप पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 02. | जय प्रकाश सिंह,<br>निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 03. | पंकज कुमार,<br>उप निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 04. | सतेन्द्र प्रसाद,<br>उप निरीक्ष | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 05. | मनोज बखला,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) (मरणोपरान्त) |
| 06. | विक्रम राई,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 07. | ब्रजेश लेप्चा,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कुछ विध्वंसकारी गतिविधियां चलाने के लिए, योजना बनाने हेतु पुलिस थाना–चौनपुर, जिला–गुमला (झारखंड) के अधीन गांव सिबिल और सकसारी के निकट घने जंगलों में बैठक करने हेतु अपने 250–300 सक्रिय दस्ता सदस्यों के साथ अरविन्द जी उर्फ देवकुमार सिंह, कमांडर, सेंट्रल मिलिट्री कमीशन, सिल्वेस्टर उर्फ शिवनंदन भगत, सेक्रेटरी कोइल सांख जोन, नकुल यादव, सदस्य, बी आर सी, इंद्रजीत, बिरसई, प्रसाद जी के नेतृत्व में सी पी आई (माओवादी) के शीर्ष नेताओं की उपस्थिति के बारे में खुफिया जानकारी मिलने के आधार पर, पुलिस थाना चौनपुर, गुमला (झारखंड) के अधीन गांव सिबिल के निकट नक्सली शिविरों का पता लगाने और उसे नष्ट करने के लिए एक विशेष अभियान "विजय" की योजना बनाई गई। अभियान में शामिल करने के लिए 203 और 209 कोबरा, झारखंड जगुआर के 04 असॉल्ट ग्रुप, 218 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और डी ए पी गुमला की कंपनी के साथ चार दल बनाए गए।

अभियान की योजना के अनुसार, धुसरी पी. एफ. और आस–पास के क्षेत्रों में हमला करने के लिए, 209 कोबरा की 06 टीमों, एजी–19 एवं जेजे के 25 तथा जिला क्यू आर टी गुमला के 20 लड़कों सहित गुमला पुलिस थाने से श्री आरिफ इकराम, उप पुलिस अधीक्षक, श्री दिग्विजय सिंह, ओ. सीध्रायडीह, उप निरीक्षक विद्या शंकर के साथ श्री दीपक कुमार पाण्डेय, उप पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में दल–1 बनाया गया।

पहाड़ी 974 सिबिल पी एफ और आस–पास के क्षेत्रों में हमला करने के लिए 203 कोबरा की 06 टीमों, एजी–16 एवं जे जे के एजी–05 और जिला क्यू आर टी गुमला के 20 लड़कों सहित श्री प्रभात रंजन बरवार, उप पुलिस अधीक्षक, उप निरीक्षक पंकज कुमार ओध्सी चौनपुर, उप निरीक्षक कमलेश पासवान के साथ श्री दीपक कुमार, एस डी पी ओ बसिया के नेतृत्व में दल–2 बनाया गया।

मारवा, रोरेड या किटुआ में हमला करने और सूचना के अनुसार अभियान के दौरान उत्पन्न किसी भी परिस्थिति से लोहा लेने के लिए 209 कोबरा की 04 टीमों जे जे के एजी–17 सहित श्री टी.एन. सिंह, सी.आई. चौनपुर, अनिल कुमार कर्ण, ओ/सी, गुमला के साथ श्री अमीश हुसैन, सी.आई. गुमला के नेतृत्व में दल–3 बनाया गया।

कोबरा की 04 टीमों, जे जे के एजी–17, ए/218 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और डी ए पी सहित श्री विनोद कार्तिक, कमांडेंट 218 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, उप निरीक्षक वीरेन्द्र टोप्पो ओ/सी पालकोट के साथ श्री जतिन नरवाल, पुलिस अधीक्षक गुमला के नेतृत्व में दल–4 को कुइयो, अंजन गनी पी एफ और इलिंगा क्षेत्र में काम करना था। इस दल को अभियान के दौरान मिलने वाली सूचना के अनुसार तथा सुरक्षित बाहर निकलने में एक सहायक दल के रूप कार्य करने का दायित्व भी सौंपा गया था।

श्री दीपक कुमार, एस डी पी ओ बसिया के नेतृत्व वाले दल–2 को उस इलाके में नक्सली शिविरों का पता लगाने और उन्हें नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था जहां कथित रूप से बैठक करने के लिए माओवादियों के शीर्ष नेता अरविन्द जी और किशन दा अपने 250–300 दुर्दांत पी एल जी ए काडरों के साथ ठहरे हुए थे। यह दल दिनांक 13.03.2013 को 0400 बजे अपने लक्ष्य पर पहुंच गया। उप–निरीक्षक पंकज कुमार, ओसी/पी एस चौनपुर, कोबरा 203 सहित अपने दल की अगुवाई कर रहे थे। लगभग 1330 बजे जब हमलावर दल हाइट–974 पर पहुंचा, तो उसके पीछे उप निरीक्षक कमलेश पासवान के नेतृत्व में जिला क्यू आर टी और उसके बाद जे जे के ए जी–05 एवं ए जी–16 के साथ श्री दीपक कुमार एस डी पी ओ वाला दल माओवादियों की तलाश करते हुए सुनियोजित ढंग से बढ़ रहा था। जब दल एक पहाड़ी के पास पहुंचा, तब उनके दल के पीछे वाली पार्टी की टुकड़ियों पर पहाड़ी पर गढ़ बनाए हुए माओवादियों ने घात लगाकर हमला कर दिया। लाभ की स्थिति में होने के कारण नक्सली सैन्य टुकड़ियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कह रहे थे ताकि किसी भी प्रकार के हमले और लड़ाई की संभावना को समाप्त किया जा सके। उन्होंने साथ–साथ सुरक्षा बलों को भारी क्षति पहुंचाने तथा उनके मनोबल और प्रतिबद्धता को तोड़ने के लिए लगभग 10 आई ई डी विस्फोट भी किए। माओवादी सेंट्रल मिलिट्री कमीशन का नेता अरविन्द जी पूर्व की तरफ से पुलिस दल को घेरने के लिए प्रसाद, सिल्वेस्टर और अन्य नक्सली कमांडरों का मार्गदर्शन कर रहा था तथा उन्हें पुलिस कर्मियों से हथियार छीनने का निर्देश भी दे रहा था और कुछ मिनटों के बाद जे.जे. की घिरी हुई टुकड़ियों को निशाना बनाकर एल एम जी गोलियों की बरसात होने लगी। श्री दीपक कुमार, एस डी पी ओ ने स्थिति को भांपते हुए अपने दल को आड़ लेने के लिए कहा और हताहत होने से बचने के लिए अपने दल को सुनियोजित तरीके से तितर–बितर कर दिया तथा सीधी गोलीबारी के साथ–साथ उपलब्ध हथियारों से जवाब देने के लिए कहा। श्री दीपक ने मनोज बाखला, कांस्टेबल को माओवादियों की एल एम जी को लक्ष्य बनाकर 2" मोर्टार बम फेंकने के लिए कहा। उन्होंने उप निरीक्षक पंकज कुमार, उप निरीक्षक कर्णलेस्टि पासवान को टुकड़ियों की सहायता से कवर फायर देने के लिए कहा। इसी बीच श्री दीपक कुमार, एस डी पी ओ, बसिया ने ब्रजेश लेप्चा, कांस्टेबल और विक्रम राय, कांस्टेबल की सहायता से नक्सलियों पर गोली चलाना आरंभ कर दिया। चूंकि मनोज बाखला, कांस्टेबल द्वारा छोड़ा गया एच ई बम निशाने पर लगा, इसलिए तीन नक्सलियों की मौके पर ही मृत्यु हो गई। साथ ही साथ निरीक्षक जय प्रकाश सिंह और पुलिस उप–निरीक्षक सतेन्द्र प्रसाद ने नक्सलियों को निशाना बनाकर गोलियां चलाना आरंभ कर दिया जिसके कारण पूर्व की ओर से एल एम जी से चल रही गोलियां रूक गईं। तत्काल नक्सल सेंट्रल मिलिट्री कमीशन के नेता अरविन्द जी ने नक्सल कमांडर जयराम इंद्रजीत, बिरसई और अन्य को दक्षिण की ओर से एल एम जी फायरिंग करने तथा पुलिस दल को घेरने का आदेश दिया। इस आदेश का पालन करते हुए नक्सलियों ने दक्षिण दिशा से एल एम जी फायरिंग आरंभ कर दी, परन्तु इससे पहले कि घिरा हुआ पुलिस दल समझ पाता एक गोली मनोज बाखला, कांस्टेबल के सिर में लगी और वे वहीं शहीद हो गए तथा ब्रजेश लेप्चा, कांस्टेबल और विक्रम राय, कांस्टेबल को भी गोलियों से गंभीर चोटें आईं। इसी बीच नक्सली कमांडर चिल्लाया और संदीप, चंदन, बलराम और अपने अन्य सहयोगियों को उत्तर दिशा से पुलिस दल को घेरने का आदेश दिया और इसके बाद नक्सलियों ने उत्तर की ओर से एल एम जी फायरिंग आरंभ कर दी और इसके बाद रूक–रूक कर आई ई डी विस्फोट करने लगे। लेकिन, इसी बीच, उप निरीक्षक पंकज कुमार ओध्सी, पुलिस थाना चौनपुर, उप निरीक्षक कमलेश पासवान, उप कमांडेंट 203 कोबरा श्री देवेन सिंह कसवा, कांस्टेबल रमेश कुमार, दुला राम और कांस्टेबल सीमन्त कुमार, 203 कोबरा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना कठिन और प्राणघातक स्थिति में सुनियोजित ढंग से आगे बढ़े और नक्सलियों पर जवाबी गोलीबारी की तथा उनके नापाक मंसूबों को समाप्त कर दिया। यह छापामार टुकड़ियों पर होने वाले सबसे घातक एवं प्राणान्तक हमलों में से एक था जिसमें पांच नक्सली मारे गए और उनके शव उनके साथियों द्वारा ले जाए जाते हुए देखे गए। यह अभियान अनुकरणीय तरीके से निष्पादित किया गया जो सफल अभियानों के इतिहास का निचोड़ है। इस सफल अभियान से सुरक्षा कार्मिकों का मनोबल बढ़ा और यह आगे आने वाली पीढ़ी को प्रोत्साहित करता रहेगा। इसमें नेतृत्व, सहायता, सामंजस्य और मिलकर काम करने की योजना शानदार ढंग से बनाई और निष्पादित की गई थी जिससे सफलता का एक नया अध्याय लिखा जा सका। लाभ की स्थिति में मौजूद नक्सली भौंचक रह गए, उन्हें मार भागाया गया तथा अपनी जगह छोड़ने के लिए विवश कर दिया गया। वे अपनी जगह से भाग खड़े हुए और भारी मात्रा में विस्फोटक और अन्य सामान छोड़ गए। इस अभियान से नक्सलियों के मनोबल और तैयारी को अभूतपूर्व झटका लगा।

की गई बरामदगीः

| | | |
|---|---|---|
| कार्डेक्स तार | : | 40 मीटर |
| इलेक्ट्रिक डेटोनेटर | : | 03 |

रॉट आयरन हैंड ग्रेनेड (देशी) : 15

बिजली का तार : 100 मीटर

15 लीटर की क्षमता वाले कंटेनर में तरल पदार्थ

लैंड माइन्स : 05

2 किग्रा. वजन वाले 05 केन बम और 10 किग्रा. वजन वाले 05 केन बम।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री प्रभात रंजन बरवार, उप पुलिस अधीक्षक, जय प्रकाश सिंह, निरीक्षक, पंकज कुमार, उप निरीक्षक, सतेन्द्र प्रसाद, उप निरीक्षक, स्व. मनोज बखला, कांस्टेबल, विक्रम राय, कांस्टेबल और ब्रजेश लेप्चा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.03.2013 से दिया जाएगा।

(अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 130—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अमरनाथ,
निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.09.2014 को लगभग 1430 बजे गांव दलदलिया के वन क्षेत्र के निकट सीपीआई (माओवादी) दिनेश पंडित, सुरंग यादव और कई अन्य (संख्या में लगभग 14) सहित खूंखार नक्सलियों के इकट्ठा होने के बारे में स्रोत से एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। सूचना के आधार पर, कमांडेंट, 7 बटालियन, सीआरपीएफ के साथ चर्चा करने और सभी उच्चतर पदाधिकारियों को सूचित करने के बाद विशेष अभियान की योजना बनाई गई और इसे आरंभ किया गया।

तदनुसार, लगभग 1705 बजे टीएजी मुख्यालय टिसरी के श्री एस.के. यादव, उप कमांडेंट (डी सी आप्स—7 बटा.) की कमान में 7 बटालियन की क्यूएटी यूनिट (उप कमांडेंट—01, एसआई/जीडी—01, हेड कांस्टेबल/जीडी—02, हेड कांस्टेबल/आरओ—01, कांस्टेबल/जीडी—09, कुल—14) और श्री अजीत कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान में टिसरो से 30 कर्मियों वाली ई/7 की दो प्लाटूनों के साथ निरीक्षक अमरनाथ, गवान सर्कल लक्षित क्षेत्र के लिए पैदल चल पड़े। सभी उचित सावधानियां बरतते हुए और जगह का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए, दल लक्षित क्षेत्र में पहुंचा और तलाशी आरंभ की। लगभग 2315 बजे जब दल गांव दलदलिया के निकट वन क्षेत्र की तलाशी ले रहा था, तभी अचानक सैन्य दल को जंगल से कुछ आवाजें सुनाई दीं।

सैन्य दल ने सामरिक पोजीशन ले ली और सावधानीपूर्वक समूह की ओर बढ़ा। एक सुरक्षित दूरी से और उचित कवर लेने के बाद, निरीक्षक अमरनाथ ने अपनी पहचान बताने के बाद उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहते हुए समूह के बारे में पूछताछ करने का प्रयास किया। पुलिस दल को देखकर कि दूसरी ओर से भारी गोलीबारी आरंभ हो गई। अपनी जान और सरकारी सम्पत्ति को खतरा देखकर, पुलिस दल ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और दोनों ओर से भारी गोलीबारी आरंभ हो गई। निरीक्षक अमरनाथ ने तेजी से नक्सली गतिविधि का आकलन करने और कवर लेने के बाद पोजीशन बदली और नक्सलियों पर गोलीबारी की। यह देखकर कि कुछ नक्सली पोजीशन बदल रहे हैं, उनकी अवस्थिति को सुनिश्चित करते हुए निरीक्षक अमरनाथ अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना खुले में आ गए और आगे बढ़ रहे नक्सलियों पर गोलीबारी की और उन्हें जोर से चिल्लाते हुए सुना। उन्होंने दूसरों को भी प्रेरित किया और नियंत्रित गोलीबारी के साथ उन्हें जवाबी कार्रवाई करने के लिए कहा। इसी बीच, श्री एस.के. यादव, उप कमांडेंट और श्री अजीत कुमार, सहायक कमांडेंट ने दो तरफ (दायीं और बायीं) से चलने का निर्णय लिया और दोनों ओर से नक्सलियों को घेर लिया। एक घंटे तक रूक—रूक कर गोलीबारी होती रही। बलों की भारी गोलीबारी को देखकर, नक्सलियों ने बीच—बीच में गोलीबारी करते हुए और जंगल तथा अंधेरे की आड़ लेते हुए भागना शुरू कर दिया। गोलीबारी बंद होने के बाद भी, सैन्य दल ने सुबह तक इंतजार किया और लगभग 0615 बजे पौ फटने पर एक सघन तलाशी अभियान आरंभ किया गया। तलाशी के दौरान हथियारों के साथ तीन नक्सलियों के शव बरामद हुए। मृतक नक्सलियों की पहचान दिनेश पंडित (एरिया कमांडर), सहदेव मुरमू और जीवा लाल राय के रूप में की गई।

तलाशी अभियान के दौरान निम्नलिखित हथियार और गोलाबारूद भी बरामद किए गए:—

| क्रम संख्या | नामावली | संख्या |
|---|---|---|
| 01. | मैगजीन के साथ एसएलआर राइफल | 01 |
| 02. | मैगजीन के साथ 303 राइफल — मार्क — 4 | 01 |
| 03. | मैगजीन के साथ .315 बोर की राइफल | 01 |

| | | |
|---|---|---|
| 04. | .303 के जिंदा गोला बारूद | 38 |
| 05. | .303 के खाली खोखे | 02 |
| 06. | मैगजीन पाउच | 02 |
| 07. | चार्जर क्लिप | 05 |
| 08. | .315 बोर के जिंदा गोलाबारूद | 49 राउंड |
| 09. | खाली खोखे | 02 |
| 10. | 7.62 एमएम के जिंदा गोलाबारूद | 09 राउंड |
| 11. | 7.62 एमएम के खाली खोखे | 04 |

इस मुठभेड़ में श्री अमरनाथ, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक का तृतीय बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.09.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 131—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बस्तर लक्ष्मण मडवी,
हेड कांस्टेबल

02. दिलीप रूशी पोरेती,
नायक

03. देवनाथ खुशाल काटेंगे,
कांस्टेबल

04. दिनकरशाह बालसिंग कोरेती,
कांस्टेबल

05. संजय लिंगाजी उसेंडी,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.08.2014 को लगभग 0100 बजे मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर और वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों और मार्गदर्शक अनुदेशों के अनुसार, परिवीक्षाधीन उप पुलिस निरीक्षक गंगलवाड ने खोबरामेंधा वन क्षेत्र में नक्सल—रोधी अभियान आरंभ करने के लिए तत्काल मुख्यालय में पार्टी कमांडर बस्तर मडावी, विशेष कार्रवाई समूह दल कमांडर मुकेश उसेन्डी और उनके दलों को बुलाया। जब उनके दलों के कर्मी मुख्यालय में एकत्र हो गए, तो वरिष्ठ अधिकारियों ने उन्हें अभियान और क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए खोबरामेंधा वन क्षेत्र पहुंचने के लिए उपयोग किए जाने वाले मार्ग तथा आकस्मिक आक्रमण के बारे में जानकारी प्रदान की। एक घटे के अंदर सभी तरह से अपने आप को तैयार करने के बाद लगभग 0100 बजे 45 अन्य पुलिस कर्मियों के साथ उक्त पुलिसकर्मी वाहनों में मुख्यालय से रवाना हुए और गंतव्य के निकट वन क्षेत्र में उतर गए। इसके बाद, उन्होंने पैदल खोबरामेंधा वन क्षेत्र की तलाशी लेते हुए आगे बढ़ना आरंभ किया।

इस उद्देश्य के लिए वे युक्तिपूर्वक दो समूहों में बंट गए, पहले दल का नेतृत्व परिवीक्षाधीन उप पुलिस निरीक्षक गंगलवाड ने किया और उनके साथ पार्टी कमांडर बस्तर मडवी और दूसरा समूह चला रहा था। 0830 बजे जब परिवीक्षाधीन उप पुलिस निरीक्षक गंगलवाड और उनका दल देवस्थान के पूर्व में 5 किमी. की दूरी पर जंगल की गहन छानबीन कर रहे थे, तो 40 से 50 हथियारबंद नक्सलियों ने उन पर हमला कर दिया। जंगल में घात लगाकार बैठे हुए नक्सलियों ने पुलिस दल को घातक क्षेत्र में पाकर उन पर तुरंत अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस कर्मियों ने पेड़ों और निकटवर्ती झाड़ियों के पीछे छिपकर तुरंत पोजीशन संभाल ली और परिवीक्षाधीन उप पुलिस निरीक्षक ने नक्सलियों से पुलिस दल के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। नक्सलियों ने पुलिस द्वारा की गई अपील पर ध्यान नहीं दिया और पुलिस दल पर गोलीबारी करते रहे। इस संकटपूर्ण समय में, परिवीक्षाधीन उप पुलिस निरीक्षक गंगलवाड, एनपीसी काटेंगे और एनपीसी कोरेती कवर फायर के साथ नक्सलियों की ओर आगे बढ़े और पार्टी कमांडर मडावी, एनपीसी पोरेती और पुलिस कांस्टेबल उसेन्डी ने दांयी ओर से नक्सलियों पर गोलीबारी करते हुए उन्हें कवर प्रदान किया। इस नाजुक स्थिति

में, पुलिस कर्मियों ने काफी कम दूरी से नक्सलियों का सामना किया और वे अपने साथी पुलिस कर्मियों के ऊपर से गोलियां जाते हुए महसूस कर सकते थे।

वे अपने स्वयं के जीवन को जोखिम में डालकर दुश्मन की दिशा में आगे बढ़ते रहे और साथ ही नक्सलियों पर गोलीबारी करते रहे। जबकि पार्टी कमांडर मडवी के नेतृत्व में दूसरी टुकड़ी दूसरी तरफ से आगे बढ़ी और नक्सलियों पर जवाबी कार्रवाई की। इस टुकड़ी के बहादुर कार्मिक हेड कांस्टेबल मडवी, एनपीसी पोरेती और पीसी उसेन्डी, जो अग्रणी पोजीशन पर थे, अपनी जान की परवाह किए बिना नक्सलियों से वीरतापूर्वक लड़े और नक्सली घात को तोड़ दिया। उपर्युक्त पुलिस कर्मियों द्वारा की गई पहल से साथी दल कर्मी भी प्रेरित हुए और उन्होंने भी अलग—अलग दिशाओं और पोजीशन से आक्रमक रूप से गोलीबारी आरंभ कर दी। इस आक्रामकता से नक्सलियों के बीच आतंक उत्पन्न हो गया और उन्होंने घने जंगल और पहाडी क्षेत्र की आड़ लेकर दूर भागना आरंभ कर दिया। आधे घंटे के बाद, जब नक्सलियों द्वारा की जा रही गोलीबारी बंद हो गई, तब पुलिसकर्मी एक बार फिर इकट्ठा हो गए और स्थिति की समीक्षा की। यह पाया गया कि उप पुलिस निरीक्षक गंगलवाड, पीसी दिनकरशाह बालसिंग कोरेती और एनपीसी देवनाथ खुशाल कटेंगे गोलीबारी के दौरान घायल हो गए थे।

तत्पश्चात, पुलिस दलों ने घटनास्थल और इसके आस—पास के क्षेत्र की तलाशी ली। तलाशी के दौरान, पुलिस को बेहोशी की स्थिति में पड़े हुए काले शर्ट और पैंट में दो अनजान पुरूष नक्सली मिले। उनके पास मैगजीन के साथ एक एसएलआर राइफल, एसएलआर के 32 कारतूस, .303 की एक राइफल, .303 की एक मैगजीन, .303 के 49 कारतूस, 9 एमएम की 01 पिस्तौल, 9 एमएम के 03 कारतूस, 01 मोटोरोला वाकी—टाकी सेट और एक नोट बुक पाई गई।

दोनों बेहोश नक्सलियों को तुरंत वाहन में मालेवाडा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया। डाक्टर ने बेहोश नक्सलियों की जांच की और उन्हें मृत घोषित कर दिया।

खोबरामेंधा के जंगल में आरंभ किया गया अभियान वरिष्ठ अधिकारियों को प्राप्त खुफिया जानकारी पर आधारित था और इसे अल्पावधि में सफलतापूर्वक निष्पादित किया गया। इस अभियान ने एक मिशाल कायम की और यह गढ़चिरौली तथा महाराष्ट्र पुलिस के लिए एक मनोबल बढ़ाने वाला अभियान था।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री बस्तर लक्ष्मण मडवी, हेड कांस्टेबल, दिलीप रूशी पोरेती, नायक, देवनाथ खुशाल काटेंगे, कांस्टेबल, दिनकरशाह बालसिंग कोरेती, कांस्टेबल और संजय लिंगाजी उसेंडी, कांस्टेबल ने अदम्यय वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 132—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | अतुल श्रवण तावडे,<br>उप निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 02. | इन्दरशाह बासुदेव सडमेक,<br>नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 03. | प्रवीण हंसराज भासरकर,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 04. | बाबूराव महारू पाडा,<br>नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 05. | विनोद मेस्सो हिचामी,<br>नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 16.10.2013 को खुफिया आधारित सूचना प्राप्त होने पर, उप पुलिस निरीक्षक तावडे वरिष्ठ अधिकारियों के अनुदेश के अनुसार 2 पार्टी कमांडरों नामतरू एनपीसी इंदरशाह सडमेक और एनपीसी विनोद हिमाची तथा उनके दलों के साथ गढ़चिरौली से जाराबंडी क्षेत्र के लिए वाहनों से चले। नक्सली स्थल के निकट पहुंचने के बाद, वे सभी वाहनों से उतरे और दिनांक 17.10.2013 को

लगभग 0600 बजे जंगल क्षेत्र में नक्सल–रोधी तलाशी अभियान आरंभ किया। इन दलों ने पहाड़ी, घने जंगल वाले क्षेत्र की छानबीन करना आरंभ किया, जो नकसलियों का मजबूत गढ़ भी है। लगभग 0700 बजे, जब ये दल गांव पेन्दुलवरही के निकट वन क्षेत्र की तलाशी ले रहे थे, तो 40–45 अज्ञात सशस्त्र नक्सलियों ने पूर्व नियोजित घात लगाकर अचानक उन पर हमला कर दिया। अभियान प्रभारी के रूप में उप पुलिस निरीक्षक तावडे ने वीरतापूर्वक दोनों दलों के कमांडरों का मार्गदर्शन किया और पुलिस दलों को जमीन पर उपलब्ध रक्षात्मक आड़ लेने के लिए वहां तथा अपने दलों को आत्मरक्षा में गोली चलाने के लिए प्रोत्साहित किया।

पुलिस दल ने अपने आप को तुरंत 3 समूहों में विभाजित किया और नक्सली हमले का जवाब देना आरंभ किया। पार्टी कमांडर हिचामी ने घात लगाकर किए गए हमले का जवाब देने के लिए कार्मिकों का बायीं ओर से नेतृत्व किया और गोलियों की बौछार होने के बावजूद बहादुरी से नक्सलियों की ओर आगे बढ़े। उनके निर्भीक जवाबी हमले से न केवल घात लगाकर किया गया हमला कमजोर पड़ गया, बल्कि इससे कई पुलिस कर्मियों की जानें भी बचाई जा सकी। नक्सलियों के विरूद्ध इस भयंकर लड़ाई के दौरान, हिचामी ने 2 महिला नक्सलियों को घायल अवस्था में देखा।

दूसरी ओर, उप पुलिस निरीक्षक तावडे, एनपीसी सडमेक, एनपीसी पाडा और पीसी भसरकर अपने दल कर्मियों की जान की रक्षा करने और वामपंथी उग्रवादियों को उचित जवाब देने के एक मात्र उद्देश्य से गोलियों की बौछार का सामना करते हुए गोलीबारी की दिशा की ओर वीरतापूर्वक आगे बढ़े। यहां पर उप पुलिस निरीक्षक तावडे ने एक पुरूष नक्सली कैडर को निष्क्रिय कर दिया।

अनुकूल पोजीशन और क्षेत्र होने के कारण आक्रमक नक्सलियों के आरंभ में हावी होने के बावजूद अपने निरंतर प्रयासों, साहस और नेतृत्व के माध्यम से पुलिस निरीक्षक तावडे, पार्टी कमांडर सडमेक और हिचामी ने पुलिस दलों के मनोबल को बढ़ाया। इससे प्रोत्साहित होकर दल के बहादुर सदस्यों अर्थात एनपीसी बाबूवराव पाडा और पीसी प्रवीण भसरकर ने अपने दल कर्मियों की जान की रक्षा करने के लिए अपनी जान को जोखिम में डालकर अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया।

जब उप पुलिस निरीक्षक तावडे, एनपीसी सडमेक, एनपीसी पाडा और पीसी भसरकर पुरूष नक्सली का शव बरामद करने का प्रयास कर रहे थे, तब भारी गोलीबारी से उन्हें निशाना बनाया गया लेकिन दल अपने प्रयास से विचलित नहीं हुआ। वे तब तक नक्सलियों से वीरतापूर्वक लडते रहे, जब तक वे 30–40 मिनट के भयंकर हमले के बाद वहां से भाग नहीं गए।

घटना स्थल की प्रारंभिक तलाशी के दौरान, पुलिस ने सिंगल बोर की एक राइफल, पांच जिंदा राउंड, पांच डेटोनेटरों, पिट्ठू, नक्सली साहित्य और अन्य सामग्रियों के साथ एक पुरूष नक्सली का शव बरामद किया। इस घटना के कुछ दिन बाद, आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों से गहन पूछताछ, विभिन्न मुठभेड़ स्थलों से जब्त किए गए पैम्फलेटों और नक्सलियों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के माध्यम से यह देखा गया कि इस मुठभेड़ में घन्नी नाम की एक अन्य महिला कैडर भी मारी गई थी और छह अन्य कैडर घायल हुए थे।

इस प्रकार, पांच बहादुर पुलिस कर्मियों ने आसूचना पर तुरंत कार्रवाई की और भयंकर गोलीबारी में वीरतापूर्वक पुलिस दल का नेतृत्व किया। इस अभियान का नेतृत्व करते समय किसी ने भी अपनी जान की परवाह नहीं की और न केवल अपने दल कर्मियों की जान की रक्षा करने, बल्कि दो खूंखार नक्सली कैडरों का सफलतापूर्वक सफाया करने में भी अत्यधिक शौर्य का प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अतुल श्रवण तावडे, उप निरीक्षक, इंदरशाह वासुदेव सडमेक, नायक, प्रवीण हंसराज भासरकर, कांस्टेबल, बाबूराव महारू पाडा, नायक और विनोद मेस्सो हिचामी, नायक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.10.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 133–प्रेज/2016–राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:––

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विवेकानंद सिंह,
उप प्रभागीय पुलिस अधिकारी

02. सिलनांग मारक,
कांस्टेबल

03. पिनसाइबोरलांग सोहसांग,
कांस्टेबल

04. रिचर्ड रानी,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 09 अप्रैल, 2015 को पूर्वाह्न में श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस, एसडीपीओ डडेंगरे को विश्वसनीय सूचना मिली कि दिनांक 08 अप्रैल, 2015 की शाम से पुलिस स्टेशन डडेंगरे के अंतर्गत गांव चिबोंगरे में श्री क्लोमेंट संगमा के घर में कम से कम 6 सशस्त्र जीएनएल उग्रवादियों नामतः इंडियन संगमा (एरिया कमांडर), डाल्टन सीएच संगमा, मोलोह, मंडल, चंगदुल, फाइनेंस ने शरण ले रखी है और वे अभी भी वहां ठहरे हुए हैं। यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि ऊपर बताए गए उग्रवादी "गारो नेशनल लिबरेशन आर्मी (जीएनएलए) नामक आतंकवादी संगठन के सदस्य थे।" वे समूचे गारो हिल्स में जबरन धन वसूली, व्यपहरण, हत्या आदि के अनेक मामलों में वांछित थे।

सूचना के आधार पर, श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस ने तुरंत कार्रवाई की और मेघालय पुलिस तथा बीएसएफ की 65 बटालियन डी कंपनी, फुलबारी के संयुक्त दल के साथ फुलबारी में अपने शिविर कार्यालय से डडेंगरे पुलिस स्टेशन की ओर दौड़े। डडेंगरे पुलिस स्टेशन में उन्होंने तुरंत अभियान की योजना बनाई और अभियान आरंभ किया। अभियान दल में दो दल अर्थात श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस के नेतृत्व में हमला दल और श्री संदीप कुमार, सहायक कमांडेंट, बीएसएफ तथा श्री आर.ए. संगमा, सीआईर (डब्ल्यू), फुलबारी के नेतृत्व में कट—ऑफ दल शामिल थे। अभियान के दौरान, हमला दल ने ऊपर उल्लिखित मकान में सशस्त्र उग्रवादियों का पता लगाया। अधिकारी ने उग्रवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। तथापि, उग्रवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। हमला दल ने भी आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की। दोनों ओर से लगभग 10 मिनट तक गोलीबारी होती रही, जिसके बाद उग्रवादियों ने भागना आरंभ कर दिया। उग्रवादी भागते हुए भी अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। यद्यपि, गोलियों की बौछार हो रही थी, फिर भी ऐसे समय में श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस, एसडीपीओ, डडेंगरे ने हमला किया, जिसके बाद बीएनसी सिलनांग मारक, बीएनसी रिचर्ड रानी और बीएनसी 12 पिन साइबोर सोहसांग ने हमला किया। उन्होंने हमला दल के प्रयासों को समन्वित किया और आगे बढ़कर उनका नेतृत्व किया। अपने इस प्रयास के दौरान, हमला दल ने एक उग्रवादी को घायल कर दिया जो गंभीर रूप से घायल हो गया था और उसका शव बाद में बरामद किया गया। अन्य उग्रवादी भारी गोलीबारी की आड़ लेकर जंगल में भाग गए। पुलिस ने मुठभेड़ के घटना स्थल से खाली मैगजीन के साथ 9 एमएम की एक (01) पिस्तौल, 7.65 एमएम की एक (01) मैगजीन, एके गोलाबारुद के 29 (उनतीस) राउंड, 38 (अड़तीस) सिम कार्ड, एक मोबाइल फोन, जीएनएलए डिमांड पैड और मुहर और जीएनएलए का करार विलेख भी बरामद किया।

अभियान की योजना सतर्कतापूर्वक बनाई गई थी और पूर्ण रूपेण निष्पादित किया गया। श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस, एसडीपीओ डडेंगरे ने अभियान के दौरान अत्यधिक साहस, गति, अभियान संबंधी कुशाग्रबुद्धि और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया। यह प्रभावी योजना और निष्पादन के कारण ही था कि भारी गोलीबारी में आने के बावजूद अभियान के दौरान सुरक्षा बल कर्मी घायल अथवा हताहत नहीं हुए।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विवेकानंद सिंह, उप प्रभागीय पुलिस अधिकारी, सिलनांग मारक, कांस्टेबल, पिनसाइबोरलांग सोहसांग, कांस्टेबल और रिचर्ड रानी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.04.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 134—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री आनंद मिश्रा,
सहायक पुलिस अधीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 11.01.2014 को अपराह्न 06:00 बजे एओसी पेट्रोल पम्पः हवाखाना, तुरा, मेघालय में एक बम विस्फोट हुआ [संदर्भ — आयुध अधिनियम की धारा 25(1क) के साथ पठित आईपीसी की धारा 307/427 के तहत मामला सं—13(01) 2014, तुरा पुलिस स्टेशन]। इस बम विस्फोट के संबंध में, श्री आनंद मिश्रा, आईपीएस, सहायक पुलिस अधीक्षक अन्य अधिकारियों के साथ तुरंत विस्फोट के स्थल पर पहुंचे। वहां उन्हें दारेन 'अंगल' क्षेत्र में एएनवीसी (बी) और यूएएलए संगठनों के राष्ट्र—विरोधी तत्वों की उपस्थिति के बारे में स्वयं जिला पुलिस अधीक्षक से सूचना प्राप्त हुई। इस आशय की विश्वसनीय सूचना थी कि बम विस्फोट के लिए ये राष्ट्र—विरोधी तत्व (एएनई) जिम्मेदार थे।

इस सूचना के अनुसरण में श्री आनंद मिश्रा, आईपीएस ने अन्य जिला अधिकारियों के साथ तुरा पुलिस रिजर्व से एक दल तैयार किया और अत्यधिक कम समय में कुशल नेतृत्व वाला अभियान आरंभ किया। यद्यपि वे कट—ऑफ दल के लीडर थे लेकिन अन्य दलों द्वारा पोजीशन लेने से पहले उनके दल के साथ वास्तविक मुठभेड़ हुई।

उनके अथवा उनके दल के पास हथियारों के अलावा कोई नाइट—विजन डिवाइस, बुलेट प्रूफ जैकेट अथवा विशेष गैजेट्स नहीं थे। चारों ओर घना अंधेरा था तथा अज्ञात पहाड़ी क्षेत्र था और उन्हें खूंखार और प्रशिक्षित राष्ट्र—विरोधी विद्रोहियों की वास्तविक

गोलीबारी क्षमता अथवा संख्या की जानकारी नहीं थी। अत्यधिक साहसिक तरीके से युवा सहायक पुलिस अधीक्षक ने आगे बढ़कर अपने दल का नेतृत्व किया और उस स्थान पर पोजीशन लेने के लिए पहाड़ी पर चढ़ गए जहां कथित रूप से विद्रोही मौजूद थे। अचानक विद्रोहियों ने अंधेरे की आड़ में स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी और अपनी ओर आ रहे दल पर ग्रेनेड फेंके। चूंकि सहायक पुलिस अधीक्षक आगे थे, गोलियां उनके सिर के ऊपर से गुजरी और ग्रेनेड ठीक उनके ऊपर फटे। वे पहले हरकत में आए, जवाबी कार्रवाई की और अपने दल को कवर प्रदान किया। सहायक पुलिस अधीक्षक (एएसपी) आनंद मिश्रा, आईपीएस ने अपना धैर्य बनाए रखा, अपने और अपने दल पर पूर्ण कमान और नियंत्रण रखा और ऐसी विपरीत परिस्थिति में उच्चकोटि की वीरता का प्रदर्शन किया जिसके लिए दल तैयार नहीं था क्योंकि यह कट—ऑफ दल था।

दोनों ओर से पूर्ण रूप से गोलीबारी हुई जो लगभग 45 मिनट तक जारी रही। एएसपी के पास अवसर था कि वे या तो आड़ ले लें अथवा पीछे हट जाएं क्योंकि विद्रोही अनुकूल ऊंचाई पर थे, हथियारों से लैस थे और वे अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे और ग्रेनेड फेंक रहे थे। लेकिन बहादुर और निर्भीक अधिकारी ने डटे रहना और राष्ट्र विरोधी तत्वों से लड़ना उचित समझा। श्री आनंद मिश्रा, आईपीएस ने आगे से नेतृत्व करते हुए अनुकरणीय वीरता का प्रदर्शन किया, राष्ट्र—विरोधी तत्वों को उपर्युक्त जवाब दिया और समय पर विद्रोहियों पर जवाबी कार्रवाई करके अपने दल कर्मियों की जान भी बचाई।

इस भयंकर मुठभेड़ में 4 (चार) खूंखार विद्रोहियों को निष्क्रिय किया गया। इसके बाद, अपने दल के साथ एएसपी ने घटना स्थल से 4 (चार) शव, भारी मात्रा में हथियार, गोलाबारुद, आईईडी, विस्फोटक, डेटोनेटर और आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए और जब्त किए (इन सब का उल्लेख आयुध अधिनियम की धारा 25 (1क) और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 5 के साथ पठित आईपीसी की धारा 120/120ख/121/121क/122/123/353/307 के तहत मामला सं. 15(01) 2014, पुलिस स्टेशन तुरा और तुरा पुलिस स्टेशन जीडीई सं. 259, दिनांक 12.01.2014 के साथ पठित दोबाशिपारा बीएच डीडीई सं. 123, दिनांक 11.01.2014 में किया गया है।)

घटना के दौरान, श्री आनंद मिश्रा, आईपीएस ने अत्यधिक उत्कृष्ट वीरता, साहस और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया। उन्होंने विद्रोहियों का सामना किया और स्वचालित हथियारों से लगातार गोलीबारी तथा ग्रेनेडों के विस्फोटों के बीच अपनी स्वयं की जान को जोखिम और खतरे में डाला। उन्होंने सफलतापूर्वक यह सुनिश्चित किया कि जबकि विद्रोहियों को निष्क्रिय किया गया, उनके दल में कोई हताहत अथवा घायल नहीं हुआ और आस—पास के मकानों को कोई समानांतर क्षति नहीं हुई। इस प्रकार, श्री आनंद मिश्रा, आईपीएस ने एक अत्यंत सफल अभियान का नेतृत्व किया और अपने कर्तव्य का निर्वाह करने में उत्कृष्ट वीरता और साहस का प्रदर्शन किया।

बरामदगीः

| क्रम संख्या | सामग्री का नाम | मात्रा |
|---|---|---|
| 1. | 0.22 पिस्तौल | 01 (एक) |
| 2. | 9 एम एम की पिस्तौल | 03 (तीन) |
| 3. | 9 एम एम पिस्तौल (संशोधित) | 01 (एक) |
| 4. | डबल बैरल शॉट गन (डीबीएमएल) | 01 (एक) |
| 5. | सिग्नल गन | 09 (नौ) |
| 6. | 0.22 के गोलाबारुद | 09 (नौ) |
| 7. | 9 एम एम के गोलाबारुद | 07 (सात) |
| 8. | 7.65 के गोलाबारुद | 03 (तीन) |
| 9. | एके गोलाबारुद | 01 (एक) |
| 10. | 7.62 एम एम गोलाबारुद | 43 (तैंतालीस) |
| 11. | 12 बोर के कारतूस | 10 (दस) |
| 12. | एके राइफल के गोलाबारुद के चलाए गए खाली खोखे | 05 (पांच) |
| 13. | 7.62 के गोलाबारुद के चलाए गए खाली खोखे | 03 (तीन) |
| 14. | 9 एमएम के गोलाबारुद के चलाए गए खाली खोखे | 03 (तीन) |
| 15. | हैंड ग्रेनेड (चीन निर्मित) | 01 (एक) |
| 16. | डेटोनेटर्स | 200 (दो सौ) |
| 17. | फ्यूज वायर के साथ डेटोनेटर्स | 124 (एक सौ चौबीस) |
| 18. | फ्यूज वायर (नीली) | 12 (बारह) मीटर |
| 19. | लचीली तारें | 60 (साठ) मीटर |
| 20. | जिलेटिन की छड़ें | 02 (दो) |

| | | |
|---|---|---|
| 21. | होम पाइप | 06 (छह) |
| 22. | खोखले पाइप | 08 (आठ) |
| 23. | विंडो पैनल | 02 (दो) |
| 24. | एम सील | 13 (तेरह) |
| 25. | देशी बम (आईईडी) (प्रत्येक लगभग 10 किग्रा) | 09 (नौ) |

इस मुठभेड़ में श्री आनंद मिश्रा, सहायक पुलिस अधीक्षक ने अदम्य) वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.01.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 135—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | ब्रिजेश कुमार राय,<br>पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 02. | चन्द्र शेखर दास,<br>सारजेंट | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 04. | सामंत दुर्गा,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 05. | लुकेश कुमार भोई,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 06. | ललित कुमार नायक,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.03.2015 को रात्रि लगभग 9.00 बजे पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी, श्री ब्रिजेश कुमार राय को विश्वसनीय सूचना मिली कि राज्य के विरूद्ध अपने सशस्त्र संघर्ष के भाग के रूप में हिंसक और विध्वंसक गतिविधियों में शामिल होने के लिए 3—4 दिनों से गांव गदलाइरना के निकट पुलिस स्टेशन गोलामुंडा के अंतर्गत चुरा रिजर्व जंगल में अत्याधुनिक हथियारों के साथ भारी हथियारबंद प्रतिबंधित माओवादियों का एक समूह ठहरा हुआ है। उनका इरादा महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों पर हमला करना, पुलिस मुखबिरों के रूप में बताकर गांव वालों की हत्या करना और अपनी रणनीति के रूप में कुछ पुलिस कर्मियों को भी मारना था। तदनुसार, सशस्त्र माओवादियों को पकड़ने के लिए पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी, श्री ब्रिजेश कुमार राय, आई पी एस के नेतृत्व में एक तलाशी अभियान की योजना बनाई गई। उस दिन, एस ओ जी के सभी दल, जो कालाहांडी में तैनात थे और जिला स्वयंसेवी बल (डीवीएफ) एक अन्य माओवादी—रोधी अभियान में व्यस्थ थे। इस प्रकार, जिले में काफी कम संख्या में प्रशिक्षित कमांडो उपलब्ध थे। श्री ब्रिजेश कुमार राय, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी ने अनुकरणीय साहस और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया और उपलब्ध बल के साथ व्यक्तिगत रूप से तलाशी अभियान का नेतृत्व किया। उन्होंने जिला स्वयंसेवी बल के तीन कांस्टेबलों, कालाहांडी के तीन एपीआर पीएसओ, चार अन्य एपीआर कांस्टेबलों नामतः परमानंद बाग, किशोर कुमार राउत, राजेन्द्र कुमार साहु और राजेन्द्र प्रधान, कालाहांडी जिले के उप निरीक्षक सशस्त्र समीर कुमार स्वेन और सारजेंट चन्द्र शेखर दास को शामिल करके एक दल बनाया। जब पुलिस दल जंगल क्षेत्र में पहुंचा, तो सशस्त्र माओवादियों ने अचानक पुलिस दल पर अकारण गोलीबारी कर दी तथा उन्हें मारने और उनके हथियार एवं गोलाबारूद्ध लूटने के लिए ग्रेनेड फेंके। इसके परिणामस्वरूप, पुलिस दल के सदस्य सारजेंट चन्द्र शेखर, कांस्टेबल सामंत दुर्गा, कांस्टेबल लुकेश कुमार भोई, कांस्टेबल ललित कुमार नायक घायल हो गए। श्री ब्रिजेश कुमार राय, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी ने अनुकरणीय साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया, पुलिस दल को दो भागों में बांटा और संख्या में कम होने तथा क्षेत्र की बाधाओं के बावजूद बहादुरीपूर्वक जवाबी कार्रवाई की। श्री ब्रिजेश कुमार राय, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी अपने चार कमांडों के साथ माओवादियों को उलझाते हुए रणनीतिक तरीके से आगे बड़े और पुलिस पर हमले को विफल करने के लिए आक्रामक जवाबी हमला किया। हमले के दौरान श्री ब्रिजेश कुमार राय, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी और उनके चार कमांडो नामतः सारजेंट चन्द्र शेखर दास, कांस्टेबल सामंत दुर्गा, कांस्टेबल लुकेश कुमार भोई और कांस्टेबल ललित कुमार नायक लोक सेवा और

राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना और गोलीबारी के बीच अपने आपको खतरे में डालकर वीरतापूर्वक लड़े।

पुलिस की वीरतापूर्वक कार्रवाई के कारण, माओवादी पास के पहाड़ी क्षेत्र में भाग गए। जब माओवादियों की ओर से गोलीबारी बंद हो गई, तो सभी एहतियाती उपाय करते हुए पुलिस दल ने क्षेत्र की तलाशी ली और उन्हें एक इंसास राइफल, 14 जिंदा इन्सास गोलाबारूद के साथ एक इन्सास मैगजीन, 23 जिंदा कारतूस, एसएलआर के 28 जिंदा गोलाबारूद के साथ एक एसएलआर मैगजीन, 4 थैलों, कुछ दवाइयों आदि के साथ एक शव मिला, बाद में जिसकी पहचान सूरज उर्फ मारिया गोट्टा, जूनागढ़ एरिया कमेटी के डिवीजनल कमांडर के रूप में हुई (जिस पर ओडिशा सरकार ने 4 लाख रु. के इनाम की घोषणा की हुई थी)।

अभियान के दौरान, उपर्युक्त पुलिस अधिकारियों और कर्मियों ने अनुकरणीय साहस और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया और शत्रुओं द्वारा उनको गंभीर रूप से हताहत करने का प्रयास करने के बावजूद पुलिस की ओर से किसी के हताहत हुए बिना सशस्त्र माओवादियों को निष्क्रिय करने में सफल रहे और इस प्रकार माओवादियों द्वारा सिविलियनों पर बड़े हिंसक हमले को रोका और बहुमूल्य जानें बचाई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री ब्रिजेश कुमार राय, पुलिस अधीक्षक, चन्द्र शेखर दास, सारजेंट, सामंत दुर्गा, कांस्टेबल, लुकेश कुमार भोई, कांस्टेबल और ललित कुमार नायक, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.03.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 136—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | मित्रभानु महापात्र, पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार) |
| 02. | संतोष जुआंग, हवलदार | (वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार) |
| 03. | शिव शंकर नायक, लांस नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार) |
| 04. | पबित्र मोहन नायक, लांस नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 05. | बलभद्र माझी, कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 06. | सहदेव डोरा, कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 31.07.2015 को मल्कानगिरि पुलिस को प्रतिबंधित सीपीआई(माओवादी) संगठन के सशस्त्र कैडरों की उपस्थिति के संबंध में विश्वनीय सूचना प्राप्त हुई। सूचना के अनुसार, माओवादी दिनांक 21.07.2015 से 03.08.2015 तक शहीदी सप्ताह के दौरान मल्कानगिरि नगर में हिंसक विनाशकारी हमला करने की योजना बना रहे थे। यह सूचना प्राप्त होने पर, श्री मित्रभानु महापात्र, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक मल्कानगिरि जिला पुलिस के 34 कमांडों का एक दल बनाया और माओवादी समूह को ढूंढ़ने के लिए तंडीकी वन क्षेत्र की ओर गए। जब दल सघन तलाशी ले रहा था, तो सशस्त्र माओवादियों ने जंगल में स्थापित किए गए अस्थासी शिविर से स्वचालित हथियारों से अकारण गोलीबारी आरंभ कर दी। उन्होंने पुलिस पर एक तरफा हमला कर दिया जिससे पुलिस दल शत्रु की गोलीबारी के ठीक सामने आ गया। तीन कमांडो नामतः हवलदार संतोष जुआंग, लांस नायक, पवित्र मोहन, नायक और कांस्टेबल सहदेव डोरा माओवादियों द्वारा फेंके गए ग्रेनेड की भारी गोलीबारी से घायल हो गए।

श्री मित्रभानु महापात्र, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि के नेतृत्व में पुलिस दल ने संख्या में कम और क्षेत्र की गंभीर बाधाओं के बावजूद निडरतापूर्वक जवाबी कार्रवाई की। श्री मित्रभानु महापात्र 2 कमांडो नामतः श्री शिव शंकर नायक और बलभद्र मांझी के साथ भारी गोलीबारी का सामना करते हुए आगे बढ़े और शत्रु पर भारी हमला कर दिया जिससे माओवादियों को पीछे हटना पड़ा। इस

दौरान, 3 कमांडो नामतः हवलदार संतोष जुआंग, लांस नायक पवित्र मोहन, नायक और कांस्टेबल सहदेव डोरा के एक दल ने कुछ माओवादियों पर रणनीतिक जवाबी हमला करके एक तरफ से किए गए हमले का जवाब दिया। पुलिस दल के वीरतापूर्ण कार्य से काफी माओवादी हताहत हुए जिसमें माओवादी एरिया कमांडर बंडी कविता उर्फ पोडाई दलम की जानकी और अन्य दो माओवादी कैडर नामतः कोसा मदकामी और बीर मदकामी की मौत हो गई जबकि माओवादी पुलिस दल को काफी कम समानांतर क्षति पहुंचा सके। ओडिशा सरकार ने अधिसूचना सं. 2708/सी, भुवनेश्वर, दिनांक 15.10.2013 के द्वारा बंदकी उर्फ जानकी, एरिया कमांडर पर 4,00,000 रु. के इनाम की घोषणा कर रखी थी।

दल के अग्रणी श्री मित्रभानु महापात्र, पुलिस अधीक्षक और ऊपर उल्लिखित 5 कमांडो ने अनुकरणीय साहस एवं दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और राष्ट्र के हित में अपनी व्यक्तिगत जान और सुरक्षा को जोखिम में डाला। उनकी निर्भीक कार्रवाई से एक बड़ी हिंसक विनाशकारी कार्रवाई को भी नाकाम किया गया जिसे माओवादियों ने दिनांक 27.07.2015 से 03.08.2015 तक शहीदी सप्ताह के दौरान अंजाम देने की योजना बना रखी थी। उपर्युक्त वीरतापूर्ण कार्यों से राज्य की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में काफी मदद मिली।

की गई बरामदगीः

| | | |
|---|---|---|
| (क) | .303 राइफल | — 02 |
| (ख) | एसबीएमएल बंदूकें | — 02 |
| (ग) | .303 बाल गोलाबारूद | — 58 |
| (घ) | 9 एम एम बाल गोलाबारूद | — 03 |
| (ड.) | उच्च विस्फोटक ग्रेनेड | — 01 |
| (च) | 9 एम एम की स्टेन मैगजीन | — 01 |
| (छ) | 9 एमएम कारबाइन मैगजीन | — 01 |
| (ज) | वाकी टाकी | — 01 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री मित्रभानु महापात्र, पुलिस अधीक्षक, संतोष जुआंग, हवलदार, शिव शंकर नायक, लांसनायक, पवित्र मोहन नायक, लांसनायक, बलभद्र मांझी कांस्टेबल और सहदेव डोरा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक का द्वितीय बार/पुलिस पदक का तृतीय बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.07.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 137—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का चतुर्थ बार सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | रबिन्द्र सबर,<br>उप निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 02. | संतोष जुआंग,<br>हवलदार | (वीरता के लिए पुलिस पदक का चतुर्थ बार) |
| 03. | शिव शंकर नायक,<br>लांस नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार) |
| 04. | पवित्र मोहन नायक,<br>लांस नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार) |
| 05. | त्रिनाथ तोतापड़िआ<br>लांस नायक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19.09.2015 को भेजागुडा वन क्षेत्र में दरभा डिवीजन के सीपीआई (माओवादी) सशस्त्र कैडरों के एक समूह की आवाजाही के संबंध में विश्वसनीय सूचना मिलने पर, सशस्त्र विद्रोहियों से निपटने के लिए एक छोटे दल वाले कमांडो अभियान की योजना बनाई गई। चूंकि भेजागुडा के बाहर एक व्यस्त साप्ताहिक बाजार था, इसलिए पुलिस दल के जोखिम में पड़ने और अभियान में समझौता करने की अधिक संभावना थी। इसलिए उपर्युक्त मुद्दों का समाधान करने और इनसे संबंधित क्षति को भी कम करने के लिए छोटे दल के पुलिस कर्मी भारी हथियारबंद और संख्या में अधिक शत्रु की तुलना में केवल पिस्तौलों से लैस थे। ऐसा कार्य न केवल अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना पुलिस कर्मियों के शौर्य को दर्शाता है, बल्कि सिविलियन जनसंख्या की जान और सम्पत्तियों के प्रति उनकी चिंता को भी दर्शाता है।

छह पुलिस कर्मियों के छोटे दल को उप निरीक्षक (ए) रबिन्द्र सबर और हवलदार संतोष जुआंग के नेतृत्व में पुनः दो दलों में विभाजित किया गया और वे साप्ताहिक बाजार की ओर जाने वाली दो सड़कों पर घात लगाकर बैठ गए। चूंकि, वे जिस स्थान पर घात लगाकर बैठे थे, वहां पर पेड़—पौधे कम थे, इसलिए माओवादी समूह के स्काउट ने दूर से ही उप निरीक्षक रविन्द्र सबर के नेतृत्व वाले पुलिस दल को देख लिया और पूरे माओवादी दल ने स्वचालित हथियारों से उन पर अंधाधुंध गोलीबारी की और ग्रेनेड भी फेंके। इस भयंकर हमले में सभी सदस्य अर्थात उप निरीक्षक (ए) रबिन्द्र सबर सहित लांस नायक शिव शंकर नायक और लांस नायक त्रिनाथ तोतापड़िआ गंभीर रूप से घायल हो गए। चूंकि पहला पुलिस दल असुरक्षित स्थिति में था, इसलिए हवलदार संतोष जुआंग के नेतृत्व में दूसरे दल ने माओवादी दल पर भीषण जवाबी हमला किया। चूंकि पुलिस कर्मी केवल पिस्तौल से लैस थे, इसलिए प्रभावी गोलीबारी में माओवादियों को उलझाने के लिए उन्हें उनके काफी निकट जाना जरूरी था। आगे बढ़ने की ऐसी अनिश्चित गतिविधि के दौरान, प्रेरित पुलिस कर्मियों के छोटे दल का सामना संख्या में अधिक शत्रु की भारी गोलीबारी से हुआ लेकिन सभी प्रत्याशंकाओं से परे यह उन्हें अपना कर्तव्य निभाने से नहीं रोक सका। इस तूफानी जवाबी हमले ने माओवादी समूह को पूर्णतः अचम्भे में डाल दिया और उन्हें उनकी सुरक्षित पोजीशन से हटा दिया।

दूसरे दल द्वारा निर्भीक चाल से पहला दल भी प्रेरित हुआ और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने वीरतापूर्वक जवाबी कार्रवाई की। विपरीत परिस्थितियों में हुई गोलीबारी में पुलिस कर्मियों ने पुलिस बलों की सर्वोच्च परम्परा को बरकरार रखते हुए उच्च स्तरीय साहस और अदम्य वीरता का प्रदर्शन किया। शत्रु के सामने उनकी बहादुरी से संख्या में अधिक शत्रु में खलबली मच गई और वे भाग गए। उक्त गोलीबारी में माओवादी कमांडर किशोर कोरम उर्फ सुनाधार, डिप्टी कमांडर लक्ष्मण कुंजामी और सशस्त्र गार्ड घासी मुचाकी मारे गए। ओडिशा सरकार ने गृह विभाग, ओडिशा की अधिसूचना सं. 2708/ग, भुवनेश्वर, दिनांक 15.10.2013 के द्वारा सुनाधार पर 5,00,000/—रु. और लक्ष्मण पर 4,00,000/—रु. का इनाम की घोषणा कर रखी थी।

दल के नेता के और ऊपर उल्लिखित कमांडो ने शत्रु के सामने उच्च स्तरीय साहस और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और कर्तव्य के लिए अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह नहीं की। उनकी निर्भीक कार्रवाई ने सभी सुरक्षा बलों के लिए शानदार सफलता सुनिश्चित की क्योंकि पुलिस कार्रवाई में मारा गया शत्रु सुनाधार छत्तीसगढ़ और ओडिशा में विभिन्न घटनाओं के सौ से अधिक पुलिस कर्मियों की हत्या का मास्टर माइंड था।

बरामदगीः

| | | | |
|---|---|---|---|
| 01. | मैगजीन के साथ .303 की राइफल | — | 01 |
| 02. | देशी रिवाल्वर | — | 01 |
| 03. | .303 के बाल गोलाबारूद (जिंदा) | — | 04 |
| 04. | 9 एम एम के जिंदा बाल गोलाबारुद | — | 11 |
| 05. | वाकी टाकी | — | 03 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रबिन्द्र सबर, उप निरीक्षक, संतोष जुआंग, हवलदार, शिव शंकर नायक, लांस नायक, पवित्र मोहन नायक, लांस नायक और त्रिनाथ तोतापड़िआ, लांस नायक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का द्वितीय बार/पुलिस पदक का तृतीय बार/पुलिस पदक का चतुर्थ बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.09.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 138—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, तेलंगाना पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैंः——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. मूताकोडरू चन्द्रशेखर,
अपर पुलिस अधीक्षक

02. कैथा रविन्द्र रेड्डी,
निरीक्षक

03. सैयद अब्दुल करीम,
हेड कांस्टेबल

04. मोहम्मद मुजीब,
हेड कांस्टेबल

05. मोहम्मद ताज पाशा,
कांस्टेबल

06. एस. राजवर्धन रेड्डी,
कांस्टेबल

07. मोहम्मद मुशरफ बाबा,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री के. कुकुदापु श्रीनिवासुलु, पीसी ने उपरोक्त पुलिस अधिकारियों के साथ अपनी जान जोखिम में डालकर देश में अनेक आतंकी हमलों, अनेक निर्दोष व्यक्तियों की हत्या करने और आर्थिक अवसंरचना को ध्वस्त करने में शामिल खूंखार आतंकवादी आलम जेब अफरीदी को पकड़ने में अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और इस्लामिक स्टेट (आईएस) द्वारा चलाए जा रहे जुनूद–उल–खलीफा फिल हिंद आतंकी संगठन द्वारा बनाए गए आसन्न आतंकी हमलों को रोका।

दिनांक 21.01.2016 को उपरोक्त पुलिस अधिकारी कर्नाटक में कुछ संदिग्ध आतंकवादियों को पता लगाने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए एनआईए की मदद करने हेतु बेंगलुरू शहर गए। पता लगाते समय दिनांक 23.01.2016 को सायं 4 बजे उन्हें बेंगलुरू में डोडला नागा मगला रोड पर हीरो स्प्लेंडर पर पीछे बैठी एक महिला के साथ जाते हुए एक संदिग्ध आतंकवादी मिला। तब पुलिस टीम ने उसका पता लगाने के लिए मोटरसाइकिलों पर संदिग्ध का पीछा किया। संदिग्ध व्यक्ति अपना पीछा किया जाता हुआ देखकर अचानक पीछे मुड़ा और उसने पुलिस की बाइक में टक्कर मार दी। जैसे ही पुलिस कर्मी नीचे गिरे, वह उन पर झपटा और चाकू से हमला कर दिया और भागने का प्रयास किया। हाथापाई में श्रीनिवास, पीसी पेट में चाकू लगने से घायल हो गए। पुलिस कर्मियों ने हमले का सामना किया, उस पर काबू पाया और उसे पकड़ लिया। आरोपी की पहचान आलम जेब अफरीदी के रूप में हुई और महिला उसकी पत्नी यासमीन है।

आलम जेब अफरीदी पहले एसआईएमआई (सिमी) का कार्यकर्ता था और बाद में इंडियन मुजाहिद्दीन और इसके बाद इस्लामिक स्टेट का कार्यकर्ता बना। वह अहमदाबाद (2008) के 12 श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोटों, चर्च स्ट्रीट विस्फोट और इजराइल वीजा प्रोसेसिंग सेन्टर (बेंगलुरू) को जलाने, इस्लामिक स्टेट षडयंत्र मामला आदि में शामिल है। वह वर्ष 2010 से मैकेनिक बनकर बेंगलुरू में रहा। उसने हैदराबाद में आईएस मॉड्यूल नजीफ खान को आईईडी बनाने और इसका उपयोग करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जो आईएस मॉड्यूलों को अवसंरचना उपलब्ध कराता है। आलम जेब जिहाद से आत्मसात् फिदायीन भी है। उसकी गिरफ्तारी से आईएस से सम्बद्ध जुनूद–उल–खलीफा फिल हिंद मॉड्यूल का भी पता चला, पाइप बमों, विस्फोटक सामग्री, जिहादी साहित्य आदि की बरामदगी के अलावा हैदराबाद और देश में कई जगह इसके 22 कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया, जिससे बड़े समकालिक आतंकी हमले को रोका गया। आलम जेब अफरीदी की गिरफ्तारी के सम्पूर्ण अभियान और जुनूद–उल–खलीफा फिल हिंद का पता लगाने में उपरोक्त पुलिस अधिकारियों ने भाग लिया।

इन पुलिस अधिकारियों ने अपनी जान को जोखिम में डालकर आलम जेब अफरीदी और जुनूद उल खलीफा फिल हिंद के 22 अन्य संदिग्ध आतंकवादियों को गिरफ्तार किया और भारत में आसन्न आतंकी हमलों को रोका।

बरामदगी:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | पाइप बम | — | 02 |
| 2. | विस्फोटक सामग्री | — | 02 किग्रा. (लगभग) |
| 3. | चाकू | — | 04 |

4. डेस्क टॉप, लैपटाप, मोबाइल फोन, पासपोर्ट और जिहादी साहित्य जैसी आपत्तिजनक सामग्री।

इस आप्रेशन में सर्व/श्री मुताकोडरू चन्द्रशेखर, अपर पुलिस अधीक्षक, कैथा रविन्द्र रेड्डी, निरीक्षक, सैयद अब्दुल करीम, हेड कांस्टेबल, मोहम्मद मुजीब, हेड कांस्टेबल, मोहम्मद ताज पाशा, कांस्टेबल, एस. राजवर्धन रेड्डी, कांस्टेबल, एवं मोहम्मद मुशरफ बाबा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.01.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 139—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, तेलंगाना पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | | |
|---|---|---|---|
| 01. | डुडेकुला सिद्दैया,<br>उप निरीक्षक | (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक) | (मरणोपरांत) |
| 02. | चौगोनी नागराजु,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक) | (मरणोपरांत) |
| 03. | डा. थाटीपारथी प्रभाकर राव,<br>पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |
| 04. | एन. अनिल कुमार,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |
| 05. | वेम्दादी रमेश,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |
| 06. | कोनाथम मधुसूदन,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |
| 07. | थोड़ेती शिवा कोटेश्वर राव,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |
| 08. | मुथीनेनी श्रीनू,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |
| 09. | अन्नारेड्डी चिन्ना बाला गंगीरेड्डी,<br>निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |
| 10. | एल. जानकीराम,<br>कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) | |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

उपरोक्त पुलिस अधिकारी नालगोंडा जिला पुलिस में कार्य करते थे। उनमें से, घटना से संबंधित इस वीरतापूर्ण कार्य के दौरान श्री डुडेकुला सिद्दैया, उप निरीक्षक और श्री चौगोनी नागराजु, कांस्टेबल ने अपनी जान गंवाई और श्री अन्नारेड्डी चिन्ना बाला गंगीरेड्डी, निरीक्षक गोली लगने से घायल हो गए। उपरोक्त सभी पुलिस अधिकारियों को पता था कि उनके सामने प्रतिबंधित एसआईएमआई (सिमी) के खूंखार सशस्त्र आतंकवादी थे जिन्होंने इस वीरतापूर्ण कार्य से दो दिन पहले ही पुलिस दल के दो सदस्यों को मार दिया था और दो अन्य पुलिस कर्मियों को घायल कर दिया था और एक हथियार (9 एमएम कारबाइन) भी छीन लिया था।

दिनांक 04.04.2015 को अपने स्त्रोतों से इस सूचना के प्राप्त होने पर डा. थाटीपारथी प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक ने तुरंत उपलब्ध बल को एकत्र किया और आक्रमणकारियों को पकड़ने तथा जवाबी कार्रवाई करने के लिए तलाशी अभियान चलाया। श्री डुडेकुला सिद्दैया, उप निरीक्षक ने स्वयं अभियान का नेतृत्व किया और बलों को आगे बढ़ने तथा आक्रमणकारियों के बचकर भागने के संभावित मार्गों को बंद करने का निर्देश देते हुए आक्रमणकारियों का पीछा किया।

आक्रमणकारियों को अरवापल्ली गांव के निकट देखा गया और श्री एन. अनिल कुमार, कांस्टेबल और श्री वेम्दादी रमेश, कांस्टेबल ने हथियर न होने के बावजूद उनका पीछा करना आरंभ किया। उन्होंने आक्रमणकारियों को अनंतरम (V) में हथियार के साथ देखा और डा. थाटीपारथी प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक और अन्य पुलिस दलों को आतंकवादियों का स्थान लगातार बताते रहे। आक्रमणकारियों द्वारा उन पर गोलीबारी किए जाने के बावजूद वे धैर्य और दृढ़ निश्चय के साथ अपना कार्य करते रहे।

उपर्युक्त सूचना के आधार पर, डा. थाटीपारथी प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक उपरोक्त सं 1, 2 एवं 6 से 8 तक अंकित पुलिस अधिकारियों के साथ एक वाहन में एवं सं. 9 और 10 पर अंकित पुलिस अधिकारी अन्य वाहन में उनके पीछे—पीछे जानकीपुरम गांव के बाहर पहुंचे और आतंकवादियों का सामना किया। श्री डुडेकुला सिद्दैया, उप निरीक्षक ने वीरतापूर्वक जवाबी गोलीबारी की लेकिन घातक गोली लगने से वे घायल हो गए। श्री चौगोनी नागराजु, ड्राइवर ने श्री डुडेकुला सिद्दैया, उप निरीक्षक का हथियार ले लिया और आक्रमणकारियों पर गोलीबारी की और उनमें से एक को मार गिराया।

इसी बीच, दूसरे आतंकवादी ने श्री अन्नारेड्डी चिन्ना बाला गंगीरेड्डी, निरीक्षक के वाहन पर गोलीबारी आरंभ कर दी। श्री अन्नारेड्डी चिन्ना बाला गंगीरेड्डी, निरीक्षक और श्री एल. जानकीराम, कांस्टेबल ने आक्रमणकारी को उलझाए रखा और जवाबी गोलीबारी आरंभ की। श्री अन्नारेड्डी चिन्ना बाला गंगीरेड्डी, निरीक्षक को गोली लगी, लेकिन फिर भी वे लड़ते रहे। तब आक्रमणकारी पहले वाहन

के पास गए और सं. 6 से 8 तक अंकित पुलिस अधिकारियों को मारने का प्रयास किया। तथापि, इन 3 तक पुलिस अधिकारियों, जोकि बिना हथियार के थे, ने साहसिक तरीके से जवाब दिया और आतंकवादी को निष्क्रिय करने के लिए उसे निरस्त करने और पकड़ने का प्रयास किया। दूसरा आतंकवादी गोली लगने से घायल हो गया और जमीन पर गिर गया।

बरामदगीः

1. 7.65 एमएम की दो देशी पिस्तौलें।

2. 9 एमएम की एक कारबाइन (पुलिस से छीनी हुई)।

3. 19,800/—रु. नकद।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) डुडेकुला सिद्दैया, उप निरीक्षक, (स्व.) चौगोनी नागराजु, कांस्टेबल, डा. थाटीपारथी प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक, एन. अनिल कुमार, कांस्टेबल, वेम्दादी रमेश, कांस्टेबल, कोनाथम मधुसूदन, कांस्टेबल, थोड़ेती शिवा कोटेश्वर राव, कांस्टेबल, मुथीनेनी श्रीनू, कांस्टेबल, अन्नारेड्डी चिन्ना बाला गंगीरेड्डी, निरीक्षक और एल. जानकीराम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.04.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 140—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, तेलंगाना पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैंः——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राजेश कुमार,
पुलिस अधीक्षक

02. माडा दयानंदा रेड्डी,
उप पुलिस अधीक्षक

03. सीएच. आर.वी. फनीन्दर,
निरीक्षक

04. बेमुला भास्कर,
निरीक्षक

05. गंन्गानी सत्यनारायण,
रिजर्व उप निरीक्षक

06. सोनी लाल अमृत,
सहायक उप निरीक्षक

07. सैयद सरवर पाशा,
हेड कांस्टेबल

08. गोलानकोंडा नरेन्दर,
कांस्टेबल

09. मोहम्मद कादिर,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री राजेश कुमार, पुलिस अधीक्षक एवं उपरोक्त अंकित अन्य आठ पुलिस कर्मियों ने अपनी जान को जोखिम में डालकर अनेक राज्यों और एनआईए द्वारा वांछित प्रतिबंधित एसआईएमआई (सिमी) संगठन के हथियारबंद और खूंखार आतंकवादियों (नामतः अमजद, जाकिर, सालिक, महबूब, सभी खंडवा, मध्य प्रदेश के निवासी) की आवाजाही का पता लगाया। ये बंगलौर—गुवाहाटी एक्सप्रेस ट्रेन, बिजनौर, पुणे में फराशखाना पुलिस स्टेशन में बम विस्फोटों, मध्य प्रदेश और तेलंगाना में पुलिस पदाधिकारियों की हत्या और कई डकैतियां के लिए जिम्मेदार थे।

13 से अधिक राज्यों में 10 माह तक लगातार पीछा करने के बाद, पुलिस टीम ने राउरकेला में उन पर ध्यान केन्द्रित किया। दिनांक 17.02.2016 को लगभग 02.50 बजे ओडिशा पुलिस के साथ तेलंगाना गठित पुलिस टीम ने नालारोड, राउरकेला में उपर्युक्त

आतंकवादियों के छिपने के ठिकाने को घेर लिया और उस पर छापा मारा। आतंकवादियों ने मारने के इरादे से अग्नेयास्त्रों से पुलिस टीम पर गोलीबारी की। अभियान क्षेत्र जोखिम भरा होने, लक्ष्यों के दुःसाहस, उनकी जिहादी सोच और रात के अंधेरे को देखते हुए यह अभियान काफी जोखिम भरा था। पुलिस टीम ने अपनी जानों को गंभीर और आसन्न खतरे की स्थिति में कर्तव्य के प्रति अनुकरणीय प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया और 3 पिस्तौलों, गोलाबारुद तथा 4 कृपाणों के साथ चार आतंकवादियों को पकड़ लिया। पुलिस दल के निर्भीक कार्य के कारण कुख्यात खंडवा मॉड्यूल को नाकाम किया गया।

इस आप्रेशन में सर्व/श्री राजेश कुमार, पुलिस अधीक्षक, माडा दयानंदा रेड्डी, उप पुलिस अधीक्षक, सीएच. आर.वी. फनीन्दर, निरीक्षक, बेमुला भास्कर, निरीक्षक, गंन्गनी सत्यनारायण, रिजर्व उप निरीक्षक, सोनी लाल अमृत, सहायक उप निरीक्षक, सैयद सरवर पाशा, हेड कांस्टेबल, गोलानकोंडा नरेन्दर, कांस्टेबल और मोहम्मद कादिर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.02.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 141—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राजेश कुमार पाण्डेय, (वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार)
उप पुलिस अधीक्षक

02. उमेश कुमार सिंह, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
उप पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

हत्या के मामले में घोषित अपराधी मनजीत सिंह उर्फ मांगे पर सी.बी.आई. द्वारा उसकी गिरफ्तारी के लिए 1,00,000/—रू. का नकद इनाम रखा गया था फिर भी उसने वर्तमान में उच्च सुरक्षा कारागार में बंद कुख्यात किंगपिन बबलू श्रीवास्तव के लिए भारत और नेपाल में फिरौती के लिए अपहरणों और ठेके पर हत्याओं की योजना बनाना और उन्हें अंजाम देना जारी रखा।

अपर पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में और उप पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार पाण्डेय, उमेश कुमार सिंह और अन्य कार्मिकों वाले एसटीएसफ दल तथा मनजीत सिंह उर्फ मांगे और उसके पांच साथियों के बीच एक खतरनाक और खूनी मुठभेड़ हई। ये गैंगस्टर दिनांक 14.12.1998 को प्रातः 05.30 बजे सुबह घूमने के दौरान एक अमीर होटल मालिक का अपहरण करने के उद्देश्य से विक्टोरिया मेमोरियल, कोलकाता के निकट मैदान में इकट्ठा हुए थे। चुनौती दिए जाने पर दुस्साहसियों ने पुलिस कर्मियों को मारने के इरादे से काफी नजदीक से पुलिस पर गोलीबारी की। एसटीएफ दल ने भाग रहे अपराधियों का पीछा किया जो तेजी से अपनी मारूति वैन सं. डब्ल्यूबी—02—6164 में भाग गए थे। ये गैंगस्टर पीछा कर रही टाटा सुमो पर लगातार और निर्दयतापूर्वक गोलीबारी कर रहे थे। कुछ गोलियां आगे की स्क्रीन पर लगी जबकि अन्य गोलियां पीछा कर रहे पुलिस कर्मियों से काफी करीब से निकलीं और कुछ गोलियां टाटा सुमो के बोनट में लगीं। पुलिस अधिकारियों ने अपना धैर्य बनाए रखा और लगातार भीषण हमले से नहीं घबराए। उन्होंने और अधिक जोश के साथ पीछा करना जारी रखा लेकिन भाग रहे अपराधियों के नजदीक जाने और उन्हें पकड़ने के सभी प्रयास व्यर्थ साबित हुए। अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए, बल्कि वहां से गुजरने वाले निर्दोष लोगों की सुरक्षा एवं संरक्षा को सर्वाधिक महत्व देते हुए राजेश कुमार पाण्डेय, उमेश कुमार सिंह और अन्य कार्मिकों ने अपनी जानों की परवाह किए बिना और अनुकरणीय साहस एवं पराक्रम प्रदर्शन करते हुए सामरिक और प्रभावी तरीके से जवाबी गोलीबारी की। इन अधिकारियों द्वारा चलाई गई अधिकांश गोलियां लक्ष्य पर लगीं। जवाबी कार्रवाई से गिरोह को कोई मदद नहीं मिली क्योंकि एक अंधे मोड़ पर मुड़ते समय अधिक गति के कारण उनकी गाड़ी पलट गई। पुलिस दल की ओर से गोलीबारी तत्काल बंद हो गई और घायलों को वेन से बाहर निकाला गया। दो मृतकों की पहचान मोहब्बत अली उर्फ गुड्डू घोसी, जिस पर 20,000/—रु. का इनाम था और कुलवंत सिंह उर्फ कांता जिसे बिजनौर सेशन कोर्ट द्वारा उम्र कैद मिली हुई थी, के रूप में की गई। मंजीत सिंह उर्फ मांगे और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हालत में पाए गए। उन्हें चिकित्सा सहायता के लिए तुरंत अस्पताल ले जाया गया।

यह वीरतापूर्ण मुठभेड़ पुलिस अधिकारियों के साहसी और निर्भीक निर्णय तथा कार्रवाई के कारण ही हो सकी। उन्होंने न केवल गैंगस्टरों द्वारा अपनाए गए कौशल और गति की बराबरी की बल्कि समय पर इसे निष्क्रिय भी कर दिया और इस प्रकार एक गंभीर अपराध को अंजाम दिए जाने से बचा लिया।

सर्व/श्री राजेश कुमार पाण्डेय और उमेश कुमार सिंह, ने अपनी जान को अधिक खतरा होने के बावजूद अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया। अपराधियों द्वारा नजदीक से की जा रही अंधाधुंध गोलीबारी के सामने उनके द्वारा प्रदर्शित कर्तव्य के प्रति निष्ठा और समर्पण की सर्वोच्च भावना उनके साहस को बायां करती है।

बरामदगी:

1. मारूति वैन सं. 02—6164

2. एक जिंदा राउंड के साथ सं. 10075 के साथ 7.65 कैलिबर की एक वालटर मॉडल की पिस्तौल।

3. 4 जिंदा और 02 खाली राउंड के साथ सं. 52873 वाली 35 कैलिबर की 01 वेबले स्कॉट बर्मिंघम 6 चौम्बर की रिवाल्वर।

4. 03 जिंदा और तीन खाली राउंड के साथ एफई 6.08, मेक मिटा हुआ, की 6 चौम्बर वाली एक रिवाल्वर।

5. वैन के अंदर से चलाए गए विभिन्न प्रकार के 8 कारतूस।

6. 40,000/—रु. नकद।

7. दो मोबाइल फोन।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राजेश कुमार पाण्डेय, उप पुलिस अधीक्षक और उमेश कुमार सिंह, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.12.1998 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 142—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बिनोद कुमार सिंह,
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

02. प्रबल प्रताप सिंह,
अपर पुलिस अधीक्षक

03. अरूण कुमार सिंह,
उप पुलिस अधीक्षक

04. किरन पाल सिंह,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08/09.11.2008 को 2330 बजे 10,000/— रु. के एक घोषित इनामी मो. हसीन उर्फ बंटी ने, जो पुलिस हिरासत से बच निकला था, पुलिस स्टेशन प्रेम नगर, बरेली क्षेत्र में एक हुंडई कार के साथ एक अधिवक्ता, सुधीर तिवारी का अपहरण कर लिया था। अपहरण के पश्चात् बंटी ने अपहृत वकील के एक मुवक्किल और बरेली के एक प्रसिद्ध व्यावसायिक श्री अनिल अग्रवाल, जिसका बंटी द्वारा वर्ष 1995 में अपहरण किया गया था, को फिरौती की मांग करते हुए एक धमकी भरी कॉल की। एस एस पी, बरेली श्री बिनोद कुमार, जो रात के दौरे पर थे, ने शहर से बाहर जाने वाले सभी मार्गों पर गहन जांच की। श्री के.पी. सिंह, एस ओ, इज्जतनगर ने शीघ्र एक एक्सेंट कार द्वारा पीलीभीत रोड़ पर बैरियर सं. 2 को तोड़कर भागने की सूचना दी। एस एस पी घटनास्थल की ओर गए और बच कर भाग रहे वाहन का पीछा किया। एस पी (सीटी) श्री प्रबल प्रताप सिंह के साथ सीओ सिटी—। श्री अरूण कुमार सिंह ने उनका साथ दिया। हाफिजगंज क्षेत्र से शहर की ओर लौटते हुए एस ओ जी दल को बचकर भाग रहे वाहन के मार्ग को अवरूद्ध करने का आदेश दिया गया। मार्ग को अवरूद्ध पाकर, कार में बैठे लोगों ने गोलीबारी शुरू कर दी और कलापुर कॅनाल सर्विस रोड से बचकर भागने का प्रयास किया। एस एस पी ने स्थिति को भांप लिया और बचकर भाग रहे वाहन के टायरों को एस ओ जी दल की सधी हुई गोलीबारी से निष्क्रिय करवा दिया। अपराधियों ने निष्क्रिय किए गए वाहन को वहीं छोड़ दिया और स्वयं नहर के आगे स्थित खेतों में बने बांध के पीछे मोर्चा संभाल लिया। अपराधियों से अपने हथियार डालने और आत्मसमर्पण करने की अपील की गई। इसके बदले में अपहरणकर्त्ताओं ने पुलिस दल के अग्रणी सदस्यों पर गोलियां चलाई जिसमें एक गोली एस एस पी की छाती पर बुलेट प्रूफ जैकेट में लगी और उनके साथ चल रहे दो एस ओ जी कार्मिक घायल हो गए।

आगे से नेतृत्व कर रहे एस एस पी ने पुलिस को तत्काल दो दलों में बांट दिया जिसमें से एक दल दांयी ओर था जिसका नेतृत्व उनके द्वारा स्वयं किया जा रहा था और दूसरा दल एस पी (सिटी), सी ओ (सिटी) और एस ओ इज्जत नगर के साथ बांयी ओर था और उन्होंने वहां पर मोर्चा संभाले हुए अपराधियों को घेरने का प्रयास किया । एस एस पी द्वारा बार—बार प्रोत्साहित किए जाने और यह आह्वान किए जाने पर कि 2 पुलिस कर्मी घायल हो गए हैं और हमलावार बचकर निकलने नहीं चाहिए, सीओ सिटी—।, एस ओ, इज्जतनगर के साथ एस पी (सिटी) के नेतृत्व वाले दूसरे दल और उनके जवानों ने बांई ओर से सुरक्षात्मक गोलीबारी करके

हमलावारों को घेर लिया, जिन्होंने बदले में अंधाधुंध गोलीबारी की। परन्तु अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए और सभी प्रकार की विषम परिस्थितियों के बावजूद अपनी जान की परवाह किए बगैर अधिकारियों ने अपनी संयमित और उत्कृष्ट सूझ—बूझ और रणकौशल एवं रणनीति के कुशल प्रयोग के साथ अपना मोर्चा संभाले रखा। अंतिम हमला, जिसमें निर्देशन की गहन भावना के साथ एस एस पी ने तीन गोलियां चलाई, एस पी (सिटी) प्रबल प्रताप सिंह और सी.ओ. (सिटी) अरूण कुमार सिंह ने क्रमशः तीन और दो राउंड गोलियां चलाई और एस.ओ, इज्जतनगर किरण पाल सिंह ने दो राउंड गोलियां चलाईं और अपराधियों के मनोबल को तोड़ दिया तथा उनका नेता, मो. हसीन उर्फ बंटी गोलियों का शिकार हो गया, परन्तु उसके दो सहयोगी अंधेरे में बच निकले।

बरामदगीः

1. एक फैक्टरी निर्मित पिस्तौल .32 बोर।

2. एक डी बी बी एल बन्दूक और 12 बोर के 10 कारतूस।

3. 03 कारतूस, 12 बोर के 07 खाली खोखे और .315 बोर के 06 खाली खोखे।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री बिनोद कुमार सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, प्रबल प्रताप सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक, अरूण कुमार सिंह, उप पुलिस अधीक्षक और किरन पाल सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.11.2008 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 143—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैंः—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. डॉ. जी.के. गोस्वामी, (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

02. प्रवीण कुमार सिंह, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
उप निरीक्षक

03. पीतम पाल सिंह, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 25.06.2005 को 1955 बजे, डॉ. जी.के. गोस्वामी, एसएसपी, मुरादाबाद को यह सूचना प्राप्त हुई कि एक पीले रंग की सैंट्रो कार में कुछ कुख्यात अपराधी मुरादाबाद शहर और उसके पास घूम रहे हैं। उन्होंने तत्काल आर.टी. सेट के माध्यम से सभी अपर पुलिस अधीक्षकों, सर्कल अधिकारियों, एसएचओ/एसओ को सूचित किया और वाहन को रोकने के लिए कहा। वे स्वयं एसओजी प्रभारी श्री प्रवीण कुमार सिंह, एस ओ नागफनी श्री पीतम पाल सिंह और अन्य पुलिस कर्मियों के साथ वाहन की तलाश में चरण सिंह चौक, लाइन पार पहुंचे। पुनः यह सूचना प्राप्त हुई कि जिस कार में ये अपराधी घूम रहे हैं, उसका नम्बर संभवतः यू.पी—14 एल—5059 है और 20,000/—रु. का एक इनामी अपराधी छोटा जमील अपने साथियों के साथ इसमें हो सकता है और वे मुरादाबाद से मझोला की ओर जा सकते हैं। पुलिस दल के साथ एसएसपी मुरादाबाद ने सतर्कतापूर्वक वाहन की जांच शुरू कर दी। लगभग 2025 बजे यूपी—14 एल—5059 संख्या वाला एक वाहन मुरादाबाद शहर की ओर से आता हुआ दिखाई दिया। एसएसपी मुरादाबाद ने उस वाहन को रूकने का इशारा किया परन्तु इस वाहन में सवार लोगों ने अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए एसएसपी पर गोली चला दी।

गोली उनके पास से होते हुए उनके कान के नजदीक से निकल गई और वे भाग्यवश बच गए। एसएसपी ने पुलिस दल को आदेश दिया कि अपराधी निश्चित रूप से इस वाहन में सवार हैं और अपनी जान की परवाह किए बगैर किसी भी कीमत पर उन्हें पकड़ो। एसएसपी ने अपराधियों को चेतावनी दी, परन्तु उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया और वे तेजी से न्यू मुरादाबाद की ओर मुड़ गए। एसएसपी ने उन्हें पुनः चेतावनी दी कि उन्हें घेर लिया गया है और उन्हें आत्मसमर्पण कर देना चाहिए अन्यथा पुलिस कर्मी उन्हें गिरफ्तार करेंगे और आत्मरक्षा में बल का प्रयोग भी करेंगे। इस पर चालक की सीट पर बैठे हुए व्यक्ति ने पुलिस की जीप पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते हुए चिल्लाया कि "मैं छोट जमील हूं और यदि तुम अपनी जान की सुरक्षा चाहते हो तो वापस चले जाओ।" जीप की छत अपराधियों की गोलीबारी से क्षतिग्रस्त हो गई और पुलिस दल भयभीत हो गया। एसएसपी मुरादाबाद ने अपने दल को प्रोत्साहित किया। उन्होंने पुनः अपराधियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा परन्तु वे गोलीबारी करते रहे। जब अपराधियों को पकड़ने के सारे प्रयास विफल हो गए, तो एसएसपी मुरादाबाद ने अपराधियों के वाहनों के टायरों पर गोली चलाना शुरू कर दिया जिसके कारण पीछे का दायां टायर पंचर हो गया और वाहन रूक गया। दो अपराधी नीचे

उतरे और लगातार गोलीबारी शुरू कर दी। एसएसपी ने दल नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए अपने दल को जीप की आड़ लेने और रणनीतिक कौशल का प्रयोग करते हुए उन्हें इन अपराधियों को घेरने और आत्मरक्षा में गोलीबारी करने का निदेश दिया। अपराधियों की गोलीबारी के कारण एक गोली एसएसपी के सिर के ऊपर से निकल गई और एक गोली एसओ नागफनी के सिर के ऊपर से चली गई। दोनों अपराधी घायल होकर नीचे गिर गए। जब गोलीबारी रूकी, तो पुलिस दल सावधानीपूर्वक उनके निकट गया। दोनों अपराधी मरे पड़े थे। एक अपराधी की पहचान छोटा जमील के रूप में की गई, जो पुलिस हिरासत से भाग गया था और 20,000/— का इनामी अपराधी था और दूसरे अपराधी की पहचान अली मोहम्मद के रूप में की गई।

की गई बरामदगीः

1. पाकिस्तान में निर्मित एक स्वचालित पिस्तौल/माउजर, 04 जिंदा कारतूस और 30 बोर के 16 खाली खोखे।

2. एक देशी पिस्तौल, 03 जिंदा कारतूस और .315 बोर के 03 खाली खोखे।

3. एक सैंट्रो कार।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री डॉ. जी.के. गोस्वामी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, प्रवीण कुमार सिंह, उप निरीक्षक और पीतम पाल सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का द्वितीय बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.06.2005 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 144—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैंः——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. श्रीराम गवारिया, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

02. अरूण कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीमा सुरक्षा बल की 9वीं बटालियन जम्मू सीमा के अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्र में भारत—पाक अन्तरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात है।

दिनांक 31 दिसंबर, 2014 को लगभग 0930 बजे, 03 एस ओ और 07 अन्य रैकों के अधिकारियों के साथ निरीक्षक सुभाष चन्द्र बी ओ पी रीगल के उत्तरदायित्व वाले क्षेत्र में सीमा बाड़ के आगे जीरो लाइन गश्त पर थे। लगभग 1145 बजे, जब गश्त दल सीमा पिलर सं. 193 और 194 के बीच पहुँचा, तो अचानक रजब शहीद चौकी से पाकिस्तानी रेंजरो ने हमारे गश्त दल पर स्वचालित हथियारों से अकारण गोलीबारी शुरू कर दी और तत्पश्चात् ग्रेनेड से हमला किया। इसके परिणामस्वरूप, कांस्टेबल श्री राम गवारिया की छाती, कनपटी (बांयी ओर) पर गोली लगने से कई चोटें आई और उनके हाथ पर स्प्लिंटर से चोट लग गई। परन्तु अपना धैर्य खोए बिना, कांस्टेबल श्रीराम गवरिया ने गश्त दल के अन्य सदस्यों को सतर्क कर दिया और तेजी से अपनी 5.56 एम एम इन्सास राइफल से जवाबी हमला किया। इससे उनके साथियों को, जो शत्रुओं की प्रभावशाली गोलीबारी में घिरे हुए थे, सुरक्षित पोजिशन लेने और जवाबी कार्रवाई करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण समय मिल गया।

इसी बीच, हमारी बी ओ पी और ओ पी माउंड पर श्री रविन्द्र कुमार एसी/कंपनी कमांडर के पर्यवेक्षण में तैनात सैन्य दलों ने भी शत्रु की गोलीबारी को शांत करने और सीमा बाड़ के आगे फंसे गश्त दल को सुरक्षित निकालने के लिए प्रभावशाली ढंग से जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। शत्रु ने बी ओ पी रीगल, 6—आर और चिलियारी पर यू एम, बी एम जी, 52 एम एम मोर्टार और 82 एम एम मोर्टार से भारी गोलीबारी जारी रखी। पारस्परिक गोलीबारी के दौरान गश्त दल के ए एस आई (जीडी) सुनील कुमार की बांयी कोहनी पर भी स्प्लिंटर लगने से मामूली चोट आई। भारी गोलीबारी से विचलित हुए बिना, कांस्टेबल अरूण कुमार जो माउंड सं. 100 पर तैनात थे, ने शत्रु की चौकी पर एम एम जी की सधी हुई गोलीबारी शुरू कर दी और एक पाकिस्तानी रेंजर को मार गिराया और आक्रामक पाकिस्तानी रेंजरों को विचलित कर दिया तथा 1700 बजे पारस्परिक गोलीबारी बंद हो गई।

कांस्टेबल श्रीराम गवारिया गोली की गंभीर चोटों के बावजूद अपनी पोजीशन पर डटे रहे और भारी विषमताओं में उत्कृष्ट कोटि के शौर्य और साहस का प्रदर्शन करते हुए अपनी अंतिम सांस तक गोलीबारी करते रहे। उनकी सामयिक कार्रवाई और जवाबी हमले के कारण, गश्त दल के अन्य सदस्यों की जानें बच सकीं। कांस्टेबल अरूण कुमार ने अनुकरणीय साहस, दृढ़निश्चय और पेशेवरता का प्रदर्शन किया जिसके परिणामस्वरूप फंसे हुए गश्त दल को खतरे के क्षेत्र से सुरक्षित निकालने के साथ—साथ एक पकिस्तानी रेंजर को मार गिराया गया।

इस एक्शन में सर्व/श्री (स्व.) श्रीराम गवारिया, कांस्टेबल और अरूण कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.12.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 145—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री देवेंद्र सिंह, (मरणोपरान्त)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीमा सुरक्षा बल 09वीं बटालियन जम्मू फ्रंटियर के सांबा के अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्र में तैनात है।

दिनांक 05 जनवरी, 2015 को लगभग 1415 बजे, पाक रेंजरों ने हमारी सीमा चौकी लोंदी, कटाओ, चकडुंलमा और जम्मू फ्रंटियर की 09वीं बटालियन बी एस एफ के ए.ओ.आर. में नाका माउण्ड को निशाना बनाते हुए भारी मोर्टारों से अकारण हमला कर दिया और यू.एम.जी./बी.एम.जी. जैसी मध्यम दूरी की मशीन गनों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। हमारे सैन्य दलों ने भी शत्रु की गोलीबारी का उपर्युक्त ढंग से जवाब दिया। लगभग 1502 बजे, पाकिस्तान की चौकी लुभब्रियाल ने हमारी सीमा चौकी एन.एस.पी. खोश को निशाना बनाते हुए भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

बीएसएफ की 9वीं बटालियन के कांस्टेबल (जीडी) देवेंद्र सिंह ने, जो कैम्प गार्ड मोर्चे पर तैनात थे, भारी मोर्टार के हमले के बीच तुंरत पोजीशन ले ली और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना पाकिस्तान की लुभब्रियाल चौकी पर एजीएस से 07—08 राउण्ड गोलीबारी की। उनके प्रभावशाली जवाबी हमले के कारण पाकिस्तान की लुभब्रियाल चौकी को मजबूरन गोलीबारी रोकनी पड़ी। तथापि, निकटवर्ती पाकिस्तानी चौकी अकरम शहीद ने सीमा चौकी एनएसपी खोरा पर भारी मोर्टारों से गोलीबारी शुरू कर दी। माउण्ड और बीओपी एनएसपी खोरा पर तैनात हमारे सैन्य दलों ने उपयुक्त ढंग से जवाबी गोलीबारी की। गोलीबारी और जवाबी हमले के दौरान कांस्टेबल देवेंद्र सिंह ने कैम्प गार्ड संतरी ड्यूटी पर रहते हुए बीओपी के अन्य कार्मिकों को सतर्क करना/मार्गदर्शन प्रदान करना और अपनी निजी सुरक्षा/संरक्षा की परवाह किए बिना पाकिस्तानी रेंजरों को गोली—बारी में उलझाए रखना जारी रखा।

उनकी प्रभावशाली गोलीबारी के कारण, शत्रु के भारी हमले/गोलीबारी के बावजूद बीओपी के अन्य कार्मिकों को कोई क्षति/चोट नहीं पहुंची। दुर्भाग्यवश, एक मोर्टार बम बीओपी एनएसपी खोरा के कैम्प गार्ड मोर्चा के पास आकर गिरा, जहां कांस्टेबल देवेंद्र सिंह ने पोजीशन ले रखी थी, जिसके कारण उनके सिर पर स्प्लिंटर से चोट लग गई। घायल कांस्टेबल को तुरंत जिला अस्पताल सांबा ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत लाया गया घोषित कर दिया।

कांस्टेबल देवेंद्र सिंह ने शत्रु के बड़े हमले एवं गोलीबारी का सामना करने में अनुकरणीय साहस, दृढ़निश्चय और बहादुरी का प्रदर्शन किया तथा हमले का उपयुक्त तरीके से जवाब दिया। पाकिस्तान की लुभब्रियाल चौकी को गोलीबारी रोकने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने अपने जीवन का सर्वोत्तम बलिदान दिया और बीएसएफ के आदर्श अर्थात "अंतिम सांस तक सेवा" को सिद्ध करते हुए शहादत प्राप्त की।

इस एक्शन में स्व. श्री देवेंद्र सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 146—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अदिल अब्बास, (मरणोपरान्त)
हेड कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीमा सुरक्षा बल की 98वीं बटालियन नालकाटा, जिला धलाई (त्रिपुरा) में भारत—बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात है।

एक निर्माणकर्ता एजेंसी नामतः मै. कोस्टल कंपनी प्रा. लिमिटेड त्रिपुरा राज्य के पूर्वी छोर पर सीमावर्ती बाड़ और सीमावर्ती सड़क निर्माण के कार्य में लगी हुई थी। एनएलएफटी (बीएम) उग्रवादियों, जिनके सीएचटी में शिविर थे, ने निर्माणकर्ता एजेंसियों के श्रमिकों को अगवा करने की गंभीर चेतावनी दी हुई थी। बदमाशों की धमकी के मद्देनजर, निर्माण कार्य में शामिल वाहनों को सीमा सुरक्षा बल की सुरक्षा प्रदान की गई थी।

दिनांक 17 नवम्बर, 2014 को, कोस्टल कंपनी प्रा. लिमिटेड का एक पानी का टैंकर, जिसका रजि. नं. टीआर—01के—1706 था और जिसे सह—चालक नामतः श्री हमारी रंगथोंग के साथ सिविल चालक नामतः श्री जितेन चकमा चला रहा था, निर्माण कार्य में लगा हुआ था। बीएसएफ की 98वीं बटालियन के हेड कांस्टेबल अदिल अहबास को उक्त पानी के टैंकर की सुरक्षा/मार्गरक्षण के लिए तैनात किया गया था।

लगभग 1010 बजे, जब पानी का टैंकर, बीओपी खानतलांग के वाटर प्वाइंट से पानी भरने के पश्चात सीमा सड़क के साथ—साथ सीमा चौकी पुशपरम्परा की ओर जा रहा था, तो यह एनएलएफटी उग्रवादियों, जिन्होंने बाड़ के दूसरी ओर पोजीशन ले रखी थी, की गोलियों की भारी बौछार में घिर गया। इसके परिणामस्वरूप, पानी के टैंकर का अगला टायर फट गया और टैंकर लगभग 30 मीटर तक फिसलता चला गया तथा बाड़ के लोहे के खंभे से टकरा गया। हेड कांस्टेबल अदिल अब्बास, वाटर टैंकर चालक और सह—चालक सभी को गोली लगने से चोटें आई और वे क्षतिग्रस्त वाहन में फंस गए।

हेड कांस्टेबल अदिल अब्बास ने अपनी चोट की परवाह नहीं की और उग्रवादियों के भीषण हमले का सामना करने में अदभुत साहस और एक सैनिक की सच्ची भावना का प्रदर्शन करते हुए प्रभावशाली ढंग से जवाबी कार्रवाई की। हेड कांस्टेबल अदिल अब्बास के अनुकरणीय साहस और विलक्षण अनुशासनात्मक गोलीबारी का लाभकारी परिणाम हुआ और उग्रवादी चालक/सह—चालक को अगवा करने और हथियार छीनने के अपने नापाक इरादे में सफल नहीं हो पाए और अंतत वापस बांग्लादेश भाग गए।

हेड कांस्टेबल अदिल अब्बास, चालक जितेन चकमा और सह—चालक हमारी रांगथोंग को एयर फोर्स हेटर द्वारा आईएलएस अस्पताल, अगरतला ले जाया गया, जहां सह—चालक हमारी रांगथोंग को मृत लाया हुआ घोषित कर दिया गया और हेड कांस्टेबल अदिल अब्बास ने भी अपनी चोटों के कारण उसी दिन दम तोड़ दिया।

हेड कांस्टेबल अदिल अब्बास ने उग्रवादियों के सुनियोजित एवं जानबूझ कर घात लगाकर किए गए हमले को नाकाम करने में अनुकरणीय दक्षता अदम्य साहस और वीरता का प्रदर्शन किया और इस प्रकार वाहन चालक की जान बचाई तथा हथियार एवं गोला—बारुद को लूटे जाने से बचाया।

इस एक्शन में स्व. श्री अदिल अब्बास, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.11.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 147—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विवेक रावत,
सहायक कमांडेंट

02. जगजीत सिंह,
कांस्टेबल

03. रामधन गुजर,
कांस्टेबल

04. विजय कुमार,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीमा सुरक्षा बल की 122वीं बटालियन जिला — कांकेर (छत्तीसगढ़) के अत्यधिक संवेदनशील नक्सल—प्रभावित क्षेत्र में तैनात है।

दिनांक 02 फरवरी, 2015 को, श्री विवेक रावत, सहायक कमांडेंट की कमान में बीएसएफ की 122वीं बटालियन के चार कार्मिकों और उप—निरीक्षक अविनाश शर्मा, एसएचओ पुलिस स्टेशन—बांदे की कमान में छत्तीसगढ़ पुलिस के 6 कार्मिकों का एक छोटा दल नक्सलवादियों की मौजूदगी के बारे में आसूचना एकत्र करने के लिए गया। लगभग 1445 बजे, इस दल पर हावलबरास गांव के

नजदीक लगभग 50–55 माओवादियों ने अचानक घात लगाकर हमला कर दिया। छत्तीसगढ़ पुलिस के उप–निरीक्षक अविनाश शर्मा और सहायक कांस्टेदबल सोनू सबसे पहले गोली से जख्मी हो गए और वे जमीन पर गिर गए जबकि शेष 6 कार्मिक जो घात लगाकर किए गए हमले में फंस गए थे, तुरंत मोटर साईकिल से कूद गए और आस–पास पोजीशन लेने लगे। दो पुलिस–कर्मी घात वाले हमले के स्थान से दूर रहे। इस प्रक्रिया में एक माओवादी ने बिलकुल नजदीक से श्री विवेक रावत, सहायक कमांडेंट पर गोली चला दी, परन्तु गोलियां उनके बालों को छूती हुई सिर के ऊपर से निकल गईं। उन्होंने जवाबी गोली चलाई और एक माओवादी को चीखते हुए सुना, क्योंकि संभवतः गोली लग गई थी। पोजीशन लेते समय, एक गोली श्री विवेक रावत, सहायक कमांडेंट के दाएं जंघे में लग गई।

पारस्परिक गोलीबारी के दौरान, कांस्टेबल रामधन गुजर की बांयी आंख और दाएं टखने में, कांस्टेबल विजय कुमार की दांयी कलाई में गोली लग गई। इसी प्रकार, छत्तीसगढ़ पुलिस के हेड कांस्टेबल नरेन्द्र शुक्ला और कांस्टेबल मिनेश्वर मंडावी भी घायल हो गए। सभी घायल सैन्य कर्मियों ने अपने घावों को ढंक लिया और उग्र रूप से जवाबी गोलीबारी करने लगे।

श्री विवेक रावत, सहायक कमांडेंट न केवल माओवादियों से लड़े, बल्कि गोलीबारी करने और अनुशासनात्मक गोलीबारी का कड़ाई से पालन करने की हिदायत के साथ सभी दिशाओं को कवर करने के लिए अपने दल को पुनगर्ठित किया और लगातार जीत तक लड़ने के लिए उनका हौसला बढ़ाते रहे। उन्होंने अपना धैर्य बनाए रखा और घायल होने के बावजूद अपने जवानों का मार्गदर्शन करते रहे। उन्होंने अपने कमांडेंट को सूचित किया और हमला स्थल तक उनका मार्गदर्शन करते रहे।

कांस्टेबल रामधन गुजर घायल आंख और टखने के साथ पोजीशन संभाले रहे और वीरता के साथ माओवादियों से लड़े तथा माओवादियों को दक्षिण दिशा में नियंत्रित रखा। उन्होंने अपना चेहरा खून से भरा होने के बावजूद भय का कोई संकेत नहीं दिखाया और दल के नेता के निर्देशों का पालन किया। इससे सैन्य दल अपनी गोलीबारी की शक्ति को दूसरी ओर केन्द्रित करने में सक्षम हुआ।

अपनी दांयी कलाई में चोट के बावजूद, कांस्टेबल विजय कुमार बाएं हाथ से गोलीबारी करते रहे और माओवादियों को केवल उनकी जगह पर नियंत्रित रखा। एक बार जब कुछ माओवादियों ने सड़क पार करके पेड़ के पीछे पोजीशन ले ली, तब उन्होंने उन पर गोलीबारी करके उनको आड़ लेने के लिए वापस जंगल के क्षेत्र में जाने के लिए मजबूर कर दिया। बहादुरी के इस कृत्य से श्री विवेक रावत, सहायक कमांडेंट के प्रयासों में और वृद्धि हुई।

कांस्टेबल जगजीत सिंह ने प्रमुख भूमिका निभाई क्योंकि वे लगातार पोजीशन बदलते रहे और यूबीजीएल से गोलीबारी की जिससे माओवादियों में भय उत्पन्न हो गया और वे पीछे हट गए। उन्होंने स्वयं को सामने लाकर, सड़क पर पोजीशन लेकर और दूसरे यूबीजीएल से गोलीबारी करके उच्चतम स्तर की बहादुरी का प्रदर्शन किया जिससे माओवादियों सहित 100 ग्रामीणों की भारी भीड़ वहां से भाग खड़ी हुई।

छत्तीसगढ़ पुलिस के हेड कांस्टेबल नरेन्द्र शुक्ला और कांस्टेबल मिनेश्वर मंडावी भी माओवादियों से लड़े जिसने माओवादियों के अलग–अलग दिशाओं से गोलीबारी करने के किसी भी प्रकार के प्रयास को विफल कर दिया। पारस्परिक गोलीबारी के बीच हेड कांस्टेबल नरेन्द्र शुक्ला भी लगातार मोबाइल पर उच्चतर मुख्यालय को सूचित करते रहे।

श्री विवेक रावत, सहायक कमांडेंट ने उच्चतम स्तर के नेतृत्व गुण, सूझबूझ, लड़ने की भावना और बहादुरी का प्रदर्शन किया, जबकि अन्य सदस्यों ने माओवादियों से लड़ने तथा अतिरिक्त सैन्य बल पहुंचने तक उनको एक घंटा 45 मिनट तक रोक कर रखने में दुलर्भ श्रेणी की लड़ने की भावना, बहादुरी, अनुशासनात्मक गोलीबारी और दल भावना का प्रदर्शन किया। उन्होंने न केवल अपने साथियों के बहुमूल्य जीवन और हथियार तथा गोलाबारुद को बचाया, बल्कि बन्दू कोरचा नामक एक माओवादी को मारने और कुछ अन्य माओवादियों को घायल करने में भी सफलता प्राप्त की।

यह घटना निर्विवाद रूप से विशेष प्रकार की घटना है जहां माओवादियों के एक बड़े गुट को सुप्रशिक्षित सैनिकों के एक छोटे से दल द्वारा न केवल परास्त किया गया बल्कि उनका काडर भी मारा गया।

बरामदगीः–

14 ईएफसी, 1 गोली, 2 फायर किए गए राउण्ड और एक स्टेनगन की तली।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विवेक रावत, सहायक कमांडेंट जगजीत सिंह, कांस्टेबल रामधन गुजर, कांस्टेबल और विजय कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.02.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 148–प्रेज/2016–राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैंः––

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. कृष्ण कुमार शर्मा,
सहायक कमांडेंट

02. राम नारायण सिंह,
उप निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीमा सुरक्षा बल (बी एस एफ) की 123वीं बटालियन छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में नक्सलरोधी अभियान के लिए तैनात है। बीएसएफ की 123वीं बटालियन की जिम्मेवारी का क्षेत्र गहरे जंगलों वाला पहाड़ी क्षेत्र है जो इस ऊबड—खाबड़ क्षेत्र को खतरनाक और दुर्गम क्षेत्र बनाता है।

दिनांक 13 अगस्त, 2014 को लगभग 0730 बजे, ग्राम घमसीमुंडा के आम क्षेत्र में चार अथवा इससे अधिक माओवादियों, जो स्वतंत्रता दिवस के अवसर के दौरान सुरक्षा बलों के विरूद्ध कोई खतरनाक कार्रवाई करने की योजना बना रहे थे, की मौजूदगी के बारे में सहायक कमांडेंट (जी) बीएसएफ, भिलाई द्वारा जुटाई गई विशिष्ट सूचना के आधार पर, बीएसएफ कोबरा समेरापारा के 02 अधिकारियों, 07 अधीनस्थ अधिकारियों और 36 अन्य रैकों के अधिकारियों तथा पुलिस स्टेशन अंतागढ़ के छत्तीसगढ़ पुलिस के 01 अधिकारी, 06 एस.ओ. और 26 अन्य रैकों के अधिकारियों (सीएएफ के 6 कर्मचारियों सहित) वाले एक अभियान दल को एक विशेष संयुक्त अभियान चलाने के लिए तैनात किया गया।

वामपंथी उग्रवादियों द्वारा संभावित रूप से जाल में फंसाए जाने के मद्देनजर, अभियान दल को दो समूहों में बांटा गया, ग्राम जैतपुरी के आम क्षेत्र में घात लगाने, नाकाबंदी करने और वामपंथी उग्रवादियों को वास्तविक लक्ष्य से विचलित करने के लिए 01 दल बीएसएफ के 02 एसओ और 19 अन्य रैकों के अधिकारियों के साथ श्री अमित कुमार, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में (कुल 22 कार्मिक) और वामपंथी उग्रवादियों के छिपने के स्थानों पर छापा मारने/हमला करने के लिए बीएसएफ के 5 एसओ और 17 अन्य रैकों के अधिकारियों तथा छत्तीसगढ़ पुलिस के 33 कर्मचारियों के साथ श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में दूसरा मोटरसाइकिल वाला दल।

घात लगाने वाला दल अपनी आवाजाही को छिपाने के लिए विभिन्न मार्गों को अपनाता हुआ लगभग 0740 बजे पैदल चौकी से निकल पड़ा और लगभग 0410 बजे निर्धारित स्थान पर घात लगा दी। छापा/हमला दल को क्रमशः श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट, निरीक्षक सुधीर कुमार कानावत, उप निरीक्षक राम नारायण सिंह और सहायक उप—निरीक्षक हरि ओम शर्मा के नेतृत्व में आगे चार हमला दलों में बांट दिया गया। छापा/हमला दल 1910 बजे मोटरसाइकिल पर लक्षित क्षेत्र की ओर निकल पड़ा। उन्होंने ग्राम घुमसीमुंडा के नजदीक अपनी मोटर साइकिलें छोड़ दीं और रणनीतिक संरचना को अपनाते हुए पैदल आगे बढ़ गए। उन्होंने तेजी से आगे बढ़ते हुए और छिपकर पेड़ों और बांध की आड़ लेते हुए उस क्षेत्र को घेरना शुरू कर दिया। लगभग 1030 बजे, अचानक गांव के बाहर तालाब के नजदीक एक झोपड़ी में छिपे नक्सलियों ने अभियान दल पर भारी मात्रा में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट ने एक क्षण गंवाएं बिना धान के खेत में पोजीशन ले ली और नक्सलियों की गोलीबारी का जवाब दिया। दूसरे हमला दल का नेतृत्व कर रहे उप निरीक्षक राम नारायण सिंह ने पास के बगीचे में नक्सलियों की मौजूदगी को देखा और गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने साथ—साथ श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट, जो अपनी जान को खतरे की परवाह किए बगैर अपने हमला दल के सदस्यों के साथ बीचे की ओर बढ़ रहे थे, की ओर इशारा किया। श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट और उनके दली ने भारी हथियारबंद माओवादियों को निष्क्रिय करने के लिए अदम्य साहस और हिम्मत का प्रदर्शन करते हुए भारी गोलीबारी शुरू कर दी, परन्तु उनको गोलीबारी रोकनी पड़ी क्योंकि अपने धान के खेतों में काम कर रही कुछ महिलाओं ने गोलीबारी के डर से भागना शुरू कर दिया। इसी बीच बगीचे में छिपे एक नक्सली ने बीएसएफ दल पर गोलीबारी शुरू कर दी जिसका प्रभावकारी ढंग से जवाब दिया गया। सैन्य दल ने बगीचे में छिपे माओवादी को घेर लिया और उसे आत्मसमर्पण की चेतावनी दी। उसने आत्मसमर्पण कर दिया और अपने घुटनों पर झुक गया। तथापि, माओवादी ने अपने हथियार, एके 47 राइफल को उठाने का प्रयास किया हालात को देखते हुए, श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट ने उसको अपने दल को कोई चोट अथवा क्षति पहुंचाने से रोकने के लिए गोली चला दी। इसी बीच, उप निरीक्षक राम नारायण सिंह ने माओवादी की चतुराई और छलकपट को जानने के बावजूद और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बगैर तुरंत आगे बढ़कर उसे गिरफ्तार कर लिया।

प्रारंभिक जांच में, यह पाया गया कि माओवादी के बांए हाथ, बांयी कलाई और बाएं जंघे में गोली लग गई थी। घायल माओवादी और जब्त किए गए हथियार को निरीक्षक सुधीर कुमार कानावत और उनके दल की सुरक्षित अभिरक्षा में रखने के पश्चात, श्री कृष्ण कुमार शर्मा और उनका दल बगैर समय गवाएं वन में बच कर भाग रहे माओवादियों की ओर दौड पड़े। उन पर भाग रहे माओवादियों ने पुनः गोलीबारी की ।

यद्यपि सैन्य दल ने जवाबी हमला किया, परन्तु माओवादी घनी झाड़ियों, जंगल और ऊबड़—खाबड़ जमीन का लाभ उठाकर भाग निकले।

ज्यादा पीछा करने को निरर्थक जानकार सैन्य दल मुठभेड़ स्थल पर वापस आ गया। उस क्षेत्र की गहन तलाशी की गई और एक एके 47 राइफल, एक 8 एमएम पिस्तौल, कुछ जिंदा गोला बारूद आदि बरामद किया गया। यह अभियान लगभग 1410 बजे समाप्त किया गया। घायल माओवादी को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की गई और उसे आगे सिविल अस्पताल में भेज दिया गया और तत्पश्चात पुलिस को सौंप दिया गया।

गिरफ्तार किए गए माओवादी की बाद में जयराम (30 वर्ष), गांव—किल्लम, जिला काडांगांव (छत्तीसगढ़) के निवासी के रूप में पहचान की गई। वह मिलिटरी कमीशन का वरिष्ठ कमांडर और डीवीसी केशकल समिति का सदस्य था तथा कथित रूप से उसके सिर पर दो लाख रुपए का इनाम था।

यह विलक्षण अभियानों में से एक था, जिसमें एक खूंखार माओवादी को सुरक्षा बलों द्वारा अपने दल को कोई क्षति पहुंचे बिना भीषण गोलीबारी के बाद गिरफ्तार किया गया। सैन्य दलों ने अनुकरणीय दक्षता, बहादुरी और सूझ—बूझ का प्रदर्शन किया। यह आने वाले वर्षों में सैनिकों को प्रोत्साहित करेगा और नक्सलियों को आतंकित करता रहेगा।

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट और उप निरीक्षक राम नारायण सिंह द्वारा प्रदर्शित शौर्यपूर्ण कार्य, दृढ़निश्चय और सूझबूझ ने इसे एक सफल अभियान बना दिया और अभियान दल के अन्य सदस्यों की कीमती जानों की रक्षा की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट और राम नारायण सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 149—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बरूण चन्द्र मंडल,
हेड कांस्टेबल

02. सुरेन्द्र कुमार,
कांस्टेबल

03. प्रताप सिंह,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 17.04.2014 को झारखण्ड में लोक सभा चुनाव के दौरान, कमांडेंट सहायक 346 बटालियन, सीआरपीएफ का तीन वाहनों वाला काफिला त्रिला क्षेत्र, बोकारो की ओर सड़क मार्ग द्वारा विभाग, मुख्यालय, आईएएल, पु. स्टे. गोमिया से लालपानिया गांव होते हुए कंपनी चौकियों की ओर जाने के लिए रवाना हुआ। लगभग 0900 बजे जब काफिला लुगु पहाड़ियों की घाटी से होकर तुलबुल और लालपानिया गांवों के बीच से गुजर रहा था, तो माओवादियों ने एक पुलिया के नीचे लगाए गए आईईडी का विस्फोट कर दिया। काफिले के पहले वाहन ने उसी समय विस्फोट के क्षेत्र को पार किया था, परन्तु काफिले का दूसरा वाहन आईईडी विस्फोट के कारण बने गड्ढे में गिर गया। निशाना बनाए गए दूसरे वाहन के पीछे चल रहा तीसरा वाहन मारक क्षेत्र तक आने से पहले रूक गया। विस्फोट के पश्चात, माओवादियों ने दांयी ओर अर्थात पहाड़ी की ओर से भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

आईईडी विस्फोट का प्रभाव इतना विध्वंशकारी था कि घटना स्थल पर (अर्थात सड़क पर) 10x8 फुट का एक गड्ढ़ा हो गया और दूसरा वाहन गड्ढे में फंस गया। हेड कांस्टेबल आरओ बरूण चन्द्र मंडल, कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र कुमार और सिविल चालक निशाना बनाए गए वाहन में सवार थे और वे बुरी तरह घायल हो गए। माओवादियों, जिन्होंने प्रभावशाली पोजीशन ले रखी थी, दुर्भाग्यशाली वाहन पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे। गंभीर रूप से घायल होने पर भी वाहन में सवार लोगों ने अपना दृढ़निश्चय नहीं खोया, वे सरणनीतिक ढ़ंग से वाहन से बाहर आए, अपने हथियार लिए और गड्ढ़े में पोजीशन ले ली। हेड कांस्टेबल/आरओ बरूण चन्द्र मंडल ने वाहन को दांयी ओर से और कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र कुमार ने बांयी ओर से कवर कर लिया। माओवादियों ने मारक क्षेत्र में किसी प्रकार की सैन्य सहायता को पहुंचने से रोकने के लिए अवरोधक भी लगा रखे थे। जब पहले और तीसरे वाहन में सवार लोगों ने अपने फंसे हुए साथियों की सहायता के लिए मारक क्षेत्र में प्रवेश करने की कोशिश की, तो उन पर माओवादियों के अवरोधक दलों द्वारा उन्हें रास्ते में ही रोक दिया गया। यह देखकर कि एक वाहन तथा उसमें सवार लोग उनके मारक क्षेत्र में फंस गए हैं, तो माओवादियों के हमला दल ने वाहन में सवार लोगों को मारने और और उनके हथियार, गोला—बारुद, वायरलेस सेट आदि छीनने के इरादे से प्रभावित वाहन की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। पूरी तरह से संख्या में कम और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद जवानों ने अपना मोर्चा संभाले रखा और आगे बढ़ रहे माओवादियों पर गोलीबारी की। गंभीर रूप से घायल सैन्य कर्मियों की निर्भीक और साहसी कार्रवाई से अवाक होकर माओवादी अपने रास्ते में रूक गए। दो बहादुर सैन्य कमिर्यों को भयभीत करने के लिए माओवादियों ने पुनः उन पर भारी और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, परन्तु अलाभकारी पोजीशन में होने और मौत का खतरा उन पर मंड़राने के बावजूद बहादुर सैन्य कर्मियों ने फौलादी हौसले का प्रदर्शन किया और नियंत्रित ढ़ंग से जवाबी गोलीबारी की। घायल सैन्य कर्मियों की वीरता से घबराकर, माओवादियों ने उनको आत्मसमर्पण करने और अपनी जान बचाने के लिए चेतावनी दी परन्तु दोनों कार्मिकों ने अपने शत्रु के सामने आत्मसमर्पण करने की अपने प्राणों की आहुति देना पसंद किया।

इसी बीच, श्री विजय शंकर सिंह, उप कमांडेंट के नेतृत्व में सैन्य दल, जो तीसरे वाहन में थे और जिनकों माओवादियों के अवरोधक दल द्वारा घात लगाकर रोक दिया गया था, घात को तोड़ने और सहायता के लिए अपने फंसे हुए कार्मिकों के नजदीक पहुंचने का हर प्रयास कर रहा थे। परन्तु अवरोधक दल की रणनीतिक और प्रभुत्व वाली पोजीशन उनकी प्रत्येक गतिविधि को विफल कर रही थी। अन्य सैन्य कर्मियों की जान को बचाने के लिए तत्काल कदम उठाने की अत्यावश्यकता और जरूरत को महसूस करते हुए, कांस्टेबलध्जीडी प्रताप सिंह ने अवरोधक दल की घात को तोड़ने की जिम्मेवारी स्वयं ले ली। सभी सावधानियों को ताक पर रखते हुए, वे अपनी आड़ से बाहर आए और सुरक्षित आड़ के पीछे छिपे माओवादियों पर हमला कर दिया। कांस्टेबल/जीडी प्रताप सिंह की निर्भीक और साहसपूर्ण कार्रवाई ने माओवादियों को अपनी आड़ छोड़ने और जंगल के भीतर भागने पर मजबूर कर दिया। यद्यपि यह योजना सफल हो गई, परन्तु इस द्वंद युद्ध में कांस्टेबल/जीडी प्रताप सिंह के पेट में गोली लग गई। एक घायल सैन्य कर्मी, जिसका बहुत अधिक मात्रा में खून बह रहा था, के साथ आगे बढ़ने का मतलब उसका जीवन खतरे में डालना था। श्री विजय शंकर सिंह, उप कमांडेंट ने पहले घायल सैन्य कर्मी को वहां से ले जाने का निर्णय लिया। चूंकि कांस्टेबल/जीडी प्रताप सिंह और लड़ना चाहते थे तथा फंसे हुए सैन्य कर्मियों की जान बचाना चाहते थे, इसलिए उनके मना करने के बावजूद उन्हें वापस वाहन में ले जाया गया और उपचार के लिए भेज दिया गया।

दूसरी ओर, हेड कांस्टेबल/आरओ बरूण चन्द्र मंडल और कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र कुमार माओवादियों के पास आने और उनके हथियार छीनने के हर प्रयास को विफल कर रहे थे। माओवादियों के आगे बढ़ने की हर गतिविधि का सधी हुई और सटीक गोलीबारी से जवाब दिया गया। पारस्परिक गोलीबारी में कुछ माओवादी घायल हो गए, जिससे उनका मनोबल टूट गया। एक उत्तेजित माओवादी, जो उनकी ओर हमला करते हुए आ रहा था, ने अंतिम दांव लगाया, परन्तु उसको बहादुर सैन्य कार्मिकों द्वारा अपनी सधी हुई गोलीबारी से मार गिराया गया। एक माओवादी की मौत, अवरोधक दल के भागने और सैन्य दलों के दृढ़ प्रतिरोध के कारण माओवादी अपनी योजना को त्यागने और अपने मृत और घायल काडरों को लेकर घने जंगल में भागने पर विवश हो गए। हेड कांस्टेबल/आरओ बरूण चन्द्र मंडल और कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र कुमार ने अपनी सूझ—बूझ दिखाई और अनुकरणीय शौर्यपूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया तथा अपनी जान की परवाह किए बिना लगभग एक घंटे तक उनको रोके रखा और अन्ततः उनको भागने पर मजबूर कर दिया। इस प्रकार वे भारी और जटिल घात को निष्क्रिय करने में सफल हुए।

यह हेड कांस्टेबल/आरओ बरूण चन्द्र मंडल, कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र कुमार और कांस्टेबल/जीडी प्रताप सिंह की उच्च कोटि की दक्षता और कभी हार न मानने के दृष्टिकोण का प्रदर्शन था, जिससे न केवल बड़ी संख्या में माओवादी पीछे हटने के लिए मजबूर हुए, हथियारों, गोलाबारुद और कार्मिकों की रक्षा की जा सकी बल्कि बल के गौरव में भी वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त, माओवादियों द्वारा जारी प्रैस नोट में यथा उल्लिखित मुठभेड़ के दौरान एक माओवादी नामतः कामरेड पंतोष हेमब्राम मारा गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री बरूण चन्द्र मंडल, हेड कांस्टेबल, सुरेन्द्र कुमार, कांस्टेबल, एवं प्रताप सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.04.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 150—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री गुलाम नबी भट्ट,

निरीक्षक

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस अधीक्षक, श्रीनगर को श्रीनगर शहर (जम्मू एवं कश्मीर) के सौरा क्षेत्र में भारी हथियार बंद उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में तकनीकी सूचना प्राप्त हुई। सूचना प्राप्त होने पर, एक अभियान की योजना बनाई गई और छिपने के संदिग्ध ठिकाने को निशाना बनाने के लिए दिनांक 13.04.2014 को 1730 बजे सीआरपीएफ तथा एसओजी राज्य पुलिस के सैन्य दलों वाला एक संयुक्त दल शाहदाब कॉलोनी, अहमद नगर, पुलिस स्टेशन सौरा, श्रीनगर में भेजा गया। सैन्य दल शाहदाब कॉलोनी पहुंच गया और बच कर निकलने के सभी उपलब्ध मार्गों को अवरूद्ध कर दिया। तत्पश्चात वे छिपने के संदिगध ठिकाने का पता लगाने के लिए रणनीतिक ढंग से आगे बढ़ें। ज्यों ही सैन्य दल घरों के समूह के निकट पहुंचे, तो उन्होंने दो व्यक्तियों की संदिग्धग गतिविधि देखी। सैन्य दलों ने उनको रूकने और अपनी पहचान बताने की चेतावनी दी। आदेश की अहवेलना करते हुए, दोनों संदिग्ध व्यक्तियों ने अपने "फेरान" में छिपाकर रखे गए हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और घरों के समूह की ओर भाग गए। सैन्य दलों ने तत्काल जवाबी हमला किया और उनका पीछा किया परन्तु उग्रवादी घरों के समूह में गायब हो गए। बंदूक की इस लड़ाई में, एक राज्य पुलिस कर्मी घायल हो गया और सैन्य दलों को मजबूरन घरों के समूह में रणनीतिक रूप से प्रवेश करने की योजना बनानी पड़ी। घरों के समूह की तुरंत घेरबंदी की गई तथा घेरे को और मजबूत करने के लिए अतिरिक्त सैन्य दलों को बुलाया गया। वरिष्ठ अधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंच गए और आगे की कार्रवाई की योजना बनाई गई। सर्वप्रथम कार्य उस घर की पहचान करना था जिसमें उग्रवादी छिपे हुए थे। जब सैन्य दल घरों के समूह पर नजर रखे हुए थे, तो एक लड़की उनकी ओर दौड़ती हुई आई और उस घर के बारे में सूचना दी

जिसमें उग्रवादी छिपे हुए थे। उसने यह भी सूचित किया कि वह अपने घर से बच निकलने में सफल हो गई है, परन्तु उसके मॉ—बाप अभी भी वहां बंधक हैं। सैन्य दलों ने तेजी से उस घर की घेराबंदी की। एसओजी के साथ सीआरपीएफ की 23वीं बटालियन के निरीक्षक/जीडी गुलाम नबी भट्ट की कमान में एक टुकड़ी उस घर के चारों ओर कड़ी घेराबंदी करने के लिए तैनात की गई। भीतर बंधकों के मौजूद होने के कारण, यह कार्य अधिक मुश्किल हो गया था। प्राथमिकता भारी हथियारबंद उग्रवादियों को निष्क्रिय करने के स्थान पर बंधक बनाए गए नागरिकों की कीमती जान बचाने की हो गई थी। नागरिकों की जान बचाने के लिए, सर्वप्रथम उग्रवादियों को चेतावनी देने का निर्णय लिया गया और यदि इससे काम नहीं चला, तो एक सौदा किया जाएगा। उग्रवादियों को सुरक्षा बलों के सामने आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी गई परन्तु उन्होंने इसके बजाय सैन्य दलों पर भारी और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य दलों को जवाबी कार्रवाई को नियंत्रित करना पड़ा क्योंकि अंधेरा बढ़ गया था तथा उग्रवादियों द्वारा घर के भीतर की लाईटें बंद कर दी गई थीं। अगली सुबह अभियान फिर से शुरू करने का निर्णय लिया गया। उग्रवादियों को बच कर भागने से रोकने के लिए घर को पूरी रात पूर्ण कब्जे में रखा गया। अगले दिन सुबह लगभग 0700 बजे, अभियान दुबारा शुरू किया गया और उग्रवादियों में हडकंप पैदा करने के लिए घर के भीतर अश्रु गैस के गोले फेंके गए। यह योजना काम आई और उग्रवादियों में पैदा किए गए भ्रम का फायदा उठाते हुए, महिला बंधक बच निकलने में सफल हो गई। उसने इस बात की पुष्टि की कि दो भारी हथियारबंद उग्रवादी घर के भीतर मौजूद हैं और उसके पति अभी भी उनके चंगुल में हैं। उग्रवादियों को पुनः आत्मसमर्पण के लिए कहा गया परन्तु उन्होंने ऐसा करनें से इंकार कर दिया और बंधक को छोड़ दिया। बंधक को छोड़ने के बाद, उग्रवादियों ने घर के चारों ओर तैनात सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य दलों ने जवाबी हमला किया परन्तु गोलीबारी प्रभावकारी नहीं थी क्योंकि उग्रवादियों ने स्वयं को घर की पक्की दीवारों के पीछे छिपा रखा था। मुख्य द्वार से घर के अहाते में घुसना मुश्किल था क्योंकि उग्रवादियों ने ऐसे किसी भी प्रयास को विफल करने के लिए स्वयं रास्ते में पोजीशन ले रखी थी। गतिरोध को समाप्त करने के लिए एक दुतरफा हमला करने का निर्णय लिया गया जिसमें एक दल उग्रवादियों को उलझाए रखेगा जबकि दूसरा दल अहाते के पीछे की दीवार को तोड़कर घर के भीतर प्रवेश करेगा। यह योजना काम आई और निरीक्षक गुलाम नबी भट्ट अपने सैन्य दल के साथ पीछे की दीवार तोड़कर घर के अहाते में प्रवेश करने में सफल हो गए। परन्तु शीघ्र ही उग्रवादियों को पीछे की ओर से सैन्य दलों की गतिविधि का पता चल गया और उन्होंने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

सैन्य दल बाल—बाल बच गए, परन्तु अपनी जान को जोखम में डालते हुए, उन्होंने पलटकर गोलीबारी की और भाग कर घर के बरामदे में घुस गए। अब निरीक्षक गुलाम नबी भट्ट के सामने काम अधिक चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि उनको घर के प्रत्येक कमरे में जाना था और भारी हथियारबंद उग्रवादियों का सीधे सामना करना था। इस अवसर पर निरीक्षक गुलाम नबी भट ने सैन्य दलों का नेतृत्व किया और स्वयं को आगे बढ़ रहे सैन्य दलों के आगे रखा। सैन्य दल घर के प्रत्येक कमरे से होते हुए आगे बढ़ गया और बंदूकों की भीषण लड़ाई के बाद दोनों उग्रवादियों को मार गिराया। दोनों उग्रवादियों की बाद में पाकिस्तानी मूल के कट्टर एलईटी उग्रवादी नामतः परवीज उर्फ हुफैजा उर्फ अनीस (ए श्रेणी) और हाफिज उर्फ छोटा हाफिज उर्फ बाबर (ए++श्रेणी) के रूप में पहचान की गई। दो एके—47 राइफल और गोला—बारुद भी बरामद किया गया।

उपर्युक्त अभियान एक बड़ी सफलता था जिसमें सीआरपीएफ की 23वीं बटालियन के निरीक्षक/जीडी गुलाम नबी भट्ट ने अनुकरणीय साहस और सराहनीय कार्रवाई का प्रदर्शन किया। अभियान के दौरान सर्वप्रथम उन्होंने स्वयं अपने कार्मिक के साथ एक रणनीतिक स्थान पर पोजीशन संभाली और उग्रवादियों को उलझाए रखा तथा अवसर मिलते ही भवन में प्रवेश कर गए और दोनों उग्रवादियों को मार गिराया। जीवन खतरे में डालने वाली परिस्थिति में उनके द्वारा प्रदर्शित धैर्य न केवल अनुकरणीय है अपितु उच्चकोटि के साहस, शौर्य, निष्ठा, समर्पण और सेवा की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। संपूर्ण अभियान में उग्रवादियों और हमला समूह के बीच बहुत कम फासले और भारी मात्रा में गोलीबारी के कारण मौत सदैव बिलकुल नजदीक रही।

इस मुठभेड़ में श्री गुलाम नबी भट्ट, निरीक्षक ने अदम्यक वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.04.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 151—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. एच.एस. कुशवाह, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

02. नेकपाल, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सी.आर.पी.एफ. की 168वीं बटालियन को ग्राम रायगुड़ा, पवारगुड़ा और चिलकापल्ली, पुलिस स्टेशन बासागुड़ा, जिला बीजापुर, छत्तीसगढ़ के जंगल वाले क्षेत्र में माओवादियों की गतिविधि के बारे में आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। उक्त सूचना के आधार पर बटालियन द्वारा एक अभियान की योजना बनाई गई और इसे शुरू किया गया। सैन्य दल दिनांक 10.08.2014 को प्रातः बासागुड़ा बेस कैम्प से निकल पड़ा और चोरी–छिपे लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ने लगा। जब सैन्य दल रायगुडा गांव के नजदीक था, तो उन्होंने गांव के पीछे पहाड़ी पर कुछ संदिग्ध व्यक्तियों की मौजूदगी देखी। संदिग्ध व्यक्तियों को गिरफ्तार करने के लिए, कमांडर ने तत्काल अपने सैन्य दल को दो दलों में बांट दिया और एक दल को पहाड़ी पर भेजा जबकि वे अपने दल के साथ पहाड़ी से ग्राम पवारगुडा की ओर जाने वाले मार्ग को अवरूद्ध करने के लिए चल दिए। घने पेड़–पौधों की आड़ में दोनों दल अपने लक्ष्यों की ओर चल पड़े। पहाड़ी पर पहुंचने पर, उक्त दल ने ग्राम पवारगुड़ा के निकट संदिग्ध व्यक्तियों का वैसा ही गुट देखा। यह सूचना शीघ्र नीचे कमांडर के साथ साझा की गई। चूंकि, संदिग्ध व्यक्ति अवरोधक से बच सकते थे, इसलिए कमांडर ने उनको गांव में घेरने का निर्णय लिया। परन्तु ज्योंही दल ने गांव में प्रवेश किया, तो इसका गोलियों की बौछार से स्वागत किया गया। नेतृत्व कर रहे स्काउट कांस्टेबल/जीडी एच. एस. कुशवाह और कांस्टेबल/जी.डी. नेकपाल तुरंत हरकत में आ गए और वे चमत्कारिक ढंग से बच गए क्योंकि गोलियां उनके बिल्कुल पास से निकल गईं। इस प्रकार के अचानक और उग्र हमले से विचलित हुए बिना, दोनों ने पोजीशन ले ली और तुरंत जवाबी हमला किया। माओवादियों ने सैन्य दलों को गांव की ओर आते हुए देखकर सैन्य दलों के आगे बढ़ने में विलंब करने के लिए गोलीबारी शुरू कर दी और निकटवर्ती जंगल में भाग गए। गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाते हुए दोनों निडर कार्मिक रेंगकर और चोरी–छिपे माओवादियों के ठिकानों की ओर बढ़ने लगे। सैन्य दलों की गतिविधि को फिर से रोकने के लिए, माओवादियों ने ग्रामीणों को अपने घरों से निकलने के लिए मजबूर कर दिया और लोगों को ढाल बनाकर वहां से बच कर निकलने का प्रयास किया। परन्तु उनकी कार्रवाई कांस्टेबल एच.एस. कुशवाह और कांस्टेबल नेकपाल की पैनी नजरों से नहीं बच पाई जो अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह किए बिना और अपनी जान की तुलना में राष्ट्रीय हित और गौरव को महत्व देते हुए माओवादियों को रोकने और बच कर निकलने के मार्ग को कवर करने के लिए दौड़ पड़े। धैर्य तोड़ने वाले आगामी कुछ क्षणों में कांस्टेबल एच.एस. कुशवाह और कांस्टेबल नेकपाल अपने स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे भारी हथियार बंद माओवादियों के आमने–सामने थे। यह स्थिति बहादुर सैनिकों को भी भयभीत कर सकती थी, परन्तु दो साहसी सैनिकों ने माओवादियों पर गोलीबारी की और उन्हें बचकर निकलने से रोक दिया। गंभीर खतरे का सामना करने में दोनों कांस्टेबलों के सतत प्रयासों का लाभ मिला क्योंकि उनकी गोलियों से एक माओवादी घायल हो गया। फिर दिलेर सैनिक अंतिम हमले के लिए गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की रणनीति को अपनाते हुए माओवादियों के की ओर आगे बढ़े और उन पर हमला कर दिया। परन्तु जब लड़ाई सैन्य दलों के पक्ष में जा रही थी, तो जंगल के भीतर छिपे माओवादियों के एक अन्य गुट ने फंसे हुए माओवादियों की सहायता के लिए सैन्य दल पर गोलीबारी शुरू कर दी। दो दिशाओं से भारी गोलीबारी में उनको गंभीर चोटें आई, परन्तु वे आत्मसमर्पण करने वालों में से नहीं थे। माओवादियों पर जवाबी हमला करने के लिए, उन्होंने अपनी गोलियों की दिशा को बदल दिया और ज्यादा से ज्यादा हथगोलों का प्रयोग किया। चूंकि, उनकी गोलीबारी बंट गई थी, इसलिए घायल और फंसे हुए माओवादियों को जंगल में भागने का अवसर मिल गया। माओवादियों को भागते हुए देखकर, दिलेर सैनिकों ने सभी सावधानियों को ताक पर रख दिया और गोलियों के जख्मों की पीड़ा और उनके शरीर पर लगे रक्त की परवाह किए बिना माओवादियों का पीछा किया। पीछा करने के दौरान जब दिलेर सैनिकों ने जंगल में प्रवेश किया तब जंगल में इंतजार कर रहे माओवादियों ने उन पर अचानक और चौंकाने वाला हमला कर दिया। कांस्टेबल एच.एस. कुशवाह और कांस्टेबल नेकपाल ने शीघ्र पेड़ों के पीछे पोजीशन ले ली और वे सुनियोजित ढ़ग से तेजी से लगाई गई घात को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने तुरंत सुधारात्मक उपाय किए और पीछे आ रहे सैन्य दलों को आगाह किया। उनकी इस प्रकार की पूर्व कार्रवाई से घात का पता चल गया और अन्य सैन्य दलों को इसमें फंसने से रोक लिया। गंभीर रूप से घायल होने और भयंकर गोलीबारी में घिरने के बावजूद, बहादुर सैनिकों ने गोलीबारी जारी रखी और माओवादियों को भारी क्षति पहुंचाई। खून निकलने से शीघ्र उनकी इंद्रियां सुन्न होने लगी। इस परिस्थिति में भी, माओवादियों को फंसाने की एक चाल में उन्होंने गोलीबारी बंद कर दी और जब माओवादी, उनको मरा हुआ जानकर उनके हथियार छीनने के लिए आगे बढ़े, तो उन्होंने अचानक गोलीबारी शुरू कर दी और आगे बढ़ रहे माओवादियों को चोट पहुंचाई। गंभीर रूप से घायल और कठिन परिस्थिति में फंसे शत्रु के अचानक और चौंकाने वाले हमले से माओवादियों का मनोबल तोड़ दिया और उन्होंने जंगल में और भीतर भागना शुरू कर दिया। दोनों दिलेर सैनिक अपनी अंतिम सांस तक माओवादियों पर गोलीबारी करते रहे और अंततः देश की सेवा में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। मुठभेड़ के पश्चात क्षेत्र की पूरी तरह छानबीन की गई। यद्यपि, कोई भी शव बरामद नहीं हुआ, परन्तु उस क्षेत्र में मौजूद खून के धब्बों से पता चलता था कि कुछ माओवादियों को गंभीर चोटें आई थी और इससे बाद में उनकी मृत्यु हो गई होगी।

श्री एच.एस. कुशवाह, कांस्टेबल/जीडी और श्री नेकपाल कांस्टेबल/जीडी ने देश की सेवा की वेदी पर अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया और सर्वोच्च बलिदान दिया। मुठभेड़ के दौरान दोनों दिलेर सैनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और माओवादियों को भारी क्षति पहुंचाई। उन्होंने उच्च कोटि की दक्षता, निष्ठा और अपने कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वे अपनी अंतिम सांस तक लड़े ओर संख्या में अधिक तथा रणनीतिक ढंग से बेहतर स्थिति वाले शत्रु पर जवाबी हमला किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) एच.एस. कुशवाह, कांस्टेबल, एवं (स्व.) नेकपाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 152—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अजेन्द्र सिंह,
सहायक उप निरीक्षक

02. मोहम्मद आसिफ,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कश्मीर घाटी ने कई वर्षों तक आतंकवाद के अनेक रूप अर्थात सुरक्षा बलों के दस्तों पर हमले, उनके शिविरों पर रॉकेट से हमले, व्यस्त बाजारों में ग्रेनेड फेंकने और भीड़—भाड़ वाले स्थानों पर चोरी—छिपे पिस्तौल से हमले देखे हैं, परन्तु सुरक्षा बलों ने आक्रामक जवाबी हमला करके हर प्रकार के आतंकवाद को विफल किया है। बेहतर ढ़ंग से तैयार सैन्य दलों का सामना करने में असफल होकर और अपने प्रत्येक अभियान के बीच में हार का स्वाद चखकर उग्रवादियों ने हॉल ही में एक ऐसे लक्ष्य पर हमला करने का तरीका अपनाया है, जिसे वे थोड़ा सा आसान मानते हैं अर्थात सैन्य दलों के काफिले अथवा संभार तंत्र की आपूर्ति जैसी प्रशासनिक गतिविधि के दौरान उन पर हमला करते हैं।

दिनांक 08 नवम्बर, 2014 को लगभग 1800 बजे उग्रवादियों ने सीआरपीएफ पर ऐसा ही एक कायरतापूर्ण हमला किया, परन्तु उनको उसी प्रकार का अंजाम भुगतना पड़ा जैसा वे वर्षों से करते रहे हैं। दिनांक 08 नवम्बर को सीआरपीएफ की 163वीं बटालियन का एक स्वराज मजदा वाहन रजि. सं. एच.आर. 68, 2743 डिटैचमेंट मुख्यालय से सामग्री इकट्ठा करने के पश्चात जब वेसु में अपनी कंपनी के ठिकाने पर लौट रहा था, तो उस पर गांव ल्यूडोरा, पुलिस स्टेशन कांजीगंद, जिला कुलगांम, जम्मू एवं कश्मीर में एमएस 226 के नजदीक आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर हमला किया गया। आतंकवादियों ने रणनीतिक ढ़ंग से लाभपूर्ण स्थान से घात लगाई थी, जिसमें उनको निर्माणाधीन सड़क का लाभ प्राप्त था जिसने वाहन को धीमा कर दिया था और उसमें कई बचने के मार्ग भी मौजूद थे। घनी आबादी और धीमी रोशनी ने भी उनके लिए एक अतिरिक्त लाभ के रूप में कार्य किया। जब वह ट्रक, जिसमें छह कार्मिक सवार थे, दांयी ओर खड़े एक ट्रक की आड़ लेते हुए सीआरपीएफ वाहन के आगे के हिस्से पर अंधाधुंध गोलीबारी की। भारी गोलीबारी से आगे बैठे व्यक्तियों नामतः कांस्टेबल/चालक मोहम्मद आसिफ और एएसआई/जीडी अजेन्द्र सिंह को गंभीर चोटें आईं। उसी समय सड़क के बांयी ओर छिपे दूसरे आतंकवादी ने वाहन के पीछे बांयें हिस्से पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इस दूसरे हमले के परिणामस्वरूप, पीछे बैठे दो अन्य सीआरपीएफ कार्मिकों को गंभीर चोटें आईं। लश्कर के आतंकवादियों द्वारा यह हमला वास्तव में सेना के ट्रक पर हैदरपुरा हमले के समान था, जिसमें 13 सैन्य कर्मी मारे गए थे और 20 से ज्यादा घायल हो गए थे।

सैन्य दल जीवन की चुनौतीपूर्ण स्थिति में फंस गया था और यदि बहादुर कमांडर एएसआई/जीडी अजेन्द्र सिंह ने अत्यधिक सूझबूझ के साथ उत्कृष्ट वीरता के कार्य का प्रदर्शन नहीं किया होता, तो आतंकवादियों द्वारा पहुंचाई गई क्षति कई गुना बढ़ गई होती। आतंकवादियों की गोलीबारी से अपने कार्मिकों को बचाने और आतंकवादियों पर जवाबी हमला करने की दोहरी जिम्मेवारी के साथ उन्होंने स्वयं गंभीर चोट अर्थात् अपनी दांयी बाजू और दांए पैर पर गोली से चोटें लगने के बावजूद कांस्टेबल/चालक मोहम्मद आसिफ को वाहन की गति बढ़ाने और इसे मारक क्षेत्र से बाहर ले जाने का आदेश दिया जबकि वे स्वयं जवाबी हमला करने के लिए चलते हुए वाहन से बाहर कूद गए। अगले कुछ सेंकड में, वे वाहन पर गोलीबारी कर रहे आतंकवादियों के आमने—सामने आ गए और उन पर जोरदार हमला कर दिया। उनके साहसिक प्रयास ने आतंकवादियों को वाहन पर गोलीबारी को रोकने के लिए विवश कर दिया। अपने कार्मिकों की सुरक्षा करने के सर्वप्रथम कार्य को पूरा करने के पश्चात, एएसआई/जीडी अजेन्द्र सिंह ने फिर रोड़ रोलर के पीछे पोजीशन ले ली और लगातार आतंकवादियों पर गोलीबारी करते रहे। उनकी कार्रवाई ने आतंकवादियों के आक्रोश को उनकी ओर मोड़ दिया और उन्होंने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यद्यपि गोलियां उनके चारों ओर बरस रही थीं और उनकी चोटें उनके दाएं हाथ की उंगलियों के आसानी से चलने में बाधा पहुंचा रही थीं, तथापि, एएसआई/जीडी अजेन्द्र सिंह भयभीत नहीं हुए बल्कि उन्होंने अपने बाएं हाथ और बाएं कंधे से बंदूक को चलाकर गोलीबारी करने का एक नया तरीका ढूंढा। उनके कल्पनातीत प्रयासों को तब सफलता मिली, जब उनकी गोलियों से एक आतंकवादी भी घायल हो गया। जब यह बहादुर अधीनस्थ अधिकारी अत्याधुनिक हथियारबंद आतंकवादियों से अकेले लड़ाई लड़ रहा था, तो कांस्टेबल/चालक मोहम्मद आसिफ ने टांग में फ्रैक्चर और अपने पेट में गोली लगने के बावजूद सफलतापूर्वक ट्रक को चलाकर मारक क्षेत्र से और 50 मीटर दूर ले गए। जब पीछे बैठे सैन्य दलों को एएसआई/जीडी अजेन्द्र सिंह के वीरतापूर्ण कार्यों के बारे में पता चला, तो वे उनकी सहायता और आतंकवादियों पर हमला करने के लिए दौड़ पड़े। यह देखकर कि सैन्य दल घिरे हुए सैनिक की सहायता के लिए आ रहे हैं, आतंकवादियों ने लेन में और भीतर हटना शुरू कर दिया। आतंकवादियों को लेन में भागते हुए देखकर, एएसआई/जीडी अजेन्द्र सिंह अपने कवर से बाहर आ गए और उनका पीछा किया। परन्तु आतंकवादी धीमी रोशनी और लोगों की उपस्थिति का लाभ उठाकर भागने में सफल हो गए।

अत्यधिक खतरे का सामना करने में विलक्षण सूझबूझ के अतिरिक्त, एएसआई/जीडी अजेन्द्र सिंह ने न केवल सैन्य दलों द्वारा झेली जा रही वेदना को कम किया, अपितु अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए आतंकवादियों पर जवाबी हमला भी किया। कांस्टेबल/चालक मोहम्मद आसिफ ने अपनी जान को गंभीर खतरा होते हुए भी अपने वाहन का नियंत्रण नहीं खोया और अपने शरीर में दो गोलियां लगने के बावजूद इसे चलाकर मारक क्षेत्र से बाहर ले गए।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अजेन्द्र सिंह, सहायक उप निरीक्षक और मोहम्मद आसिफ, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.11.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 153—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सुनिल राम, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 17.08.2015 को सीआरपीएफ की 168वीं बटालियन को ग्राम गुट्टम, पुलिस स्टेशन बासागुडा, जिला बीजापुर (छत्तीसगढ़) के नजदीक माओवादियों के एक गुट की मौजूदगी के बारे में एक सूचना प्राप्त हुई। तत्काल राज्य पुलिस के साथ सीआरपीएफ की 168वीं बटालियन की डी एंड जी कंपनियों की एक—एक पलटन द्वारा संदिग्ध गांव अर्थात गुट्टम और इसके निकटवर्ती क्षेत्र को घेरने और उसकी तलाशी लेने के लिए एक अभियान की रूपरेखा तैयार की गई। अभियान शुरू करने के लिए, तिमापुर बेस कैम्प को चुना गया, जहां से लक्षित गांव लगभग 12 किमी. की दूरी पर था। योजना के अनुसार, सैन्य दल अंधेरे की आड़ में दिनांक 18.08.2015 की भारे में बेस कैम्प से निकलने और लक्षित क्षेत्र की ओर चल दिए। लक्षित क्षेत्र को रणनीतिक ढंग से घेर लिया गया और गांव तथा निकटवर्ती क्षेत्र की तलाशी ली गई, परन्तु माओवादियों से संपर्क स्थापित नहीं हुआ। तत्पश्चात, सैन्य दलों ने उस क्षेत्र से अपनी वापसी की योजना बनाई।

जब सैन्य दल घने जंगल से अपने बेस कैम्प लौट रहे थे, तो स्काउट दल, जिसमें कांस्टेबल सुनिल राम शामिल थे, ने एक खुले क्षेत्र के दूसरे छोर पर तीन ग्रामीणों को संदिग्ध रूप से घूमते हुए देखा। तीन ग्रामीणों में से एक जानबूझ कर अपने हाथ में एक वाकी—टॉकी सेट प्रदर्शित कर रहा था। यह खुला क्षेत्र आगे घने जंगल से घिरा था और वे ग्रामीण सैन्य दलों को उनका पीछा करने के लिए उकसा रहे थे, जिससे कमांडर के मन में संदेह उत्पन्न हो गया और उन्होंने सैन्य दलों को चौकन्ना कर दिया। खुले क्षेत्र के इर्द—गिर्द घने पेड़—पौधों में पोजीशन लिए हुए माओवादियों द्वारा आगे घात लगाए जाने का संदेह करते हुए, कमांडर ने माओवादियों पर जवाबी हमला करने का निर्णय लिया। छद्म रणनीति के रूप में, उन्होंने दोनों पलटनों को उसी स्थान पर पोजीशन लिए रहने का आदेश दिया जबकि वे दोनों पलटनों के साथ पीछे से शत्रु पर जवाबी हमला करने के लिए चोरी—छिपे आगे बढ़ गए। घुमावदार मार्ग अपनाने और माओवादियों की नजर से स्वयं को छिपाने के पश्चात, दोनों पलटनें सावधानीपूर्वक शत्रु के ठिकानों की ओर आगे बढ़ गईं। लगभग 1215 बजे, कांस्टेबल सुनिल राम, जो नेतृत्व कर रहे थे, ने घने पेड़—पौधों और झाड़ियों के पीछे पोजीशन लिए हुए माओवादियों की मौजूदगी को देखा। उन्होंने दल को संभावित मुठभेड़ के बारे में सतर्क किया। सैन्य दल सतर्क थे और जब अग्रणी सैन्य दल पोजीशन ले रहे थे, तो उनकी गतिविधि को माओवादियों के निगरानी दल ने देख लिया जिसने तत्काल सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यह देखा गया कि माओवादियों ने सैन्य दलों को फंसाने के लिए "सी" आकार की घात लगा रखी थी और वे सैन्य दलों का उनके प्रलोभन में फंसने का इंतजार कर रहे थे। सैन्य दलों ने गोलीबारी का जवाब दिया और तुरंत जमीनी स्तर पर मौजूद पोजीशन ले ली। प्रारंभ में, घात लगाकर इंतजार कर रहे माओवादी सैन्य दलों के जवाबी हमले से चौंक गए, परन्तु चूंकि उन्होंने सुरक्षित आड़ के पीछे पोजीशन ले रखी थी और उन्हें रणनीतिक लाभ प्राप्त था, इसलिए उन्होंने वापस लड़ना तय किया और इस प्रक्रिया में उन्होंने आगे बढ़ रहे सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

भीषण मुठभेड़ के दौरान कांस्टेबल सुनिल राम और अन्य स्काउट, जो सबसे आगे थे, माओवादी ठिकानों की ओर आगे बढ़ते हुए बहादुरी से लड़े। उनकी गोलीबारी इतनी भीषण और सधी हुई थी कि इसने शत्रु को विचलित कर दिया और माओवादियों का पूरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। तब माओवादियों ने उन पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की लेकिन इससे वे भयभीत नहीं हुए। फौलादी हौसले के साथ स्काउट डटे रहे और अपने हथियारों से सशक्त गोलीबारी की और रणनीतिक ढंग से अपनी पोजीशन भी बदलते रहे। माओवादियों को और व्यथित करने के लिए कांस्टेबल सुनिल राम ने अपनी यूबीजीएल से गोलीबारी शुरू कर दी और पहले से भयभीत माओवादियों पर कहर बरसा दिया। तब तक माओवादी सुप्रशिक्षित सैन्य दलों के सामने सारी आशा छोड़ चुके थे और उन्होंने बचने के अपने अंतिम प्रयास में लक्ष्यहीन और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। माओवादियों को उस क्षेत्र से भागते हुए देखकर और पहले से चार यूबीजीएल ग्रेनेड़ों से फायर करने के पश्चात कांस्टेबल सुनिल राम उनका पीछा करने के लिए अपनी आड़ से बाहर आ गए। उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई ने अन्य स्काउटों के भीतर नया जोश पैदा कर दिया और उन्होंने भी माओवादियों की असावधानीपूर्ण गोलीबारी के बावजूद उनका अनुसरण किया पीछा करने के दौरान कांस्टेबल सुनिल राम आगे थे और उन्होंने माओवादियों पर भारी गोलीबारी की और साथ—साथ अपने साथियों को कवर फायर भी दिया। उन्होंने माओवादियों की असावधानीपूर्ण गोलीबारी का सामना किया और उनमें से कुछ को गंभीर चोटें पहुंचाने में सफल हो गए परन्तु जब वे अपने यूबीजीएल से दूसरा ग्रेने चलाने की तैयारी कर रहे थे, तो वे एक छिपे हुए माओवादी द्वारा किए गए विस्फोट गंभीर रूप से घायल हो गए। यद्यपि वे बुरी तरह घायल थे, तथापि, बहादुर कांस्टेबल सुनिल राम माओवादियों पर गोलीबारी करते रहे और अपनी अंतिम सांस तक अन्य सैन्य दलों को सहायता प्रदान करते रहे तथा सेवा की वेदी पर सर्वोच्च बलिदान दिया और शहादत प्राप्त की।

कांस्टेबल सुनिल राम बहादुरी से लड़े और राष्ट्र की सेवा में कर्तव्य की वेदी पर अपनी जान का सर्वोच्च बलिदान दिया। अभियान के दौरान वे बहुत सतर्क और चौकन्ने थे और उन्होंने आगे बने रहने की पहल की। उन्होंने अपनी यूबीजीएल लगी एके–47 से '04' यूबीजीएल (5वां चैम्बर में) चलाए और उनकी छाती में माओवादियों का बर्स्ट फायर लगने से पूर्व एके–47 के 19 राउण्ड भी चलाए थे। शत्रु की भीषण गोलीबारी का सामना करने में उनकी बहादुर, साहसी और समय पर की गई कार्रवाई, जिसमें वे अपने हथियार से गोलीबारी कर रहे और रणनीतिक ढंग से अपनी पोजीशन बदलते रहे, के कारण माओवादी अपना बचाव करने में लगे रहे। वे अपनी सुस्थापित घात से पीछे हटने पर मजबूर हो गए, तथा सैन्य दलों को भारी क्षति नहीं पहंची।

इस मुठभेड़ में (स्व.) श्री सुनिल राम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.08.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 154–प्रेज/2016–राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:––

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जिगनेश पटेल, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

छत्तीसगढ़ का बीजापुर जिला हमेशा माओवादी गतिविधियों का केन्द्र रहा है। कई वर्षों से माओवादी इस क्षेत्र में यातायात और संचार के साधनों को बाधित करते रहे हैं जो सैन्य दलों की शीघ्र आवाजाही में रूकावट पैदा करता है। सड़क की खराब हालत भी सुरक्षा बलों को लक्ष्य बनाकर आईआईडी लगाने के लिए सड़कों को सुभेद्य बना देती है। इस समस्या से निजात पाने के लिए, इस क्षेत्र में तैनात बटालियनें माओवादी–रोधी अभियान चलाने के अतिरिक्त सड़क निर्माण संबंधी कार्य हेतु सुरक्षा प्रदान करती हैं। दिनांक 09.08.2014 को 0815 बजे सीआरपीएफ की 168वीं बटालियन के 35 कार्मिकों और राज्य पुलिस के 30 कर्मियों वाला एक ऐसा गश्त दल आवापल्ली–मुरदांडा सडक पर सड़क निर्माण संबंधी कार्य हेतु सुरक्षा प्रदान करने के लिए आवापल्ली बेस कैम्प से निकला। गश्त दल को तीन टुकिड़यों में बांटा गया और कांस्टेबल जिगनेश पटेल टुकड़ी सं. 2 के स्काउट थे। ये टुकड़ियां एक–दूसरे से लगभग 40–मीटर की दूरी पर थीं। उक्त क्षेत्र को रणनीतिक ढ़ंग से घेरने और आईईडी हमले को रोकने के लिए, सैन्य दल सड़क की बांयी ओर लगभग 50 मीटर हटकर चल रहे थे। जब गश्त दल ने अपने बेस से मुरदांड़ा की ओर लगभग 700 से 800 मीटर की दूरी तय कर ली थी, तो कांस्टेबल जिग्नेश पटेल ने अपनी बांयी ओर जंगल के भीतर कुछ संदिग्ध गतिविधि देखी। उन्होंने तुरंत अपनी टुकड़ी को रूकने का संकेत दिया, परन्तु इससे पहले कि आगे की टुकड़ी सतर्क होती, जंगल के भीतर छिपे माओवादियों ने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। आगे की टुकड़ी ने तुरंत पेड़ों के पीछे आड़ ले ली और जवाबी गोलीबारी की। माओवादियों की भारी गोलीबारी से घिरे हुए सैन्य दलों की जान के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया।

माओवादियों के ठिकानों का बारीकी से मुआयना करने के पश्चात कांस्टेबल जिगनेश पटेल ने घात के किनारों की तरफ जवाबी हमला करने की योजना बनाई। वे अपनी टुकड़ी के साथ रेंगकर घने पेड़–पौधों की आड़ लेते हुए माओवादी ठिकानों की ओर आगे बढ़े। माओवादी ठिकानों के नजदीक पहुंचने पर, इस टुकड़ी ने देखा कि माओवादी भारी संख्या में हैं और सुरक्षित आड़ के पीछे भली–भांति छिपे हुए हैं। रणनीतिक एवं सुरक्षित रूप से डटे हुए और संख्या में काफी अधिक शत्रुओं पर हमला करना एक बेहद खतरनाक कार्य था। फिर भी कांस्टेबल जिग्नेश पटेल ने अपनी जान की परवाह किए बिना और घात में फंसे सैन्य दलों की जान बचाने के लिए माओवादियों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। उनके वीरतापूर्ण हमले का अनुसरण करते हुए, टुकड़ी के अन्य लोगों ने भी माओवादियों पर गोलीबारी की। इस हमले का लाभकारी परिणाम मिला क्योंकि कुछ माओवादी घायल हो गए और फंसे हुए सैन्य दलों को घात वाले क्षेत्र से बाहर निकलने का मौका मिल गया। सैन्य दलों को भारी क्षति पहुंचाने और उनके हथियार छीनने की अपनी योजना में विफल होकर, माओवादियों ने अब अपनी गोलीबारी को कांस्टेबल जिगनेश पटेल और उनकी टुकड़ी की ओर केन्द्रित कर दिया। माओवादियों की संख्या और उनकी गोलीबारी से विचलित हुए बिना, यह टुकड़ी अपने स्थान पर मजबूती से डटी रही और जवाबी हमला किया। यह समझते हुए कि वे सैन्य दलों पर रणनीतिक और संख्यात्मक दृष्टि से लाभ की स्थिति में हैं, माओवादियों ने फिर उस टुकड़ी को घेरने की कोशिश की। कास्टेबल जिगनेश पटेल, जो टुकड़ी के आगे थे, ने माओवादियों की गतिविधि को देखा और इसका जवाब देने के लिए भारी गोलीबारी में रेंगकर अपनी बांयी ओर चले गए। इस प्रक्रिया में, वे सैन्य दलों को घेरने के लिए आगे बढ़ रहे माओवादियों के सामने आ गए। यद्यपि, वे ऐसी परिस्थिति में फंस गए थे जहां मौत उनके सामने खड़ी थी, फिर भी उन्होंने अपनी आड़ से बाहर निकल कर माओवादियों पर बहादुरी और साहस के साथ गोलीबारी की। माओवादियों ने भी उन पर गोलीबारी की परन्तु अपनी सधी हुई गोलीबारी से उन्होंने कुछ माओवादियों को चोटें पहुंचाई। इस हमले ने माओवादियों को आगे बढ़ने से रूकने पर मजबूर कर दिया। माओवादियों पर दुबारा हमला करने के प्रयास में, बहादुर सैन्यकर्मी अपनी आड़ से बाहर आ गया और उन पर गोलीबारी की। परन्तु इस प्रक्रिया में, उनको भी गोली से गंभीर चोट पहुंची। चोट लगने के पश्चात भी बहादुर सैन्य कर्मी ने अपने अत्यधिक दर्द की परवाह नहीं की और माओवादियों पर गोलीबारी करते रहे। कांस्टेबल जिगनेश पटेल की वीरता और बहादुरी से

धूली चाट कर और टुकड़ी सं. 1 के सैन्य दलों के आगे बढ़ने से, माओवादियों ने दुतरफा हमले में फंसने की बजाय अपने घायल काडरों के साथ उस क्षेत्र से भागने में बुद्धिमानी समझी। कांस्टेबल जिगनेश पटेल को तत्काल मुठभेड़ स्थल से ले जाया गया, परन्तु चोट लगने के कारण वीर सेनानी की मृत्यु हो गई और उन्होंने शहादत प्राप्त की।

सीआरपीएफ की 168वीं बटालियन के कांस्टेबल/जीडी जिगनेश पटेल बहादुरी से लड़े और देश की सेवा में कर्त्तव्य की वेदी पर अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान कर दिया। शत्रु की गोलीबारी के समक्ष उनकी वीरतापूर्ण और साहसिक कार्रवाई से, जिसमें उन्होंने न केवल गोलीबारी की अपितु अतिसुरक्षित शत्रु पर जवाबी हमला भी किया, बहुत से सैन्य दलों की जान बचाई जा सकी। माओवादियों द्वारा उन पर किए गए सधे हुए हमले के बावजूद, वे रणनीतिक ढंग से अपनी स्थिति बदलते हुए अपने हथियार से गोलीबारी करते रहे। संपूर्ण मुठभेड़ में उन्होंने माओवादियों को सुरक्षात्मक हालत में बनाए रखा और उनको पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने उच्चकोटि की दक्षता, अपने कर्त्तव्य के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया।

बरामदगी:

1. एसएलआर के खाली खोखेः 02
2. एके—47 के खाली खोखेः 03
3. तार

इस मुठभेड़ में (स्व.) श्री जिगनेश पटेल, कांस्टेबल ने अदम्यक वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 155—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. कमल किशोर,
सहायक कमांडेंट
02. हंस राज सिंह मीणा,
उप निरीक्षक
03. अनिल कुमार,
कांस्टेबल
04. मिथिलेश पाल,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

माओवादियों के इकट्ठा होने के बारे में प्राप्त एक सूचना के आधार पर, सीआरपीएफ की 168वीं बटालियन तथा राज्य पुलिस (एसटीएफ+डीएफ) की सैन्य टुकड़ियों द्वारा योजना बना कर दिनांक 27.11.2014 को जिला—बीजापुर (छत्तीसगढ़) के पुलिस स्टेशन—बासगुडा के अधीन नेन्द्रा तथा गुट्टुम गांव में एक अभियान का निष्पादन किया गया। इस अभियान को दो आधार स्थलों अर्थात आवापल्ली और तीमापुर से शुरू किया गया और उसके लिए श्री कमल किशोर, सहायक कमांडेंट और श्री राजेंद्र कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन दो हमला दल दिनांक 27.11.2014 को 0100 बजे अपने—अपने आधार स्थल से रवाना हुए। अंधेरे में गोपनीय तरीके से आगे बढ़ते हुए श्री कमल किशोर, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन सुरक्षा दल पौ फटने तक लक्षित गांव अर्थात गुट्टुम के निकट पहुंच गया। उस गांव तथा उसके साथ लगे जंगल की सघन तलाशी ली गई, लेकिन वहां माओवादियों की मौजूदगी का कोई संकेत नहीं मिला। तत्पश्चात, वह दल नेन्द्रा गांव की ओर बढ़ गया, जहां दूसरा दल तलाशी ले रहा था। अपने आगे बढ़ने की दिशा का रहस्य बरकरार रखने के लिए उस दल ने घुमावदार रास्ते को चुना और घने जंगल में प्रवेश कर गया।

मुश्किल से वह दल जंगल के भीतर कुछ ही दूरी तक आगे बढ़ा ही था कि कांस्टेबल अनिल कुमार नामक स्काउट ने कुछ दूरी पर कुछ संदिग्ध व्यक्तियों की मौजूदगी देखी। उन्होंने तत्काल अपने सैन्य दल को वहां संभावित खतरे की मौजूदगी का संकेत दिया और सभी सुरक्षाकर्मी नीचे लेटते हुए वहां उपलब्ध आड़ के पीछे छिप गए। श्री कमल किशोर ने यह जानते हुए कि, सैन्य टुकड़ी की कोई भी बड़ी गतिविधि संदिग्ध व्यक्तियों को सतर्क कर देगी, जिसके परिणामस्वरूप वे उस स्थान से भाग जाएंगे, एसआई/जीडी एच.आर. मीणा, कांस्टेबल अनिल कुमार और कांस्टेबल मिथिलेश पाल को शामिल करके एक छोटे दल का गठन किया और उन्हें अपने नेतृत्व में आस—पास में दुश्मन की मौजूदगी का पता लगाने के कार्य पर लगाया। बहादुर सैनिकों का यह समूह किसी भी औचक एवं

आकस्मिक हमले का मुकाबला करने के लिए हथियारों के ट्रिगर पर अपनी उंगलियों को दृढ़ता के साथ जमाए हुए वहां उपलब्ध आड़ का अधिकतम उपयोग करते हुए रेंगते हुए आगे बढ़ा। अपने लक्ष्य के निकट पहुंचने पर, उन्होंने वहां एक लड़के और लड़की को देखा जो वहां आराम से खड़े थे, लेकिन वे अपने आस—पास के क्षेत्र पर नजर रख रहे थे। उनके आस—पास कोई सशस्त्र माओवादी समूह मौजूद नहीं था। जब कमांडर कार्रवाई के आगामी चरण पर विचार कर रहे थे, तभी उनके दल पर एक पेड़ के ऊपर से अचानक तीव्र गोलीबारी होने लगी। कमांडर और उनके दल ने उस दिशा में फौरन जवाबी गोलीबारी की जिस ओर से उनके ऊपर गोलीबारी की गई थी और उन्होंने एक माओवादी को पेड़ से कूद कर घने जंगल के भीतर भागते हुए देखा। वहां से भाग रहे माओवादी का पीछा करने के लिए, चार बहादुर सैनिक तत्काल आड़ के पीछे से बाहर आ गए लेकिन वे यह देख कर भौंचक्के रह गए कि वहां मौजूद लड़का और लड़की भी छलांग लगा कर एक पेड़ के पीछे चले गए और उन्होंने अपने पास छिपा कर रखे हथियारों को निकाल कर उनके ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। यदि वे चारों बहादुर सैनिक समय पर नीचे नहीं लेट गए होते तो अचानक किया गया यह हमला घातक साबित हो सकता था। उनके ऊपर की गई गोलीबारी के निशाने से चूकते ही चारों बहादुर सैनिकों ने अपनी जान की परवाह किए बगैर और वहां किसी भी आड़ के अभाव में उनके ऊपर भारी गोलीबारी की और उन्हें वहीं घेर लिया। तत्पश्चात, कमांडर श्री कमल किशोर ने अपने छोटे दल को अलग—अलग हिस्सों में विभाजित होने का संकेत दिया और उन्हें पेड़ के पीछे तैनात माओवादियों के ऊपर दो तरफ से हमला करने के लिए कहा। एक दिशा से कांस्टेबल अनिल कुमार को साथ लेकर श्री कमल किशोर आगे बढ़े और दूसरी दिशा से कांस्टेबल मिथिलेश पाल के साथ एसआई/जीडी एच.आर. मीणा आगे बढ़े।

सैन्य दल एक—एक गोली का जवाब देते हुए बेहद सावधानीपूर्वक आगे बढ़ रहा था, तभी अचानक उनके ऊपर गोलियों की बौछार होने लगी। कमांडर को यह समझने में देर नहीं लगी कि और अधिक माओवादी अपने घिरे हुए काडरों की सहायता के लिए गोलीबारी में शामिल हो गए हैं। उन्होंने सहायता प्रदान करने के लिए तत्काल अपने दल के अन्य सदस्यों को बुलाया और उन्हें आगे बढ़ने का आदेश दिया, लेकिन यह दल अभी भी काफी पीछे था क्योंकि माओवादियों की ओर से की जा रही तीव्र गोलीबारी के कारण उनके तेजी से आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न हो रही थी। यह जानते हुए कि यदि तत्काल कुछ नहीं किया गया, तो माओवादी अपने घिरे हुए काडरों को वहां से बचाकर निकालने में सफल हो जाएंगे, श्री कमल किशोर ने अपने छोटे दल को उस पेड़ की ओर ही एकाग्र होकर गोलियां दागते रहने का आदेश दिया जिसके पीछे दो माओवादी छिपे हुए थे, ताकि उन्हें वहां से निकल कर भागने का मौका नहीं मिल सके। लेकिन ऐसा कर के उन्होंने अपने लिए और समस्या मोल ले ली, क्योंकि उनकी रणनीति का मुकाबला करने के लिए माओवादियों ने भी उनके छोटे दल को ही अपना लक्ष्य बना लिया और उनके ऊपर एकाग्र होकर गोलीबारी करने लगे। जल्द ही बहादुर सैनिकों के चारों ओर आड़ एवं जमीन के ऊपर गोलियां लगने लगी, लेकिन कमांडर यह जानते थे कि उन्हें सफलता प्राप्त करने से पूर्व कुछ सौभाग्यशाली क्षणों की आवश्यकता थी, क्योंकि उनका सहायक दल जल्द ही उनके पास पहुंचने वाला था। लेकिन माओवादी अपने काडरों को रिहा करवाने के लिए अत्यंत व्यग्र थे और इसके लिए उन्होंने कई दिशाओं से हमला करने के लिए छोटे सैन्य दल को घेरना शुरू कर दिया। यदि माओवादियों द्वारा अपनाई गई युक्ति सैन्य टुकड़ी के लिए लाभदायक साबित नहीं होती, तो छोटी टुकड़ी के सैनिकों की जान को गंभीर खतरा उत्पन्न हो जाता और वे मौत की कगार पर पहुंच जाते। छोटी सैन्य टुकड़ी के ऊपर माओवादियों द्वारा की जा रही संकेन्द्रित गोलीबारी ने सुरक्षा दल के अन्य सदस्यों को तेजी से आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया और ज्यों ही वे मुठभेड़ स्थल के निकट पहुंचे, उन्होंने भयंकर जवाबी हमला शुरू कर दिया। जवाबी हमले ने माओवादियों को आगे बढ़ने से रूकने पर मजबूर कर दिया और उन्होंने पीछे हटते हुए जंगल के भीतर जाना शुरू कर दिया। लेकिन कमांडर और उनके छोटे दल का लक्ष्य निर्धारित था और जैसे ही सादी वर्दी वाले दोनों माओवादी सैन्य टुकड़ी पर गोलीबारी करते हुए वहां से भागने के लिए अपनी आड़ से निकल कर बाहर आए, उन्होंने उन माओवादियों को निशाना बनाकर गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी इस गोलीबारी का परिणाम भी सामने आया और दोनों माओवादी लंगड़ा कर चलते हुए देखे गए। सैन्य टुकड़ी ने इसके बाद युक्तिपूर्वक आगे बढ़ना शुरू किया क्योंकि पीछे हट रहे माओवादी अभी भी गोलीबारी कर रहे थे।

उस क्षेत्र की तलाशी के दौरान वहां से एक 0.303 राइफली, 28 राउंड गोलाबारुद, एक मैगजीन और अन्य आपत्तिजनक सामग्रियों के साथ एक माओवादी का शव बरामद किया गया। उस क्षेत्र में फैले खून के धब्बे इस बात की ओर भी इशारा कर रहे थे कि मुठभेड़ के दौरान और अधिक माओवादी गंभीर रूप से घायल हुए थे। मारे गए माओवादी की बाद में ओयम बुद्री, पुत्र — स्व. इराया ओयम, निवासी गांव पेड्डा जोजर, पुलिस स्टेशन — गंगलूर के रूप में पहचान की गई जो माओवादियों के आवापल्ली एलओएस का सदस्य था।

सैन्य टुकड़ी की ओर से ऐसी दृढ़ एवं साहसिक कार्रवाई, मुख्य रूप से श्री कमल किशोर, सहायक कमांडेंट, एसआई/जीडी एच.आर. मीणा, कांस्टेबल/जीडी मिथलेश पाल और कांस्टेबल/जीडी अनिल कुमार के दल के आगे बढ़ने की कवायद के परिणामस्वरूप अनेक माओवादियों को घायल करने के साथ—साथ एक माओवादी को ढ़ेर किया जा सका। स्वचालित हथियारों से लैस माओवादियों की संख्या काफी अधिक होने के बावजूद इन बहादुर सैनिकों ने अपने अदम्य साहस और अद्वितीय बहादुरी से दुश्मनों को अपने से दूर रखा। दुश्मनों के समक्ष उनकी उत्कृष्ट कोटि की बहादुरी ने दल के अन्य सदस्यों को भी प्रोत्साहित किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री कमल किशोर, सहायक कमांडेंट, हंस राज सिंह मीणा, उप निरीक्षक, अनिल कुमार, कांस्टेबल और मिथिलेश पाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.11.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 156—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

| | | |
|---|---|---|
| 01. | मदन लाल ऑखे, कांस्टेबल | (मरणोपरांत) |
| 02. | अमिताभ मिश्रा, कांस्टेबल | (मरणोपरांत) |
| 03. | दिगंता बयन, कांस्टेबल | (मरणोपरांत) |
| 04. | दिलीप कुमार, कांस्टेबल | (मरणोपरांत) |

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीआरपीएफ की 168वीं बटालियन छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में माओवादी—रोधी अभियानों के लिए तैनात है और इस क्षेत्र में उनके द्वारा निरंतर चलाए जाने वाले अभियानों के कारण माओवादियों की गतिविधियों पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सका है। माओवादियों की हताशा तब काफी बढ गई जब वहां की आबादी ने आम संसदीय चुनाव के बहिष्कार के उनके फरमान को नहीं माना और उसके बजाय चुनाव प्रक्रिया में तन—मन से भाग लिया। संसदीय चुनावों के सफल आयोजन के कारण माओवादी काडरों के ऊपर उनके उच्च संघटन की ओर से भारी दबाव आ गया। माओवादियों ने अपनी छवि को सुधारने और एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम देने की आवश्यकता के प्रयास में, जो कि मीडिया के माध्यम से स्थानीय आबादी के बीच उनके प्रभाव को पुनः स्थापित कर सकता था, दिनांक 27.11.2013 को छत्तीसगढ़ के जिला—बीजापुर के पुलिस स्टेशन—मोदकपाल के अधीन गांव—नुकनपाल के निकट सीआरपीएफ की 168वीं बटालियन के मार्ग खोलने वाले गश्ती दल के ऊपर योजना बनाकर घात लगाते हुए हमले को अंजाम दिया।

चेरामांगी में दूसरी कंपनी के बेस तक मार्ग को सुरक्षित करने के लिए दिनांक 27.11.2013 को मुर्किनार में कंपनी के बेस कैम्प से मार्ग को खोलने वाले एक गश्ती दल को भेजा गया। यह मार्ग घने जंगल और असमतल भू—भाग के बीच से गुजरता है जो इसे औचक एवं अचानक किए जाने वाले हमले की दृष्टि से असुरक्षित बनाती है। जैसे ही मार्ग खोलने वाले गश्ती दल ने नुकनपाल गांव को पार किया, जो कि मुर्किनार कैंप से लगभग 3.5 किमी. की दूरी पर था, कांस्टेबल दिगंत बयान और कांस्टेबल दिलीप कुमार नामक स्काउट ने अपनी दायीं ओर जंगल में कुछ संदिग्ध गतिविधि देखी। उन्होंने तत्काल सैन्य टुकड़ी को सचेत किया और वे सावधानीपूर्वक संदिग्ध व्यक्तियों की ओर बढ़ने लगे। उनके पीछे कांस्टेबल मदन लाल ऑखे और कांस्टेबल अमिताभ मिश्रा का दूसरा सहयोगी जोड़ा चल रहा था। ये चारों बहादुर सैनिक गोपनीय तरीके से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन संदिग्ध व्यक्तियों को वहां उनकी मौजूदगी का आभास हो गया और वे भाग कर जंगल के भीतर चले गए। संदिग्ध माओवादियों को दबोचने के लिए चारों सैनिकों ने उनका पीछा किया। मुश्किल से ये स्काउट जंगल के भीतर 50 मीटर ही गए होंगे, तभी उनकी ओर लक्षित गोलियों की बौछार शुरू हो गई। स्काउट इसमें बाल—बाल बचे क्योंकि गोलियां बेहद नजदीक से अपने निशाने से चूकी थी। सैन्य टुकड़ी तत्काल हरकत में आ गई और उन्होंने आड़ के पीछे जाकर जवाबी गोलीबारी की। इन स्काउटों के लिए सिर्फ शुरूआती गोलियों की बौछार चौंकाने वाली घटना नहीं थी, बल्कि जल्द ही उनके ऊपर तीव्र एवं अंधाधुंध गोलीबारी की जाने लगी। तीव्र गोलीबारी ने पीछे वाली सैन्य टुकड़ी को आगे बढ़ने से रूकने पर मजबूर कर दिया और आगे मौजूद स्काउटों को जल्द यह अहसास हो गया कि वे माओवादियों द्वारा लगाई गई घात में फंस गए हैं। जब ये स्काउट सामने डटे माओवादियों के ऊपर जवाबी हमला करने की योजना बना रहे थे, तभी उनके दायीं और बायीं ओर छिपे माओवादियों ने भी उनके ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। इन स्काउटों को जल्द यह अहसास हो गया कि वे भारी मुसीबत में फंस गए हैं और माओवादी जल्द ही उन्हें घेरने की कोशिश करेंगे। इसी बीच, माओवादियों के दूसरे समूह ने गश्ती वाले मुख्य दल के ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी और उन्हें इन स्काउटों की सहायता के लिए आगे बढ़ने से रोक दिया।

माओवादियों द्वारा घेरे जाने की स्थिति का मुकाबला के लिए इन चारों बहादुर सैनिकों ने अपनी—अपनी गोलीबारी की दिशा बदलते हुए अपने पहले और दूसरे लक्ष्य का चयन किया और माओवादियों के ऊपर तीव्र गोलीबारी शुरू कर दी। सैनिकों के शुरूआती जवाबी हमले ने माओवादियों को आगे बढ़ने से रूकने पर मजबूर कर दिया लेकिन यह लड़ाई बहादुर सैनिकों के विरूद्ध बेहद विषम थी, क्योंकि वहां माओवादियों की पूरी कंपनी घात लगा कर बैठी हुई थी। इस वास्तविकता को समझते हुए कि लंबे समय तक माओवादियों को दूर रखना कठिन होगा और उस घात को तोड़ने के लिए जवाबी हमला ही एकमात्र विकल्प है, कांस्टेबल दिगंता बयन और कांस्टेबल दिलीप कुमार ने माओवादियों पर बायीं ओर से हमला करने और कांस्टेबल मदन लाल ऑखे और कांस्टेबल अभिताभ मिश्रा ने दाहिनी ओर से हमला करने का विकल्प चुना। दोनों सहयोगी जोड़े रेंगते हुए अपने सुरक्षित स्थानों से बाहर निकले और माओवादियों से आमना—सामना होने पर उन्होंने उनके ऊपर तीव्र गोलीबारी शुरू कर दी। इस ठोस और साहसी हमले के परिणामस्वरूप कुछ माओवादी घायल हो गए, लेकिन इस प्रयास में बहादुर सैनिक भी गोलियां लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए। इस जोरदार हमले से आश्चर्यचकित होते हुए, माओवादियों ने सैनिकों के हमले से बचने के लिए अपने घात वाले क्षेत्र से अपने बचाव में बिछाई गई आईईडी में विस्फोट करना शुरू कर दिया। आईईडी में किए गए विस्फोटों ने बहादुर सैनिकों को अपने हमले को रोकने और अपनी रणनीति की योजना पुनः बनाने पर मजबूर कर दिया। माओवादी जब सैनिकों को भारी आघात पहुंचाने की अपनी योजना

में विफल हो गए, तब उन्होंने उनकी खतरनाक चाल को नाकाम करने के लिए इन स्काउटों के ऊपर निशाना लगाकर गोलियां चलाई। उनकी सहायता के लिए कुछ और माओवादी, जो कि गश्ती दल पर गोलीबारी कर रहे थे, इस समूह में शामिल हो गए। माओवादियों की बढ़ती संख्या और अपने शरीर से रिस रहे खून और पीड़ा की परवाह नहीं करते हुए चारों बहादुर सैनिकों ने अपना स्थान बदलते हुए माओवादियों के ऊपर गोलीबारी करना जारी रखा। लेकिन जल्द ही जख्म और खून की कमी ने नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया और सैन्यकर्मी बेहोशी की स्थिति में आने लगे। युक्तिगत रूप से अलाभप्रद स्थिति में होने और भारी हथियारों से लैस माओवादियों से घिरे होने के बावजूद बहादुर सैनिक अपनी अंतिम गोली तक अथवा होश में रहने तक लड़ते रहे। उन्होंने बहादुरीपूर्वक लड़ते हुए 45 मिनट तक माओवादियों को तब तक अपने से दूर रखा जब तक कि अतिरिक्त सैन्य टुकड़ी वहां नहीं पहुंच गई। जैसे ही अतिरिक्त सैन्य टुकड़ी वहां पहुंची और उन्होंने माओवादियों पर हमला किया, माओवादी वहां से अपने मृत एवं घायल काडरों को उठा कर घने जंगल के भीतर भाग गए। उस क्षेत्र की तलाशी के दौरान जंगल में माओवादियों के भागने के रास्ते पर अनेक जगह खून के धब्बे पाए गए, जो इस तथ्य को दर्शाता था कि उनमें से कुछ माओवादी बहादुर सैनिकों की गोलीबारी से बुरी तरह से घायल हो गए थे। घात वाले स्थल से दागी गई गोलियों के खोखे, जिंदा कारतूस, पाइप बम, ग्रेनेड आदि भी बरामद किए गए।

अपने साहस और दृढ़ निश्चय से कांस्टेबल दिगंता बयान, कांस्टेबल दिलीप कुमार, कांस्टेबल मदन लाल आखी और कांस्टेबल अमिताभ मिश्रा ने 150 से अधिक संख्या वाले माओवादियों के एक बड़े समूह को न सिर्फ अपने से दूर रखा बल्कि उन्होंने एक माओवादी को मार गिराया और अनेक अन्य माओवादियों को घायल कर दिया। उन्होंने पहले संपूर्ण गश्ती दल को माओवादियों के घात वाले क्षेत्र में घिरने से बचा कर और तत्पश्चात अपनी जान की कीमत पर वहां सुरक्षित स्थानों में छिपे माओवादियों पर घातक जवाबी हमला करके गहन रणनीतिक सूझ—बूझ एवं बहादुरी का प्रदर्शन किया।

की गई बरामदगीः

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | जिंदा पाइप बम | : | 01 |
| 2. | प्रयुक्त पाइप बम | : | 02 |
| 3. | ग्रेनेड ब्लाइंड | : | 01 |
| 4. | बैटरी स्विच | : | 01 |
| 5. | बिजली के तार | : | 500 मीटर (लगभग) |
| 6. | ए.के. 47 ईएफसी | : | 03 |
| 7. | 7.62 एमएम ईएफसी | : | 04 |
| 8. | .303 ईएफसी | : | 07 |
| 9. | .303 मिस फायर राउंड | : | 05 |
| 10. | 12 बोर ईएफसी | : | 01 |
| 11. | 12 बोर जिंदा राउंड | : | 01 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) मदन लाल ऑखे, कांस्टेबल, (स्व.) अमिताभ मिश्रा, कांस्टेबल, (स्व.) दिगंता बयान, कांस्टेबल और (स्व.) दिलीप कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.11.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 157—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैंः——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. पी.के. सेठी,
उप निरीक्षक

02. जयन्ता तालुकदार,
कांस्टेबल

03. सचिन कुमार,
कांस्टेबल

04. सत्यम कुमार,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जिला—बीजापुर (छत्तीसगढ़) के पुलिस स्टेशन—गंगलूर के अधीन गांव—पडेडा और सवनार के साथ लगे जंगल में माओवादियों की आवाजाही के बारे में प्राप्त एक सूचना के आधार पर, दिनांक 27.06.2014 को सीआरपीएफ और राज्य पुलिस द्वारा एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया। इस अभियान में सीआरपीएफ के 25 कार्मिकों वाले विशेष कार्रवाई दल और राज्य पुलिस के डीआरजी (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड्स) के तीन दलों ने भाग लिया। उस क्षेत्र की गहन तलाशी लेने के लिए इन चार दलों को दो हमला दलों में विभाजित किया गया। ये दोनों हमला दल दिनांक 27.06.2014 को भोर में गोपनीय तरीके से बेस कैंप चेरपाल से रवाना हुए और उन्होंने लक्षित क्षेत्र में प्रवेश किया।

दोनों हमला दल एक—दूसरे के समानांतर आगे बढ़ रहे थे और गांव—सवनार के निकट जंगल में तलाशी ले रहे थे, तभी ऊंचे स्थान पर बैठे माओवादियों ने अचानक उस हमला दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसमें एसएटी और डीआरजी दोनों के एक—एक दल शामिल थे। इसमें हमला दल की अगुवाई कर रहे एसएटी के सदस्यों और विशेष कर एसआई/जीडी पी.के. सेठी, कांस्टेबल/जीडी जयन्ता तालुकदार, कांस्टेबल/जीडी सचिन कुमार और कांस्टेबल/जीडी सत्यम कुमार की जान बाल—बाल बची क्योंकि गोलियां उनके बेहद करीब से निकल गईं। सैन्य टुकड़ियां ऐसे अचानक ओर अचंभित करने वाले हमले के लिए भली—भांति तैयार थीं और इस प्रकार उन्होंने कोई भी बेशकीमती क्षण गंवाए बगैर कार्रवाई शुरू कर दी और जोरदार तरीके से जवाबी हमला शुरू कर दिया। वहां बेहद नजदीक से भीषण मुठभेड़ हुई। वहां की स्थिति काफी हद तक माओवादियों के पक्ष में थी, क्योंकि वे युक्तिगत रूप से लाभप्रद स्थानों पर डटे हुए थे और इस प्रकार वे जवाबी हमला करने की सैन्य टुकड़ी के सभी प्रयास को विफल कर रहे थे।

वहां की स्थलाकृति की जानकारी और घने जंगल का लाभ उठाते हुए सैन्य टुकड़ी को घेरने की माओवादियों की युक्ति से अवगत होने के कारण, एसआई/जीडी पी.के. सेठी ने स्वयं आगे आकर किनारे से उनके ऊपर हमला किया। शुरू में उन्होंने अपनी टुकड़ी को माओवादियों पर जोरदार तरीके से गोलीबारी करने का आदेश दिया, जिससे कुछ क्षणों के लिए माओवादी शांत हो गए। इस अल्पकालीन अवसर का लाभ उठाते हुए और अपनी सुरक्षा के विषय पर ध्यान दिए बगैर एसआई/जीडी पी.के. सेठी, कांस्टेबल/जीडी जयंत तालुकदार, कांस्टेबल/जीडी सचिन कुमार और कांस्टेबल/जीडी सत्यम कुमार अपनी आड़ से बाहर आए और दुश्मनों के अति सुरक्षित ठिकाने के किनारे के निकट पहुंच गए। इससे पहले कि माओवादी वहां की स्थिति का आकलन कर पाते, इन बहादुर सैनिकों ने बेहद नजदीक से उनके ऊपर गोलियों की बौछार कर दी। माओवादियों को पहुंचे इस आघात से उनके रैंकों में अफरा—तफरी मच गई और वो पीछे हटने लगे; तथापि कुछ माओवादी, जो सुरक्षित आड़ के पीछे सुरक्षित ठिकानों में थे, वे वहीं डटे रहे और इन बहादुर सैनिकों के ऊपर गोलियां बरसाते रहे। यद्यपि भारी जोखिम के समक्ष सैनिकों द्वारा किए गए ठोस हमले ने माओवादियों के सुरक्षा घेरे को तोड़ दिया था, लेकिन अपने सुरक्षित ठिकानों पर डटे कुछ माओवादियों की ओर से की जा रही गोलीबारी सैन्य टुकड़ियों के आगे बढ़ने में रूकावट पैदा कर रही थी। दुश्मनों की बंदूकों को शांत करने की जिम्मेवारी लेते हुए ये चार बहादुर सैनिक पुनः बहादुरी का अनूठा प्रदर्शन करते हुए अपनी आड़ से बाहर निकले और उन्होंने एक घिरे हुए माओवादी के ऊपर लक्ष्य बनाकर गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी लक्षित गोलीबारी के परिणामस्वरूप वह माओवादी मारा गया। सैन्य टुकड़ियों के साहस से घबराकर और इस आक्रमण को आगे और अधिक बर्दाशत कर पाने में कठिनाई महसूस करते हुए माओवादी हथियार एवं गोलाबारुद के साथ अपने एक काडर के शव को वहीं छोड़कर मुठभेड़ स्थल से भाग गए।

की गई बरामदगी

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | .315 भरमार राइफल | : | 01 |
| 2. | डेटोनेटर | : | 01 |
| 3. | खाली खोखे | : | 03 |
| 4. | .305 बोर के खाली खोखे | : | 01 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री पी.के. सेठी, उप निरीक्षक, जयन्ता तालुकदार, कांस्टेबल, सचिन कुमार, कांस्टेबल और सत्यम कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.06.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 158—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. मो. नेहाल आलम, सहायक कमांडेंट (मरणोपरांत)

02. अदित कुमार, कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 20.07.2013 को जिला सुकमा (छत्तीसगढ़) के पुलिस स्टेशन – भेजी के अधीन गांव कोलियागुडा में सशस्त्र माओवादियों की मौजूदगी के संबंध में विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने के पश्चात डी/219, एफ/219, 202 कोबरा और राज्य पुलिस की सैन्य टुकड़ी द्वारा लगभग 2330 बजे भेजी से एक संयुक्त सीएएसओ की योजना बनाकर शुरू की गई।

चूंकि यह एक अत्यंत दुर्गम और माओवादियों का गढ़ वाला क्षेत्र था, इसलिए इसके लिए चार दल बनाए गए, जो आपसी सहयोगी एवं समन्वय के साथ आगे बढ़े। प्रत्येक दल एक अधिकारी की कमान के अधीन था और मोहम्मद नेहाल आलम, सहायक कमांडेंट उस चुनौतीपूर्ण अभियान में सामने रहकर डी/219 के दल का नेतृत्व कर रहे थे, जबकि कांस्टेबल/जीडी अदित कुमार ने स्काउट का कर्तव्य निभाया। बीच–बीच में हो रही वर्षा के साथ खराब मौसम की वजह से वहां का भू–भाग काफी असुविधाजनक हो गया था। लेकिन सैनिकों ने उन हालातों में भी परिस्थितियों पर काबू पाया जब भारी मात्रा में पानी के प्रवाह के कारण गांव एलारमाडगू के निकट नाला पार करना गंभीर चुनौती वाला कार्य था। सभी बाधाओं से मुकाबला करते हुए सैन्य टुकड़ी अपने लक्ष्य तक पहुंच गई और उन्होंने उस क्षेत्र की तलाशी ली। जब माओवादियों से उनका कोई संपर्क नहीं हो पाया, तब सैन्य टुकड़ी ने उस क्षेत्र से वापसी की योजना बनाई।

दुर्गम क्षेत्र से वापसी में सैन्य टुकड़ी की आवाजाही का खुलासा होने की आशंका के कारण हमेशा उनके ऊपर घात का खतरा बना रहता है। माओवादियों की ऐसी किसी भी गतिविधि को टालने के लिए सभी दल एक–दूसरे को किनारे से सहायता प्रदान करते हुए समानांतर रूप से आगे बढ़ने लगे। लेकिन भारी मात्रा में पानी के प्रवाह के कारण गांव एलारमाडगू के निकट नाला को पार करना सैन्य टुकड़ी के समक्ष आने वाली दूसरी चुनौती थी और यह घात लगाने के लिए माओवादियों के लिए एक उपयुक्त स्थान था। इस आसन्न खतरे को समझते हुए घात होने की स्थिति में, उसका मुकाबला करने के लिए मो. नेहाल आलम ने यह निर्णय लिया कि पहले उनका दल नाला पार करेगा और उनके द्वारा नाले के पार के क्षेत्र की सुरक्षा का जायजा लेने के बाद ही अन्य दल नाले को पार करेंगे। लेकिन पूर्व के अभियानों के अनुभव और युक्ति के ठोस ज्ञान से उन्हें यह स्पष्ट हो गया था कि उनका बल नाले के छिछले हिस्सों में माओवादियों की घात के चपेट में आ सकता है और इसलिए वे अपने दल के सदस्यों को वहां से 300 मीटर दक्षिण की ओर ले गए और वहां से नाले को पार किया।

तत्पश्चात वे नाले के छिछले हिस्से के पास के क्षेत्र में तलाशी कार्य शुरू करने के लिए आगे बढ़े और जैसे ही वे नजदीक पहुंचे, माओवादियों को उनकी मौजूदगी की भनक लग गई और उन्होंने सैन्य टुकड़ी के ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यह घात लगाकर किया गया हमला था। उस क्षेत्र के तत्काल आकलन और गोलीबारी से यह स्पष्ट हो गया कि लगभग 40–50 माओवादियों ने सैन्य टुकड़ी के सदस्यों की हत्या करने और उनका हथियार लूटने के उद्देश्य से वहां घात लगा रखी है। आगे चल रही सैन्य टुकड़ी, मुख्य रूप से दल के कमांडर मो. नेहाल आलम और कांस्टेबल अदित कुमार यह जानते थे कि वे सुरक्षित स्थान पर डटे हुए दुश्मनों के विरूद्ध लड़ रहे हैं। इन बहादुर सैनिकों ने सिर्फ जवाबी गोलीबारी का विकल्प ही नहीं चुना और उन्होंने शौर्य का अनूठा प्रदर्शन करते हुए अपनी पूरी क्षमता के साथ गोलीबारी कर के अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर माओवादियों की ओर बढ़ना जारी रखा। सैन्य टुकड़ी गोली चला कर आगे बढ़ने की युक्ति के साथ आगे बढ़ती गई और माओवादियों के नजदीक पहुंच गई। सैन्य टुकड़ी के निडर दृढ़ निश्चय और साहस का सामना होने पर, माओवादियों ने उस क्षेत्र से बचकर निकलने के प्रयास में अपनी गोलीबारी तेज कर दी।

लेकिन कमांडर ने आगे बढ़ कर माओवादियों की चुनौती का सामना करने का निर्णय कर लिया था और उन्होंने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर गोलियों की बौछार के नीचे कांस्टेबल अदित कुमार के साथ रेंगते हुए एक उपयुक्त अवसर मिलने पर माओवादियों की दिशा में निशाना लगाकर गोलीबारी शुरू कर दी। इस लक्षित गोलीबारी का परिणाम भी हासिल हुआ और इसमें एक वर्दीधारी माओवादी मारा गया। इससे वहां मौजूद माओवादियों के बीच अफरा–तफरी मच गई और उन्होंने जल्दबाजी में वहां से भागना शुरू कर दिया। सैन्य टुकड़ी ने माओवादियों के ऊपर गोलीबारी जारी रखी और उन्हें मारे गए माओवादी का शव ले जाने का मौका नहीं दिया।

गोलीबारी रूकने के बाद, उस क्षेत्र की सघन तलाशी ली गई, जिसमें एक .303 राइफल .303 के 10 जिंदा राउंड, 5 हैंडमेड राउंड, एके–47 के 5 राउंड, एसएलआर के 5 राउंड और 5 फिलिंग चार्जर क्लिपों के साथ एक वर्दीधारी माओवादी का शव बरामद किया गया। मुठभेड़ स्थल पर भारी मात्रा में रक्त और रक्त के धब्बे भी देखे गए जो इस बात की ओर इंगित कर रहे थे कि मुठभेड़ में और अधिक माओवादी घायल हुए थे।

इस अभियान के दौरान अपनी जान पर गंभीर खतरे के बावजूद मो. नेहाल आलम, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल अदित कुमार माओवादियों के ठिकानों की ओर बढ़ते रहे और उनके ऊपर जवाबी हमला किया जिसके चलते माओवादियों को भारी क्षति पहुंची। अपनी सुरक्षा और संरक्षा पर ध्यान न देते हुए उन्होंने जान जोखिम में रहने वाली स्थिति के अंदर फौलादी इरादे का प्रदर्शन किया और उच्च कोटि के साहस, शौर्य और कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) मो. नेहाल आलम, सहायक कमांडेंट और अदित कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य् वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.07.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 159—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सतीश कुमार,
द्वितीय कमान

02. राकेश कुमार मिश्रा,
उप कमांडेंट

03. एस. करूणाकरण,
कांस्टेबल

04. मुख्तियार अहमद खान,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीपीआई (माओवादी) की झारखंड क्षेत्रीय समिति का सदस्य, कृष्णा अहरी उर्फ प्रसाद जी पुलिस और सुरक्षा बलों से पिछले 15 वर्षों से चकमा दे रहा था और उनकी गिरफ्त से बाहर था और झारखंड तथा ओडिशा के पांच से अधिक जिलों में उसके विरूद्ध दर्ज 50 से अधिक आपराधिक मामलों में वांछित था। वह सीपीआई (माओवादी) का प्रमुख चेहरा बना हुआ था, जो लाल आतंकवाद का प्रचार—प्रसार कर रहा था और उस क्षेत्र में बड़ी संख्या में सुरक्षाकर्मियों की हत्या के लिए जिम्मेवार था। आईईडी बनाने और घातक घात लगाने में उसकी दक्षता ने उसे झारखंड का सर्वाधिक दुर्दांत माओवादी बना दिया था, जिससे मजबूर होकर सरकार ने उसके ऊपर 20 लाख रू. का पुरस्कार घोषित कर दिया था। माओवादी सर्कल में उसकी लोकप्रियता तब बढ़ गई जब उसने दिनांक 10 जून, 2009 को एक अभियान से वापस लौट रहे एक पुलिस दल के ऊपर घात लगा कर हमला करने की अपनी योजना को अंजाम दिया। घात लगाकर किए गए उस हमले में 9 पुलिस कार्मिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

झारखंड के रांची जिले में तैनात सीआरपीएफ की 133वीं बटालियन में कार्यभार ग्रहण करने के बाद से श्री सतीश कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी इस दुर्दांत माओवादी की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रख रहे थे। दिनांक 12.08.2014 को उनके प्रयासों का फल सामने आया, जब उन्हें अपने स्रोत से जिला—रांची के पुलिस स्टेशन—अंगारा के अधीन गांव हापेडाग और बरवाडाग के निकटवर्ती जंगल के क्षेत्र में 15—20 अन्य काडरों के साथ कृष्णा अहीर उर्फ प्रसाद जी की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। बगैर कोई कीमती क्षण गंवाए, उन्होंने एक मिशन का सूत्रपात किया और राज्य पुलिस के साथ "ड्रोन" कोड नामक एक अभियान शुरू किया। चूंकि वे एक लम्बी निगरानी के पश्चात प्राप्त हुए अवसर को खोना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने चार दलों का गठन किया जिसमें से तीन दलों को लक्षित क्षेत्र की घेराबंदी का कार्य सौंपा गया। उस क्षेत्र की गहन तलाशी लेने के लिए चौथे दल का नेतृत्व उनके द्वारा किया जा रहा था।

उनके सभी दल अपने संबंधित लक्ष्यों के लिए दिनांक 12.08.2014 को अपने बेस कैंप से रवाना हुए। श्री सतीश कुमार की कमान के अधीन वाला हमला दल जंगल और उबड़—खाबड़ रास्ते से गुजरते हुए गोपनीय तरीके से आगे बढ़ता रहा और 0345 बजे तक अपने लक्षित क्षेत्र तक पहुंच गया। बेहतर कमान, नियंत्रण एवं प्रभावी तलाशी के लिए उन्होंने युक्तिपूर्वक हमला दल को दो समूहों में विभाजित किया अर्थात एक समूह उनकी कमान के अधीन था, जिसमें श्री राकेश कुमार मिश्रा, उप कमांडेंट और उनका त्वरित कार्रवाई दल शामिल था और दूसरा समूह श्री एस.के. झा, पुलिस अधीक्षक, ग्रामीण की कमान के अधीन था। दिनांक 13.08.2014 को लगभग 0510 बजे जब हमला दल तलाशी लेते हुए एक पहाड़ी की ओर बढ़ रहा था, तब कांस्टेबल/जीडी एस. करुणाकरण और कांस्टेबल/जीडी मुख्तियार अहमद ने उस पहाड़ी की चोटी के ऊपर कुछ संदिग्ध गति विधि देखी। उन्हें तत्काल अपने दल को सचेत किया और उनके ऊपर माओवादी होने का संदेह करते हुए सतीश कुमार ने एक दिशा की बजाय दो दिशाओं से आगे बढने की एक रणनीति बनाई। श्री एस.के. झा, पुलिस अधीक्षक को सामने से आगे बढ़ने की जिम्मेवारी दी गई, जबकि उन्होंने संदिग्ध माओवादियों की पोजीशन के पीछे की ओर बढ़ने के लिए अपने समूह का नेतृत्व किया। लेकिन वे मुश्किल से लगभग 50 मीटर ही आगे बढ़ पाए होंगे, तभी माओवादियों ने वहां उनकी मौजूदगी भांप ली और उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। दोनों समूह माओवादियों की तीव्र गोलीबारी की चपेट में आ गए। माओवादियों की इस अग्रिम पहल ने कमांडर की योजना को विफल कर दिया था, लेकिन इस तथ्य को जानते हुए कि अपने कनिष्ठ काडरों की सहायक गोलीबारी की आड़ में माओवादी कमांडर अर्थात कृष्णा अहीर वहां से सबसे पहले भाग निकलेगा, उन्होंने एस.के. झा, पुलिस अधीक्षक से माओवादियों को उलझाए रखने के लिए कहा और वे जल्दी से पीछे के हिस्से की ओर निकल पड़े। बड़े समूह के साथ आगे बढ़ने में माओवादियों द्वारा देखे जाने का खतरा होने के कारण, उन्होंने निर्भीकतापूर्वक श्री राकेश कुमार मिश्रा, उप कमांडेंट, कांस्टेबल एस. करुणाकरण और कांस्टेबल मुख्तियार अहमद का चयन किया और अपने समूह के अन्य सदस्यों को माओवादियों को उलझाए रखने का आदेश देते हुए वे मुट्ठी भर सैनिकों के साथ एक असंभव प्रतीत हो रहे मिशन के लिए कूच कर गए। अपने ऊपर हो रही गोलीबारी की परवाह किए बगैर वे चार बहादुर सैनिक गुप्त रूप से अपनी आड़ से बाहर निकले और पिछले हिस्से की ओर बढ़ गए।

जब तक यह छोटा समूह माओवादियों की पोजीशन के निकट पहुंचा, माओवादी वहां से पीछे हटने की प्रक्रिया में थे और इसलिए उनमें से कुछ लगातार गोलीबारी कर रहे थे जबकि अन्य धीरे—धीरे पीछे हटते जा रहे थे। भारी गोलीबारी कर रहे कुछ माओवादियों के घेरे में मौजूद माओवादियों तक पहुंचने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि उनका ध्यान भंग किया जाए। इस कार्य

को पूरा करने के लिए सीटी करुणाकरण और सीटी मुख्तियर अहमद बहादुरीपूर्ण कृत्य का प्रदर्शन करते हुए अपनी आड़ से बाहर आए और उन्होंने माओवादियों के ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इस नए हमले से अपने साथियों को बचाने के लिए माओवादियों ने अपनी गोलीबारी की दिशा को इन दो सैनिकों की ओर मोड़ दिया। इसी अल्प क्षण में श्री सतीश कुमार और श्री राकेश कुमार मिश्रा ने अपनी पोजीशन से हटते हुए वहां से भाग रहे माओवादियों का पीछा किया। जैसे ही उन दोनों ने माओवादियों के समूह का पीछा किया और उनके नजदीक पहुंचे, माओवादियों ने उन्हें देख लिया और उनके ऊपर गोलियां चलाने लगे। इन दोनों ने बहादुरीपूर्वक जवाब दिया और माओवादियों को वहीं रोक लिया। माओवादियों के हाव—भाव और हरकतों को देखकर इन दोनों सैनिकों ने उनके नेता की पहचान कर ली और उसके ऊपर गोलियों की बौछार कर दी। गोलियों की इस बौछार ने माओवादियों के समूह को तितर—बितर कर दिया। इसी बीच कांस्टेबल करुणाकरण और कांस्टेबल मुख्तियार अहमद भी माओवादियों का पीछा करने के कार्य में शामिल हो गए। इन चारों सैनिकों की प्रभावी गोलीबारी के कारण माओवादियों का छोटा समूह इकट्ठा नहीं हो सका और सैन्य टुकड़ी ने वहां आसन्न खतरों से हतोत्साहित हुए बगैर आगे बढ़ना जारी रखा। सैन्य टुकड़ी की भारी गोलीबारी के कारण माओवादी वहां से उपलब्ध दिशा की ओर भागने के लिए मजबूर हो गए। जब उनका नेता वहां से भागने की कोशिश करने लगा, तो चारों बहादुर सैनिकों ने उसे वहीं घेर लिया और वहां दोनों ओर से रूक—रूक कर गोलीबारी होने लगी। इस मुठभेड़ को समाप्त करने के लिए सैन्य टुकड़ी ने एक कौशलपूर्ण योजना बनाई। जबकि दो बहादुर सैनिकों ने उस माओवादी को उलझाए रखा, अन्य दो सैनिकों ने दो भिन्न दिशाओं से आगे बढ़ कर अदम्य साहस एवं बहादुरी के अनूठे कृत्य का प्रदर्शन करते हुए उस माओवादी को दबोच लिया और उसका हथियार छीन लिया। वहीं पर की गई पूछताछ में पकड़े गए माओवादी की पहचान कृष्णा अहीर उर्फ "प्रसाद जी के रूप में की गई और उसके पास से निम्नलिखित हथियार और गोलाबारुद बरामद किए गए:—

(1) मैगजीन के साथ एके—47 राइफल जिसके चौंबर में एक राउंड भरा हुआ था, (2) प्लास्टिक शीट कवर के साथ काले एवं खाकी रंग का पिट्ठू, (3) काले रंग का युद्ध का पोशाक, (4) डेटोनेटर, (5) 49 राउंड गोलाबारुद, (6) 4,500/—रू. नकद एवं दैनिक उपयोग की अन्य सामग्री।

इस अभियान का नियोजन एवं सनिष्पादन सर्जिकल तरीके से किया गया जिसमें सैन्य टुकड़ी को बगैर किसी प्रकार की क्षति पहुंचे एक ऊंचे दर्जे के माओवादी नेता को पकड़ा गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सतीश कुमार, द्वितीय कमान, राकेश कुमार मिश्रा, उप कमांडेंट, एस.करुणाकरण, कांस्टेबल और मुख्तियार अहमद खान, कांस्टेबल ने अदम्यो वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 160—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जी.एस. भंडारी,
सहायक कमांडेंट

02. संजय कुमार,
सहायक कमांडेंट

03. के. शशीकांत,
कांस्टेबल

04. धर्मेन्द्र कुमार सिंह,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

राज्य पुलिस को जिला—गुमला (झारखंड) के पुलिस स्टेशन—पालकोट के अधीन गांव—केओरकट्टा, सनायडीह और कनरेबेरा के आम क्षेत्र में दस्ते के अन्य सदस्यों के साथ नीतीश कुमार यादव उर्फ अतिन उर्फ मंत्री जी (सीपीआई [माओवादी] के सिमडेगा सब जोन के सब जोनल सचिव) की आवाजाही के बारे में आसूचना संबंधी एक सूचना प्राप्त हुई थी। इस सूचना के आधार पर, "मार्स स्पीयर—24" के कोड नाम वाली एक योजना बनाई गई और इसे सीआरपीएफ की 218वीं बटालियन तथा राज्य पुलिस के संयुक्त सैन्य दलों द्वारा शुरू किया गया। इस संयुक्त दल में श्री जी.एस. भंडारी, सहायक कमांडेंट और संजय कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन सीआरपीएफ की 218वीं बटालियन का त्वरित कार्रवाई दल और श्री पवन कुमार सिंह, एएसपी (ऑपरेशन्स), गुमला की कमान के अधीन राज्य पुलिस का विशेष कार्रवाई दल शामिल था और यह दल दिनांक 23.02.2016 को 0200 बजे बेस कैंप से गोपनीय रूप से वाहनों से रवाना हुआ और इसने गांव—पीठाटोली के निकट एक सुनसान स्थान पर वाहनों को छोड़ दिया। वहां से संयुक्त दल घोर अंधेरे के बीच उबड़—खाबड़ रास्ते से युक्तिपूर्वक आगे बढ़ते हुए अपने प्रथम लक्ष्य अर्थात गांव—केओरकट्टा के निकट पहुंच गया, जो

माओवादियों द्वारा शरण लेने हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला सर्वाधिक संभावित स्थान था। सैन्य टुकड़ी ने बेहद युक्तिपूर्वक गांव की घेराबंदी कर दी और उन्होंने भोर होने से पहले ही वहां तलाशी ली लेकिन माओवादी उस गांव में उपस्थित नहीं पाए गए। तत्पश्चात सैन्य टुकड़ी अपने दूसरे लक्ष्य, अर्थात गांव—सनायडीह पहुंची लेकिन वहां भी माओवादियों का पता नहीं चल सका। माओवादियों से सम्पर्क न हो पाने से हौसला खोए बगैर सैन्य टुकड़ी अपने अगले मिशन, अर्थात गांव—कनरेबेरा की तलाशी लेने के लिए चल पड़ी। घने जंगलों के बीच से गुजरते हुए और अपने आवागमन का रहस्य बरकरार रखते हुए सैन्य टुकड़ी 1100 बजे गांव कनरेबेरा पहुंची और उन्होंने गांव के चारों ओर घेराबंदी कर दी। जैसे ही तलाशी दल वहां की तलाशी शुरू करने के लिए तैयार हो रहा था, जिसमें कि कमांडर और उनके सहयोगी कार्मिक भी शामिल थे, उन्होंने गांव की ओर एक मोटरसाइकिल आते हुए देखी। तत्काल, तलाशी दल के सदस्य सड़क की ओर बढ़े लेकिन इससे पहले कि वे पोजीशन लेते हुए सड़क को कवर कर पाते, मोटरसाइकिल पर पीछे सवार व्यक्ति ने उन्हें आते हुए देख लिया ओर उसने फौरन सैन्य टुकड़ी के ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। उसके बाद वह व्यक्ति चलती हुई मोटरसाइकिल से कूद गया और उसने एक चट्टान के पीछे पोजीशन ले ली और सैन्य टुकड़ी को आगे बढ़ने से रोकने के लिए और वहां से बचकर भागने के लिए पुनः उनके ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। तलाशी दल के सदस्य, जिसमें मुख्य रूप से श्री पवन कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स), श्री जी.एस. भंडारी, सहायक कमांडेंट, श्री संजय कुमार, सहायक कमांडेंट, निरीक्षक जे.एस. मुरमू (राज्य पुलिस), कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र कुमार सिंह और कांस्टेबल/जीडी के. शशीकांत शामिल थे, इस हमले में बाल—बाल बचे, क्योंकि गोलियां लक्ष्य के बेहद करीब से गुजरी। लेकिन जान के लिए खतरा बनी हुई उस स्थिति से भयभीत हुए बगैर जहां उनके ऊपर भीषण गोलीबारी की जा रही थी, तलाशी दल ने पास में ही ग्रामीणों की मौजूदगी के कारण वहां नियंत्रित तरीके से जवाबी गोलीबारी की।

तलाशी दल की नियंत्रित गोलीबारी से उत्साहित होकर, उस माओवादी ने उन्हें वहीं रोक कर रखने और जंगल की ओर भागने के लिए उनके ऊपर भारी गोलीबारी की बौछार कर दी। लेकिन तलाशी दल द्वारा उस माओवादी के इस अटकल को तत्काल गलत साबित कर दिया गया, क्योंकि वह दल तत्काल दो हिस्सों में बंट गया और सैनिकों ने बेहद नजदीक से गुजर रही गोलियों की परवाह किए बगैर रेंगते हुए उस माओवादी की दिशा में बढ़ना शुरू कर दिया। श्री जी.एस. भंडारी, सहायक कमांडेंट, निरीक्षक जे.एस. मुरमू (राज्य पुलिस), कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र कुमार सिंह और कांस्टेबल/जीडी के. शशीकांत बाएं किनारे से आगे बढ़े, जबकि अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स) श्री पवन कुमार सिंह, श्री संजय कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट, हेड कांस्टेबल सरोज और कांस्टेबल सुनील कुमार राय (दोनों राज्य पुलिस से) के साथ दाएं किनारे से आगे बढ़े। बहादुर सैनिकों को आगे बढ़ने से रोकने में विफल होने पर, उस माओवादी ने एक हथगोला फेंका और सैन्य टुकड़ी के ऊपर निरूदेश्य गोलियां चलाता हुआ जंगल की ओर भागा। उस माओवादी को भागते हुए देखकर श्री जी.एस. भंडारी, सहायक कमांडेंट, निरीक्षक जे.एस. मुरमू (राज्य पुलिस), कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र कुमार सिंह और कांस्टेबल/जीडी के. शशीकांत अपनी आड़ से बाहर आए और उसका पीछा करने लगे। माओवादी ने, यह देखते हुए कि अभी भी उसका पीछा किया जा रहा है, पीछा कर रहे सैन्य दल पर निशाना साध कर धमाकेदार गोलीबारी की, लेकिन उसकी गोलीबारी की परवाह किए बगैर बहादुर सैन्य दल ने जवाबी गोलीबारी की और उस माओवादी को घायल कर दिया। वह माओवादी गिर गया लेकिन घायल होने के बावजूद उसने एक पेड़ के पीछे पोजीशन ले ली और सैन्य दल के ऊपर गोलियां चलता रहा। जब श्री जी.एस. भंडारी, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन सैन्य टुकड़ी उस माओवादी की गोलीबारी की सीधी लाइन में थी और उन्हें आगे बढ़ने में कठिनाई हो रही थी, तभी दूसरा समूह, जिसमें अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स) श्री पवन कुमार सिंह, श्री संजय कुमार, सहायक कमांडेंट, हेड कांस्टेबल सरोज और कांस्टेबल सुनील कुमार राय (दोनों राज्य पुलिस से) शामिल थे, एक घुमावदार रास्ते से आगे बढ़ा और उस माओवादी पर गोलीबारी की। दो दिशाओं से की गई संयुक्त गोलीबारी के परिणामस्वरूप वह माओवादी मारा गया।

उस क्षेत्र की तलाशी के दौरान, वहां से सैन्य टुकड़ी ने 9 एमएम की एक भरी हुई काबाईन, 9 एमएम की एक भरी हुई पिस्तौल, गोलाबारुद के 66 राउंड, 2,00,000 रु./— नकद, 12 सिम कार्डों के साथ 9 मोबाइल, तीन लेवी उगाही पुस्तिकाओं और माओवादी साहित्य तथा दैनिक उपयोग की सामग्री से भरे हुए एक अमेरिकन टूरिस्टर बैग के साथ एक माओवादी का शव बरामद किया, बाद में जिसकी पहचान नीतीश कुमार यादव उर्फ अतिन उर्फ मंत्री जी (सीपीआई [माओवादी] के सिमडेगा सब जोन के सब जोनल सचिव) के रूप में की गई। इस दुर्दांत माओवादी के मारे जाने से उस क्षेत्र में सीपीआई (माओवादी) गुट का मनोबल टूट गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री जी.एस. भंडारी, सहायक कमांडेंट, संजय कुमार, सहायक कमांडेंट, के. शशीकांत, कांस्टेबल और धर्मेन्द्र कुमार सिंह, कांस्टेबल ने अदम्ये वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.02.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 161—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अभिषेक चौधरी
सहायक कमांडेंट

02. शिंदे मनोज गोरख,
कांस्टेबल

03. कोहक आदिनाथ गुलाब,
कांस्टेबल

04. संजीत सिंह,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जिला खूंटी, झारखंड के पुलिस स्टेशन अरकी के अधीन गांव बागरी और परासू के आम क्षेत्र में अन्य काडरों के साथ पीएलएफआई के जोनल कमांडर आशीषण सॉय की मौजूदगी के बारे में आसूचना संबंधी एक विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, एक अंतर बटालियन अभियान शुरू किया गया, जिसमें सीआरपीएफ की 157वीं एवं 94वीं बटालियन की सैन्य टुकड़ी और राज्य पुलिस के कार्मिक शामिल थे। इसके लिए तीन दलों का गठन किया गया और तलाशी लेने के लिए प्रत्येक दल अर्थात 157वीं बटालियन की सैन्य टुकड़ी वाले दल सं. 1, 94वीं बटालियन की सैन्य टुकड़ी वाले दल सं. 2 और राज्य पुलिस की टुकड़ी वाले दल सं. 3 को तलाशी के लिए अलग—अलग क्षेत्र दिए गए। दल सं. 1 को गांव कोरवा और परासू के बीच में पड़ने वाला क्षेत्र दिया गया था। भोर के समय अपने लक्ष्य के ऊपर धावा बोलने के उद्देश्य से अभिषेक चौधरी, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन दल सं. 1 दिनांक 28 अगस्त, 2015 को आधी रात के बाद अंधेरे की आड़ में निकल पड़ा। जब यह दल जंगल से और पहाड़ी भू—भाग से गुजरते हुए लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ रहा था, तभी अभिषेक चौधरी, सहायक कमांडेंट को पुनः आसूचना संबंधी एक सूचना प्राप्त हुई, जिसमें गांव मधातू के निकट माओवादियों की मौजूदगी की जानकारी दी गई थी। मानचित्र पर उस गांव के आस—पास की स्थलाकृति के विश्लेषण के पश्चात उन्होंने तत्काल अपनी रणनीति को नया रूप दिया। वह गांव पहाड़ी की तलहटी में स्थित था और तीन ओर से घने जंगलों से घिरा हुआ था। वह पहाड़ी छिपने के लिए एक पूर्णतया अनुकूल स्थान प्रतीत हो रही थी। अभियान संबंधी रणनीति के हिस्से के रूप में अभिषेक चौधरी, सहायक कमांडेंट ने अपने दल को दो हिस्से में विभाजित कर दिया और उन्होंने एक समूह को उस गांव से पहाड़ी को जोड़ने वाले मार्ग पर कट—ऑफ डालने के लिए भेज दिया। जबकि, उन्होंने स्वयं दूसरे समूह का नेतृत्व किया और वे पूर्ण गोपनीयता के साथ उस पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ गए। चोटी पर दुश्मन की मौजूदगी की संभावना के साथ पहाड़ी पर ऊपर की ओर चढ़ाई करना हमेशा खतरे से भरा हुआ था और उसमें जान पर जोखिम भी था। इसके बाद भी, श्री अभिषेक चोधरी, सहायक कमांडेंट कांस्टेबल/जीडी शिंदे मनोज गोरख, कांस्टेबल/जीडी कोहक आदिनाथ गुलाब और कांस्टेबल/जीडी संजीत सिंह के साथ स्काउट की संरचना तैयार करते हुए आगे बढ़ते रहे, जबकि दल के अन्य सदस्य उनके पीछे चल रहे थे। जैसे ही यह दल पहाड़ी की चोटी के निकट पहुंचा, तभी सुरक्षित आड़ों के पीछे तैनात माओवादियों ने उनके ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। कमांडर और उनकी टुकड़ी इस प्रकार के अचानक हमले से निपटने के लिए तैयार थी और उन्होंने निडर एवं साहसी तरीके से दुश्मन की ओर युक्तिपर्वूक आगे बढ़ते हुए अपने ऊपर हो रही गोलियों की बौछार की परवाह किए बगैर जवाबी गोलीबारी की। स्काउटों ने अपनी निजी सुरक्षा की बिलकुल परवाह नहीं की और वे अंतिम प्रहार करने के लिए गोली चलाकर आगे बढ़ने की युक्ति का प्रयोग करते हुए आगे बढ़े। स्काउटों के बहादुरीपूर्ण और निडर आक्रमण का सामना कर रहे माओवादियों ने अपनी रक्षा में बिछाई गई आईईडी में श्रृंखलाबद्ध विस्फोट किया और एक के बाद एक हथगोले भी फेंके। अनेक धमाकों ने सैन्य टुकड़ी को रूकने पर मजबूर कर दिया और इसका लाभ उठाते हुए माओवादी एक—एक कर उस क्षेत्र से निकल कर भागने लगे। कमांडर इस अवसर को खोना नहीं चाहते थे, जो कि विगत एक माह से माओवादियों की गतिविधि पर नजर रखने के पश्चात हाथ आया था। वहां से उनके पलायन को रोकने के लिए वे खड़े होकर उनके ऊपर गोलीबारी करने के लिए सभी एहतियातों को ताक पर रखते हुए अपनी आड़ से बाहर आ गए। अपने कमांडर की बहादुरी को देखते हुए दल के अन्य सदस्य भी आड़ से बाहर आ गए और उन्होंने माओवादियों पर जोरदार हमला शुरू कर दिया।

भारी गोलीबारी ने माओवादियों को बचने के लिए आड़ के पीछे भागने पर मजबूर कर दिया और इस स्थिति का लाभ उठाते हुए अभिषेक चौधरी, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी शिंदे मनोज गोरख, कांस्टेबल/जीडी कोहक आदिनाथ गुलाब और कांस्टेबल/जीडी संजीत सिंह दल के अन्य सदस्यों की सहायक गोलीबारी की आड़ में आगे बढ़ गए। नजदीक पहुंचने पर उन्होंने दो माओवादियों को एक पेड़ के पीछे से उनकी ओर लगातार गोलीबारी करते हुए देखा। बहादुर सौनिकों ने कीमती समय गंवाए बगैर अपनी सटीक और निशाना लगाकर की गई गोलीबारी से उनमें से एक माओवादी को मार गिराया। अपने काडरों में से एक साथी की ऐसी नियति देख कर अधिकांश माओवादी वहां से तेजी से भागने लगे, जबकि सैनिकों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए कुछ माओवादी वहीं डटे रहे। पेड़ के पीछे छिपे दो माओवादियों में से एक को मार गिराने के बाद अभिषेक चौधरी, सहायक कमांडेंट ने कांस्टेबल शिंदे मनोज गोरख को अपने साथ लिया और वे गोलीबारी के लिए उपयुक्त स्थान प्राप्त करने के लिए रेंगते हुए बायीं ओर बढ़ गए। इस बीच कांस्टेबल कोहक आदिनाथ गुलाब और कांस्टेबल संजीत सिंह ने माओवादी को उलझाए रखा और उसे उस क्षेत्र से भागने का मौका नहीं दिया। अपनी सटीक गोलीबारी से कमांडर और उनके सहयोगी ने दूसरे माओवादी को भी ढेर कर दिया। दो माओवादियों को मार गिराने के बाद सैन्य दल आगे बढ़ा और उन्होंने भाग रहे माओवादियों का पीछा किया लेकिन वे पहाड़ी भू—भाग, घने जंगल और भागने के पूर्व—निर्धारित मार्गों का लाभ उठाते हुए वहां से भागने में कामयाब हो गए।

उस क्षेत्र की तलाशी के दौरान, वहां से एक एके 47 राइफल, दो .315 राइफलों, तीन मैगजीनों, 40 राउंड गोलाबारुद, 7 मोबाइल फोनों, 12 सिम कार्डों, 1 बाइनाकुलर, मोबाइल के सामान, 34,581 रू./— नकद, युद्ध के पोशाक, माओवादी साहित्य एवं दैनिक उपभोग की अन्य सामग्रियों के साथ आशीषण सॉय (जोनल कमांडर — पूर्वी छोटा नागपुर जोन) और सानिका पूर्ति (एरिया कमांडर) नाक दो दुर्दांत पीएलएफआई कमांडरों के शव बरामद किए गए।

मुठभेड़ के दौरान अभिषेक चौधरी, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी शिंदे मनोज गोरख, कांस्टेबल/जीडी कोहक आदिनाथ गुलाब और कांस्टेबल/जीडी संजीत सिंह द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस के कारण ही माओवादी अति सुरक्षित स्थानों पर तैनात होने के बावजूद सैन्य टुकड़ी को किसी प्रकार की क्षति पहुंचाने में विफल रहे। उनके अदम्य साहस, अद्वितीय बहादुरी और सूझबूझ वाले कौशल के परिणामस्वरूप न सिर्फ दो जघन्य पीएलएफआई कमांडरों का खात्मा किया जा सका बल्कि उन्होंने इसके द्वारा छोटे दल के सफल अभियान का उदाहरण भी स्थापित किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अभिषेक चौधरी, सहायक कमांडेंट, शिंदे मनोज गोरख, कांस्टेबल, कोहक आदिनाथ गुलाब, कांस्टेबल और संजीत सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.08.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

सं. 162—प्रेज/2016— राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. देवेन्द्र सिंह कसवा,
उप कमांडेंट

02. राजेन्द्र प्रसाद रायगर,
सहायक कमांडेंट

03. कुमार ब्रजेश,
सहायक कमांडेंट

04. आजाद सिंह,
निरीक्षक

05. सुवा लाल कोके,
हेड कांस्टेबल

06. चेलाथुराई मुरूगन,
कांस्टेबल

07. राजा ईम्बा कुमार,
कांस्टेबल

08. दुला राम,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जिला—गुमला (झारखंड) के पुलिस स्टेशन—चैनपुर के अधीन गांव—सिबिल और सकसरी के निकट घने जंगल में कुछ विध्वंसक क्रियाकलाप संचालित करने की योजना बनाने हेतु एक बैठक के संचालन के संबंध में 250—300 सक्रिय दस्ता सदस्यों के साथ अरविंद जी, किशन दा की अगुवाई में सीपीआई (माओवादी) के शीर्षस्थ नेताओं की मौजूदगी के बारे में आसूचना संबंधी एक सूचना के आधार पर, गुमला (झारखंड) के पुलिस स्टेशन—चैनपुर के अधीन गांव—सिबिल के निकट नक्सली शिविरों की तलाश करने और उन्हें ध्वस्त करने के उद्देश्य से दिनांक 12.03.2013 को "विजय" नामक एक विशेष अभियान चलाने की योजना बनाई गई। इस अभियान के लिए सिविल पुलिस के घटकों की पर्याप्त संख्या के साथ 203 और 209 कोबरा में से प्रत्येक के 18 विशेषज्ञ दलों और झारखंड जगुआर के 04 हमला समूहों को शामिल किया गया।

अभियान की योजना के अनुसार, श्री पी.एस. धर्मशक्तू, कमांडेंट 209 कोबरा की समग्र कमान के अधीन 203 कोबरा के छह (06) दलों को शामिल करके स्ट्राइक—01 समूह तैयार किया गया, 209 कोबरा और झारखंड जगुआर के दो हमला दलों को शामिल करके स्ट्राइक—02 समूह तैयार किया गया, रिजर्व—01 में झारखंड जगुआर के 01 हमला दल के साथ 209 कोबरा के चार दलों को शामिल किया गया और रिजर्व—02 में 203 कोबरा के 04 दलों को शामिल किया गया।

दिनांक 13.03.2013 को 0300 बजे सैन्य टुकड़ियां अपने संबंधित लक्षित स्थानों तक पहुंच गई। 203 कोबरा वाले हमला दल—01 को उस क्षेत्र में नक्सली शिविरों की तलाशी करने और उन्हें ध्वस्त करने का कार्य सौंपा गया, जहां बैठक आयोजित करने के लिए अपने 250—300 दुर्दांत पीएलजीए काडरों के साथ शीर्ष माओवादी नेता अरविंद जी और किशन दा कथित रूप से ठहरे हुए थे। 203 कोबरा के उप कमांडेंट डी.एस. कासवा इस दल का नेतृत्व कर रहे थे। जब हमला दल हाइट—974 पर पहुंचा, तो उन्होंने वहां चट्टानों/पत्थरों और लकड़ी के लट्ठों से बनाए गए 50—60 मोर्चों वाला एक नक्सली शिविर देखा। हमला दल—। ने तत्काल उस क्षेत्र

को सुरक्षित किया। लगभग 1315 बजे जब हमला दल–। गांव–सिबिल और सकसरी के बीच पहाड़ी एवं जंगल वाले क्षेत्र की तलाशी ले रहा था, तभी उन्हें जानकारी मिली कि उनके पीछे चल रही पार्टी झारखंड जगुआर का हमला समूह–16) के ऊपर नक्सलियों द्वारा घात लगाकर हमला किया गया है। डी.एस. कसवा, उप कमांडेंट, जो हमला दल–। का नेतृत्व कर रहे थे, पीछे चल रही पार्टी पर घात लगाकर हमला किए जाने और झारखंड जगुआर के दो सैनिकों के घायल होने की जानकारी मिलने पर, उन्हें अतिरिक्त बल/बचाव प्रदान करने के लिए श्री पी.वी. तिवारी तथा कुछ चुनिंदा कार्मिकों को अपने साथ लेकर भारी गोलीबारी और धमाकों के बीच पीछे की पार्टी ओर चल पड़े। नक्सलियों की पोजीशन और उनकी ताकत के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और पिछली पार्टी को अतिरिक्त सहायता पहुंचाने में बेहद कठिनाई और जीवन को जोखिम में डालने वाली स्थिति थी। लेकिन अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर, श्री डी.एस. कासवा, उप कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी दुला राम नक्सलियों की भारी गोलीबारी के बीच रेंगते हुए घात का शिकार हुई पार्टी की ओर युक्तिपूर्वक आगे बढ़े। कांस्टेबल/जीडी दुला राम ने तत्काल कुछ यूबीजीएल दागे और उसी समय श्री कासवा और अन्य कार्मिकों ने अतिरिक्त सहायता प्रदान करने वाली पार्टी पर भारी गोलीबारी कर रहे नक्सलियों पर भारी गोलीबारी की। इस जवाबी कार्रवाई में चार नक्सलियों को वहां गिरते हुए देखा गया और कुछ क्षण के लिए नक्सलियों की ओर से गोलीबारी रूक गई। सर्वोच्च स्तर के नेतृत्व और श्री कसवा तथा कांस्टेबल/जीडी दुला राम के अदम्य साहस एवं दृढ़ निश्चय ने नक्सलियों को पीछे हटने पर मजबूर किया। वे अपने दो घायल कार्मिकों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने में कामयाब हो गए। झारखंड जगुआर के कार्मिकों की गणना करने पर यह तय हो गया कि मंगा बाखला नामक झारखंड जगुआर का एक और कांस्टेबल लापता था। तब पुनः श्री कसवा अपने दल की सहायता से उस दिशा की ओर बढ़ गए, जहां नक्सलियों द्वारा गोलीबारी की जा रही थी। पुनः नक्सलियों ने आईईडी के विस्फोट के साथ–साथ सैन्य टुकड़ी के ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालते हुए श्री कसवा और सीटी दुला राम ने सर्वोच्च स्तर की बहादुरी का प्रदर्शन किया और वे अपने साथ कांस्टेबल मनोज बाखला का शव लाने में कामयाब हुए जो अपने साथ 81 एमएम मोर्टार और 51 एमएम मोर्टार एचई बम लेकर चल रहे थे। इस लड़ाई में उन्होंने एक नक्सल को मार गिराया जो लगभग 25 मीटर की दूरी से गोलीबारी कर रहा था। कांस्टेबल मनोज बाखला के शव को वहां से निकाल कर सुरक्षित स्थान पर ले जाने के पश्चात, उन्होंने भारी गोलीबारी के बीच पुनः मारे गए नक्सली के शव को बरामद करने का प्रयास किया, क्योंकि उस समय शाम होने लगी थी। उन्होंने मारे गए नक्सली के शव को अगले दिन सुबह जल्दी बरामद करने के इरादे से शेष हमला दल को अपने साथ ले लिया। लगभग 2030 बजे नक्सलियों ने सभी दिशाओं से हमला दल के ऊपर हमला कर दिया जिसका प्रभावी तरीके से जवाब दिया गया। लगभग 2330 बजे नक्सलियों की ओर से गोलीबारी रूक गई, क्योंकि वे सुरक्षा बलों के उत्साह को कम नहीं कर सके, जिन्होंने उनके गढ़ में प्रवेश करके बहादुरीपूर्वक लड़ाई लड़ी और माओवादियों के क्षति पहुंचाने के किसी भी प्रयास का सूझबूझ के साथ जवाब दिया।

अगले दिन दिनांक 14.03.2013 को लगभग 0700 बजे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण ऊंचाई (प्वाइंट 999) पर तैनात की गई 209 कोबरा की सैन्य टुकड़ी के साथ 209 कोबरा के कमांडेंट शहीद जवान के शव को सुरक्षित रूप से बरामद करने और झारखंड जगुआर के घायल कार्मिकों को वहां से बाहर निकालने हेतु मार्ग को खोलने के लिए वहां पहुंच गए। घायल कार्मिकों को बाहर निकालने के समय, नक्सलियों ने पुनः गोलीबारी शुरू कर दी और 209 कोबरा की सैन्य टुकड़ी को उलझाए रखा। 209 बटालियन के सहायक कमांडेंट श्री राजेन्द्र प्रसाद रायगर अपने दल का नेतृत्व कर रहे थे। जब उनका दल हाइट–974 की ओर आगे बढ़ रहा था, तभी वह दल चारों ओर पहाड़ी की चोटी के ऊपर मजबूती से जमे हुए माओवादियों की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया। नक्सली वहां लाभप्रद स्थिति में थे और वे किसी भी प्रकार के हमले अथवा आक्रमण को रोक सकते थे। उन्होंने सुरक्षा बलों को हताहत करने और उनके मनोबल तथा संकल्प को तोड़ने के लिए एक ही समय में लगभग 15–20 आईईडी का विस्फोट किया। इस स्थिति में तत्काल जवाबी कार्रवाई करते हुए श्री रायगर ने अपने दल के सदस्यों को आड़ लेने का निर्देश दिया और सीधी गोलीबारी करते हुए उपलब्ध हथियारों से जवाब दिया। श्री रायगर ने युक्तिपूर्वक अपने दल को फैला दिया और उन्हें पहाड़ी की चोटी की ओर आगे बढ़ने का निर्देश दिया। नजदीक से हुई लड़ाई के दौरान, अधिकारी अपने बांए हाथ की बीच वाली उंगली में गोली लगने और ठुड्डी पर स्प्लिंटर लगने से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद, इस अधिकारी ने सर्वोच्च स्तर के नेतृत्व और साहस का प्रदर्शन किया और निरीक्षक/जीडी आजाद सिंह को बैकअप प्रदान करने का निर्देश दिया। तदनुसार, निरीक्षक/जीडी आजाद सिंह ने 209 कोबरा के हेड कांस्टेबल/जीडी सुवा लाल कोके के साथ मिलकर बाएं किनारे को कवर किया। इन दोनों ने अपनी जान को जोखिम में डालते हुए वहां डटे हुए दुश्मनों के ऊपर ग्रेनेड से भारी हमला शुरू कर दिया। निरीक्षक/जीडी आजाद सिंह और हेड कांस्टेबल/जीडी सुवा लाल कोके द्वारा एक साथ मिलकर की गई कार्रवाई के परिणामस्वरूप उस मोर्चा को नष्ट किया जा सका जहां से उन्हें निशाना बनाया जा रहा था। कुछ नक्सली बुरी तरह से घायल हो गए थे और भारी गोलीबारी और आईईडी के विस्फोटों के बीच वहां से पीछे हटने में कामयाब हो गए।

इसी बीच, 209 बटालियन के सहायक कमांडेंट कुमार ब्रजेश को आगे वाली पार्टी के ऊपर हमला होने का आभास हो गया और उन्होंने उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए अपने सहयोगी के साथ आगे बढ़ने का निर्णय लिया। कुमार ब्रजेश ने वहां अपनी तकनीकी जानकारी का प्रयोग किया और उन्होंने माओवादियों के कब्जे वाले मोर्चों तक पहुंचने वाले रास्तों पर बिछाई गई आईईडी की श्रृंखला देखी। हथगोलों का प्रभावी प्रयोग करते हुए उन्होंने मोर्चों पर डटे नक्सलियों को वहां से भागने पर मजबूर कर दिया और उनके मोर्चों पर विजय प्राप्त की और वहां उन्हें श्रृंखलाबद्ध आईईडी में विस्फोट करने के लिए उससे जुड़ा हुआ एक डायनमो मिला। उन सभी आईईडी की सावधानीपूर्वक जांच करने के पश्चात और सैन्य टुकड़ी को आड़ में भेजने के बाद, उन्होंने 20 क्लेमोर और 15 बारूदी सुरंगों में विस्फोट करके उस क्षेत्र को साफ किया। कुमार ब्रजेश की अभियान संबंधी दक्षता और बहादुरी से कई कार्मिकों की बेशकीमती जान बचाई गई।

कांस्टेबल/जीडी सी. मुरूगन निरीक्षक/जीडी आजाद सिंह की कमान के अधीन दल सं. 4 के साथ संबद्ध थे और वे स्काउट के रूप में चौथी पोजीशन में आगे बढ़ रहे थे। जब स्वचालित हथियारों से गोलीबारी कर रहे नक्सलियों ने कठिन चुनौती पेश की और सैन्य टुकड़ी को आगे बढ़ने से रोक दिया, तब कांस्टेबल/जीडी सी. मुरूगन अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर और

माओवादियों द्वारा दागी जा रही गोलियों की बौछार की चपेट में आने के बावजूद, माओवादियों पर हमला किया और अपने दल को लाभप्रद स्थान तक ले गए। कांस्टेबल/जीडी सी. मुरूगन के इस अदम्य साहसिक कृत्य ने सैन्य टुकड़ी को अत्यंत महत्वपूर्ण ठोस आधार प्रदान किया। बहादुरीपूर्वक लड़ते हुए, उन्होंने अपनी एके–47 से 36 राउंड और यूबीजीएल से 4 शेल दागे और नक्सलियों के घृणित इरादे को विफल कर दिया।

इस अभियान में, 209 कोबरा (दल सं. 16) के कांस्टेबल/जीडी आर.इम्बा कुमार की भूमिका भी उल्लेखनीय थी। वह आड़ में रहते हुए पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़े और नक्सलियों की भारी गोलीबारी का जवाब दिया। गोलियों की बौछार के बीच उन्होंने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर माओवादियों पर धावा बोलते हुए अपनी एके–47 से 27 राउंड गोलियां चलाई।

203 कोबरा के हमला दल भी अन्य दिशाओं से नक्सलियों के स्थान पर छोटे हथियारों और यूबीजीएल से भारी गोलियां चलाते हुए मुठभेड़ स्थल की दिशा की ओर आगे बढ़े। नक्सली दोनों दिशाओं से गोलीबारी की चपेट में आ गए जिससे वे उस क्षेत्र से भागने के लिए मजबूर हो गए।

जब 1330 बजे गोलीबारी रूकी, तो सैन्य टुकड़ी द्वारा मुठभेड़ स्थल की गहन तलाशी ली गई। संपूर्ण क्षेत्र में खून के धब्बे और आईईडी/क्लेमोर की बारूदी सुरंगें पाई गई। 70–80 से अधिक आईईडी क्लेमोर की बारूदी सुरंगों को नष्ट किया गया और घायलों को वहां से निकाल कर सुरक्षित स्थान (हाइट–999) पर ले जाया गया। वहां हेलीकॉप्टर मंगाया गया और सभी घायलों/शवों को वहां से निकालकर रांची ले जाया गया। चूंकि नक्सली पहले ही उस क्षेत्र को छोड़ चुके थे, इसलिए सैन्य टुकड़ी बेहद सफल अभियान के बाद देर रात्रि में वहां से वापस लौट गई।

संपूर्ण अभियान का निष्पादन अनुकरणीय तरीके से किया गया, जो सफल अभियानों के इतिहास का निचोड़ है। इस सफल अभियान ने सुरक्षा बलों के मनोबल को ऊंचा किया है और यह आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करता रहेगा। सफलता की दूसरी वीरगाथा लिखने के लिए नेतृत्व, सहयोग, संघटन और तालमेल को भव्य तरीके से तैयार करके निष्पादित किया गया। लाभप्रद और अति सुरक्षित स्थानों में डटे हुए नक्सलियों को पीछे धकेला गया और उन्हें बेहतर तरीके से स्थापित अपने शिविर को छोड़ने के लिए विवश किया गया। वे अपने स्थान से भाग गए और काफी मात्रा में विस्फोटक एवं अन्य सामग्री छोड़ गए। इस अभियान ने नक्सलियों के मनोबल को अभूतपूर्व क्षति पहुंचाई।

की गई बरामदगी

कोरडेक्स तार – 40 मीटर

इलेक्ट्रिक डेटोनेटर–03

रोट आयरन के हथगोले (देशी)–15

बिजली का तार–100 मीटर

15 लीटर की क्षमता वाले बर्तन में तरल पदार्थ, लैंड माइंस के 02 किग्रा. वजन वाले 05 केन बम और 10 किग्रा. वजन वाले 05 केन बम।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री देवेन्द्र सिंह कसवा, उप कमांडेंट, राजेन्द्र प्रसाद रायगर, सहायक कमांडेंट, कुमार ब्रजेश, सहायक कमांडेंट, आजाद सिंह, निरीक्षक, सुवा लाल कोके, हेड कांस्टेबल, चेलाथुरई मुरूगन, कांस्टेबल, राजा ईम्बा कुमार, कांस्टेबल और दुला राम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.03.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 163–प्रेज/2016–राष्ट्रपति, भारत–तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:––

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सुभाष चंद्रा, (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
निरीक्षक

02. विरेन्द्र सिह, (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
हेड कांस्टेबल

03. सुनिल बिष्ट, (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
कांस्टेबल

| | | |
|---|---|---|
| 04. | सन्दीप घोष, कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 05. | हरीनन्दन गुरूरानी, कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 06. | सतीश कुमार, कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

निरीक्षक/जीडी सुभाष चंद्र, हेड कांस्टेबल/जीडी विरेंदर सिंह, कांस्टेबल/जीडी सुनील बिष्ट, कांस्टेबल/जीडी संदीप घोष, कांस्टेबल/जीडी हरीनन्दन गुरूरानी ओर कांस्टेबल/बारबर सतीश कुमार जो दक्षता प्राप्त कमांडो थे, का चयन अफगानिस्तान में मजार—ए—शरीफ में स्थित कांसुलेट जनरल आफ इंडिया (सीजीआई) की सुरक्षा के एक संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण कार्य के लिए किया गया था।

दिनांक 03 जनवरी, 2016 को लगभग 2028 बजे सशस्त्र फिदायीनों के एक समूह ने राकेट संचालित ग्रेनेडों (आरपीजी) से और तत्पश्चात स्वचालित हथियारों से धामकेदार गोलीबारी के साथ सीजीआई, मजार—ए—शरीफ के ऊपर हमला कर दिया। वहां ड्यूटी पर तैनात गार्ड कमांडर और संतरी, हेड कांस्टेबल/जीडी विरेंदर सिंह, कांस्टेबल/जीडी सुनील बिष्ट, कांस्टेबल/जीडी संदीप घोष और कांस्टेबल/जीडी हरीनन्दन गुरूरानी ने अपने स्वचालित हथियारों से तत्काल जवाबी गोलीबारी की और अपने पोस्ट कमांडर एवं अन्य सैनिकों को सचेत किया। कांस्टेबल/बारबर सतीश कुमार ने अतिरिक्त सैनिक के रूप में अपना कर्तव्य निभाया (वह युक्ति लगाकर गोली चलाने की पोजीशन में आ गए)।

लगभग 2030 बजे निरीक्षक/जीडी सुभाष चंद्र न सिर्फ संतरी पोस्ट पर पहुंचे, जिसके ऊपर सीधा हमला किया जा रहा था, बल्कि उन्होंने अपने मातहत अधिकारी से कांसुलेट जनरल को खाली कराने और कांसुलेट के अन्य स्टाफ को वहां से निकाल कर उन्हें सुरक्षित भवन तक ले जाने का भी निर्देश दिया। फिदायिनों के समूह ने बंदूक से भारी गोलीबारी करते हुए और हथगोले फेंक करके चाहरदीवारी और मुख्य द्वार के अंदर घुसने का प्रयास किया, लेकिन पोस्ट कमांडर निरीक्षक/जीडी सुनील बिष्ट, कांस्टेबल/जीडी संदीप घोष, कांस्टेबल/जीडी हरीनन्दन गुरूरानी ओर कांस्टेबल/बारबर सतीश कुमार ने जघन्य आतंकी हमले के सामने वीरता, शौर्य और साहस के उल्लेखनीय कृत्य का प्रदर्शन किया वे निरंतर अपनी पोजीशन बदलते रहे और उन्होंने गोलीबारी के अपने सटीक कौशल के साथ फिदायिनों के समूह पर हमला किया जिसके परिणामस्वरूप चार हठी एवं दुर्दांत फिदायिनों में से एक को मार गिराया गया और एक घायल हो गया। पोस्ट से की गई ऐसी त्वरित एवं सतर्क कार्रवाई ने शेष फिदायिनों को सुरक्षित स्थानों की ओर वापस लौटने पर मजबूर कर दिया और आईटीबीपी कार्मिकों के इस सामयिक बहादुरीपूर्ण कृत्य ने कांसुलेट जनरल और वहां के कर्मचारियों को बंधक बनाने की फिदायिनों की योजना को विफल कर दिया।

अपनी सुरक्षा की परवाह को दरकिनार करते हुए और तीव्र गोलीबारी तथा रॉकेट फायर का मुकाबला करते हुए निरीक्षक/जीडी सुभाष चंद्र की अनुकरणीय कमान के अधीन हेड कांस्टेबल/जीडी विरेंदर सिंह, कांस्टेबल/जीडी सुनील बिष्ट, कांस्टेबल/जीडी संदीप घोष, कांस्टेबल/जीडी हरीनन्दन गुरूनानी, कांस्टेबल/बारबर सतीश कुमार द्वारा बरती गई सतर्कता एवं तत्काल कार्रवाई के परिणामस्वरूप एक आतंकवादी मारा गया और एक घायल हुआ और इससे मजबूर होकर अन्य फिदायीन शरण लेने के लिए निकटवर्ती भवन के भीतर भाग गए। उस समय तक अफगान सुरक्षा बल (क्यू आर एफ) वहां पहुंच गया और उन्होंने उस भवन को घेर कर हमलावर आतंकवादियों के साथ गोलीबारी शुरू कर दी। यह मुठभेड़ 042145 बजे तक जारी रही। अफगान क्विक रिएक्शन फोर्सेज द्वारा संयुक्त तलाशी अभियान और आईटीबीपी द्वारा सहायक गोलीबारी से शेष फिदायीन भी मारे गए।

इस संपूर्ण अभियान में निरीक्षक/जीडी सुभाष चंद्र, हेड कांस्टेबल/जीडी विरेंदर सिंह, कांस्टेबल/जीडी सुनील बिष्ट, कांस्टेबल/जीडी संदीप घोष, कांस्टेबल/जीडी हरीनन्दन गुरूनानी और कांस्टेबल/बारबर सतीश कुमार ने एक फिदायीन को मार करके और दूसरे को घातक रूप से घायल कर के बहादुरी के अनुकरणीय कृत्य का प्रदर्शन किया और इस प्रकार अन्य आंकवादियों को सीजीआई के परिसर में प्रवेश करने से रोक कर एक बड़ी दुर्घटना को टाल दिया। उपर्युक्त "छह हिमवीरों" द्वारा अत्यंत जोखिमपूर्ण आतंक—रोधी मुकाबला वाले अभियान में प्रदर्शित त्वरित निर्णय क्षमता, सटीक गोलीबारी कौशल तथा चतुराईपूर्ण साहस एवं लड़ने का दृढ़ संकल्प स्वयं सर्वोच्च स्तर की बहादुरी और सच्ची पेशेवरता की दास्तां बयान करता है।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुभाष चंद्र, निरीक्षक, विरेन्द्रप सिह, हेड कांस्टेबल, सुनिल बिष्ट, कांस्टेबल, सन्दीप घोष, कांस्टेबल, हरीनन्दन गुरूरानी, कांस्टेबल एवं सतीश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.01.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 164—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, भारत—तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. दिनेश शर्मा,
निरीक्षक

02. मोहरध्वज,
हेड कांस्टेबल

03. रविन्द्र सिंह,
कांस्टेबल

04. भूपेन्द्रा सिंह,
कांस्टेबल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

अफगानिस्तान के जलालाबाद में कांसुलेट जनरल ऑफ इंडिया (सीजीआई) की रक्षा हेतु दक्ष कमांडो, निरीक्षक/जीडी दिनेश शर्मा, हेड कांस्टेबल/जीडी मोहरध्वज, कांस्टेबल/जीडी रविंद्र सिंह और कांस्टेबल/जीडी भूपेंद्र सिंह का चयन एक संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण कार्य के लिए किया गया था।

दिनांक 02 मार्च, 2016 को लगभग 1158 बजे फिदायीनों के एक समूह ने पहले विस्फोटकों से भरी हुई कार (वीवीआईईडी) में धमाका करके और उसके बाद भारी गोलीबारी तथा हथगोले फेंक कर सीजीआई, जलालाबाद पर हमला कर दिया और फिर कांसुलेट की सुरक्षा के लिए स्थापित किए गए एएनपी पोस्ट पर कब्जा करने की कोशिश की। वीवीआईईडी में विस्फोट संतरी पोस्ट के ठीक सामने किया गया और उस समय हेड कांस्टेबल/जीडी मोहर ध्वज उस पोस्ट में संतरी की ड्यूटी कर रहे थे। उन्होंने फौरन पोस्ट कमांडर और अन्य सैन्य बलों को सचेत कर दिया और जवाब में अंधाधुंध गोलीबारी न करते हुए बेहद अनुशासित एवं बहादुरीपूर्ण प्रदर्शन करते हुए अनुकरणीय गोलीबारी की। उनकी पोस्ट गोलीबारी की सीधी लाइन में आ रही थी, लेकिन उन्होंने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और वो हमलावर फिदायीनों तथा एएनएसएफ (क्यूआरएफ) के बीच भयंकर लड़ाई के अंत तक अपनी पोस्ट पर डटे रहे। निरीक्षक/जीडी दिनेश शर्मा अपने दल के सदस्यों कांस्टेबल/जीडी रविंद्र सिंह और कांस्टेबल/जीडी भूपेंद्र सिंह के साथ तत्काल भाग कर मुख्य गेट की ओर गए और उसे भीतर से बंद कर दिया। तत्पश्चात, उन्होंने दल के साथ मिलकर सीजी और उनके सिविल स्टाफ को वहां से बाहर निकाला और उन्हें एक सुरक्षित कमरे में पहुंचाया। यह कार्य निरीक्षक/जीडी दिनेश शर्मा, कांस्टेबल/जीडी रविंद्र सिंह और कांस्टेबल/जीडी भूपेंद्र सिंह के दल द्वारा बेहद फुर्ती से ऐसे समय में किया गया जब सीजीआई के परिसर पर हथगोलों से हमला किया जा रहा था, गोलियां दागी जा रही थीं और वहां वीवीआईईडी में विस्फोट से स्प्लिंटर्स की बौछार हो रही थी। उसके बाद वे अपने दल के साथ एक उपयुक्त स्थान पर पहुंच गए जिसे रेत से भरी बोरियों का प्रयोग करते हुए एक अस्थायी मोर्चा के रूप में तैयार किया गया था, और वहां से उन्होंने और उनके दल के सैनिकों ने हमलावर आतंकवादियों के विरूद्ध जवाबी कार्रवाई की। तीन सदस्यों के इस दल ने अंधाधुंध गोलीबारी के साथ जवाब न देकर (जो कि ऐसी स्थिति में आम बात है) अनुकरणीय एवं अनुशासित गोलीबारी एवं शौर्य का प्रदर्शन किया अन्यथा ऐसी कार्रवाई से मित्र बल/एएनपी को निश्चित रूप से सम्पार्श्विक क्षति पहुंच सकती थी। अस्थायी मोर्चा गोलीबारी की सीधी रेखा में आ गया लेकिन "हिमवीरों" ने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और वे फिदायीनों तथा एएनएसएफ (क्यूआरएफ) के बीच हो रही भयंकर लड़ाई/गोलीबारी के अंत तक मोर्चा पर डटे रहे।

निरीक्षक/जीडी दिनेश शर्मा, हेड कांस्टेबल/जीडी मोहरध्वज, कांस्टेबल/जीडी रविंद्र सिंह और कांस्टेबल/जीडी भूपेंद्र सिंह ने जघन्य आतंकवादी हमले के समय बहादुरी, शौर्य और जीवट से पूर्ण उल्लेखनीय कार्रवाई का प्रदर्शन किया। निरीक्षक/जीडी दिनेश शर्मा, हेड कांस्टेबल/जीडी मोहरध्वज, कांस्टेबल/जीडी रविंद्र सिंह और कांस्टेबल/जीडी भूपेंद्र सिंह ने सतर्कतापूर्ण एवं वीरतापूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह नहीं करते हुए और बंदूकों से की जा रही तीव्र गोलीबारी और दागे जा रहे रॉकेटों के हमले का मुकाबला करते हुए उल्लेखनीय बहादुरी, अदम्य साहस एवं अनुकरणीय पेशेवरता का प्रदर्शन किया जिससे कांसुलेट जनरल ऑफ इंडिया, जलालाबाद और उसके स्टाफ की जान बची।

बरामदगी:— एके47—04, मैगजीन—14, 9 एमएम पिस्तौल—02, भरी हुई मैगजीन—04, बेयोनेट—4, शेप चार्जेज, ग्रेनेड—16, आत्मघाती पोशाक—01 (एएनएसएफ की कस्टडी में)।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री दिनेश शर्मा, निरीक्षक, मोहरध्वज, हेड कांस्टेबल, रविन्द्र सिंह, कांस्टेबल और भूपेन्द्रा सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.03.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 165—प्रेज/2016—राष्ट्रपति, गृह मंत्रालय के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:——

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री चंद्र सेन सिंह,
एसीआईओ—।।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री चंद्र सेन सिंह की नियुक्ति वर्ष 1995 में एसीआईओ—।।/जी के रूप में आसूचना ब्यूरो में हुई थी। वर्ष 1999 में उनकी तैनाती कारगिल चेक पोस्ट पर थी। वहां अपनी तैनाती के दौरान वह अपने स्रोतों के माध्यम से आसूचना संबंधी जानकारी जुटाने में बेहद कामयाब थे। उन्होंने कारगिल सेक्टर में पाकिस्तानी सेना द्वारा घुसपैठ के बारे में उच्च संघटनों को अग्रिम रूप से सूचित कर दिया था। तदनंतर, उन्होंने कारगिल सेक्टर में पाकिस्तानी सेना के घुसपैठियों के बारे में उनके वास्तविक ठिकानों की जानकारी प्रदान करने में भी अहम भूमिका निभाई थी। यह जानकारी इस अधिकारी द्वारा स्वयं अपनी जान को जोखिम में डाल कर घुसपैठियों की मौजूदगी तथा उनके कब्जा वाले क्षेत्रों को स्वयं अपनी आंखों से देखने के लिए दुर्गम एवं खतरनाक सीमावर्ती क्षेत्र में ट्रेकिंग करने के उपरांत जुटाई गई थी। वरिष्ठ संघटनों से संपर्क होने पर उन्होंने बार—बार पैदल चल कर उस क्षेत्र की टोह ली और वे घुसपैठियों की वास्तविक संख्या एवं घुसपैठ किए गए कुल क्षेत्र की जानकारी हासिल करने में कामयाब रहे। इस प्रकार एकत्र की गई जानकारी से, जिससे उस समय भारतीय सेना भी अनभिज्ञ थी, सरकार को अपनी प्रतिक्रिया को संतुलित करने में काफी अधिक सहायता मिली। इस अधिकारी का बहादुरीपूर्ण कार्य जारी रहा और उन्होंने पाकिस्तान की ओर से की जा रही तीव्र एवं निरंतर गोलाबारी का सामना किया, जबकि जवाबी कार्रवाई के लिए भारतीय सेना को अभी वहां के लिए प्रस्थान करना था। भारतीय चेक पोस्ट के ऊपर लगातार गोलाबारी की गई और उसे पूर्णतः नष्ट कर दिया गया। वहां सीमा पर उपस्थित वे एकमात्र भारतीय अधिकारी थे, जो इस तथ्य के बावजूद लगातार गोलाबारी के दौरान सीमा की निगरानी कर रहे थे, कि उनके निजी सामानों के साथ सीमा चौकी की संपूर्ण अवसंरचना पूर्णतः नष्ट हो चुकी है। वहां से एक वायरलेस सेट को निकाल कर श्री सिंह अपने साथ श्री मस्तान सिंह, सुरक्षा सहायक को लेकर एक अस्थायी बंकर में चले गए लेकिन वे अपने कर्तव्य के स्थान से पीछे नहीं हटे, जो राष्ट्र के प्रति उनके उच्च कर्तव्य भावना को दर्शाता है। इस समय तक सभी सरकारी अधिकारी अपनी पोस्ट से पीछे हट गए थे, जबकि कारगिल युद्ध के मामले में श्री सिंह संपूर्ण देश और सुरक्षा संगठनों के लिए एकमात्र संपर्क बिंदु थे और वह एक अस्थायी बंकर से अपने साथ लाए गए वायरलेस सेट से संवाद कर रहे थे। पाकिस्तानी टुकड़ियों की ओर से की जा रही गोलाबारी के परिणामस्वरूप वहां उपलब्ध राशन का संपूर्ण भंडार और पेट्रोल नष्ट हो गया और इस प्रकार श्री मस्तान सिंह के साथ श्री चंद्र सेन सिंह ने सिर्फ चावल के सीमित राशन पर गुजारा किया, जबकि वहां नमक तक नहीं था। इन सभी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपना मनोबल ऊंचा रखा और उच्च संघटनों के साथ संपर्क कायम रखा। लगातार गोलाबारी ने उनके और उनके एक कर्मचारी की जान को जोखिम में डाल दिया था, क्योंक दुश्मनों के द्वारा उनके संचार सेट पर नजर रखी जा रही थी। उसे निशाना बनाया जा रहा था, जिससे उनकी सीमा चौकी दुश्मन सेना के विशेष निशाने पर थी। राष्ट्रीय संकट के उन क्षणों में और अपनी जान के भारी संकट और जोखिम में होने के बावजूद श्री सिंह अपने कर्तव्यों के निर्वहन के प्रति अपने संकल्प में अडिग रहे। यह इस अधिकारी के कर्तव्य निर्वहन की भावना और नैतिक बल की ताकत को स्पष्ट रूप से दर्शाता है जो उच्च श्रेणी का है। अपनी जान के गंभीर जोखिम में होने के बावजूद, वे सरकार के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में, निरंतर गोलाबारी के बीच 58 दिनों तक सीमा पर डटे रहे और कारगिल सेक्टर में हो रही गतिविधियों के बारे में जानकारी देते रहे।

इस एक्शन में श्री चंद्र सेन सिंह, एसीआईओ—।। ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी वर्ष 09 जून, 1999 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

———————————

दिनांक 15 नवम्बर 2016

सं. 166—प्रेज/2016—भारत के राजपत्र के भाग I, खण्ड 1 में दिनांक 25 जुलाई, 2015 को प्रकाशित इस सचिवालय की विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक से संबंधित दिनांक 26 जनवरी, 2015 की अधिसूचना संख्या 41—प्रेज/2015 के हिन्दी रूपांतरण में निम्नलिखित संशोधन किया जाता हैं:——

क्रम संख्या 80

श्री अन्नालामादा सुनील आच्चा — के स्थान पर

श्री अन्नाल्मडा सुनील अचैया — पढ़ा जाए ।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 167—प्रेज/2016— भारत के राजपत्र के भाग I, खण्ड 1 में दिनांक 25 जुलाई, 2015 को प्रकाशित इस सचिवालय की सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक से संबंधित दिनांक 26 जनवरी, 2015 की अधिसूचना संख्या 42—प्रेज/2015 के हिन्दी रूपांतरण में निम्नलिखित संशोधन किया जाता हैः——

क्रम संख्या 624

श्री देश डे — के स्थान पर

श्री देबेश दे — पढ़ा जाए।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

---

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 3 अक्तूबर 2016

संकल्प

सं. 2—1/2014—रा.भा. नीति——श्री मनसुख एल. मांडविया, सांसद (राज्य सभा) द्वारा संघ राज्य मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने के फलस्वरूप कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति के गठन के संबंध में दिनांक 24 अगस्त, 2016 को जारी समसंख्यक संकल्प में आंशिक संशोधन करते हुए श्री राम विचार नेत्तम, संसद सदस्य (राज्य सभा) को उनके स्थान पर सदस्य के रूप में नामित किया जाता है ।

आदेश

इस संकल्प की प्रति सभी राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, लोक/राज्य सभा सचिवालय, नीति आयोग, संसदीय राजभाषा समिति तथा भारत सरकार के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक नई दिल्ली को भेजी जाए ।

इस संकल्प को जनसाधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कराया जाए ।

राजेश कुमार सिंह
संयुक्त सचिव

———————

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 2016

No. 111-Pres/2016—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2016 to award the President's Tatrakshak Medal for Distinguished Service to the under mentioned officer:-

Deputy Inspector General Gurupdesh Singh, TM (0083-M)

2. The President's Tatrakshak Medal for Distinguished Service award is made under Rule-4(iv) of the rules governing grant of the President's Tatrakshak Medal for Distinguished Service.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 112-Pres/2016—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2016 to award the Tatrakshak Medal for Gallantry to Commandant Radhakrishna Rajesh Nambiraj (0568-P).

CITATION

Commandant Radhakrishna Rajesh Nambiraj (0568-P) joined the Indian Coast Guard on 03 January 2000. The officer is an outstanding Chetak pilot and a Qualified Flying Instructor with 3300 hours flying including 480 hours of instructional flying.

2. On 12 June 2016, Port Blair Chetak Flight was tasked to launch Chetak helicopter to rescue 07 personnel from a sinking vessel MSV Safeena AL Geelani 40 nautical miles south of Port Blair. With strong gusting winds over sea, cloud base of around 700 feet and poor visibility, the weather was marginal for helicopter flying, Commandant Nambiraj got airborne at 1245 hours in Search and Rescue (SAR) configuration within 15 minutes of notice.

3. After flying for almost 25 minutes over sea in poor visibility, the officer established visual contact with the sinking ship about 39 nautical miles south of Port Blair. The vessel was 60% submerged. 07 personnel were located in the vicinity of the ship. The winds were so strong that the helicopter was barely able to maintain hover. The officer quickly embarked 03 personnel and transfer them to the Coast Guard ship in vicinity. Maintaining accurate position over the ship with wind speed in excess of 30 knots and heavy swell, without a marshaller demanded high degree of accuracy, skill and validates the professionalism and courage of the pilot. Thereafter the officer proceeded towards the sinking ship to rescue the remaining personnel. Post transferring 02 survivors to the nearest shore, the officer proceeded to base for quick turn around. Thereafter the aircraft got airborne again and rescued the remaining 02 survivors. The officer with his dedication and exemplary professional skills saved 07 precious lives at sea.

4. The professional competence, commitment and courage displayed by the officer in adverse and challenging conditions is highly praiseworthy and in keeping with the highest traditions of a maritime service.

5. Commandant Radhakrishna Rajesh Nambiraj (0568-P) has accredited himself well and therefore he is awarded the Tatrakshak Medal (Gallantry).

6. The Tatrakshak Medal (Gallantry) award is made under Rule 11(i) of the rules governing grant of Tatrakshak Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under Rule 13 in respect of Coast Guard personnel who have received the Tatrakshak Medal (Gallantry) award.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 113-Pres/2016—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2016 to award the Tatrakshak Medal for Gallantry to Kuldeep, Pradhan Yantrik (Power), 08156-Q.

CITATION

Kuldeep, Pradhan Yantrik (Power), 08156-Q joined the Indian Coast Guard on 22 July 2009. The Subordinate Officer (SO) has undertaken many tasks involving challenges, innovative skills and perseverance since he has joined hovercraft on 11 January 2016.

2. On 15 February 2016 when the hovercraft was on routine patrol off Contai (West Bengal), a dingy capsized in the vicinity of the craft due to rough seas and rudder failure. Due to the water ingress in the dingy, four fishermen jumped into the Hooghly River to save themselves. Three fishermen could hold on to the lifebuoy thrown by the craft crew. One of the

fishermen could not hold the lifebuoy. The strong current of the river was drifting this fisherman away from the shore towards the high seas. Realizing that every passing moment is endangering the life of the survivor, Kuldeep immediately jumped into the rough waters of Hooghly river. However, due to the strong currents of 5-6 knots, it was very difficult to reach the drowning fisherman who was drifting away at a very fast pace. In these conditions with current of 5-6 knots and wave height of around 0.7 meters, Kuldeep unmindful to his personal safety and with sole aim of saving the precious life, continued in his pursuit by utilizing his professional acumen and inherent josh and managed to swim towards the drowning fisherman. In nick of time, Kuldeep threw a lifebuoy towards the drowning fisherman which he was carrying. The fisherman who had already gulped lots of water got hold of the lifebuoy. Kuldeep, who was also by now completely tired and exhausted, did not give up. Thereafter, he helped the fisherman to safely reach the craft. The craft crew then took the fisherman onboard, thereby saving a valuable life amidst unfavorable sea conditions.

3. Kuldeep through his sheer dint of courage, stamina and perseverance fought and emerged successful against the elements of nature, which resulted in saving a precious life at sea. The efforts of Kuldeep for his exemplary courage, professional acumen and skills in saving the life of a drowning fisherman is in keeping with the highest tradition of Coast Guard service.

4. Kuldeep, Pradhan Yantrik (Power), 08156-Q has accredited himself well and therefore he is awarded the Tatrakshak Medal (Gallantry).

5. The Tatrakshak Medal (Gallantry) award is made under Rule 11(i) of the rules governing grant of Tatrakshak Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under Rule 13 in respect of Coast Guard personnel who have received the Tatrakshak Medal (Gallantry) award.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 114-Pres/2016—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2016 to award the Tatrakshak Medal for Meritorious Service to the under mentioned officers:-

(i) Deputy Inspector General Mohammad Abu Thalha (0068-D)

(ii) Deputy Inspector General Mohammad Atique Warsi (0206-Q)

(iii) Deputy Inspector General Sanjeev Dewan (0152-S)

2. The Tatrakshak Medal (Meritorious Service) award is made under 11(ii) of the rules governing grant of Tatrakshak Medal for Meritorious Service.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

The 4th November 2016

No. 115-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Dr. Pradip Saikia,
Sub Divisional Police Officer

02. Dinesh Barman
Naik

03. Pawan Dohutia,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Prior to the gallant action, on 19-05-2014 at around 2:30 A.M. surrendered ULFA extremist namely Manik Dohutia @ Meghan, S/o Shri Nogen Dohutia of No. 2 Hollong Nagaon, (Ubon Chuburi), P.S. Bordumsa, Dist.- Tinsukia, Assam along with his associates snatched one service AK-47 Rifle from one 2nd AP Bn Head Constable namely Shri Kuleswar Sonowal,

who was deputed for "Bihu" function duty at Pengeree Chariali along with other police personnel of Pengeree P.S. In this regard Pengeree P.S. Case No. 19/2014, U/S 392/307/34 IPC R/W Sec. 25(i)(a)/27 Arms Act. was registered. Immediately search operations were launched in an around vulnerable and probable hideouts under Pengeree P.S. In the mean time, on 11-06-2014 at around 08:30 P.M. said accused Manik Dohutia Meghan along with 2 (two) other associates committed robbery at Rupai Siding near Shiva Mandir under Doomdooma P.S. by entering inside the grocery shop of one Shri Jay Prakash Agarwal and looted Rs. 75,000/- (seventy five thousand) from the cashbox at gun point. The close circuit camera footage confirmed the miscreant to be the accused Manik Dohutia @ Meghan and Prakash Moran, S/o Tilak Moran of Rangajan (Borjan) village, P.S. Doomdooma, Dist. Tinsukia. Hence Doomdooma P.S. Case No. 338/2014 U/S 392 IPC R/W Sec. 25(i)(a) Arms Act. was registered against the accused surrendered ULFA cadre Manik Dohutia @ Meghan and other associates.

In course of investigation of Pengeree P.S. Case No. 19/2014 U/S 392/307/34 IPC R/W Sec. 25(i)(a)/27 Arms Act and Doomdooma P.S. Case No. 338/2014 U/S 392 IPC R/W Sec. 25(i)(a) Arms Act, several attempts had been made jointly by Army, CRPF, COBRA Battalion and Assam Police personnel to apprehend the accused Manik Dohutia @ Meghan and to recover the service AK-47 Rifle. Finally on 15th June 2014 at about 10 A.M., a secret information was received about the presence of the accused Manik Dohutia @ Meghan and his associates at Dirak Pathar village under Bordumsa P.S., Dist. Changlang (Arunachal Pradesh). Immediately the information was passed to O/C Bordumsa P.S., Dist. Changlang (Arunachal Pradesh) and accordingly based on information, an operation was launched under leadership of Dr. Pradip Saikia, APS, SDPO, Margherita along with O/C Bordumsa P.S. of Tinsukia district namely SI Joy Sankar Wary, O/C Pengeree P.S. namely SI Sanjib Saikia and P.S. staffs and proceeded to Dirakpathar area. After reaching the probable hideouts, the operation party was divided into two teams headed by Dr. Pradip Saikia, APS, SDPO, Margherita and O/C Pengeree P.S. of Tinsukia district on the Northern-flank and the O/C Bordumsa P.S. of Tinsukia district along with SI(P) Anupam Gowala on the Eastern-flank as the miscreants were found taking shelter in an isolated thatch house on the corner of Dirakpathar village. On reaching near the hideout the accused Manik Dohutia @ Meghan with one AK-47 Assault Rifle along with his associates Prakash Moran and others tried to escape but the operation parties chased them. While chasing Manik Dohutia @ Meghan opened indiscriminate fire upon the party and as a result the operation party retaliated by keeping in view the safety of nearby human habitation. In the exchange of fire Manik Dohutia sustained bullet injury on his body and after some distance he fell down on the paddy field. After sometime the operation party encircled the accused Manik Dohutia from all sides and on approaching closer, he was found lying on the paddy field with one AK-47 Assault Rifle. But the other associates of Manik Dohutia managed to escape by taking advantage of deep jungle. The injured surrendered ULFA extremist namely Manik Dohutia Meghan, succumbed to his dead on the way to hospital. In this regard, a case has been registered at Bordumsa P.S. under Changlang district (Arunachal Pradesh), vide Bordumsa P.S. Case No. 18/2014, U/S 307/121/34 IPC R/W Sec. 25(i-a)(b)/27 Arms Act.

Under the above facts and circumstances, it is evident that Dr. Pradip Saikia, APS, NK Dinesh Barman and UBC Pawan Dohutia promptly responded to the call of duty, showed exemplary raw courage in neutralizing extremists. Thus, they touched upon the highest standards of gallantry, courage and devotion to duty that is expected of a true soldier of the Nation.

In this encounter, S/Shri Dr. Pradip Saikia, Sub Divisional Police Officer, Dinesh Barman Naik and Pawan Dohutia, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/06/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 116-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Bihar Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Dharmendra Kumar,
Sub Inspector

02. Gulshan Kumar,
Constable

03. Dinanath Diwakar,
Constable

04. Kumar Gaurav,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 18.04.2013, acting on a secret information about assemblage of some criminals on Railway over bridge near Agamkuna (Patna City) with intention to rob and murder passengers, a special raiding cum action team of special intelligence unit Patna consisting of CT Gulshan Kumar, Const Dina Nath Diwakar, Const Kumar Gaurav under the leadership of Sub-Inspector Dharmendra Kumar by the order of Senior Police officer, approached the railway over bridge at about 13:10. While keeping strict surveillance on passers by SI Dharmendra Kumar, noticed, a young man on the flank towards Gulzarbagh sitting on a black color pulsar motorcycle and nearly ready for action. Two young men standing behind him were keeping a look out on each and every vehicle and its passengers. Being suspicious of their behavior, SI Kumar with Const Dina Nath Diwakar, who were in civil dress, moved towards them. Two other constables, in uniform, followed their team leader. As the three young men saw the police personnel coming towards them, they all sat on the motorcycle and drove towards Gulzarbagh in full speed. All the four members of the police team chased them on two motorcycles disclosing their identity and calling out them to stop. The desperadoes, in a frenzy of excitement, entered into a narrow street. Finding the police team chasing very closely, one of the desperadoes started firing on them. Leaving the bike, they took position against a house near Aganbari Kendra in the street and began to fire incessantly on police team. The street is densely populated. Being daytime, men, women and children were in the street. Sensing their safety, the police team gave repeated warnings to the violent criminals to stop firing and surrender which were greeted with renewed volley of fire. Sensing the situation grave threatening, safety of people of the street and lives of the police personnel, SI Kumar, leader of the police team, opened fire. In the meantime, the criminals fired incessantly aiming at the chasing police party. SI Kumar and constable Gulshan Kumar Sustained injuries. Despite this, the police team held the ground undeterred and unnerved braving terrifying risk. The defiant criminals changed their position against concrete wall of a house at the end of the street and fired a lot of bullets. At this, SI, Kumar and his subordinates fired five (05) rounds which hit one of the criminals. Seeing this, the another criminal tried to escape but was overpowered by the police team after a hot chase. The third criminal managed to escape.

After searching the PO, a criminal, badly injured and bleeding, was found leaned against a wall near a pond. An automatic 7.65 mm pistol, made in Italy, loaded with one live cartridge was recovered from his right hand. He was identified as Disco alias Faiyaz, PS- Sultanganj, Patna, a hard bitten criminal. He had been a synonym for terror in Patna and nearby districts.

One loaded country made pistol (katta) and 04(four) live cartridges of .315 bore were recovered from the possession of the arrested criminal, who was identified as Imtiaz alias Kali, resident of Bagua Ganj, PS- Alamganj, Distt- Patna, a veteran charge sheeted criminal in murder and Arms Act cases.

In this close encounter with stiff necked criminals, the above police personnel displayed extreme conviction, dogged determination and exemplary valor and bravery. They braved the fire of the criminals which was directed towards them with ferocious regularity. Their approach to the critical situation entailing safety of local resident and handling of violent criminals together was indeed very positive.

In this encounter S/Shri Dharmendra Kumar, Sub Inspector, Gulshan Kumar, Constable, Dinanath Diwakar, Constable and Kumar Gaurav, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/04/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 117-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Bihar Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Amit Lodha,
Superintendent of Police

02. Pankaj Kumar,
Sub Divisional Police Officer

03. Binod Kumar,
Sub Inspector

04. Ram Dular Prasad,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On March 28, 2008 at 14:00 hrs Shri Amit Lodha, SP, Begusarai got specific intelligence that a fully armed Naxal dasta led by Dayanand Malakar was camping in village Saraunja with the intention of attacking Birpur PS to assault policemen and loot weapons. The dreaded area commander of the CPI (Maoists) Dayanand Malakar, leader of the women's wing of Naxalites Mamta Devi, Manju Kumari and other members of the hardcore naxal dasta had unleashed a reign of terror in Begusarai, Khagaria and other neighboring districts. Their menacing acts included attack on police stations, blowing up railway lines, murder of policemen and civilians and extortion, etc. Fully equipped with sophisticated arms, some of them looted from the police, the Naxalites led by Dayanand Malakar were a direct challenge to the state.

On that information, district police under leadership of SP, Begusarai started developing intelligence to counter the naxal threat. Realizing that every moment was critical, the SP immediately sent a police team closest to Birpur PS under the leadership of Shri Pankaj Kumar, SDPO, Sadar. Begusarai PS to move towards Saraunja. After proper briefing, all police officers and constables departed for Saraunja Malahtoli. On reaching Saraunja at 15:30 hrs, the police men divided into three groups to cordon the village. The police team immediately faced a volley of indiscriminate fire from the naxalites who were already at advantage point. Sensing threat to the life of his men and to the security of the govt. weapons, Shri Pankaj Kumar directed the police party to initiate restricted and controlled retaliatory fire. In the meantime, Shri Amit Lodha, SP Begusarai reached the encounter place to lead the police party. The morale of the force got boosted immensely. The police team led by the S P kept directing the naxalites to surrender but to no avail. The naxalites were equipped with very sophisticated weapons. They even hurled bombs at the police party. To make matters worse, they forcibly used the village women and children as human shields. In the firing that ensued two policemen namely SAP Ganesh Ray and Ct. Harendra Kumar Ray were critically injured. Despite this, the SP and his team showed tremendous restraint and composure in their retaliatory fire lest some innocent civilian be killed. Seeing the SP and his team trying to rescue the injured policemen, the naxalites unleashed a volley of fire on them. Braving bullets and without caring for their own lives, the SP and his team took the two injured constables safely. The exchange of firing continued till 17:00 hrs. The retaliatory fire injured some top naxalites and demoralized their cadre. Some of them escaped taking advantage of the dark and of course the human shields.

When the firing stopped, lawful search action was done by the police men under the leadership of SP Begusarai. The naxalites had cleverly concealed themselves by lying on the floor of their hut and taking advantage of the darkness inside. Had it not been for the intelligent searching which surprised the naxalites there could have been casualties for the police. In this operation twelve naxals were arrested.

The grave threat to police and of course to the common man is reflected from the large cache of weapons recovered from these notorious naxals. These included one looted Police Rifle with magazine-01, Regular Rifle with magazine -03, Musket-01, Country Made Pistol of .9mm-01 Country Made Pistol-01, Live Bomb-01, Cartridges-92, Detonator with fuse-03, fuse without Detonator-01, Nokia mobile set with Charger-01, cash Rs -14,565, some old ornaments of gold and silver. Naxalite literature & Police Uniform were also found in the field near the scene of encounter. During this dangerous exchange of fire, the police personnel fired 115 round and around 150 rounds were fired by the notorious naxals.

In this encounter S/Shri Amit Lodha, Superintendent of Police, Pankaj Kumar, Sub Divisional Police Officer, Binod Kumar, Sub Inspector and Ram Dular Prasad, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/03/2008.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 118-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Prashant Agrawal,
Superintendent of Police

02. Laxman Kevat,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On input of presence of CPI Maoist cadres in Palnar, Savnar and Todka area under Gangloor PS limits of Bijapur district, an ops party was launched in the night of 25th April 2014, comprising of three parties of DEF Bijapur of total strength 67 with SP, Prashant Agrawal as commander and SI Laxman Kevat as deputy commander.

On 26th April morning around 1000 hrs, as soon as police party reached jungles of Todka, Maoists who had laid ambush, numbered around 35 to 40, started firing indiscriminately upon police party. Police party took position and started retaliating. Shri Agrawal, Party commander cautioned his men and ordered them to control fire and not to expose their location by firing unless enemy is not seen directly, and use fire and move tactics to advance. Shri Agrawal himself took the lead and alongwith SI Laxman Kevat and 4 men advanced towards enemy taking cover and firing. Other party was asked to move and try to encircle Maoists from the other side. Maoists kept on firing upon the police party as soon as they were able to see any movement. Party commander and Deputy Commander courageously moved forward and encouraged their men to follow them. Seeing police party undeterred and close firing towards them, Maoists felt that they might be encircled. Because of strong retaliation by police party, Maoists started losing ground and ran away taking advantage of jungles.

Once firing stopped completely, area was searched by the police party. On searching, police party found one Maoist dead body, one .303 weapon alongside that body, one pouch containing 11 live rounds of .303, empty cases, other live rounds, one pressure IED, radio set used by Maoists, Maoist uniform, literature and other items. There were bloodstains suggesting more Maoists being killed or injured. Without losing much time, police party started to return. There were chances of Maoist backlash or ambush as Maoists must be furious on their loss and also as police party had to carry back the dead body as well, slowing down their movement. The area is also known for booby traps being laid by Maoists. Party commander bravely led his men and moved tactically and reached Bijapur safely. Later, the dead body was identified as Punem Bichchem alias Budhu who was active Maoist in area since last 5 years.

In this encounter S/Shri Prashant Agrawal, Superintendent of Police and Laxman Kevat, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/04/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 119-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Daulat Ram Porte,
S.D.O. (Police)

02. Gaind Singh Thakur,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13-08-2014, Shri Daulat Ram Porte, received information by the informer that naxalites were present in jungle and hill in Ghumsimunda and some naxals were preparing banner to boycott Independence Day ceremony in agriculture field of Mangal Singh Sori in village- Ghumsimunda. As SDOP Daulat Ram Porte was having less number of subordinates and men with him in operation. To assure success, he immediately asked Antagarh BSF to come, because informer told him that the number of naxalites is large. SDOP Daulat Ram Porte briefed the plan and divided the force in 03 parties. One party consisting of District force and CAF led by Daulat Ram Porte and second party, having BSF with one ASI Tulsi Ram Kosima of district force, led by A.C. BSF K.K. Sharma and third party consisting of District force and CAF led by Inspector G.S. Thakur. First party cordoned off the hide out of the naxalites from the left side from east direction while the Second party cordoned off from middle side from north direction and Third party cordoned off the hide out of the naxalites by the right side from west direction. When the party led by the SDOP Daulat Ram Porte was moving towards the area pointed out by the informer, after searching/moving some distance, naxalite saw the police party and started firing indiscriminately and heavily

upon the police party from automatic weapons like AK47, LMG, SLR, INSAS, Carbine, also from 12 bore and Bharmar. Daulat Ram Porte ordered his party to fire in self-defence. SDOP Daulat Ram Porte ensured that the party was strategically placed. SDOP Daulat Ram Porte already briefed the jawans about strategy of course of action. Naxlites were on top of the hill and were situated at an advantageous position. Daulat Ram Porte ordered others to take solid cover and then he, with Inspector G.S. Thakur, SI K.P. Rathore, SI Amol Xalxo, ASI Khemraj Sahu, Ct Shrawan Kuldeep, Assistant constable Buddhu Ram Dugga crawled forward by the help of covering fire. Despite bullets passing over his head, SDOP came closer to the naxalite hideout with Ins. G.S.Thakur, SI K.P. Rathore, SI Amol Xalxo, ASI Khemraj Sahu, Ct Shrawan Kuldeep, Assistant constable Buddhu Ram Dugga. He observed the terrain and location of naxalites and later encouraged his men also to tactically advance forward by crawling and in low lying position which they were ready to do as the leader himself had prepared the way. SDOP Daulat Ram Porte ordered his men to retaliate heavily and he also started firing at them by crawling dangerously over a cliff without any cover. It was a direct assault on the naxlites, he did not care for his own life and safety. The daring and tactful act of SDOP Daulat Ram Porte not only ensured the safety of his party but also naxalite lost their main strategic position. Due to this action naxals panicked and ran away from their strategic position hastily. During retreating naxalite SDOP Daulat Ram Porte and Assistant Constable Buddhu Ram Dugga chased them without care for their own life and safety, At the movement by the firing of A.K. 47 by SDOP Daulat Ram Porte one naxalite got bullet injury after that the naxalite was apprehended with his AK. 47 automatic weapon and 25 cartridges. Second party which was led by AC BSF, K.K. Sharma and third party led by Inspector G.S. Thakur fought bravely and fired well causing shock and panic among naxalite and they withdrew from the hide out from back side of the hill taking advantage of dense forest. After half an hour, the police searched the place of occurrence and recovered ten round of AK. 47 rolled on polythene packet, one Desi katta with 07 rounds and Rs. 5220 cash.

In this encounter, S/Shri Daulat Ram Porte, S.D.O. (Police) and Gaind Singh Thakur, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 120-Pres/2016—The President is pleased to award the 3rd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:-

| | NAME & RANK OF THE OFFICERS | |
|---|---|---|
| | S/Shri | |
| 01. | Ajeet Kumar Ogrey, Inspector | (3rd Bar to PMG) |
| 02. | Mukesh Yadav, Sub-Inspector | (PMG) |
| 03. | Subodh Kumar, Head Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15th May, 2014 Insp Ajeet Kumar Ogrey received information that naxalites have gathered near Chhattisgarh, Maharashtra border under PS Oundhi and are planning to ambush and attack the security forces during the ongoing Lok Sabha election period. He prepared a thorough plan for conducting a search operation with the District Police Force and STF components. He formed two parties. One party led by Inspector Ogrey and second party led by SI Mukesh Yadav and moving very tactically. As soon as the police parties neared the village Ghotia Kanhar, it was spotted by the naxalites who opened heavy fire upon them with automatic and semi-automatic weapons. Insp. Ogrey alongwith HC Subodh Kumar exhibited composure, leadership and courage in this extremely tarring situation. Upon seeing his men in extreme danger, he took a bold decision that also had immense risk to his own life. He led his party tactically towards the naxal positions forming a new front of attack. It was his quick reflexes, huge operational experience, leadership qualities and immense courage that made him proceed with this bold decision full of danger to his own life. His party then challenged the naxalites from this new position and opened heavy fire on them in order to protect the lives of his fellow policemen trapped in heavy gunfire from naxalites. He kept exhorting and guiding his men to maintain full coordination in action. At a decisive moment, Insp Ogrey penetrated the naxal siege in midst of heavy firing and shot down two naxalites including their commander. Simultaneously, SI Mukesh Kumar has cordon the CPI (Maoist) cadres, suddenly Maoist cadres started indiscriminate firing.

In retaliation, security forces also fired in self defence. In this exchange of fire one Maoist cadre injured in bullet injury, SI Mukesh Yadav immense risk to his own life apprehended one injured naxalite. The naxals could not withstand the tactful and bold counterattack of police and started fleeing. The police party then chased them and apprehended an armed wounded naxalite alive. But for the above gallant act of Insp Ogrey, the surrounded police party would have paid dearly with possible loss of lives and weapons of policemen.

In the post encounter search, the dead body of the naxalite commander Pankaj with one 7.62 SLR rifle, 03 magazines and a backpack was recovered from the encounter site. Pankaj was the dreaded naxalite commander of Platoon No 23 of the Rajnandgaon Kanker Border Committee of Maoists. One single shot 12 bore rifle, 01 land mine, 01 backpack was seized from the arrested naxalite Pratap Tekam. Also, another single shot rifle of another killed naxalite was recovered, whose body was carried away by the naxalites with them. The police party amply demonstrated their humane attitude when they carried the wounded naxalite on their shoulders to the nearest hospital for medical treatment.

Inspector Ajeet Kumar Ogrey, SI Mukesh Yadav and HC Subodh Kumar displayed extraordinary courage, exceptional leadership qualities and initiative in an immensely adverse situation that not only saved the lives of his fellow policemen but also dealt a deep blow to the illegal naxal activity in the area. He went beyond the call of duty to save his men even while putting his own life at risk.

In this encounter, S/Shri Ajeet Kumar Ogrey, Inspector, Mukesh Yadav, Sub-Inspector and Subodh Kumar, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 3rd Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/05/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 121-Pres/2016—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Abdul Sameer, Sub Inspector — (1st Bar to PMG)

02. Ambika Prasad Dhruw, Assistant Sub Inspector — (PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On input of large gathering of Naxals in Pidia-Andri and presence of small parties around that area, one operation was launched consisting of multiple parties starting from different camps. One party consisting of DEF and CRPF Bijapur was sent from Kirandul side to cover Purangal, Vengur area. Party started from Kirandul in the night of 17th of May 2013. Next day evening around 1830 hrs, just before Purangal, there was an exchange of fire with Naxals in which two CRPF Jawans got injured. Next day morning i.e 19.05.2013, helicopter was to be sent to evacuate the injured Jawans. Small parties were sent to secure the area for landing of helicopter. Naxals who were waiting in ambush in the hilly and bushy area started heavy fire from automatic, semiautomatic and country made weapons on the small party consisting of DEF and CRPF led by SI Abdul Sameer and ASI Ambika Prasad Dhruv. When the party was attacked by naxals, they exhibited a great presence of mind, great leadership, superb operational sense, extra ordinary courage, bravery and conspicuous gallant while launching the offensive from front their reaction to naxal offensive not only saved the life of their men, but also foiled the naxal attack and they played a key role in killing of naxals and recovering dead body of one naxal in uniform namely Masi Mudami S/O Pandu, Village-Gampur, PS-Gangaloor, Distt-Bijapur (C.G.) along with 01 Air Gun, 05 black pittu, naxal literature, Medicines etc was recovered, Sensing the danger of small party being completely coming under the heavy fire of Naxals, SI Abdul Sameer and ASI Dhruv boldly moved forward firing heavily on naxal and shouting his men to fire and move forward motivated by the courageous action of SI Abdul Smeer, ASI and Ambika Prasad Dhurv. Other men also started firing and moved forward. Surprised by the fierce firing and forward movement of police party, naxals started retreating from mountainous terrain. Once the exchange of fire stopped, incident site was searched in which dead body of one naxal, one airgun, naxal literature and other items were recovered.

SI Abdul Smeer, ASI and Ambika Prasad Dhruv courageously retaliated the fire and motivated his men to retaliate fiercely and advanced towards naxal positions without caring for life, counter ambushed the naxals who were trying to entrap and kill the police party. When the party was attacked by naxals, the police party exhibited a great presence of mind, great leadership, superb operational sense and extra ordinary courage while launching the offensive from front.

In this encounter S/Shri Abdul Sameer, Sub-Inspector and Ambika Prasad Dhruw, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/05/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 122-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Krishan Kumar,
Sub Inspector

02. Ajaibir Singh,
Assistant Sub Inspector

03. Raj Kumar,
Head Constable

04. Umesh Kumar,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

This relates to the gallant act and extra ordinary work shown by a team of Special Cell, Delhi Police in fighting and neutralizing desperate hard core criminal namely Chotu Kumar @ Chote Fouji S/o Shaligram r/o Village Kachotpura, PS Gonda, Distt. Aligarh, UP in a daring face to face encounter, which took place on 05/07/2015 at about 07:35 PM on a link road going from Khajuri to under-construction Signature Bridge, New Delhi. The team of Special Cell was chasing the wanted criminal, who came to Delhi for delivering the consignment of illegal Arms to dreaded criminals of Haryana, Delhi and NCR. He was chased and was trapped towards dead end of under-construction Signature Bridge, New Delhi. Finding no escape, accused took out loaded pistol and aimed at police party despite he was asked to surrender himself before police party. Accused, instead of surrendering came out from his car and opened fire on police party with the illegal sophisticated weapon in his possession. The police party repeated the warning but the accused kept on firing at police party. He fired 5 rounds in total. One of the bullet hit the Govt. Vehicle and rest hit the four personnel of raiding party. Luckily, all the fire were blocked by the Bullet Proof Jackets worn by raiding team. The police party also opened fire in order to nab the accused and overpowered him. In the course of search, 01 loaded Pistol with 01 cartridge in its chamber, 01 magazine having 6 live cartridges were recovered from his hand. Whereas, 01 empty magazine and 5 spent cartridges were recovered from the spot. On checking of the car 30 sophisticated pistols were recovered in the travelling bag kept in it. The Car Wagon-R No. DL-3CZ-3444, used in transportation of the illegal arm was also found to be stolen from the area of Police Station Greater Kailash-I, New Delhi.

Krishan Kumar SI, Ajaibir Singh, ASI, Raj Kumar, HC and Umesh Kumar, HC have risked their lives and continuously exhibited exemplary courage, bravery and motivation in above operation to apprehend the wanted desperate criminal without being able to harm the lives of public persons and co-team 'members. The brave action of Delhi Police won applause not only from the highest ranks of Police of different states but also from the public at large. They have set an example of gallant & dedication towards their duty.

In this encounter S/Shri Krishan Kumar, Sub Inspector, Ajaibir Singh, Assistant Sub Inspector, Raj Kumar, Head Constable and Umesh Kumar, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/07/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 123-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Haryana Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Satender Kumar Gupta,
Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

'Operation Samvedi' was launched by the Haryana Police to execute the non-bail able warrants issued by the Hon'ble Punjab and Haryana High Court against contemnor Rampal under the chairmanship of Sh. Anil Kumar Rao, IPS, IGP/Hisar Range, Hisar. Rampal and his supporters had planned to pitch a battle against the police in case any attempt made by the police to arrest Rampal. There were about 30,000 to 40,000 people inside Satlok Ashram' Barwala, district Hisar. The women and children were made human shield by Rampal to evade his arrest. A private army of commandos equipped with anti-riot gears, firearms, petrol bombs, acid-pouches, sling-shots and pebbles/stones etc was raised and trained to prevent any attempt by police to arrest Rampal. Keeping in mind the likelihood of large collateral damage, the police under his leadership, undertook the operation in a professional manner. The Satlok Ashram was completely cordoned off by 17th Nov. 2014 and an order under section 144 of the Criminal Procedure Code was promulgated by the District Magistrate, Hisar. All efforts to persuade the Ashram followers to leave the Ashram peacefully failed. On 18th Nov. 2014, at around 12:00 P.M., a planned and co-ordinate attacks began from within the fortified walls of the Ashram. Sh. Anil Kumar Rao, IPS along with Sh. Satender Kumar Gupta,IPS, SP/Hisar, Sh. Sumit Kumar, HPS, the then DCP/Faridabad, Sh. Rajbir Singh, HPS, DSP/Barwala, Sh. Bhagwan Dass, DSP/Siwani (now DSP/Hisar) Inspector Jeet Singh, Gunpal Singh ORP/ASI (lncharge Cyber Cell, Hisar Range, Hisar) and other police force warned the followers of Rampal who were standing in front of the main gate of the ashram armed with deadly weapons like guns, lathis, acid pouches, chilly bombs and slings etc. Repeated announcements were made by Sh. Anil Kumar Rao, IPS, IGP/Hisar Range, Hisar, Head of Operation "SAMVEDI" and Sh. Satender Kumar Gupta, IPS, SP/Hisar to the followers to vacate the Ashram. In the meantime, the followers attacked on police officers and men pelted stones, threw acid pouches, used chilly bombs and sling shots etc. There was intermittent firing from inside the Ashram simultaneously. One gunshot was fired from the Ashram aiming IGP, Hisar but fortunately it did not hit him. The whole operation was successfully accomplished without any loss of life from any side due to professional approach adopted by police.

Satender Kumar Gupta, IPS, Superintendent of Police, Hisar was also present at the main gate of the Ashram during the operation. He led the police party in accomplishing the said operation. At the place of their presence, few followers of Rampal suddenly came having canes of kerosene oil in their hands. They poured the kerosene oil on their body and lit fire upon their body in order to commit self-immolation. It was due to the efforts of Sh. Satender Kumar Gupta and his team that these followers were saved and removed from the place.

Shri Satender Kumar Gupta was very near to the violent and attacking mob. The attackers had attacked on him and other police force but he played a great role in order to fail their aim. He has given a valiant fight and was able to break the front boundary and first gate of Ashram. He had sustained injuries but keeping in view the morale of police he also did not get himself medically examined. He sustained injury on his head and his spectacles and mobile phone were broken. Blood was oozing from his head despite he did not care for his injuries and life and fought bravely. Because of immense courage and conspicuous gallantry shown by the officer, the whole operation was accomplished successfully without any loss of life from any side. Apart from the above said, he successfully removed the thousands of people safely from the Ashram to their homes.

In this regard, the case FIR No. 428 dated 18.11.2014 was registered initially under sections 107/147/148/ 149/186/188/120B/ 121/121A/122/ 123/ 224/ 225/ 307/ 332/ 342/353/436 of IPC and section 25 of Arms Act, Explosives Substances Act, 3/4 PDPP Act and Sections 16/18/20/22-C/23 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 PS Barwala against Rampal and his aides (followers). It is worth mentioning here that a Special Investigation Team was constituted to investigate the above said case. During the course of investigation, 18 fire arms, 19 Air guns, 45 Petrol Bombs, One Chilli Grenade, 04 Bullet proof jackets, 9675 lathies, 228 helmets and 26 cane shields were recovered from the Ashram.

In this action, Shri Satender Kumar Gupta, Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/11/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 124-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Rayees Mohammad Bhat,<br>Superintendent of Police | (PMG) |
| 02. | Sajjad Ahmad Shah,<br>Dy. Superintendent of Police | (1st Bar to PMG) |
| 03. | Nazir Ahmad Teeli,<br>Inspector | (1st Bar to PMG) |
| 04. | Arif Ahmad Sheikh,<br>Sub Inspector | (PMG) |
| 05. | Nissar Ahmad Dar,<br>Head Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13/04/2014, based on a specific information regarding presence of terrorists namely Baber @ Hafiz Ukasa and Anas @ Parvaiz of LeT in Ahmad Nagar area of Srinagar, a joint operation was planned under the supervision of SSP Srinagar, SP South, SP Ops, Dy SP Ops and IC, ESU Srinagar with the assistance of 23rdBn CRPF. The operational party was divided into three teams, first team comprised of SHO Soura and men of 23rd Battalion CRPF for outer cordon, second team was headed by Shri Imtiyaz Ismail, SP South Srinagar to cordon the target Mohalla and the third team was led by SP Rayees Mohammad Bhat, SP Hazratbal alongwith Dy SP Sajjad Ahmad Shah, Inspr. Nazir Ahmad Teeli, SI Arif Ahmad Sheikh and HC Nissar Ahmad Dar for laying inner cordon and to conduct door to door search. Terrorists on noticing presence of operational party managed to enter a residential house belonging to one Ab Majeed S/O Gh Ahmad R/O Shadab Colony, Ahmad Nagar and made the house inmates hostage. The terrorists were offered to surrender and set hostages free but they denied and hurled grenades and fired indiscriminately on the search/advance party. On hearing the gun shots, the civilians residing in adjoining houses were desperate to move to safer places. Amid indiscriminate firing from the terrorists, the team headed by SP Rayees Mohammad Bhat, SP Hazratbal alongwith Dy. SP Sajjad Ahmad Shah, Insp Nazir Ahmad Teeli, SI Arif Ahmed Sheikh and HC Nissar Ahmad Dar volunteered for the said job and after putting their lives in great risk evacuated all the civilians including hostages. Thereafter the party focused their attention to eliminate the hiding terrorists. Feeling the noose around their necks, the terrorists started the deceptive firing in order to get a space for fleeing and to confuse the operation team but the meticulous planning of the advance team did not let the terrorists to execute their evil designs and retaliated in an audacious manner, moved towards the target house in a fire retaliatory exercise resulting in the neutralization of two hardcore terrorists who have later been identified as Baber @ Ukasa and Anas @ Pravaiz. It was only with great valour and missionary zeal of SP Rayees Mohammad Bhat, SP Hazaratbal, Dy. SP Sajjad Ahmad Shah, Insp Naziar Ahmad Teeli, SI Arif Ahmad Sheikh and HC Nissar Ahmad Dar that they neutralized two hardcore terrorists.

Recovery:

| | | |
|---|---|---|
| 1. | AK-47 rifle | : 02 Nos. |
| 2. | Magazine AK- 47 | : 06 Nos. |
| 3. | Empty cartridges of AK 47 | : 35 Nos. |

In this encounter S/Shri Rayees Mohammad Bhat, Superintendent of Police, Sajjad Ahmad Shah, Dy. Superintendent of Police, Nazir Ahmad Teeli, Inspector, Arif Ahmad Sheikh, Sub Inspector and Nissar Ahmad Dar, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/04/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 125-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Ashiq Hussain Tak,<br>Dy. Superintendent of Police | (1st Bar to PMG) |
| 02. | Dilraj Singh,<br>Sub Inspector | (PMG) |
| 03. | Nazeer Ahmad Dar,<br>Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24/11/2012, acting on a information about the presence of one Pakistani terrorist commander in Chatloora Sopore, a small team of Handwara Police led by Sh. Ashiq Hussain Tak, Dy.SP (ops) Handwara and Sopore Police led by SI Dilraj Singh along with 22RR and 179 CRPF rushed in the area to cordon the suspected house during night hours, where the terrorist was believed to be hiding and with the onset of early morning sun light, a Police team comprising of Sh. Ashiq Hussain Tak Dy.SP, SI Dilraj Singh and Const. Nazeer Ahmad decided to search the house. The first priority was to ensure the safety of the 12 family members including women and children which were present in the house. The Police team made the entry from the front door and started calling out the family members but none of them came out and instead Police team heard screams and cries from the room just adjacent to the corridor of the house. The Police team immediately noticed that the house inmates were kept as hostage by the terrorist in one room.

Since the room was in the ground floor and a window was opening towards the courtyard of the house, Police team decided to storm the room simultaneously from the door and the window to overpower the terrorist. Accordingly, SI Dilraj Singh broke open the window while as other two members Sh. Ashiq Hussain Tak Dy.SP and Const. Nazeer Ahmad slammed the door and rushed towards the terrorists to overpower him who at that moment was attentive towards window where in SI Dilraj was making entry. The terrorist fired a burst of gun fire towards the window and SI Dilraj Singh got injured but before the terrorist could cause further damage, other two officers tried to overpower him and engaged him in a scuffle and inspite being hit by a bullet in ribs, SI Dilraj Singh also joined the colleagues to capture and overpower the terrorist. During the engagement, all the house inmates were evacuated safely by the Police/ Army of outer cordon. The terrorist was repeatedly called for surrender but instead he fired a burst on policemen which luckily did not hit. Before he could fire another burst, he was fired upon by Sh. Ashiq Hussain Tak Dy. SP killing him on spot. The killed terrorist was the chief operational commander of Jaish-e Mohammed terrorist outfit based in Pakistan and was wanted in many incidents of terrorism including killing of civilians and security forces.

Recovery:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | AK-47 rifle | : | 01 No. |
| 2. | AK-Mag | : | 02 Nos |
| 3. | AK-Amn | : | 15 Rds. |
| 4. | Pistol | : | 01 No. |
| 5. | Pistol Mag | : | 01 No. |
| 6. | Pistol Amn | : | 02 Nos. |

In this encounter S/Shri Ashiq Hussain Tak, Dy. Superintendent of Police, Dilraj Singh, Sub Inspector and Nazeer Ahmad Dar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/11/2012.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 126-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Gaznafar Syed,
Inspector

02. Mohammad Akbar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22-23/07/2013, acting on specific information, a joint operation by Police and Army(18 RR) was launched in village Gadwad Diver Lolab. Initially, all the escape routes were plugged-in and strategic deployments made. Joint search parties of Police/Army were formed and search operation started on the wee hours on 23/07/2013. After evaluating all possible risks from terrorists, three teams were formed under the command of Shri Abdul Jabbar,IPS SP Kupwara, Shri Rajinder Singh Rahi, Dy. SP (PC) Kupwara and Inspector Gaznafar Syed with clear objectives of locating the exact place of hiding of dreaded terrorist and ensuring the safety of civilians trapped in adjacent residential houses. As police parties tried to encircle the target house, a volley of fire started from one of the cow shed situated in southern side of the target house and was aimed towards the team approaching from eastern side. This team after taking proper cover retaliated with proportionate fire which forced the terrorist to back into the cowshed. The team headed by Shri Rajinder Singh Rahi, Dy. SP(PC) Kupwara entered the target house from northern side to cover the said cowshed. Meanwhile team headed by Shri Gaznafar Syed, Insp encircled the house from western side. The team headed by Shri Rajinder Singh Rahi, Dy. SP(PC) Kupwara entered the target house and advanced towards a room which was in the vicinity of cowshed where inmates had taken shelter. The terrorist sensing advancement of the party, started firing heavily towards the said room. Sensing the trouble, other two teams came out in open and engaged the terrorist from their respective sides forcing him to run for cover. Thereafter, all three teams started the final assault and encircled the target area from all the sides. The terrorist jumped out of cowshed and ran towards open field on the southern side and continued cover fire. At the spur of the moment, police party crawled in buddy pairs from two sides amidst intermittent fire coming from terrorist without caring for their personal safety and risk to their lives and eliminated the terrorist from a close range.

Recoveries made:-

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | AK 56 Rifle | : | 01 No. |
| 2. | AK 56 Magazines | : | 03 Nos. |
| 3. | AK 56 Rounds | : | 147 Nos. |
| 4. | Hand Grenade | : | 01 No. |
| 5. | Blank Cartridges | : | 31 Nos. |

In this encounter S/Shri Gaznafar Syed, Inspector and Mohammad Akbar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/07/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 127-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Tejinder Singh,
Superintendent of Police

02. Syed Mansoor,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31.01.2014, at about 1545 hours, acting on a tip off, a joint operation was launched by Police Pulwama alongwith Army and CRPF at Village Kangan in district Pulwama to eliminate terrorists hiding in a residential house. Immediately, after taking stock of the situation, Shri Tejinder Singh, IPS, SP Pulwama, who was leading the operation party, worked out plan for launching attack against the hiding terrorist. While Police Pulwama cordoned the western side of the target houses, CRPF was given the responsibility of eastern side and the Army from Southern side. After the cordon was laid, Sh.Tejinder Singh, IPS, SP Pulwama alongwith Constable Syed Mansoor advanced towards the target house but terrorists hiding in one of the target houses started indiscriminate firing on them. Showing exemplary courage and presence of mind, Shri Tejinder Singh, IPS and Const. Syed Mansoor immediately took positions and retaliated the fire effectively forcing the terrorists to turn defensive thus foiling his attempt to escape from the target site. As the presence of the terrorists got exposed, cordon around the target houses was strengthened. By now it was also learnt that some civilians were trapped inside the target house and some adjoining houses, which made the task for the operational party more difficult. But for the professional standards and operational capabilities of Shri Tejinder Singh, IPS, SP Pulwama, all the civilians trapped inside the cordon were evacuated safely. Meanwhile, the night had drawn nearer upon which lighting arrangements were made so that no terrorist gives slip to the party under the darkness. Shri Tejinder Singh, IPS, SP Pulwama assisted by Const. Mansoor Ahmad remained vigilant all through the night and ensured in maintaining effective cordon throughout the night. In the wee hours, two teams were formed; one of SOG Pulwama and CRPF and another of Army were formed for final assault. Sh.Tejinder Singh, IPS- SP Pulwama and Ct Syed Mansoor, who were part of the Police party, volunteered to lead the operation from the front and without caring for their lives, engaged the hiding terrorist in a fierce gun battle before eliminating him. The killed militant was later identified as Aijaz Ahmad Bhat S/O Jalal-ud-din Bhat R/O Charsoo, Awantipora (Category "A") of LeT outfit. The said terrorist had been active in District Pulwama for a pretty long time and was involved in a number of militancy related incidents in the area. The killing of the said terrorist was a great blow to rank and file of LeT outfit.

Recovery:-

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | Rifle AK 56 | - | 01 No. |
| 2. | Mag AK 56 | - | 02 Nos. |
| 3. | Rds AK 56 | - | 46 Nos. |
| 4. | Pouch | - | 01 No. |

In this encounter S/Shri Tejinder Singh, Superintendent of Police and Syed Mansoor, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/01/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 128-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Rakesh Pandita,
Assistant Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10-06-2013 at about 2000 hours, a specific input was received by Addl. SP Pulwama about movement of terrorists in the areas of village Niloora. Acting on the input, multiple nakas were laid by Police camp Litter, Pulwama alongwith 182 Bn CRPF and 55 RR at Niloora under the supervision of Shri Javid Hassan Bhat ASP Pulwama. Meanwhile, three persons riding a Motor bike approached towards Niloora main road. The 1st naka party asked them to stop which they ignored and ran away. The second party also challenged the terrorists to stop and prove their identity but they fired upon the naka party. The fire was retaliated by the naka party ensuing a fierce encounter between the two sides. The motor cyclist lobbed grenades and fired indiscriminately upon the naka party, which resulted in injuries to two police personnel to be evacuated safely from the site of encounter. Sensing the gravity of the situation as a result of receiving of injuries by two police personnel and trapping of civilians around the encounter site, ASP Pulwama assisted by ASI Rakesh Pandita, putting their lives to a great risk, rescued all the civilians safely from the encounter amid heavy volume of fire from the terrorists.

Thereafter the police party led by ASP Pulwama assisted by ASI Rakesh Pandita concentrated on the target and without caring for their lives fought a closed gun battle killing one of the terrorist on the spot. The killed terrorist was later identified as Ashiq Ahmad Lone @ Chota Rehman S/o Gull Mohammad Lone R/o Heff Shirmal, District Commander of LeT outfit, while another terrorist taking advantage of darkness and dense plantation managed his escape from the encounter site. The third person was a civilian namely Irshad Ahmad Mir S/o Mohd Ramzan R/o Chakoora who was apprehended and his bike was seized. On the next morning the operation was started again by the forces in Niloora and Pirtaki villages to nab the other terrorist who escaped from the spot. The forces searched every house of the two villages but second terrorist could not be traced.

Recovery:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | Rifle AK 47 | - | 01 No. |
| 2. | Mag AK 47 | - | 02 Nos. |
| 3. | Rounds AK | - | 26 Nos. |
| 4. | Pouch | - | 01 No. |
| 5. | Pistol Mag | - | 02 Nos. |
| 6. | Pistol Rds | - | 09 Nos. |

In this encounter Shri Rakesh Pandita, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/06/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 129-Pres/2016—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Prabhat Ranjan Barwar,<br>Dy. Superintendent of Police | (PMG) |
| 02. | Jai Prakash Singh,<br>Inspector | (1st Bar to PMG) |
| 03. | Pankaj Kumar<br>Sub Inspector | (PMG) |
| 04. | Satendra Prasad,<br>Sub Inspector | (PMG) |
| 05. | Manoj Bakhala<br>Constable | (PMG) (Posthumously) |
| 06. | Bikram Rai<br>Constable | (PMG) |
| 07. | Brejesh Lepcha,<br>Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on an intelligence input regarding presence of top CPI(Maoist) leaders led by ArvindJi@ Devkumar Singh, commander of central military commission, Silvestor @Shivnandan Bhagat, Secretary Koel Sankh zone, Nakul Yadav, member of BRC, Indrajeet, Birsai, Prasad ji alongwith their 250-300 active dasta members conducting a meeting in the dense forest near village Sibil and Saksari, under PS-Chainpur, Distt-Gumla (Jharkhand) for planning to undertake some subversive activities, a special Ops "Vijay" was planned on 12/3/2013 with an objective to search and annihilate Naxal camps near village Sibil under PS Chainpur, Gumla (Jharkhand). Four teams were constituted comprising of 203 and 209 COBRA, 04 Assault Group of Jharkhand Jaguar, coy of 218 BN CRPF and DAP Gumla were involved for the operation.

As per ops plan Team-1, headed by Sri Deepak Kumar Panday, Dy SP Sri Arif Ekram Dy SP, Sh. Digvijay Singh OC/ Raidih, SI Vidya Shankar from Gumla PS along with 06 team of 209 Cobra, AG-19 & 25 of JJ and 20 boys of district QRT Gumla was formed to strike in Ghusri P.F and nearby areas.

Team-2, headed by Sh. Deepak Kumar, SDPO Basiya, Sh. Prabhat Ranjan Barwar, Dy SP, SI Pankaj Kumar OC/Chainpur, SI Kamlesh Paswan along with 06 team of 203 Cobra, AG-16 & AG-05 of JJ and 20 boys of district QRT Gumla to strike at hill 974 Sibil PF and nearby areas.

Team-3, headed by Amish Hussain C.I. Gumla, Sh. T.N Singh C.I. Chainpur, Anil Kumar Karn,O/C Gumla along with 04 teams of 209 Cobra, AG-17 of JJ to strike at Marwa, Rored or Kitua and as per input as crop up during course of operation.

Team-4, headed by Sh. Jatin Narwal S.P Gumla, Sh. Vinod Karthik, Commandant 218 BN CRPF, SI Birender Toppo O/C Palkot along with 04 teams of Cobra, AG-17 of JJ, A/218 CRPF and DAP was to operate in Kuio, Anjan Gani PF and Illinga area This team also had the responsibility to act as the input crop up during course of operation and act as support party to facilitate safe de-induction.

The Team-2, headed by Sh. Deepak Kumar, SDPO was assigned the task to seek and destroy naxal Camps in the area where top Maoist leaders Arvind Ji and Kisan Da were reportedly camping along with their 250-300 hard core PLGA cadres to hold the meeting. This team reached to the respective targets at 0400 hrs. on 13/3/2013. Sub-Inspector Pankaj Kumar, OC/PS Chainpur was in the lead with his team along with Cobra 203. When strike party reached at hight-974, at around 1330 hrs and behind them there was district QRT led by SI Kamlesh Paswan and subsequently behind Sh. Deepak Kumar SDPO Basiya with AG-05 & AG-16 of JJ were moving tactically for searching of maoist . When the team was approaching the location near a hillock, the rear party of this team ambushed by the Maoist holding stronghold on the hillock. The naxal were asking the troops to surrender as they were in advantageous position to repeal any kind of attack and assault. They also triggered, almost 10 IEDs simultaneously to inflict heavy casualties on the security forces and to deter their morale and determination. Maoist central military commission leader Arvind ji was guiding Prasad, Silvestor and other naxal commanders to encircle the police party from east side and also directed them for snatching the police weapons and soon after a few minutes there were heavy spray of LMG shot being made targeting the entrapped troops of JJ. Shri Deepak Kumar SDPO sensing the situation directed his team to take cover and dispersed his team tactically to avoid casualties and retaliate with flat trajectory as well as area weapons. Sh. Deepak guided Manoj Bakhla, CT to fire bomb of 2" mortar targeting the LMG of maiost. He directed SI, Pankaj Kumar, SI Karnlesti Pashwan to give cover fire with the help of the troops, Meanwhile, Sh. Deepak Kumar, SDPO Basiya with the help of Brejesh Lepcha, CT and Bikram Rai,CT started firing on the naxals. Since the HE bomb fired by Manoj Bakhla, CT was hit the target resulting three naxals were killed on the spot. Simultaneously Inspector Jaiprakash Singh and Police Sub- Inspector Satendra Prasad started firing targeting the naxal thereby the LMG firing from east side was stopped. Immediate' Naxal central military commission leader Arbind ji directed naxal commander Jairam Indrajeet, Birsai and others to start LMG firing from south side and encircle the police party. Following this order naxal started LMG firing from south direction but before entrapped police party could comprehend, one bullet hit on the head of Manoj Bakhla, CT and he got martyr on the spot and Brejesh Lepcha, CT & Bikram Rai, CT sustained serious bullet injury. In the meantime Naxal commander shouted and directed Sandip, Chandan, Balram and their other associates to encircle the police party from north direction and after that naxal started LMG firing from north side followed by triggering of IED's intermittently. But, in the meantime, SI Pankaj Kumar, SI Kamlesh Pashwan, Deputy Commandant of 203 Cobra Sh. Devender Singh Kaswa, Ct Ramesh Kumar, Dula Ram and CT Simant Kumar of 203 Cobra in a difficult and life threatening situation and reached tactically utterly disregard to their personal safety and started retaliatory firing on the naxal and abort their nefarious design. This is one of the deadly & fatal naxal attack on the raiding troops in which five naxals were killed and their bodies were seen taking away by their associates. The entire operation was executed in an exemplary manner which is an epitome in the annals of successful operations. This successful operation has elevated the morale of security personnel and will continue to inspire the generation to come. The lead, the support, the cohesion and tandem were splendidly designed and executed to write another saga of success. The naxals who were in advantageous position, were taken on surprise, repelled and compelled to abandon their position. They escaped from their location leaving behind good quantity of explosives and stores. The operation inflicted an unprecedented calamity on the morale and preparation of naxals.

Recoveries made :

Cordex wire-40 mts,

Electric detonator-03 Nos,

Wrought iron hand grenades (country made)-15 Nos,

Electric wire 100 mtrs

Liquid in container of 15 ltr capacity.

Land Mines 05 Cane Bomb 02 Kgs weight & 05 Cane Bombs 10 Kgs weight.

In this encounter S/Shri Prabhat Ranjan Barwar, Dy. Superintendent of Police, Jai Prakash Singh, Inspector, Pankaj Kumar, Sub Inspector, Satendra Prasad, Sub Inspector, (Late) Manoj Bakhala, Constable, Bikram Rai, Constable and Brejesh Lepcha, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/03/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 130-Pres/2016—The President is pleased to award the 3rd Bar Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Amarnath,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12/09/2014 at about 1430 Hrs. a specific information was received from source about assembling of hardcore Naxals including CPI (Maoist) Dinesh Pandit, Surang Yadav and many others (approximately 14 in numbers) near forest area of village- Daldalia. On the basis of information, Special OPS was planned and launched after thorough discussion with Commandant 7 Bn. CRPF and informing all higher authorities.

Accordingly at about 1705 Hrs. Insp. Amarnath, Gawan Circle along with Unit QAT of 7 Bn. comprising (DC-01, SI/GD-1, HC/GD -02, HC/RO-1, CT/GD-09, TOTAL-14) under command of Sh. S.K Yadav Dy. Comdt. (DC Ops-7 Bn) from TAC Hqrs. Tisri & two platoons of E/7 from Tisro consisting of 30 personnel under command Sh. Ajit Kumar, AC moved on foot for target area. Taking all due precautions and using ground tactically, party reached the target area and started searching. At about 2315 hrs when party was searching forest area near Village- Daldalia, suddenly the troops heard some voices from Jungle.

Troops took tactical position and cautiously approached towards the group. From a safe distance and after taking proper cover, Insp Amarnath, after revealing own identity tried to enquire about the group asking them surrender. On seeing police party, heavy firing started from other side. On seeing threat to lives and government property, Police party immediately retaliated and heavy exchange of fire started. Insp. Amarnath after quickly assessing the naxal movement and taking cover, changed positions and fired on Naxals. On seeing some naxals changing positions and confirming their location, Insp. Amarnath in utter disregard to his personal safety came in open and fired at moving Naxals and heard them crying loudly. He also motivated others and told them to retaliate with controlled fire. In the mean time, Shri S.K.Yadav, DC & Shri Ajit Kumar, AC both decided to move from both flanks (right & left) & covered the naxals from two sides. Intermittent firing continued for an hour. On seeing the heavy retaliation of forces, Naxals started fleeing away firing intermittently and taking cover of forest and darkness. Even after stopping of fire, troops waited till the morning & on first light at about 0615 Hrs., a thorough search operation was launched. During search operation dead bodies of three naxals alongwith weapons were recovered. The deceased naxals were identified as Dinesh Pandit(Area Commander) Sahdeo Murmu & Jeevalal Rai.

Following Arms & Ammunition were also recovered during the search operation :-

| Sl. No. | Nomenclature | Qty |
|---|---|---|
| 01 | SLR Rifle with Magazine | 01 No. |
| 02 | .303 Rifle, Mark-4 with magazine | 01 No. |
| 03 | .315 Bore Rifle with Magazine | 01 No. |
| 04 | .303 Live Ammunition | 38 Nos. |
| 05 | .303 Empty Case | 02 Nos. |

| Sl. No. | Nomenclature | Qty |
|---|---|---|
| 06 | Magazine Pouch | 02 Nos. |
| 07 | Charger Clip | 05 Nos |
| 08 | .315 Bore Live ammunition | 49 Rds |
| 09 | Empty Case | 02 Nos. |
| 10 | 7.62 mm Live ammunition | 09 Rds. |
| 11 | 7.62 mm Empty Case | 04 Nos. |

In this encounter Shri Amarnath, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 3rd Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/09/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 131-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Bastar Laxman Madavi,
Head Constable

02. Dilip Rushi Poreti,
Naik

03. Devnath Khushal Katenge,
Constable

04. Dinkarshaha Balsingh Koreti,
Constable

05. Sanjay Lengaji Usendi,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12/8/2014 at about 0100 hrs, based on a secret information received from the informer and as per orders and guiding instructions of seniors, Prob. P.S.I. Gangalwad instantaneously called party commander Bastar Madavi, Special Action Group party commander Mukesh Usendi and their teams at headquarter to undertake anti-naxal operation in Khobramendha forest area. When the personnel from their teams gathered at Headquarter, senior officers briefed them about the operation and the route to be taken to reach the Khobramendha forest area, keeping in view the terrain and for maintaining the surprise. After having prepared themselves in all respects just within an hour, at about 0100 hrs, the above police personnel along with 45 other police men departed from the headquarters in vehicles and dropped at a jungle area nearby the destination. Thereafter, they started moving ahead searching Khobramendha forest area on foot.

For this purpose, they tactically divided in two groups, the first group was led by Prob. P.S.I. Gangalwad and was being accompanied by party commander Bastar Madavi and second group. At 0830 hrs when Prob. P.S.I. Gangalwad and his team was combing through the forest at a distance of 5 kms. east of Devasthan, they were attacked by 40 to 50 armed naxalites. The naxalites who had ambushed in the forest, at once opened indiscriminate fire finding the police team in the killing zone. The police personnel immediately took position on the ground hiding behind trees and bushes that came on hand and Prob. P.S.I. Gangalwad asked the naxalites to surrender before the police party. The naxalites did not pay heed to the appeal made by the police and kept firing at the police party. At this crucial time, Prob. P.S.I. Gangalwad, NPC Katenge and NPC Koreti advanced towards naxalite with cover fire and Party commander Madavi, NPC Poreti and PC Usendi covered them by firing at naxalites from right side. In this critical situation, police personnel faced naxalites from a very short distance, and they could feel the bullets passing over their fellow policemen.

They continued to advance at the direction of enemy by putting their own ife in peril and simultaneously firing at the naxalites. While other section led by party commander Madavi proceeded from other side and retaliating,the naxalites. The brave heart of this section, HC Madavi, NPC Poreti and PC Usendi who were at the leading position, courageously fought with naxalites without caring for their own life and broke the naxal ambush. The initiative taken by above police personnel motivated the fellow party men and they also began firing aggressively from different angles and positions. This aggression created panic among the naxalite and they began to flee towards the far side taking cover of dense forest and hilly terrain. Half an hour later, when the firing by the naxalites had stopped, the police personnel regrouped and took a review of the situation. It was found that PSI Gangalwad, PC Dinkarshah Balsing Koreti and NPC Devnath Khushal Katenge were injured during the fire.

Thereafter, the police teams carried out a search of the place of incident and its vicinity. During the search, the police found two unidentified male naxalites clothed in black shirt and pant lying in an unconscious state. They possessed, one S.L.R. rifle with magazine, SLR cartridges-32, .303 rifle-1, .303 magazine-1 .303 cartridges-49, 9mm pistol-01, 9mm cartridges-3, Motorola Walky-Talky set-1 and one note-book.

The two unconscious naxalites were immediately shifted to primary health center Malewada in a vehicle. The doctor examined the unconscious naxalites and then pronounced them to be dead.

The operation launched in the forest of Khobramendha was based on an intelligence received by senior officers and it was successfully executed within short span of time. The operation set a precedent and was a morale booster for Gadchiroli and Maharashtra police.

In this encounter S/Shri Bastar Laxman Madavi, Head Constable, Dilip Rushi Poreti, Naik, Devnath Khushal Katenge, Constable, Dinkarshaha Balsingh Koreti, Constable and Sanjay Lengaji Usendi, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 132-Pres/2016—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Atul Shrawan Tawade,<br>Sub Inspector | (1st Bar to PMG) |
| 02. | Indarshah Wasudev Sadmek,<br>Naik | (1st Bar to PMG) |
| 03. | Pravin Hansraj Bhasarkar,<br>Constable | (PMG) |
| 04. | Baburao Maharu Pada,<br>Naik | (PMG) |
| 05. | Vinod Messo Hichami,<br>Naik | (1st Bar to PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 16/10/2013, on receipt of intelligence based input, PSI Tawade alongwith 2 Party Commanders namely NPC Indarshaha Sadmek and NPC Vinod Hichami and their teams set out in vehicles from Gadchiroli to Jarawandi area, as per senior officer's instruction. After reaching near the naxal location, they all alighted and started anti naxal search operation in the jungle area on 17/10/2013, at about 0600 hrs. These parties began traversing the hilly, thickly forested terrain, which is also a strong hold of naxalites. At around 0700 hrs, when these parties were searching the forest area near village Pendulvahi, they were suddenly attacked by 40-45 unknown armed naxalites laying preplanned ambush. As operation incharge, PSI Tawade bravely guided both party commanders and the police parties to take available protective cover of the ground and encouraged their parties to retaliate the fire in self defense.

The police party divided itself into 3 groups in no-time and started to counter the naxal attack. Party commander Hichami led his men to counter the ambush from left flank and valiantly approached the naxalites despite being showered with bullets.

His fearless counter attack not just weakened the ambush but also saved many Policemen's lives. During this fierce fight against naxals, Hichami noticed 2 female naxals in injured state.

On the other hand, PSI Tawade, NPC Sadmek, NPC Pada and PC Bhasarkar courageously rushed towards the direction of fire braving the rain of bullets with the sole aim of protecting the lives of their party men and giving a befitting reply to the LWEs. On this front, PSI Tawade neutralized one male naxal cadre.

Despite the initial domination by the aggressing naxals due to the advantageous position and terrain, PSI Tawade, party commanders Sadmek and Hichami, through their relentless efforts, courage and leadership boosted the morale of police parties. Emboldened by this, the brave hearts of the party viz NPC Baburao Panda and PC Pravin Bhasarkar exhibited exemplary courage in risking their own lives to protect the lives of their party men.

While PSI Tawade, NPC Sadmek, NPC Pada and PC Bhasarkar were trying to recover the male naxal's dead body they were targeted with heavy firing but the team was undeterred in their efforts. They bravely fought the naxals till they fled the scene after 30-40 minutes of gruesome attack.

During the primary search of the place of incidence, Police recovered one male naxal's dead body, with a single bore rifle, five live rounds, five detonators, pittu, naxal literatures and other materials. Also after few days of this incident, through interrogation of surrendered naxals, pamphlets seized from various encounter spots and books published by naxals, it was noticed that another female naxal cadre, named Dhanni was also killed and six others injured in this encounter.

Thus, the five brave police personnel quickly acted on the intelligence and courageously led the Police party through fierce exchange of fire. While leading this operation, none of them cared for their lives and exhibited immense gallantry in not just protecting the lives of their party men but also successfully eliminating two hardcore naxal cadres.

In this encounter S/Shri Atul Shrawan Tawade, Sub Inspector, Indarshah Wasudev Sadmek, Naik, Pravin Hansraj Bhasarkar, Constable, Baburao Maharu Pada, Naik and Vinod Messo Hichami, Naik, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/10/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 133-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Meghalaya Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Vivekanand Singh,
Sub Divisional Police Officer

02. Silnang Marak,
Constable

03. Pynshaiborlang Sohshang,
Constable

04. Richard Ranee,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 9th April, 2015 forenoon, Shri Vivekanand Singh, IPS, SDPO Dadenggre received credible information that at least six (6) armed GNLA militants namely Indian Sangma (Area Commander), Dalton Ch Sangma, Molot, Mondol, Changdul, Finance have taken shelter in the house of one Shri Clement Sangma in Chibonggre Village, under Dadenggre PS

since the evening of 8th April 2015 and were still staying there. It would be quite pertinent to mention here that the above named militants were member of a terrorist organization named "Garo National Liberation Army" (GNLA). They were wanted in multiple cases of extortion, abduction, murder etc. across Garo Hills.

Based on the input, Shri Vivekanand Singh, IPS responded quickly and rushed from his camp office in Phulbari to Dadenggre Police Station along with a joint team of Meghalaya Police & BSF 65 Bn D Coy, Phulbari. At Dadenggre PS, he quickly prepared the operational plan and launched the operation. The operation team consisted of two parties i.e. Assault Party led by Shri Vivekanand Singh, IPS and Cut-Off Party led by Shri Sandip Kumar, Assistant Commandant, BSF & Shri R. A.Sangma, CI (W), Phulbari. During the operation, the assault party located the armed militants in the above-mentioned house. The officer ordered the militants to surrender. However, the militants started firing indiscriminately. The assault party also retaliated back in self-defense. The exchange of fire continued for approx. 10 minutes after which the militants started to flee away. Even when the militants were retreating they were firing indiscriminately. Although, there was hail of bullets yet at that point of time, Shri Vivekanand Singh, IPS, SDPO Dadenggre charged in pursuit followed by BNC Silnang Marak, BNC Richard Ranee and BNC Pynshaibor Sohshang. He co-ordinated the efforts of the assault party and led them from the front. During their pursuit, the assault party were able to injure one of the militants who was fatally wounded and his dead body was recovered later on. The other militants fled away into the jungle under the cover of heavy fire. Police also recovered I (one) 9 mm Pistol with empty magazine, 1 (one) 7.65 magazine, 29 (twenty nine) rounds of AK ammunition, 38 (thirty eight) nos sim cards, I (one) mobile phone, GNLA demand pad and stamp and GNLA deed of agreement from the place of occurrence of the encounter.

The operation was meticulously planned and perfectly executed. Shri Vivekanand Singh, IPS, SDPO Dadenggre showed extreme courage, speed, operational acumen & leadership qualities during the operation. It was due to the effective planning and execution that the security forces did not suffer any injuries or casualties during the operation despite coming under heavy fire.

In this encounter S/Shri Vivekanand Singh, Sub Divisional Police Officer, Silnang Marak, Constable, Pynshaiborlang Sohshang, Constable and Richard Ranee, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/04/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 134-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Meghalaya Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Anand Mishra,
Assistant Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

At around 06:00 PM of 11.01.2014 a bomb blast took place at AOC Petrol Pump: Hawakhana, Tura, Meghalaya [Refers to Tura P.S. Case No. 13(01)2014 u/s 307/427 IPC r/w Sec. 25(1A) of Arms Act]. In connection with this bomb blast, alongwith other officers, Shri Anand Mishra, IPS, Asst. SP: Tura promptly reached the site of the blast. There, he received information from the District SP himself regarding the presence of Anti-National Elements belonging to the ANVC (B) and UALA Outfits in an area called Daren 'Agal. There was credible information that these Anti-National Elements (ANEs) were responsible for the bomb blast.

In pursuit of the information Shri Anand Mishra, IPS alongwith other District Officers got a team ready from the Tura Police Reserve and launched a meticulously led Operation at an extremely short notice. Though, he was leader of the Cut-Off Party but it was his Team which had the Actual Encounter even before the other Parties could take position.

Neither he nor his team had any Night-Vision Devices, Bullet Proof Jackets or Special Gadgets except their weapons. It was pitch darkness, unknown hilly terrain, and they had no knowledge about the exact fire power or numbers of the dreaded and trained anti-national insurgents. In the most daring manner, the young ASP led his team from the front and climbed upon the hill in order to take position near the place where the insurgents were reported to be present. Suddenly the insurgents from the cover of darkness started indiscriminate firing with automatic weapons and threw grenades on the approaching team. As the ASP was in front, bullets passed by his head and grenades exploded just above him. He responded

first, retaliated and provided cover to his team. The ASP, Anand Mishra, IPS maintained his nerves, yielded full command and control of himself and his team and exhibited the highest order of bravery in such adverse situation for which the team was not prepared as it was supposed to be the Cut-Off Party.

A full-fledged Exchange of Fire took place which continued for almost 45 (Forty-Five) Minutes. The ASP had the choice of taking cover or retreating as the insurgents were at a dominating height, heavily armed and continued indiscriminate firing and lobbed Grenades. But the brave and daring officer chose to hold the ground and fight back the Anti-National Elements. Shri Anand Mishra, IPS leading from the front exhibited exceptional bravery, gave a befitting reply to the ANEs and also saved the lives of his team mates by providing timely retaliation to the insurgents.

In this fierce Encounter 4 (Four) dreaded Insurgents were neutralized. After that, the ASP alongwith his team recovered and seized 4 (Four) dead bodies, Huge Cache of Weapons, Ammunition, IEDs, Explosives, Detonators and Incriminating Documents from the Place of Occurrence. (All this Refers to Dobashipara BH GDE No. 213 Dated 11..01.2014 r/w Tura P.S. GDE No. 259 Dated 12.01.2014 and Tura P.S. Case No. 15(01)2014 u/s 120/120B/121/121A/122/123/353/307 IPC r/w Sec. 25(1A) of Arms Act and Sec. 5 of Explosive Substances Act).

During the incident, Shri Anand Mishra, IPS has exhibited the most Conspicuous Bravery, Dare and Leadership qualities. He took onto the insurgents head-on, and placed his own life to great threat and risk in the midst of unceasing Fire from automatic weapons and blasting of grenades. He has successfully ensured that while the insurgents were neutralized, no casualty or injury to his team was done and no collateral damage to the nearby houses was made. Thus, Shri Anand Mishra, IPS led a very successful Operation and exhibited the highest order of Conspicuous Gallantry and Dare in performing his duty.

Recovery

| Sl. No. | Name of Article | Quantity |
|---|---|---|
| 1. | 0.22 Pistol | 1 (One) |
| 2. | 9MM Pistol | 3 (Three) |
| 3. | 9MM Pistol (Modified) | 1 (One) |
| 4. | Double Barrel Shot Gun (DBML) | 1 (One) |
| 5. | Signal Gun | 1 (One) |
| 6. | 0.22 Ammunition | 9 (Nine) |
| 7. | 9MM Ammunition | 7 (Seven) |
| 8. | 7.65 Ammunition | 3 (Three) |
| 9. | AK Ammunition | 1 (One) |
| 10. | 7.62MM Ammunition | 43 (Fourty-Three) |
| 11. | 12 Bore Cartridge | 10 (Ten) |
| 12. | Fired Empty Cases of AK Rifle Ammunition | 5 (Five) |
| 13. | Fired Empty Cases of 7.62 Ammunition | 3 (Three) |
| 14. | Fired Empty Cases of 9MM Ammunition | 3 (Three) |
| 15. | Hand Grenade (Chinese) | 1 (One) |
| 16. | Detonators | 200 (Two Hundred) |
| 17. | Detonators with Fuse Wires | 124 (One Hundred Twenty Four) |
| 18. | Fuse Wires (Blue) | 12 (Twelve) Metres |
| 19. | Flexible Wires | 60 (Sixty) Metres |
| 20. | Gelatin Sticks | 2 (Two) |
| 21. | Home Pipes | 6 (Six) |

| Sl. No. | Name of Article | Quantity |
|---|---|---|
| 22. | Hollow Pipes | 8 (Eight) |
| 23. | Window Panels | 2 (Two) |
| 24. | M-Seals | 13 (Thirteen) |
| 25. | Crude Bombs (IEDs) (Approx. 10 Kg Each) | 9 (Nine) |

In this encounter, Shri Anand Mishra, Assistant Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/01/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 135-Pres/2016—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Brijesh Kumar Rai,<br>Superintendent of Police | (1st Bar to PMG) |
| 02. | Chandra Sekhar Dash,<br>Sergeant | (PMG) |
| 03. | Samanta Durga,<br>Constable | (PMG) |
| 04. | Lukesh Kumar Bhoi,<br>Constable | (PMG) |
| 05. | Lalit Kumar Nayak,<br>Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08.03.2015, at about 9.00 PM S.P., Kalahandi, Shri Brijesh Kumar Rai, IPS, received a credible information that a group of banned maoist heavily armed with sophisticated weapons were camping in Chura reserve forest under Golamunda P.S. near village Gadala Jharana, since 3/4 days in order to indulge in violent and subversive activities as part of their armed struggle against the state. They had intention to attack vital installations, kill villagers branding them as Police informers and also to kill some police personnel as part of their strategy. Accordingly, a search operation was planned under the leadership of SP, Kalahandi, Brijesh Kumar Rai, IPS, to apprehend the armed Maoists. On the said day, all the SOG Teams which were stationed at Kalahandi and the DVF (District Voluntary Force) were engaged in another Anti Maoist Operation. Thus, there were very less numbers of trained commandos available in the district. Shri Brijesh Kumar Rai, IPS, S.P, Kalahandi displayed exemplary courage and commitment and personally led a search operation with available force. He constituted a team comprising of three DVF constables, three APR PSOs of Kalahandi, another four APR constables, namely, Prmananda Bag, Kishore Kumar Rout, Rajendra Kumar Sahu and Rajendra Pradhan., SI Armed, Samir Kumar Swain and Sergeant, Chandra Sekhar Dash of Kalahandi district. When the Police team reached the forest area, the armed Maoists resorted to unprovoked fire at the police party maintaining surprise and threw grenades to kill them and to loot their arms and ammunition. As the result of the above, Police team member Sergeant, Chandra Sekhar Dash, CT Samanta Durga, CT Lukesh Kumar Bhoi, CT Lalit Kumar Nayak sustained injuries on their persons. Shri Brijesh Kumar Rai, IPS, S.P, Kalahandi displayed exemplary courage and leadership, divided the Police team into two flanks and retaliated valiantly despite the numerical disadvantages and limitations of the terrain. Shri Brijesh Kumar Rai, IPS, S.P, Kalahandi along with his four commandos tactically marched forward engaging the Maoists and mounted an aggressive counter offensive to thwart the attack on the Police. During the offensive Shri Brijesh Kumar Rai, IPS, S.P, Kalahandi and his four commandos namely Sergeant Chandra Sekhar Dash, CT Samanta Durga, CT Lukesh Kumar Bhoi and , CT Lalit Kumar Nayak fought valiantly ignoring their personal safety and placing themselves dangerously in the line of fire, in the interest of public service and national security.

Because of the gallant retaliation from the police, the maoists retreated to the nearby hilly terrain. When the firing from the Maoist side stopped, observing all precautionary measures, the Police party searched the area and found one dead body which was later identified to be that of one Suraj @ Maria Gotta, Divisional Commander of Junagarh Area Committee (on whom the Govt. of Odisha had declared 4 Laks. Rupees reward) along with one INSAS rifle, one INSAS magazine having 14 nos. live INSAS ammunition, 23 Nos of live cartridges, 28 Nos. of live SLR ammunition with one SLR magazine, 4 nos of Haversacks and some medicines etc.

During the operation, the police officers and personnel displayed exemplary courage and determination and despite the enemy trying to inflict severe causalities on them, succeeded in neutralizing the armed Maoists without incurring any casualty on the police side and thereby prevented a major violent attack on the civilians by the Maoists saving precious lives.

In this encounter S/Shri Brijesh Kumar Rai, Superintendent of Police, Chandra Sekhar Dash, Sergeant, Samanta Durga, Constable, Lukesh Kumar Bhoi, Constable and Lalit Kumar Nayak, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/03/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 136-Pres/2016—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry/3rd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police:-

| | NAME & RANK OF THE OFFICERS | |
|---|---|---|
| | S/Shri | |
| 01. | Mitrabhanu Mahapatra,<br>Superintendent of Police | (2nd Bar to PMG) |
| 02. | Santosh Juang,<br>Havildar | (3rd Bar to PMG) |
| 03. | Siva Sankar Nayak,<br>Lance Naik | (2nd Bar to PMG) |
| 04. | Pabitra Mohan Nayak,<br>Lance Naik | (1st Bar to PMG) |
| 05. | Balabhadra Majhi,<br>Constable | (PMG) |
| 06. | Sahadev Dora,<br>Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31.07.2015, a credible intelligence regarding presence of armed cadres of banned CPI (Maoist) organization was received by Malkangiri police. As per the information, the Maoist were planning to indulge in a violent subversive attack in Malkangiri town during the martyrs weeks from 21.07.2015 to 03.08.2015. On receipt of this information, Shri Mitrabhanu Mohapatra, IPS SP Malkangiri mobilized a team of 34 commandos of Malkangiri District Police and proceeded to Tandiki forests area, searching for the Maoist group. While the team was conducting combing operation, the armed maoist resorted to unprovoked firing with automatic weapons from a temporary camp, they had set up in the forest. They mounted a flanking attack on the police, making the police team susceptible to enemy fire from front to front. Three Commandos namely Hav Santosh Junag, LNK Pabitra Mohan Nayak and CT Sahadev Dora sustained injuries on their persons due to heavy firing of grenade lobby by the Maoists.

The police team under the leadership of Shri Mitrubhanu Mohapatra, SP Malkangiri retaliated valiantly despite the numerical disadvantage and severe terrain limitations. Shri Mitrabhanua Mohapatra alongwith 2 commandos namely, Shri Siva Sankar Nayak and Shri Balabhadara Majhi went ahead braving heavy firing and lodged a massive attack on the enemy forcing the Maoists to retreat. During this time, a team of 3 Commandos namely Hav Santosh Juang, LNK Pabitra Mohan

Nayak and CT Sahadev Dora countered the flanking attack on some of the Maoists by launching tactful counter offensive. The above gallant acts of the police party inflicted heavy casualty on the Maoists, leading to death of maoist area commander, Bandi Kabita @ Janaki of Podai Dalam and two other Maoist cadres namely, Kosa Madkami and Bire Madhkami whereas the Maoists could inflict only very little collateral damage on the police party. The Government of Odisha had declared a reward of Rs.4,00,000/- on Bandki @ Janaki the Area Commander vide Notification No. 2708/C, Bhubaneswar, Dtd 15.10.2013.

The team leader, Shri Mitrabhanu Mohaparta, SP Malkangiri and the above mentioned 5 Commandos displayed exemplary courage, determination and risked their personal lives and safety in the interest of the nation. Their fearless action also neutralized a major violent disruptive activity that Maoists had planned to execute in Malkangiri during martyr's week from 27.07.2015 to 03.08.2015. The above acts of bravery hugely helped in securing the internal security interests of the state.

Recovery made:

| | | | |
|---|---|---|---|
| (a) | .303 rifle | - | 02 Nos. |
| (b) | SBML guns | - | 02 Nos. |
| (c) | .303 ball ammunition | - | 58 Nos. |
| (d) | 9 mm ball ammunition | - | 03 Nos. |
| (e) | HE Grenade | - | 01 No. |
| (f) | 9 mm sten Magazine | - | 01 No. |
| (g) | 9 mm Carbine Magazine | - | 01 No. |
| (h) | Willkie Talkie | - | 01 No. |

In this encounter S/Shri Mitrabhanu Mahapatra, Superintendent of Police, Santosh Juang, Havildar, Siva Sankar Nayak, Lance Naik, Pabitra Mohan Nayak, Lance Naik, Balabhadra Majhi, Constable and Sahadev Dora, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/2nd Bar to Police Medal/3rd Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/07/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 137-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry/3rd Bar to Police Medal for Gallantry/4th Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Rabindra Sabar,<br>Sub Inspector | (PMG) |
| 02. | Santosh Juang,<br>Havildar | (4th Bar to PMG) |
| 03. | Siva Sankar Nayak,<br>Lance Naik | (3rd Bar to PMG) |
| 04. | Pabitra Mohan Nayak,<br>Lance Naik | (2nd Bar to PMG) |
| 05. | Trinath Totapadia,<br>Lance Naik | (2nd Bar to PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19-09-2015, after getting reliable input regarding the movement of a group of armed cadres of CPI (Maoist) of Darbha Division in the Bhejaguda forest area, a small team commando operation was conceived to deal with the armed insurgents. As a busy weekly market was present on the outskirts of Bhejaguda, there was high probability of police team getting exposed and operation getting compromised. Hence to address the aforementioned issues and also to minimize collateral damage, the small team police men were armed with only pistols against a heavily armed and numerically superior adversary. Such act not only shows the chivalry of the policemen with utter disregard to their personal safety, but also shows their concern for the lives and properties of civilian population.

The small team of six personnel further divided into two teams under leadership of SI(A) Rabindra Sabar and Havildar Santosh Juang each and laid ambush on the two approach roads to the weekly market. As the place of ambush was thinly vegetated, the scout of the Maoist group could locate the police team led by SI (A) Rabindra Sabar, from a distance and the whole Maoist team fired indiscriminately upon them from automatic weapons and also lobbed grenades. In the fierce attack, all the members, i.e. Lnk Siva Sankar Nayak and Lnk TrinathTotapadia including SI(A) Rabindra Sabar sustained grievous injuries on their person. As the first police team was in a precarious situation, the second team under the leadership of Havildar Santosh Juang launched a fierce counter attack on the Maoist team. As the police personnel were armed with pistols only, they needed to go very near to the Maoist team to engage them in effective fire. During such evasive forward movement, the small team of motivated police personnel faced heavy fire from a numerically superior adversary, but that had not deterred them from performing their duty beyond all expectation. The blitzkrieg counter attack, clearly surprised the Maoist group and unsettled them from their safe position.

The daring maneuver by the second team, motivated the first team also and they valiantly retaliated despite severe injury on their person. In the ensuing gun fight against all odds, the police personnel showed highest degree of courage and conspicuous gallantry upholding the highest tradition of police forces. Their bravery in the face of enemy caused ripples in the numerically strong enemy ranks and they fled away. In the said exchange of fire, the commander of the Maoist Kishore Korram @ Sunadhar, Deputy Commander Laxman Kunjami and armed guard Ghasi Muchaki were killed. The Government of Odisha had declared cash reward of Rs 5,00,000 on Sunadhar and Rs 4,00,000 on Laxman vide Home Department, Odisha Notification No.2708/C, Bhubaneswar dated 15.10.2013

The team leader as well as the above-mentioned commandos had displayed great degree of courage, and determination in the face of enemy and did not care for their personal safety on the line of duty. Their fearless action ensured a spectacular success for all security forces because, the enemy killed in police action, Sunadhar, was the mastermind in the killing of more than hundred security personnel in different incidents in Chhattisgarh and Odisha.

Recovery:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | .303 rifle with magazine | : | 01 No. |
| 2. | Country made revolver | : | 01 No. |
| 3. | .303 ball ammunition (live) | : | 04 Nos. |
| 4. | 9 mm live ball ammunition | : | 11 Nos. |
| 5. | Walkie Talkie | : | 03Nos. |

In this encounter S/Shri Rabindra Sabar, Sub Inspector, Santosh Juang, Havildar, Siva Sankar Nayak, Lance Naik, Pabitra Mohan Nayak, Lance Naik, and Trinath Totapadia, Lance Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/2nd Bar to Police Medal/3rd Bar to Police Medal/4th Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/09/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 138-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Telangana Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Mutakoduru Chandra Shekar,
Addl. Superintendent of Police

02. Kaitha Ravinder Reddy,
Inspector

03. Syed Abdul Kareem,
Head Constable

04. Mohd Mujeeb,
Head Constable

05. Md. Taj Pasha,
Constable

06. S. Rajavardhan Reddy,
Constable

07. Md. Musharaf Baba,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri K. Kukudapu Srinivasulu, PC along with above mentioned police officers by risking their lives exhibited exemplary courage in apprehending hard-core terrorist Alam Zeb Afridi involved in many terror attacks in country killing number of innocent people, destruction of economic infrastructure and prevented impending terror attacks planned by Islamic State (IS) floated Junood-Ul-Khilafa Fil Hind terrorist organization.

On 21.01.2016, the above police officers went to Bengaluru city to assist the NIA to track and arrest some terror suspects in Karnataka. While in tracking, on 23.01.2016 at 4 PM, they found one terrorist suspect moving on Hero Splendor with a woman pillion driver on Doddla Naga Magala road in Bengaluru. Then Police team chased the suspect on motor bikes to track him down. The suspect noticing the tracking by the suddenly turned and hit the bike of police party. No Sooner did Police personnel fell down, he pounced upon them and attacked with knife and tried to flee. In the scuffle, Srinivas, PC sustained stab injury in his abdomen. The police personnel resisted the attack, overpowered and apprehended him. Accused is identified as Alam Zeb Afridi and lady is his wife Yasmeen.

Alam Zeb Afridi was initially a SIMI activist, and later turned to Indian Mujahideen and Islamic State subsequently. He is involved in 12 serial bomb blasts of Ahmadabad (2008), Church street blast and burning of Israel Visa Processing Centre (Bangaluru), Islamic State conspiracy case, etc. He stayed in Bangaluru under the guise of mechanic since 2010. He imparted training in preparation and usage of IEDs to one Nafeezkhan, IS module in Hyderabad, who provides infrastructure to IS modules. Alam Zeb is also a fidayeen imbibed with jihad. His arrest was also led to busting of Junood-U1-Khilafa Fil Hind module affiliated to IS, arrest of its 22 activists in Hyderabad and elsewhere in the country besides recovery of pipe bombs, explosives material, Jihadi literature etc. thereby preventing major synchronised terror attacks. In the entire operation of arrest of Alam Zeb Afridi and bilking of Junood-Ul-Khilafa Fil Hind, the above police officers participated.

The police officers have apprehended Alam Zeb Afridi and 22 other terror suspects of Junood-Ul-Khilafa Fil Hind risking lives and prevented impending terror attacks in India.

Recovery:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | Pipe bombs | : | 02 Nos. |
| 2. | Explosive material | : | 02 Kgs (approx.) |
| 3. | Knives | : | 04 Nos. |
| 4. | other incriminating material object such as desktops, laptops, mobile phones, passports and jihadi literature. | | |

In this action S/Shri Mutakoduru Chandra Shekar, Addl. Superintendent of Police, Kaitha Ravinder Reddy, Inspector, Syed Abdul Kareem, Head Constable, Mohd Mujeeb, Head Constable, Md. Taj Pasha, Constable, S. Rajavardhan Reddy, Constable and Md. Musharaf Baba, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/01/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 139-Pres/2016—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Telangana Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Dudekula Siddaiah,<br>Sub Inspector | (PPMG) (Posthumously) |
| 02. | Chougoni Nagaraju,<br>Constable | (PPMG) (Posthumously) |
| 03. | Dr. Thatiparthi Prabhakar Rao,<br>Superintendent of Police | (PMG) |
| 04. | N. Anil Kumar,<br>Constable | (PMG) |
| 05. | Vemdadi Ramesh,<br>Constable | (PMG) |
| 06. | Konatham Madhusudhan,<br>Constable | (PMG) |
| 07. | Thodeti Shiva Koteshwar Rao,<br>Constable | (PMG) |
| 08. | Muthineni Srinu,<br>Constable | (PMG) |
| 09. | Annareddy Chinna Bala Gangi Reddy,<br>Inspector | (PMG) |
| 10. | L Janki Ram,<br>Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

The above police officers worked in Nalgonda District Police. Among them, SI, Dudekula Siddaiah and CT Chougoni Nagaraju lost their lives during this gallant act pertaining to the incident and Insp Annareddy Chinna Bala Gangi Reddy received bullet injuries. All the nominees knew that they were up against the dreaded armed terrorists of the banned SIMI who had killed 2 members of a police party and injured the other two and also snatched a weapon (9 mm Carbine) barely two days prior to the gallant action.

On 04/04/2015, on receipt of this information from his sources, Dr. Thatiparthi Prabhakar Rao, SP immediately mobilised the available force and organised search operation to counteract and nab the assailants. Dr. Thatiparthi Prabhakar Rao, SP personally led the operation and chased the assailants, while directing the forces to advance and seal the probable escape routes of assailants.

The assailants were sighted near Arvapally village and CT N. Anil Kumar & CT Vemdadi Ramesh though unarmed started chasing them. They found assailants at Anantharam (V) carrying weapon and continuously passed on the location of the terrorists to Dr. Thatiparthi Prabhakar Rao, SP and other police parties. They carried on with their task with grit and determination even though they were fired upon by the assailants.

Basing on the above inputs, Dr. Thatiparthi Prabhakar Rao, SP along with the police personnel mentioned above at No. 1,2 and 6 to 8 in one vehicle and police personnel mentioned at No. 9 & 10 closely following behind in another vehicle reached outskirts of Janakipuram village and took on the terrorists head on. SI Dudekula Siddaiah bravely returned the fire but received fatal bullet injuries. CT Chougoni Nagaraju, the driver, took the weapon of the SI Dudekula Siddaiah and opened fire on the assailants thereby neutralizing one of them.

Meanwhile, the second terrorist started firing on the vehicle of Insp A C B G Reddy as well. Insp A C B G Reddy and CT L Janki Ram engaged the assailant and started returning fire. Insp A C B G Reddy received a bullet injury, but still stood his ground. The assailant then went to the first vehicle and tried to kill the Police personnel mentioned above at No. 6 to 8. However, these police personnel, who were unarmed, reacted courageously and tried to disarm and catch hold of the armed fire to neutralize the fire from the terrorist. The second terrorist sustained bullet injuries fell to the ground.

Recovery:

1. Two 7.65 mm country made pistols.
2. One 9 mm Carbine (snatched from police).
3. Cash Rs. 19,800/-

In this encounter S/Shri (Late) Dudekula Siddaiah, Sub Inspector, (Late) Chougoni Nagaraju, Constable, Dr. Thatiparthi Prabhakar Rao, Superintendent of Police, N. Anil Kumar, Constable, Vemdadi Ramesh, Constable, Konatham Madhusudhan, Constable, Thodeti Shiva Koteshwar Rao, Constable, Muthineni Srinu, Constable, Annareddy Chinna Bala Gangi Reddy, Inspector and L Janki Ram, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal for Gallantry/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/04/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 140-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Telangana Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rajesh Kumar,
Superintendent of Police

02. Mada Dayananda Reddy,
Dy. Superintendent of Police

03. Ch. R.V. Phaneendar,
Inspector

04. Vemula Bhaskar,
Inspector

05. Gangani Satyanarayana,
Reserve Sub Inspector

06. Soni Lal Amrit,
Assistant Sub Inspector

07. Syed Sarwar Pasha,
Head Constable

08. Golanakonda Narender,
Constable

09. Md Quadeer,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Rajesh Kumar, Superintendent of Police alongwith above eight officers by risking their lives have tracked the movements of armed and dreaded terrorists (viz., Amjad, Zakir, Saliq, Mahaboob all r/o Khandwa, MP) belonging to the banned SIMI organization wanted by several states and the NIA. These were responsible for bomb blasts in Bangalore-Guwahati express train, Bijnur, Faraskhana PS at Pune, Killing of Police Officials in MP and Telangana and several dacoities.

After dogged pursuit for 10 months spread over 13 states, the Police team have zeroed on them at Rourkela. On 17.02.2016 at 02.50 hrs All the above police officers of Telangana Police alongwith Odisha Police have surrounded the hideout of the above terrorists at Nalaroad, Rourkela and raided it. The terrorists opened fire at the Police team with firearms

with an intention to kill. Given the treacherous layout of the operational area desperation of the targets, their Jihadi mindset and the darkness of the night, the operation was beset with grave risks. The Police party have displayed extraordinary commitment to duty in the face of grave and imminent threat to their lives and nabbed the four terrorists along with 3 pistols, ammunition and 4 daggers. Due to the fearless work of the Police party the notorious Khandwa module was obliterated.

In this action, S/Shri Rajesh Kumar, Superintendent of Police, Mada Dayananda Reddy, Dy. Superintendent of Police, Ch. R.V. Phaneendar, Inspector, Vemula Bhaskar, Inspector, Gangani Satyanarayana, Reserve Sub Inspector, Soni Lal Amrit, Assistant Sub Inspector, Syed Sarwar Pasha, Head Constable, Golanakonda, Narender, Constable and Md Quadeer, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/02/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 141-Pres/2016—The President is pleased to award the 3rd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rajesh Kumar Pandey, Dy. Superintendent of Police (3rd Bar to PMG)

02. Umesh Kumar Singh, Dy. Superintendent of Police (PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

Manjeet Singh @ Mange, proclaimed offender in a murder case, carried a cash reward of Rs. 1,00,000/- for his arrest by C.B.I. yet he continued to master mind and execute kidnappings for ransom and contract killings in India & Nepal for the notorious kingpin Babloo Srivastava presently lodged in High security Jail.

A dare devil and bloody encounter took place between Manjit Singh @ Mange and five of his associates and the S.T.F. team led by Addl. SP and consisting of Dy. Supdts. of Police Rajesh Kumar Pandey, Umesh Kumar Singh and others. The gangsters had assembled at Maidaan near Victoria Memorial, Kolkata on 14.12.1998 at 05:30 AM with the purpose of kidnapping of a wealthy hotelier during his morning walk. On being challenged desperadoes opened fire at the police party from a close range with their sole intention of killing policemen. The STF team chased the fleeing criminals who sped away in their Maruti Van No., WB-02-6164. The gangsters continuously and mercilessly kept firing at the following Tata Sumo. A few shots hit the front screen while others narrowly missing hitting the chasing police men and a few got lodged in the bonnet of TATA SUMO. The Police Officers maintained their cool and remained undeterred by the sustained on slaught. They continued the chase more enthusiastically but all attempts to close in and nab the fleeing criminals prove futile. In total disregard to their personnel safely and keeping in mind the safety and security of the innocent passers by as uppermost, Rajesh Kumar Pandey, Umesh Kumar Singh and others without caring for their lives and showing extra ordinary courage and velour returned fires strategically and effectively. Most of the fires done by these officers hit right on the target. The retaliation unserved the gangsters as their speeding vehicle turned while negotiating a sharp turn. Firing from the police party was immediately stopped and the injured were pulled out of the van. Two deceased were identified as Mohabbat Ali @ Guddu Ghosi, carrying a reward of Rs. 20,000/- and Kulwant Singh @ Kanta a life convict of Bijnor Session Court. Manjit Singh @ Mange and one more were found to be critically injured. They were in no time rushed to hospital for medical help.

The gallant encounter could take place only because of bold and fearless decision and action of the part of the police officers. Not only did they match the skills and speed adopted by the gangsters but also neutralized the same well in time thereby saving a grave offence being committed.

S/Shri Rajesh Kumar Pandey and Umesh Kumar Singh have displayed exemplary courage despite great threat to their own lives. The highest sense of devotion and dedication to duty displayed by them in the face of danger and indiscriminate firing from the criminals speaks volumes of their mettle.

Recovery:

1. Maruti Van No. 02-6164
2. One Walther Model Pistol 7.65 Cal No. 10075 with one live round.

3. One Webley Scott Birmingham 6 Chamber Revolver Cal. 38 No. 52873 with 4 live and 2 empty rounds.

4. One 6 Chamber Revolver marking make erased FE6.08 with three live and three empty rounds.

5. 8 various types of blank cartridges from inside the Van.

6. Rs, 40,000/- in cash.

7. Two mobile phones.

In this encounter S/Shri Rajesh Kumar Pandey, Dy. Superintendent of Police and Umesh Kumar Singh, Dy. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 3rd Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/12/1998.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 142-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Binod Kumar Singh,
Senior Superintendent of Police

02. Prabal Pratap Singh,
Addl. Superintendent of Police

03. Arun Kumar Singh,
Dy. Superintendent of Police

04. Kiran Pal Singh,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08/09-11-2008, at 2330 hrs, an Advocate, Sudheer Tiwari was abducted alongwith a Hyundai Accent car, in area PS Prem Nagar, Bareilly, by Mohd. Haseen @ Bunty, a declared rewardee of Rs.10,000/-, escaped from police custody. After the kidnapping, Bunty made a threatening phone call demanding ransom, to Shri Anil Aggarwal, a client of the abducted lawyer and a prominent businessman of Bareilly, who had been kidnapped by Bunty in 1995. Shri Binod Kumar Singh, SSP Bareilly who was on night rounds, immediately organized intensive checking on all routes leading out of the city. Shri KP Singh, SO Izzatnagar, soon reported a Accent car breaking through Barrier No.2 on Pilibhit road. The SSP rushed to the spot and led pursuit of the fleeing vehicle. He was joined by SP City Shri Prabal Pratap Singh alongwith CO City-I Shri Arun Kumar Singh. The SOG Team on its way back to the city from Hafizganj area was ordered to block the escape route of the fleeing vehicle. Finding the route blocked, the occupants of the car opened fire and tried to escape along the Kalapur canal service road. The SSP seized of this situation got the tyres of the fleeing vehicle disabled by accurate fire from the SOG Team. The criminals left the disabled vehicle and entrenched themselves behind embankments along the fields next to the canal. The criminals were appealed to lay down their arms and surrender. This brought a hail of fire from the kidnappers upon the leading elements of the police party, in which a bullet struck the BP Jacket of the SSP on the chest and two SOG personnel accompanying him were injured.

Leading from the front, the SSP immediately organized the police into two parties, one on the right side being personally led by him-the other party with SP City, CO City and SO Izzatnagar on the left side and attempted to encircle the entrenched criminals. On the repeated words of encouragement and challenge by the SSP that 2 police personnel have been injured and the assailants should not escape, the second party, led by SP City with the CO City-I, SO Izzatnagar and their jawans, by providing cover fire from the left flank cordoned the assailants, who retaliated with indiscriminate fire. But showing exemplary courage and without caring for their lives in spite of all odds, the officers held their ground with their cool and sharp presence of mind and skillful use of field craft and tactics. The final assault, in which SSP with keen sense of direction fired three rounds, SP City Prabal Pratap Singh & C.O. City Arun Kumar Singh fired three and two rounds and S.O. Izzatnagar Kiran Pal Singh fired two rounds broke the resolve of the criminals and the leader, Mohd. Haseen @ Bunty fell to the bullets of the law but his two accomplices fled away in the darkness.

Recovery:

1. One factory made pistol .32 bore.

2. One DBBL Gun and 10 Cartridges of 12 bore.

3. 03 Cartridges, 07 empty shells of 12 bore and 06 empty shells of .315 bore.

In this encounter S/Shri Binod Kumar Singh, Senior Superintendent of Police, Prabal Pratap Singh, Addl. Superintendent of Police, Arun Kumar Singh, Dy. Superintendent of Police and Kiran Pal Singh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/11/2008.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 143-Pres/2016—The President is pleased to award the 2nd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Dr. G.K. Goswamy, | (2nd Bar to PMG) |
| | Senior Superintendent of Police | |
| 02. | Praveen Kumar Singh, | (PMG) |
| | Sub Inspector | |
| 03. | Peetam Pal Singh, | (PMG) |
| | Sub Inspector | |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 25/06/2005 at 1955 hrs. Dr. G.K. Goswami, SSP Moradabad got information that in a yellow coloured Santro car, some dreaded criminals are roaming in and around Moradabad city. He immediately informed all Addl. SPs, COs and SHOs/SOs through R.T. set to check this vehicle. He himself, SOG in-charge Shri Praveen Kumar Singh, SO Nagphani Shri Peetam Pal Singh along with other policemen reached Charan Singh Chowk, Linepar in search of vehicle. Again information received that the car in which these criminals are roaming around, probably has number UP-14 L-5059 and a rewarded criminal of Rs. 20,000/- Chhota Jamil with his accomplice can be there in it and may go from Morodabad to Majhola side. SSP Moradabad along with police team cautiously started vehicle checking. Around 2025 hrs a vehicle number UP-14 L-5059 was seen coming from Moradabad city side. SSP Moradabad indicated that vehicle to stop but people in this vehicle using abusive language, fired at SSP.

The bullet narrowly escaped him and passed close to his ear and he was luckily saved. SSP ordered police team that criminals are certainly occupying this vehicle and without caring for their lives to catch them at all cost. SSP warned criminals, but they did not pay any heed and speedily turned to New Moradabad. SSP again warned them that they are surrounded and should surrender otherwise the policemen apprehend and in self defense will also use force. At this, the person sitting at driver's seat started indiscriminate firing on police jeep and shouted abusively that "I am Chhota Jamil and if you want safety of yours lives, go back". The roof of jeep damaged by criminals firing and the police team grew afraid. SSP Moradabad encouraged his team. He again shouted at the criminals to surrender but they continued to fire. When all efforts failed to catch the criminal, then SSP Moradabad started firing at the tires of the criminal's vehicle due to which right tire of backside punctured and the vehicle stopped. Two criminals got down and opened continuous fire. The SSP showing team leadership, instructed his team to take shelter of the jeep and by using tactical skill, they should surround these criminals and fire for self defense. Due to firing of criminals a bullet shot over the head of SSP, one bullet nearly missed the right arm of SOG in-charge and one bullet shot over the head of SO Nagphani. Both the criminals injured and fell down. When firing stopped, police party cautiously went near them. Both the criminals were lying dead. One of the criminal identified as Chhota Jamil, who escaped from police custody and was rewarded of Rs. 20,000/- and another criminal identified as Ali Mohammad.

Recoveries made:-

1. One automatic Pistol/Mouser made in Pakistan, 04 live cartridges and 16 empty shells of 30 bore.

2. One country made Pistol, 03 live cartridges and 03 empty shells of .315 bore.

3. One Santro Car.

In this encounter, S/Shri Dr. G.K. Goswamy, Senior Superintendent of Police, Praveen Kumar Singh, Sub Inspector and Peetam Pal Singh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 2nd Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/06/2005.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 144-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Shri Ram Gawaria, (Posthumously)

Constable

02. Arun Kumar,

Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

09 Battalion BSF is deployed on indo-Pak International Border in highly sensitive areas under Jammu Frontier.

On 31st Dec 2014, at about 0930 hrs, Inspector Subhash Chander along with 03 SOs and 07 Other Ranks were on zero line patrolling ahead Border fence in area of responsibility of BOP Regal. At about 1145 hrs, when patrolling party reached between Border Pillar No. 193 and 194, all of sudden Pak Rangers from Post Razab Saheed opened unprovoked firing on own patrol party from automatic weapons followed by grenade fire. As a result, Constable Shri Ram Gawaria sustained multiple bullet injuries on his chest, head temporal region (left side) and splinter injury on his hand. But without losing his nerves, Constable Shri Ram Gawaria alerted other members of patrol party and swiftly retaliated from his 5.56 mm INSAS Rifle. This provided crucial few seconds to his fellow comrades, who were under effective fire of adversary, for taking safe positions and retaliation.

Meanwhile, the troops deployed on own BOPs and OP mounds also started retaliating effectively to silence counterpart fire and to evacuate patrol party trapped ahead of Border Fence under supervision of Shri Ravinder Kumar, AC/Coy Commander. Counterpart continued heavy volume of fire from UMG, BMG, 52 mm Mortar and 82 mm Mortar on our BOP Regal, 6-R and Chiliyari. During exchange of fire, ASI(GD) Sunil Kumar of Patrol party also sustained minor splinter injury on his left elbow. Undeterred by the heavy volume of fire, Constable Arun Kumar, who was deployed on Mound No. 100, opened aimed fire of MMG on counterpart Post and killed one Pak Ranger, which perturbed the overwhelming Pak Rangers and cross firing was stopped at 1700 hrs.

Constable Shri Ram Gawaria despite of grievous bullet injuries stood his ground and fired till he breathed his last, exhibiting highest degree of chivalry and courage under heavy odds. Owing to his timely action and retaliation, lives of other members of patrol party could be saved. Constable Arun Kumar has displayed exemplary courage, determination and professionalism which resulted in killing of one Pak Ranger as well as in evacuation of trapped patrol party from danger zone.

In this action, S/Shri (late) Shri Ram Gawaria, Constable and Arun Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/12/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 145-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Devendra Singh, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

09 Battalion BSF is deployed in a hyper sensitive area of Samba under Jammu Frontier.

On 5th Jan 2015, at about 1415 hrs, Pak Rangers resorted to unprovoked shelling with heavy mortars and indiscriminate firing from medium range machine guns like UMG/BMG targeting our BOPs Londi, Katao, Chakdulma and naka mounds in AOR of 09 Bn BSF of Jammu Frontier. Own troops also retaliated adversary fire in a befitting manner. At about 1502 hrs, Pak Post Lumbriyal opened heavy volume of fire targeting own BOP NSP Khora.

Constable (GD) Devendra Singh of 09 Bn BSF, who was deployed at camp guard morcha, immediately took position amidst heavy mortar shelling and fired 07-08 rounds from AGS on Pak Post Lumbriyal, without caring for his own safety. Due to his effective retaliation, Pak Post Lumbriyal was forced to stop firing. However, adjoining Pak Post Akram Saheed started firing using heavy mortars on BOP NSP Khora. Own troops deployed on the mound as well as BOP NSP Khora retaliated in a befitting manner. During course of firing and retaliation Const Devendra Singh being on Camp guard sentry duty kept on alerting/guiding other BOP personnel and engaging the Pak Rangers with firing without caring for his personal safety & security.

Due to his effective fire, no loss/injury was caused to other BOP personnel inspite of heavy shelling/firing by adversary. Unfortunately, a mortar bomb landed in vicinity of the camp guard morcha of BOP NSP Khora where Const Devendra Singh had taken position, due to which he sustained splinter injury on his head. Injured Constable was immediately evacuated to Distt. Hospital Samba, where doctor declared him brought dead.

Constable Devendra Singh exhibited exemplary courage, determination and bravery in face of heavy enemy shelling & firing and retaliated in befitting manner forcing Pak Post Lumbriyal to stop firing. He made supreme sacrifice of his life and attained martyrdom proving the motto of the BSF i.e "Duty unto Death".

In this action, late Shri Devendra Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 146-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Adil Abbas, (Posthumously)
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

98 Battalion BSF is deployed on Indo-Bangladesh International Border at Nalkata, Distt-Dhalai (Tripura).

A construction agency namely M/s Coastal Company Pvt Limited was engaged in border fencing and border road construction work in the Eastern flank of Tripura state. NLFT (BM) militants having camps in CHT had posed serious threat to abduct workers of construction agencies. Keeping in view of threat from miscreants, the vehicles engaged in construction work were provided with BSF escort.

On 17th Nov 2014, a water tanker of Coastal Company Pvt Limited bearing Regd No. TR-0lk-1706, driven by civil driver namely Shri Jiten Chakma with Co-driver namely Shri Hamari Rangthong, was engaged in construction work. Head Constable Adil Abbas of 98 Battalion BSF was detailed to guard/escort said water tanker.

At about 1010 hrs, when water tanker, after taking water from water point at BOP Khantalang, was moving towards BOP Pushparampara along the border road, it came under heavy volley of fire from NLFT militants, who were positioned on

the other side of the fence. As a result, front tyre of water tanker got burst and tanker skidded upto 30 mtrs and banged on iron pole of fence. Head Constable Adil Abbas, water tanker driver and co-driver all have received bullet injures and got trapped in damaged vehicle.

Head Constable Adil Abbas, unmindful of his injury and in the face of fierce attack by the militants, retaliated effectively displaying raw courage and true spirit of a soldier. The exemplary courage and remarkable fire discipline of Head Constable Adil Abbas yielded result and the militants could not succeed in their nefarious motive of kidnapping of driver/co-driver and snatching of weapon and ultimately fled back to Bangladesh.

Head Constable Adil Abbas, driver Jiten Chakma and Co-driver Hamari Rangthong were evacuated to ILS Hopital, Agartala by Air Force Hepter, where Co-driver Hamari Rangthong was declared brought dead and Head Constable Adil Abbas had also succumbed to his injuries on the same day.

Head Constable Adil Abbas has displayed exemplary professionalism, dauntless courage and bravery by beating back a well-conceived deliberate ambush by militants thus saved life of vehicle driver as well as prevented Arms & Ammunition from getting looted.

In this action late Shri Adil Abbas, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/11/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 147-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Vivek Rawat,
Assistant Commandant

02. Jagjeet Singh,
Constable

03. Ramdhan Gujar,
Constable

04. Vijay Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

122 Battalion, BSF is deployed in a hyper sensitive Naxals infested area of District-Kanker (Chhattisgarh).

On 2nd Feb 2015, a small party of four BSF personnel of 122 Battalion BSF, under command of Shri Vivek Rawat, AC and 6 Chhattisgarh Police personnel under command of SI Avinash Sharma, SHO Police Station-Bande on 5 Motor Cycles went for intelligence collection about Naxals presence. At about 1445 hrs, the party was suddenly ambushed by approx. 50-55 Maoists near Hawalbaras village. SI Avinash Sharma and Assistant CT Sonu of Chhattisgarh Police were first to receive bullet injury and they fell on ground whereas remaining 6 personnel, who were caught under ambush, immediately jumped from Motor Cycle and started taking position nearby. Two police personnel 'remained out of ambush site. In this process one Maoist fired at Sh Vivek Rawat, AC from very close range but bullets passed overhead touching his hair. He fired back and heard one Maoist screaming, probably because he was hit. While taking position, a bullet hit right thigh of Sh Vivek Rawat, AC.

During the exchange of fire, bullet hit left eye and right ankle of CT Ramdhan Gujar, right wrist of CT Vijay Kumar. Similarly, HC Narender Shukla and CT Mineswar Mandavi of Chhattisgarh Police were also injured. All the injured personnel wrapped their wounds and started firing back ferociously.

Sh Vivek Rawat, AC not only fought with Maoists but also reorganized his team to fire and cover all directions with instructions to observe strict fire discipline and continuously boosting their morale to fight to the victory. He maintained his cool and kept on guiding his men despite injury. He informed his Commandant and kept on guiding him to the ambush site.

CT Ramdhan Gujar with injured eye and ankle took the position and fought with Maoists with valour and contained Maoists in Southern direction. He showed no sign of panic even when his face was covered with blood and followed the direction of team leader. This enabled own troops to concentrate their fire power to other side.

Even after injury to his right wrist, CT Vijay Kumar kept on firing from left hand and contained Maoists to their position only. Once when few Maoists crossed the road and took position behind tree, he forced them to go back to jungle area for cover by firing at them. This act of bravery augmented the efforts of Shri Vivek Rawat, AC.

CT Jagjeet Singh played a major role as he kept on changing position and fired UBGL which created panic among Maoists which in turn led to their withdrawal. He demonstrated highest level of bravery by exposing himself, taking position on road and by firing another UBGL, which made a strong crowd of 100 villagers mixed with Maoists to flee back.

HC Narender Shukla and CT Mineswar Mandavi of CG Police also fought Maoist which thwarted away any movement of Maoist to fire from different directions. HC Narender Shukla also kept on informing higher HQrs over mobile between exchange of fire.

Shri Vivek Rawat, AC has displayed highest level of leadership qualities, presence of mind, fighting spirit and bravery whereas other members displayed a rare quality .of fighting spirit, bravery, fire discipline and esprit-de-corps in fighting with Maoists and holding them for one hour and 45 minutes till, arrival of reinforcement. They not only saved precious lives of their fellows and Arms and Ammunition but also succeeded in killing one Maoist namely Bandu Korcha and injuring a few others.

The incident is indisputably one of its kind where a large group of Maoist was not only defeated by a very small team of well-trained soldiers, but their cadre was also killed.

Recovery:

14 EFCs, 1 bullet, 2 miss fired rounds and a bottom place of Stain gun.

In this encounter S/Shri Vivek Rawat, Assistant Commandant, Jagjeet Singh, Constable, Ramdhan Gujar, Constable and Vijay Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carry with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/02/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 148-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Krishna Kumar Sharma,
Assistant Commandant

02. Ram Narayan Singh,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

123 Battalion BSF is deployed Anti Naxal Operation in Kanker District of Chhattisgarh. The area of responsibility of 123 Battalion BSF is hilly with thick jungles, which makes the undulated terrain treacherous and difficult.

On 13th Aug 2014, at about 0730 hrs, on specific information generated by AC(G) BSF Bhilai about presence of four or more Maoists in general area of Village Ghumsimunda, who were planning to initiate some drastic action against security forces during the occasion of Independence Day, an operation party comprising 02 officers, 07 Subordinate Officers and 36 Other Ranks of BSF COB Semrapara and 01 Officer, 06 SOs and 26 Other Ranks of Chhattisgarh Police of PS-Antagarh (including 6 officials from CAF) was detailed to conduct a special joint operation. Keeping in view of the possible entrapment by Left Wing Extremists, the operation party was divided into two groups, 01 team under leadership of Shri Amit Kumar AC alongwith 02 SOs and 19 Other Ranks of BSF (Total 22 personnel) to lay ambush/stops in general area of village-Jaitpuri and also to deceive the LWEs about real target and another motorcycle born team under leadership of Shri Krishna Kumar Sharma, AC alongwith 5 SOs and 17 Other Ranks of BSF and 33 officials of CG Police to carry out raid/strike on the LWEs hiding place.

The ambush laying, team left the post on foot at about 0740 hrs adopting different routes to deceive their movement and laid ambush at the specified place by about 0910 hrs. The raid/striking team was further divided into four hits under leadership of Sh Krishna Kumar Sharma, AC, Inspector Sudhir Kumar Kanawat, SI Ram Narayan Singh and ASI Hariom Sharma respectively. Raid/striking party moved for target area on motorcycles at 1910 hrs. They left their motorcycles short of Village Ghumsimuda and further advanced on foot adopting tactical formation. They started cordoning the area moving swiftly and stealthily taking cover of trees and bundh. At about 1030 hrs, all of sudden Naxals hiding in a hut near pond outside the village opened heavy volume of indiscriminate fire on operation party. Shri Krishan Kumar Sharma, AC and his party, without losing a moment, took position in paddy field and retaliated the Naxals' fire. SI Ram Narayan Singh leading another hit party spotted Naxals presence near the adjoining grove and opened fire. He simultaneously indicated to Shri Krishna Kumar Sharma, AC, who was advancing alongwith his hit members towards the grove, disregarding threat to their own lives. Sh Krishna Kumar Sharma, AC and his team opened heavy volume of fire showing raw courage and guts to neutralize the heavily armed Maoists but they had to stop firing as some ladies working in their paddy field started running due to fear of fire. In the meantime one of the Naxals hiding in the grove, opened fire on BSF party which was retaliated effectively. Operation party surrounded the Maoist hiding in the grove and challenged to surrender. He surrendered and bent down on his knees. The Maoist however tried to pick up his weapon AK 47 Rifle. Seeing the situation, Sh Krishna Kumar Sharma, AC fired to prevent him from causing any injury or damage to operation party. Meantime, SI Ram Narayan Singh despite knowing the cunningness and deceptiveness of Maoist and without caring for his personal safety immediately moved forward and apprehend him.

On preliminary checking, it was found that the Maoist had sustained bullet injuries on his left hand, left wrist and left thigh. After keeping injured Maoist and seized weapon in safe custody of Inspector Sudhir Kumar Kanawat and his party, Shri Krishna Kumar Sharma and his team, without wasting any time, rushed towards the fleeing Maoists in Matta reserve forest. They were again fired upon by fleeing Maoists. The operation party though retaliated but the Maoists managed to flee taking advantage of thick vegetation, jungle and undulating ground.

Seeing futility of further chase, party fell back to encounter site. The area was thoroughly searched and recovered one AK 47 Rifle, one 8 mm Pistol, some live ammunition etc. The operation was called off at about 1410 hrs. The injured Maoist was provided first aid and was further referred to Civil Hospital and thereafter handed over to Police.

The apprehended Maoist was later on identified as Jairam (30 years), resident of village-Killam, Distt-Kondagaon (Chhattisgarh). He was Senior Commander Military Commission & Member DVC Keshkal Committee and was reportedly carrying two Lakhs reward on his head.

This is one of the rarest operations, when a dreaded Maoist was appended by security forces after fierce gun battle, without any loss to operation party. Own troops have displayed exemplary professionalism, bravery and presence of mind. This will inspire men in uniform in the coming years and will give shivers to the Naxalites.

The gallant action, determination and presence of mind exhibited by Shri Krishna Kumar Sharma, AC and SI Ram Narayan Singh made it a successful operation and saved the precious lives of other members of the ops party.

In this encounter, S/Shri Krishna Kumar Sharma, Assistant Commandant and Ram Narayan Singh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carry with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 149-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Barun Chandra Mandal,
Head Constable

02. Surender Kumar,
Constable

03. Pratap Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 17/04/2014 during Lok Sabha Elections in Jharkhand, convoy of Commandant Adhoc - 346 Bn, CRPF consisting of three vehicles moved from Dett Hqr, IAL, PS- Gomia, Bokaro by road towards Trila Area, Bokaro through Lalpania Village to visit the company posts. At around 0900 hrs as the convoy was moving between Tulbul and Lalpania Villages through the valley of Lugu Hills, an IED planted under a culvert was blasted by Maoists. The first vehicle of the convoy had just crossed the blast area but unfortunately the second vehicle of the convoy fell into the crater formed by the IED blast. The third vehicle behind the 2nd victimized vehicle stopped before coming to the killing zone. After the blast, the maoist opened heavy fire from the right side i.e. from the hill side.

The impact of the IED blast was so destructive that a crater of 10 X 8 feet was formed at the site of incident (i.e on the road) and the second vehicle got struck into the crater. HC/RO Barun Chandra Mandal, CT/GD Surendra Kumar and a civil driver were the occupants of the victimized vehicle and were badly injured. The Maoists who had occupied the dominating positions were firing incessantly at the ill-fated vehicles. Though severely injured the occupants did not lose their determination, tactfully came out of the vehicle, got hold of their weapons and took positions inside the crater. HC/RO Barun Chandra Mandal covered the right side of the vehicle and CT/GD Surendra Kumar covered the left. The Maoists had also placed cut-offs to stop any reinforcement to enter the killing zone. As the occupants of first and third vehicle tried to enter the killing zone to help their trapped partners, they were way laid by the stop parties of the Maoists. Finding that one of the vehicle and its occupants have got struck in their killing zone, assault party of maoists started converging towards the ill-fated vehicle with the intention to kill the occupants and snatch their Arms, Ammunitions, Wireless Set etc. Though completely outnumbered and severely injured, the jawans held to their ground and fired at the approaching Maoists. Taken aback by the bold and courageous act of the severely injured troopers the Maoists stopped in their track. To scare down the two brave troopers, the Maoists resorted to heavy and indiscriminate fire at them but despite being in disadvantageous position and a threat of death looming over them, the brave troopers displayed the rare nerves of steel and kept retaliated the fire in controlled manner. Beaten by the valour of the injured troopers, the Maoists threatened them to surrender and save their lives but both personnel preferred to die than surrender before their enemy.

Meanwhile, the troops under command Sh. Vijay Shankar Singh, Dy. Comdt., who were in the third vehicle and waylaid by the stop party of the Maoists, were making every effort to break the ambush and reach closer to their trapped personnel for help. But the tactical and dominant position of stop party was foiling their every move. Sensing the urgency and the need to take an immediate step to save the lives of other troopers, CT/GD Pratap Singh took the responsibility of breaking the ambush of stop party on himself. Throwing all precautions in air, he came out from his cover and charged at the Maoists entrenched behind secured covers. The bold and courageous move of CT/GD Pratap Singh forced the Maoists to desert their covers and run deeper in the jungle. Though the plan had succeeded but in the duel CT/GD Pratap Singh received bullet injuries on his stomach. Moving further with an injured trooper who was bleeding profusely meant putting his life in danger. Shri Vijay Shankar Singh, Dy. Comdt. decided to first evacuate the injured trooper. CT/GD Pratap Singh was pulled back to the vehicle despite his resistance, as he wanted to fight further and save the lives of trapped troopers, and sent for treatment.

On the other side, HC/RO Barun Chandra Mandal and CT/GD Surendra Kumar were foiling every attempt of the Maoists to come closer to them and snatch their weapons. Every forward move of the Maoists was answered with accurate and determined fire. In the exchange of fire, some of the Maoists got injured which dented their morale. A final bid was made by a frantic maoist who came charging at them, but he was gunned down by the brave troopers by their accurate fire. The dying of a maoist, fleeing of the stop party and the determined resistance by the troopers forced the Maoists to abort their plan and flee away carrying their dead and injured cadres deeper in the jungle. HC/RO Barun Chandra Mandal and CT/GD Surendra Kumar have shown their presence of mind and displayed exemplary gallant action and resisted them for around one hour without caring for their own lives and finally forced them to flee. Thus they succeeded to neutralize a heavy and complicated ambush.

It is nothing but a high degree of display of professionalism and nerve say-die attitude of HC/RO Barun Chandra Mandal, CT/GD Surendra Kumar & CT/GD Pratap Singh which not only forced large number of Maoists to retreat, saved arms, ammunition and personnel but also enhanced the pride of the Force. In addition to it, one maoist namely Comrade Pantosh Hembram had been killed during the encounter as mentioned in press note released by the Maoists.

In this encounter S/Shri Barun Chandra Mandal, Head Constable, Surender Kumar, Constable and Pratap Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/04/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 150-Pres/2016—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Gulam Nabi Bhat,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

A technical input was received by SP Srinagar about the presence of heavily armed militants in Soura area of Srinagar city (J&K). On receipt of information, an operation was planned and a joint party consisting troops from CRPF and SOG State Police was dispatched to Shahdab Colony, Ahmed Nagar, P/S Soura, Srinagar on 13/04/2014 at 1730 hrs to zero-in on the suspected hide-out. The troops reached Shahdab Colony and plugged all available escape routes. They, then moved tactically to locate the suspected hideout. As the troops reached near a cluster of houses, they noticed suspicious movement of two persons. The troops challenged them to stop and prove their identity. Defying the orders, the two suspects opened indiscriminate fire from their weapons hidden inside their "Pherans" and ran towards inside the cluster of houses. The troops immediately retaliated and chased but the militants managed to disappear in the cluster. In the gun-fight, one of the State Police personnel got injured and the troops were forced to plan a strategic entry into the cluster. The cluster was immediately cordoned off and more troops were called to strengthen the cordon. Senior officers also reached the spot and further plan of action was prepared. The first task at hand was to identify the house in which the militants had holed up. As the troops were keeping an eye on the cluster of houses, a girl came running towards them and informed about the exact house in which militants were hiding. She further informed that she had managed to escape from her house but her parents were still hostages there. The troops swiftly cordoned the indicated house. One section under command Insp/GD Gulam Nabi Bhat of 23 Bn CRPF alongwith SOG was detailed to lay a tight cordon around the house. With the hostages inside, the task had become more complicated. The priority had moved from neutralizing heavily armed militants to saving the precious lives of civilians held hostage. To save the lives of civilians, it was decided to first warn the militants and if that did not work a deal should be negotiated. The militants were given warning to surrender themselves to the Security Forces but they instead used heavy and indiscriminate fire at the troops. The troops had to control the retaliation and as the darkness had increased and the lights inside the house were switched off by the militants. It was decided to re-start the operation in the next morning. The house was kept under complete seize the whole night to prevent the militant's escape. Next day in the morning at around 0700 hrs, the operation was re-started and tear gas shells were fired into the house to create a chaos amongst the militants. The scheme worked and taking advantage of the confusion made to the militants, the lady hostage managed to escape. She confirmed that two heavily armed militants were present inside the house and her husband was still captive in their hands. The militants were again asked to surrender but they refused to do so and released the hostage. After releasing the hostage, the militants opened heavy fire at the troops positioned around the house. The troops did retaliate but the fire was not effective, as the militants had positioned themselves behind the concrete walls of the house. It was difficult to move into the compound of the house from the main gate as the militants had positioned themselves in a way so as to thwart any such attempt. To overcome the deadlock, it was decided to launch a two-sided attack wherein one party would engage the militants while another would make an entry into the house by breaking the rear compound wall. The plan worked and Insp Gulam Nabi Bhat succeeded in entering the compound of the house alongwith his troops by breaking the rear wall. But soon the militants realised the movement of troops at their back drop and opened heavy fire at them.

The troops had a narrow escape but risking their lives they fired back and rushed inside the veranda of the house. Now the task before Insp Gulam Nabi Bhat was more challenging as they had to move in each room of the house and take the heavily armed militants head-on. At this juncture Inspector Gulam Nabi Bhat led the troops and placed himself at the forefront of the advancing troops. The troops moved ahead clearing every room in the house and after a fierce gun fight gunned down two militants. The two militants were later identified as hard core LeT militants namely Parveez @ Hufaiza @ Anees (A category) and Hafiz @ Chota hafiz @ Baber ($A^{++}$ category) of Pakistan origin. Two AK-47 rifles and ammunitions were also recovered.

Above operation was a big success wherein Insp/GD Gulam Nabi Bhat of 23 BN CRPF had shown exemplary courage and commendable action. During the operation, first he positioned himself along with his personnel at strategic point and engaged the militants and when an opportunity rose entered the building and gunned down two militants. The nerve exhibited by him under the life threatening circumstance is not only exemplary but also shows highest degree of courage, gallantry, devotion, dedication and commitment to duty. In the entire operation due to a very short distance between the Militants and Assault Group and intense volume of fire, death remained always a whisker away.

In this encounter, Shri Gulam Nabi Bhat, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing he award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/04/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 151-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. H.S. Kushwah, Constable (Posthumously)

02. Nekpal, Constable (Posthumously)

Statement of service for which the decoration has been awarded

An intelligence input about movement of maoists in the jungle area of villages Raiguda, Pawarguda and Chilkapalli, PS Basaguda, Distt. Bijapur, Chhattisgarh was received by 168 Bn CRPF. Based on the information, an operation was planned and launched by the battalion. The troops left the Basaguda base camp in the wee hours of 10/08/2014 and moved surreptitiously towards the target area. As the troops were near village Raiguda, they noticed presence of some suspected persons on a hillock at the back of the village. To apprehend the suspected persons, the commander immediately divided his troops into two teams and send one of the teams to the hillock while he alongwith his team moved to lay cutoff on the route going from the hillock to village Pawarguda. Under the cover of thick vegetation, both the teams set out for their targets. On reaching the hilltop, the team spotted the same set of suspected persons near village Pawarguda. The information was immediately shared with the commander down below. As the suspected persons could avoid the interception, the commander decided to corner them in the village. But no sooner did the team enter the village than it was greeted with a fusillade of bullets. The scouts at lead namely CT/GD H S Kushwah and CT/GD Nekpal immediately swung into action and had a miraculous escape as the bullets just whizzed pass them. Undeterred with such a surprise and brutal attack, the two took positions and retaliated in no time. The maoists on seeing the troops advancing towards the village opened heavy fire to delay the advance of the troops and escape to the adjoining jungle. Adopting the tactics of fire and move, the two daredevils crawled and stalked towards the maoists positions. To further stop the movement of troops, the maoists forced the villagers to move out of their houses and taking cover of human shields tried to escape. But their action could not evade the sharp eyes of Ct H S Kushwah and Ct Nekpal who without caring for their own safety and putting the national interest and pride before their own lives, rushed to intercept the maoists and cover the escape route. In the following few nerve breaking seconds Ct H S Kushwah and Ct Nekpal were in direct confrontation with heavily armed maoists firing indiscriminately with their automatic weapons. This situation could have numbed the senses of the bravest of soldiers but the two valiant soldiers fired at the maoists and stopped their escape. The sustained efforts of both the constables in face of grave danger paid dividends as one of the maoists got injured with their bullets. The brave hearts then advanced and maneuvered towards the maoists positions adopting the tactics of fire and move for the final kill. But as the battle was going in favour of the troops, another group of maoists' hiding inside the jungle opened fire at them in support of the trapped maoists. The intense fire from two directions inflicted severe injuries on them, but they were not the ones who would surrender come what may. To counter-attack the Maoists, they divided their direction of fire and made optimum use of grenades. As their firing got divided the injured and trapped maoists got an opportunity to flee inside the jungle. Seeing the fleeing Maoists, the brave hearts again threw all precaution's in air and without caring for the agony caused by the bullet injuries and blood that had smeared their bodies chased the maoists. During the chase as the two brave hearts entered the jungle, the maoists waiting in jungle launched a sudden and surprise attack at them. Ct H S Kushwah and Ct Nekpal immediately took positions behind the trees and were surprised to find a well laid out hasty ambush. They immediately took corrective measures and cautioned the troops following them. Their preemptive move had exposed the ambush and prevented other troops to fall in it. Though severely injured and trapped in the intense fire, the valiant troopers kept firing inflicting heavy losses on the maoists. The loss of blood soon began to numb their senses. At this juncture also, in a ploy to trap the maoists they silenced their guns and when the maoists advanced to snatch their weapons, thinking them to be dead, they opened sudden fire and inflicted injuries on the advancing maoists. The sudden and surprise attack from the severely injured and cornered enemy dented the morale of the maoists and they began to flee deeper in the jungle. The two brave hearts kept firing at the maoists till their last breath and ultimately sacrificed their lives in the service of the nation. After the encounter the area was thoroughly searched. Though no dead body was recovered but the blood stains present, in the area suggested, that some of the maoists had sustained grievous injuries and must have later succumbed to it.

Shri H S Kushwah, CT/GD and Shri Nekpal, CT/GD laid down their lives at the altar of duty to the nation and made the supreme sacrifice. Both the brave hearts played a vital role during the encounter and inflicted heavy loss to the maoists. They exhibited high standard of professionalism, devotion and commitment to their duty. Despite being severely injured they fought till their last breath and counter attacked the enemy which was bigger in number and tactically better placed.

In this encounter S/Shri (late) H.S. Kushwah, Constable and (Late) Nekpal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 152-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Ajendra Singh,
Assistant Sub Inspector

02. Mohammad Asif,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

The Kashmir valley has over the years witnessed a number of manifestations of terrorism i.e. from attacks on the columns of Security Forces, Rocket attacks at their camps, grenade lobbing in busy market and sneak pistol attacks at crowded places, but the Security Forces have foiled every form by launching a counter-offensive attack, Failing to face well prepared troops and having tasted defeat in each of their mid-adventure, the militants have recently resorted to attack a target which they consider a little soft i.e. administrative movement of the troops like convoy or logistic supply.

On 08 Nov, 2014 at about 1800 hrs, the militants executed one of such dastardly attacks on CRPF but had to meet with the same fate as they had been meeting over the years. On 8th November, a Swaraj Mazda Vehicle Reg. No.HR 68 2743 of 163 Bn CRPF was returning to its company location at Vessu, after collecting stores, from the Detachment HQ when it was ambushed by terrorists near MS 226 at village Lewdora, PS Qazigund, Distt Kulgam, J&K. The terrorists had laid an ambush in a strategically advantageous position wherein they had the advantage of under-construction road which would slow down the vehicle and presence of a number of escape routes. The dense population and fading light too worked as an additional advantage to them. As the truck which had six personnel onboard slowed down, a terrorist taking cover of a truck parked on the right side of the road fired indiscriminately at the front portion of the CRPF vehicle. The intense fire inflicted sever injuries to the persons at front namely Constable/Driver Mohammad Asif and ASI/GD Ajendra Singh. At the same time another terrorist who was hiding to the left of the road opened heavy fire at the vehicle's rear left portion. As a result of this second attack, two more CRPF personnel sitting in the rear received severe injuries.

This attack, by Lashklar terrorists, was exactly similar to the Hyderpora attack on an Army truck, in which 13 Army personnel had got killed and more than 20 wounded.

The troops were caught in a life threatening situation and the loss inflicted by the terrorists would have increased manifold had the brave commander ASI/GD Ajendra Singh not displayed an act of extreme gallant with great present of mind. With twin responsibility of securing his own personnel from the fire of terrorists and counter-attacking the terrorists, he despite himself sustaining sever injuries i.e. bullet injuries in his right arm and right leg, ordered Constable/Driver Mohammad Asif to accelerate the vehicle and drive it out of the killing zone while he himself jumped out of the running vehicle to launch a counter-attack. In the next few seconds, he came face to face with the terrorists firing at the vehicle and launched a brutal assault on them. His dare-devilry approach forced the terrorists to stop firing at the vehicle. After accomplishing his first task of securing his men, ASI/GD Ajendra Singh then took position behind a Road-roller and fired continuously at the terrorists. His action attracted the ire of the terrorists towards him and they opened heavy fire at him. Though, bullets were thudding the area all around him and his injuries obstructing the free movement of his right hand fingers, ASI/GD Ajendra Singh did not panic but found a novel way to fire by operating the gun with his left hand and left shoulder. His efforts beyond imagination were rewarded when one of the terrorists also got hit by his bullets. While this valiant sub-ordinate officer was fighting alone battle with the sophisticatedly armed terrorists, Ct/Dvr Mohammad Asif drove

the truck successfully for another 50 meters, away from the killing zone, despite a fractured leg and a bullet in his abdomen. As the troops sitting at the rear came to know about the brave exploits of ASI/GD Ajendra Singh, they ran to help him and attack the terrorists. On finding that the troops are advancing in support of the beleaguered trooper, the terrorists began to withdraw deeper in the lanes. Seeing the terrorist fleeing in the lanes, ASI/GD Ajendra Singh moved out of his cover and chased them. But the terrorists managed to escape by taking advantage of the failing light and presence of civilians.

Besides extraordinary presence of mind in the face of extreme danger, ASI/GD Ajendra Singh, not only minimized the injuries being suffered by the troops but also counter-attacked the terrorists while showing utter disrespect to his life. Ct/Dvr Mohammad Asif, in the face of grave danger to his life did not lose control over his vehicle and drove it out of killing zone with two bullets in his body.

In this encounter S/Shri Ajendra Singh, Assistant Sub Inspector and Mohammad Asif, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/11/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 153-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sunil Ram, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 17/08/2015, 168 Bn CRPF received an information about the presence of a group of Maoists near village Guttum, PS Basaguda, District Bijapur (Chhattisgarh). Immediately an operation was chalked out to Cordon and Search the suspected village i.e. Guttum and adjoining area by two platoons each of D & G Coys of 168 Bn. CRPF along with State Police. To launch the operation, Timapur base camp was choosen from where the target village was at a distance of 12 Kms approx. As per the plan, troops left the base camp in the wee hours of 18/08/2015 under cover of darkness and moved to the target area. The target area was tactically cordoned and search of the village and adjoining area was conducted but contact with the Maoists was not established. Thereafter, the troops planned their withdrawal from the area.

While, troops were returning to their base camp through a dense jungle, the scout party, which included Constable Sunil Ram, noticed three villagers suspiciously moving at the other end of a plain patch. One of these three villagers seemed intentionally displaying a walky-talky set in his hand. The open patch at front surrounded by dense forest and the villagers enticing the troops to follow them aroused suspicion in the mind of the Commander and he alerted the troops. Suspecting an ambush ahead with the Maoists positioned in the dense vegetation around the open patch, the Commander decided to counter-attack the Maoists. As a deceptive tactics, he ordered two platoons to remain positioned at the same spot while he along with two platoons surreptitiously moved to counterattack the enemy from behind. After taking a circular route and hiding itself from the observation of the Maoists, the two platoons then moved cautiously towards the enemy positions. At around 1215 hrs, Ct. Sunil Ram, who was at lead, observed the presence of Maoists positioned behind thick trees and bushes. He alarmed the party of an encounter that seemed plausible. The troops were on their toes and while the leading troops were taking positions, their movement were observed by the look-out party of the Maoists who immediately opened heavy fire on the troops. It was observed that maoists had laid "C" shaped ambush to trap the troops and were waiting for the troops to fall prey to their bait. Troops retaliated to firing and instantly took whatever available positions were present on the ground. Initially, the Maoists waiting in an ambush were surprised by the counter-attack of the troops but since they were positioned behind secured covers and had tactical advantage, they chose to fight back and in the pursuit opened heavy fire at the advancing troops.

During the fierce encounter, Constable Sunil Ram and other scouts, who had been at the forefront, fought bravely while making advance towards the maoist positions. Their fire was so fierce and accurate that it frustrated the enemy and drew all the attention of the Maoists on them. The maoists then sprayed heavy bullet fire on them with automatic weapons but it was not going to intimidate them. With nerves of steel, the scouts remained firm, and intensified firing from their weapons while also changing their positions tactically. To further infuriate the Maoists, Constable Sunil Ram opened fire from his UBGL and wreaked havoc on the already panicked maoists. The maoists by then had lost all hope in front of well trained troops and started firing aimlessly and indiscriminately in their last bid to escape. Seeing the Maoists fleeing from the area and having

fired four UBGL grenades already, Ct Sunil Ram moved out of his cover to chase them. His brave move infused a new vigour on the other scouts and they too followed him inspite the reckless fire of the Maoists. Ct Sunil Ram was at the lead during the chase and he fired heavily at the Maoists while simultaneously gave cover fire to his colleagues. He braved the reckless fire of the Maoists and succeeded in inflicting severe injuries to some of them but as he was preparing to fire another grenade from his UBGL, a burst shot fired by a hidden maoist injured him critically. Even when he was critically wounded, brave Ct. Sunil Ram kept firing at the maoists and gave support to other troops till his last breath and made supreme sacrifice in the altar of duty and attained martyrdom.

Ct. Sunil Ram fought gallantly and made the supreme sacrifice of his life at the altar of duty in service to Nation. He was very vigilant and alert during the operation and took the initiative of being at the front. He had fired '04' UBGL rounds ($5^{th}$ in chamber) from his UBGL fitted AK-47 and also fired '19' rounds of AK-47 before he was hit by a burst fire from maoists on his chest. His brave, courageous and timely action in the face of intensive enemy fire wherein he kept on firing from his weapon while also changing his position tactically, kept the maoists on the defensive and forced them to retreat from their well laid ambush thereby preventing huge loss to the troops.

In this encounter (late) Shri Sunil Ram, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/08/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 154-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Jignesh Patel, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Bijapur District in Chhattisgarh has always been the epicenter of maoist activities. Over the years, the maoists have disrupted means of transport and communication in the area which hinders the swift mobility of troops. Poor road conditions also make roads vulnerable for planting of IEDs to be targeted against Security Forces. To overcome this problem, the Battalions deployed in the area provide security to the road construction work apart from conducting anti-maoist operations. On 09/08/2014, at 0815 hrs, one such Patrol consisting of 35 personnel of 168 Bn CRPF and 30 State Police personnel moved out of the base camp at Awapalli to secure the road construction work on Awapalli Murdanda road. The Patrol was divided into three sections and CT Jignesh Patel was the scout of Section No. 2. The Sections were at a gap of about 40-50 Mtrs from each other. To tactically cover the area and prevent IED attack, troops were moving to the left of the road at a depth of approx. 50 meters. As the Patrol had covered around 700 to 800 meters from their base towards Murdanda, Constable Jignesh Patel noticed some suspicious movement towards his left and inside the jungle. He immediately signaled his Section to stop but before the Section at front could be alerted, the Maoists hidden inside the jungle opened heavy fire at them. The front Section immediately took covers behind trees and retaliated. The intense fire of the Maoists posed a serious threat to the lives of the trapped troops.

Constable Jignesh Patel after keenly observing the positions of Maoists planned to counter-attack the flanks of ambush. He alongwith his Section crawled towards the Maoists positions, taking cover of dense vegetation. On reaching close to the Maoists positions the Section observed that the Maoists were in large numbers and well entrenched behind secured covers. Attacking an enemy pitched tactically, securely and in large numbers was a very risky proposition. Nevertheless, Constable Jignesh Patel without caring for his life and to save the lives of troops trapped in the ambush, opened heavy fire at the Maoists. Following his brave assault, other men of the Section also fired at the Maoists. The attack paid fruitful dividends as some of the Maoists got injured and the trapped troops got the chance to move out of the ambush zone. Beaten in their plan of inflicting heavy casualties on the troops and snatching their weapons, the Maoists then concentrated their fire at Constable Jignesh Patel and his Section. Undeterred by the number of Maoists and their fire, the Section stood firm to its ground and retaliated. Comprehending that they enjoy an advantage over the troops tactically and numerically, the Maoists then tried to encircle the Section. Constable Jignesh Patel, who was at the front of the Section, noticed the move of the Maoists and to counter it crawled to his left under heavy bullet firing. In the process, he came face to face with the Maoists advancing to encircle the troops. Though, caught in the situation where death was staring at his face, he fired boldly

and courageously at the Maoists while moving out of his cover. The Maoists also fired at him but with his accurate fire he inflicted injuries to some of the Maoists. The attack forced the Maoists to stop their advance. In the endeavor of again attacking the Maoists, the brave trooper moved out of his cover and fired at them. But in the process, he too received grievous bullet injury. Even after receiving injury, the brave did not care for his excruciating pain and kept firing at the Maoists. Beaten to dust by the valour and bravery of Constable Jignesh Patel and by the advance of the troops of Section 1, the Maoists found it prudent to flee from the area with their injured cadres than to get trapped in a two pronged attack. Constable Jignesh Patel was immediately evacuated from the encounter site but the brave soldier succumbed to his injuries and attained martyrdom.

CT/GD Jignesh Patel of 168 Bn, CRPF fought gallantly and made the supreme sacrifice of his life at the altar of duty in service to the Nation. His brave & courageous action in the face of enemy fire wherein he not only fired but also counter-attacked a well entrenched enemy saved the lives of many troops. Despite a concentrated attack on him by the Maoists, he kept on firing from his weapon changing his position tactically. In the entire encounter he kept the Maoists on the defensive and forced them to retreat. He exhibited high standard of professionalism, devotion & commitment to his duty.

Recovery:

1. Empty cases SLR : 02 Nos.
2. Empty cases AK-47 : 03 Nos.
3. Wire

In this encounter (late) Shri Jignesh Patel, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 155-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Kamal Kishore,
Assistant Commandant

02. Hans Raj Singh Meena,
Sub Inspector

03. Anil Kumar,
Constable

04. Mithilesh Pal,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the basis of an input about the congregation of maoists, an Operation was planned and executed in the general area of villages Nendra and Guttum, PS Basaguda, Distt-Bijapur (CG) on 27/11/2014 by the troops of 168 Bn CRPF and State Police (STF + DF). The operation was launched from two bases i.e. Awapalli and Timapur and the two strike teams each under the command of Sh. Kamal Kishore, Asst.Comdt. and Sh. Rajendra Kumar, Asst. Comdt. left the bases on 27/11/2014 at 0100 hrs. After navigating stealthily in the dark, the team under command Sh. Kamal Kishore reached the target village i.e. Guttum by the first light. A thorough search of the village and its adjoining forest was conducted but no sign of the presence of Maoists was found. Thereafter, the team moved towards village Nendra where the second team was conducting the search. To maintain the surprise of direction of move, the team took a circular route and entered a dense jungle.

Hardly had the team moved some distance inside the jungle, the scout namely Constable Anil Kumar noticed presence of some suspicious persons at a distance. He immediately signaled the presence of a probable threat to his troops and the troops laid low and hid behind the available covers. Sh. Kamal Kishore, knowing that any big movement of troops would alert the suspects resulting in their fleeing from the spot, formed a small team comprising of SI/GD H R Meena,

Constable Anil Kumar and Constable Mithilesh Pal and led it to locate the enemy, if present in the vicinity. This small group of brave soldiers crouched ahead making optimum use of available covers with their fingers firmly on the triggers to counter any surprise and sudden attack. On reaching close to their target, they noticed a boy and a girl standing casually but keeping an eye on the surroundings. Any armed maoist group was not found in their vicinity. As the Commander was still pondering over his next course of action, sudden and intense fire came at them from a tree top. The Commander and his team immediately retaliated to the direction from where the fire had come and saw a maoist fleeing deeper in the jungle after jumping from the tree. To chase the fleeing maoist, the four brave troopers immediately came out of their covers but to their surprise, the boy and the girl present there also jumped behind a tree, pulled out their concealed weapons and opened fire at them. This sudden and surprise attack would have proved fatal had the four not ducked timely. As the bullets fired at them missed the target, the four brave troopers without caring for their lives and in absence of any cover, fired heavily at them and pinned them down. Thereafter, the Commander Sh. Kamal Kishore, signalled his small team to get divided and launch a two sided attack at the Maoists positioned behind a tree. From one direction, Sh. Kamal Kishore advanced with Constable Anil Kumar and from second direction SI/GD H R Meena advanced alongwith Constable Mithilesh Pal.

The team was advancing cautiously, exchanging bullet for bullet when suddenly a deluge of bullets came pouring at them. It took no time for the Commander to understand that more Maoists have joined the gun-battle in support of their beleaguered cadres. He immediately called his other team members for support and ordered them to make advance but the team was still way behind as the intense fire from the Maoists was hindering its swift movement. Knowing that if something was not done immediately then the Maoists would succeed in rescuing their trapped cadres, Sh Kamal Kishore ordered his small team to concentrate their fire at the tree behind which the two Maoists were hiding so that they did not get any chance to escape. But by doing so, he invited more trouble for himself as to counter his strategy the Maoists also targeted his small team and concentrated their fire at them. Soon the bullets began to thud, the cover and the ground all around the valiant troopers but the Commander knew that he just needed some lucky moments before tasting the success as his team would be joining them soon. But, the Maoists were more desperate to rescue their cadres and in the pursuit began to encircle the small team for launching a multi-directional attack. The lives of the small team would have been at the grave danger and brink of death had the tactics adopted by the Maoists not worked to the advantage of the troops. The concentration of the Maoists fire at the small team gave the opportunity to the other team members to advance briskly and as they reached near to the encounter site, they launched a brutal counter-attack. The counter-attack forced the Maoists to stop their advance and they began to retreat deeper into the jungle. But the Commander and his small team had their target fixed and as the two Maoists in civil dress moved out of their cover to flee while firing at the troops, they opened aimed fire at the maoists. Their fire yield result and both the Maoists were seen limping. The troops then made a tactical advance as the Maoists were still firing while retreating.

During search of the area dead body of a Maoist was recovered along with one .303 Rifle, 28 rounds of ammunitions, one magazine and other incriminating items. The blood stains present in the area also suggested that many more Maoists had received severe injuries during the encounter. The slain maoist was later identified as Oyam Budri D/o Late Eraya Oyam of village Pedda Jojer of Police Station Gangaloor and a member of Awapalli LOS of Maoists.

Such determined and daring response from the troops mainly by the advance element comprising of Sh. Kamal Kishore Asst. Comdt., SI/GD H.R.Meena, CT/GD Mithilesh Pal and CT/GD Anil Kumar resulted in the neutralization of a maoist besides inflicting injuries to several others. Although outnumbered by Maoists equipped with automatic weapons, these men with their indomitable courage and unparallel bravery kept enemy at bay. Their bravery of highest order in the face of the enemy inspired other team-mates also.

In this encounter S/Shri Kamal Kishore, Assistant Commandant, Hans Raj Singh Meena, Sub Inspector, Anil Kumar, Constable and Mithilesh Pal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/11/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 156-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Madan Lal Aakhey, Constable (Posthumously)

| | | |
|---|---|---|
| 02. | Amitava Mishra, Constable | (Posthumously) |
| 03. | Diganta Bayan, Constable | (Posthumously) |
| 04. | Dilip Kumar, Constable | (Posthumously) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

168 Bn of CRPF is deployed in Bijapur district of Chhattisgarh for anti-maoist operations and due to the continuous operations launched in the area the activities of maoists could be curtailed to a large extend. The frustration grew bitter when the population defied their diktat of boycotting the General Parliamentary elections and instead whole heartedly participated in the process. Due to the successful conduct of parliamentary elections, the maoists cadres came under great pressure from their higher formation. In an attempt to salvage their image and a need to organize a spectacular action which would re-enforce their authority through the media among the local population they planned and executed an ambush on a Road Opening Patrol of 168 Bn CRPF on 27/11/2013 near village Nukanpal, PS Modakpal, District Bijapur, Chhattisgarh.

On 27/11/2013, a Road Opening Patrol was sent out from the company base camp at Murkinar to secure the route up-to another company base at Cheramangi. The road passes through the jungle with thick vegetation and undulating terrain on both sides making it vulnerable to a sudden and surprise attack. As the Road Opening Patrol had crossed village Nukunpal, which was around 3.5 Kms from the Murkinar camp, the scouts namely Constable Diganta Bayan and Constable Dilip Kumar noticed some suspicious movement inside the jungle to their right. Immediately, they alerted the troops and moved cautiously towards the suspected persons. They were followed by the next buddy pair namely Constable Madan Lal Aakhey and Constable Amitava Mishra. The four brave troopers were moving surreptitiously towards the target but the suspects got whiff of the presence of the troops and ran deeper in the jungle. To nab the suspected Maoists, the four troopers followed and chased them. Hardly had the scouts moved 50 meters inside the jungle when a barrage of bullets came aimed at them. The scouts had a narrow escape as the bullets just missed their purported targets. The troop˙s immediately swung into action, retaliated to the fire and moved behind covers. The initial barrage of bullets wasn't the only surprise for the scouts but soon fierce and indiscriminate fire began coming at them. The fierce fire forced the troops at rear to stop their advance and the scouts at front soon realized that they are trapped in an ambush of maoists. While the scouts were planning to counter attack the maoists at front, the maoists hiding to their right and left also opened fire at them. The scouts soon realized that they are into a big trouble and the maoists would soon try to encircle them. In the meanwhile, another group of maoists opened fire at the main body of the Patrol and stopped them from advancing in support of the scouts.

To counter the encircling of maoists, the four brave troopers divided their arc of fire, chose their primary and secondary target and opened intense fire at the maoists. The initial retaliation of the troopers forced the maoists to stop their advance but the battle was highly skewed against the brave troopers as the whole company of the maoists was sitting in the ambush. Understanding the fact that it would be difficult to keep the maoists at bay for long and counter-attack is the only option to break the ambush, Constable Diganta Bayan and Constable Dilip Kumar opted to launch the assault at the maoists to their left while Constable Madan Lal Aakhey and Constable Amitava Mishra chose the maoists at right. The two buddy pairs crawled out of their secured positions and after coming face to face with the maoists opened intense fire at them. The bold and courageous assault resulted in injuries to some of the maoists but in this endeavour the brave troopers also received grievous bullet injuries. Taken aback by the ferocious assault, the maoists began detonating IEDs planted in defence of their ambush zone from the assault of the troopers. The blasting of IEDs forced the brave troopers to stop their assault and re-plan their strategy. The maoists when were beaten in their plan of inflicting heavy casualty to the troopers concentrated their fire at the scouts to tame their ferocious move. In support some more maoists who were firing at the body of the patrol also joined this group. Undeterred by the growing number of maoists and without caring for their pain and oozing blood, the four brave troopers kept firing at the maoists while changing their positions. But soon the injuries and loss of blood began to take the toll and the personnel began to lose their consciousness. Despite being in tactically disadvantageous positions and surrounded by the heavily armed maoists, the brave troopers fought till their last bullet or till they were conscious. They kept the maoists at bay fighting valiantly for the 45 minutes, until the re-enforcement reached there. As the re-enforcement arrived and attacked the maoists, the maoists fled deeper into the jungle carrying their injured and slain cadres. During the search of the area a number of bloody trails in the forest from where the maoists retreated were found revealing the fact that some of them had been hit badly by the fire of brave troopers. Large number of fired cases, live cartridges, pipe bombs, grenades etc. were also recovered from the ambush site.

With their guts and determination, Constable Diganta Bayan, Constable Dilip Kumar, Constable Madan Lal Aakhey and Constable Amitava Mishra not only kept a large group of maoist comprising of over 150 cadres at bay but also gunned down a maoist and inflicted injuries on several others. They showed great tactical acumen and bravery by firstly preventing the whole patrol party falling into the ambush zone of the maoists and then launching a brutal counter-assault at the entrenched maoists at the cost of their own lives.

Recoveries made :-

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | Live pipe Bomb | : | 01 No. |
| 2. | Used Pipe bomb | : | 02 Nos. |
| 3. | Grenade blind | : | 01 No. |
| 4. | battery switch | : | 01 No. |
| 5. | Electric wire | : | 500 Mtr (approx) |
| 6. | AK 47 EFC | : | 03 Nos. |
| 7. | 7.62 mm EFC | : | 04 Nos. |
| 8. | .303 EFC | : | 07 Nos. |
| 9. | .303 misfire Rds. | : | 05 Nos. |
| 10. | 12 bore EFC | : | 01 No. |
| 11. | 12 bore live Rds | : | 01 No. |

In this encounter S/Shri (Late) Madan Lal Aakhey, Constable, (Late) Amitava Mishra, Constable, (Late) Diganta Bayan, Constable and (Late) Dilip Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/11/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

———————

No. 157-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. P.K. Sethi,
Sub Inspector

02. Jayant Talukdar,
Constable

03. Sachin Kumar,
Constable

04. Satyam Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on an information about the movement of maoists in the forest adjoining villages Padeda and Savnar under PS Gangaloor, District Bijapur (Chhattisgarh), a joint operation by CRPF and State Police was launched on 27/06/2014. Special Action Team comprising of 25 personnel from CRPF and three teams of DRG (District Reserve Guards) from State Police participated in the operation. For a comprehensive search of the area these four teams were divided into two Strike Parties. Both the Strike Groups surreptitiously left the base camp Cherpal at the wee hours of the morning of 27/06/2014 and entered the target area.

Both the Strike Parties were moving parallel to each other and combing the jungle near village Savnar when the maoists perched at a height suddenly opened indiscriminate fire at the Strike Party which comprised one team each of SAT and DRG. The SAT leading the Strike Party and especially the scouts namely SI/GD P K Sethi, CT/GD Jayant Talukdar, CT/GD Sachin Kumar and CT/GD Satyam Kumar had a narrow escape of their lives as bullets just missed them by a whisker. The troops were well prepared for such a sudden and surprise attack and thus without losing any of the precious moment flung into action and retaliated with full intensity. A fierce encounter at a close distance ensued. The situation was

highly skewed in favour of the maoists as they were holding tactically advantageous positions and were thus thwarting every attempt of the troops to launch a counter attack.

Being aware of maoists tactics of encircling the troops by taking advantage of familiarity of terrain and dense jungle, SI/GD P K Sethi pre-empted his move and instead launched a flanking attack himself. At first he ordered his troops to fire fiercely at the maoists which forced the maoists to pin down for a moment. Taking advantage of this small window of opportunity and without giving a second thought to their safety SI/GD P K Sethi, CT/GD Jayant Talukdar, CT/GD Sachin Kumar and CT/GD Satyam Kumar came out of their covers and moved close to the flank of the well entrenched enemy. Before the maoists could regain the stock of the situation, these brave troopers rained bullets on them from close quarter. This setback to the maoist spread panic in their ranks and they began to retreat; however some of the maoists who were safely entrenched behind secured covers still held the ground and fired intensely at these brave troopers. Though the formidable attack by the troopers in the face of grave risk had breached the defence of the maoists but the fire from some of the well entrenched maoists was hindering the further advance of the troops. Taking the responsibility of silencing the guns of the enemy, the four dare-devils again in a rare show of bravery moved out of their covers and launched a concentrated fire at one of the holed maoists. Their concentrated fire resulted in killing of the maoist. Shaken by the audacity of the troops and finding it hard to sustain the onslaught anymore, the maoists fled from the encounter site leaving behind the dead body of one of the cadres alongwith arms and ammunition.

Recoveries made :-

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | .315 Bharmar Rifle | : | 01 No. |
| 2. | Detonator | : | 01 No. |
| 3. | Empty cases | : | 03 Nos. |
| 4. | Empty cases of .305 bore | : | 01 No. |

In this encounter S/Shri P.K. Sethi, Sub Inspector, Jayant Talukdar, Constable, Sachin Kumar, Constable and Satyam Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/06/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 158-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri.

01. Md. Nehal Alam, (Posthumously)
Assistant Commandant

02. Adit Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20/7/2013, after getting reliable information regarding the presence of armed Maoists in village Koliaguda, U/PS Bheji, District Sukma (Chhatisgarh), a joint CASO was planned and launched from Bheji by the troops of D/219, F/219, 202 CoBRA and State Police at about 2330 hours.

Since it was totally a hostile territory and core area of Maoists, four teams were formed which moved in mutual support and coordination. Each team was under the command of an officer and Shri Mohammad Nehal Alam, AC, led the team of D/219 from the front in that challenging operation while CT/GD Adit Kumar performed the duty of Scout. The inclement weather with intermittent rain had turned the terrain inhospitable. But the troops braved the circumstance even when negotiating the Nala near village Elarmadgu posed a serious challenge because of heavy water flow. Fighting all odd, troops reached to their target and conducted search of the area. As contact with maoists was not made, the troops then planned their withdrawal from the area.

Withdrawing from a hostile territory is always fraught with the danger of getting ambushed due to the exposure of the movement of troops. To avert any such move of the maoists the teams moved in parallel and gave flanking support to

each other. But crossing the Nala near village Elarmadgu was another challenge the troops had to face because of heavy stream and a perfect place for the maoists to lay an ambush. To counter the ambush, if any, Shri Mohammad Nehal Alam decided, knowing the imminent threat, that at first his team would cross the Nala and only after he had sanitized the area across the stream than the other teams would follow. But the experience of the previous operations and sound knowledge of tactics made it evident to him that the ford could be prone to a maoist ambush and thus he surreptitiously took his team 300 meters south of it and crossed the Nala.

Thereafter he moved ahead to sanitize the area around the ford but as he inched closer to it, the maoists got whiff of their presence and opened heavy fire at the troops. It was an ambush. A quick assessment of the area and fire made it clear that about 40-50 maoists had laid an ambush on the troopers in order to kill them and loot their weapons. The troops in the front mainly Team Commander Shri Mohammad Nehal Alam and Constable Adit Kumar knew that they were up against a safely pitched enemy but to it's flank. Merely firing in retaliation was not the option that these brave troopers choose and in a glaring act of raw valour, fired with their full capacity and continued the advance towards the maoists without caring for their personal safety. The troops advanced using tactics of fire and move and moved closer to the maoists. On facing the unflinching determination and courage of the troops the maoists intensified their fire in a bid to escape from the area.

But the Commander had decided to face the challenge of the maoists upfront when he along with Ct Adit Kumar crawled under the raining bullets unmindful of their personal safety and directed their fire on moaists after getting a suitable vantage point. This directed fire yielded results and a uniformed maoist was gunned down. This spread panic among the maoists who recklessly started fleeing from the area. The troops continued to fire at the maoists and skipped them from taking away the dead body of the killed maoist.

After the firing stopped, the area was thoroughly searched in which dead body of a uniformed maoist was found with one .303 rifle, 10 live rounds of .303, 5 handmade rounds, 5 rounds of AK-47, 5 rounds of SLR and 5 filling charger clips. Huge amount of blood and blood stains were also noticed in the encounter site suggesting that many more maoists had sustained injuries in the encounter.

During the operation, Shri Mohammad Nehal Alam, Asst. Comdt. and Constable Adit Kumar, despite grave threat to their lives, advanced towards the maoists positions and counter attacked the maoists thereby inflicting heavy loss on them. Unmindful of their own safety and security they exhibited nerve of steel under the life threatening situation and displayed highest degree of courage, gallant and devotion to duty.

In this encounter S/Shri (Late) Md. Nehal Alam, Assistant Commandant and Adit Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/07/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 159-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Satish Kumar,
Second-in-Command

02. Rakesh Kumar Mishra,
Dy. Commandant

03. S Karunakaran,
Constable

04. Mukhtiyar Ahmed Khan,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Krishna Ahir @ Prasad Jee, member of Jharkhand Regional Committee of CPI (Maoist), had been eluding Police and Security Forces for last 15 years and was wanted in more than 50 criminal cases registered against him in more than five

districts of Jharkhand and Odisha. He remained a prominent face of CPI (Maoist) propagating red terror and is responsible for scores of security personnel killings in the region. His expertise in making IEDs and laying deadly ambushes made him the most dreaded maoist of Jharkhand forcing the government to announce an award of 20 lacs on him. He rose to fame in the maoist circle when he executed an ambush on a police party returning from an operation on 10 June 2009. In this ambush, 9 police personnel lost their lives.

Shri Satish Kumar, 2nd in Command, since his joining the 133 battalion CRPF deployed in Ranchi district of Jharkhand had been tracking every movement of this dreaded maoist. His efforts bore fruits on 12/08/2014 when he got specific information from his own source about the presence of Krishna Ahir @ Prasad Jee in the forest area adjacent to villages Hapedag and Barwadag under PS Angara, Distt: Ranchi along with 15-20 other cadres. Without wasting any of the precious moments, he embarked on a mission and launched an operation codenamed "Drone" along with State Police. As he did not want to lose the opportunity that had stricken after a protracted surveillance so he formed four teams of which three were assigned the task of cordoning the target area. The fourth team was led by him to conduct massive search of the area.

His teams left the base camp at 1900 hrs on 12/8/2014 for their respective targets. The Strike team under command Sh. Satish Kumar made stealth movement through forest and undulated ground and reached at the target area by 0345 hrs. For better command, control and effective search, he tactically divided the strike team into two groups i.e. one group under his own command which had Sh. Rakesh Kumar Mishra, Dy. Comdt. and his QAT and the second group under command Sh. S K Jha, SP Rural. At about 0510 hrs. on 13/8/2014, as the Strike Team was combing towards a hillock, CT/GD S. Karunakaran and CT/GD Mukhtiyar Ahmed noticed some suspected movement at the top of it. They immediately alerted the team and suspecting them to be maoists, Shri Satish Kumar planned a strategy to move ahead from two directions instead of one. Sh. S K Jha, SP, was given the responsibility to advance from the front while he led his group to move to the rear of the suspected maoists positions. But hardly had he moved some 50 meters ahead, the maoists noticed their presence and opened heavy fire at them. Both the groups came under intense fire of the maoists. The preemptive move of the maoists had foiled the plan of the Commander but knowing the fact that the maoist commander i.e Krishna Ahir would be the first to flee under supportive fire of junior cadres he told Sh. S K Jha, SP to keep the maoists engaged and he hurried his advance towards the rear. As the movement with big group had the danger of exposure, he daringly selected Shri Rakesh Kumar Mishra, Dy. Comdt., Constable S Karunakaran and Constable Mukhtiyar Ahmed and embarked on an impossible looking mission with handful of troopers while ordering rest of his group members to keep the maoists engaged. Without caring for the bullets being fired at them, the four dare-devils surreptitiously slipped out of their covers and moved towards the rear.

By the time this small group reached closer to the maoists positions, the maoists were in a mode to retreat and hence a few of them were firing incessantly while others were slowly retreating. To access the maoists fortified by these few heavily firing maoists, it became imperative that their attention needed a diversion. To accomplish this, Ct Karunakaran and Ct Mukhtiyar Ahmed in a brave act came out of their covers and fired heavily on the maoists. To ward-off this new attack the maoists diverted their fire on the two. At this precise moment Sh Satish Kumar and Sh Rakesh Kumar Mishra slipped from their positions and took trail of the withdrawing maoists. As the duo chased the group of maoists and inched closer to them they attracted the attention of maoists only to be fired upon. The duo retaliated with vigour and pinned the maoists down. From the gestures and move of Maoists, the duo identified their leader and rained bullets on him. This rain of bullets scattered the group. Meanwhile Ct Karunakaran and Ct Mukhtiyar Ahmed also joined the chase. Due to effective firing by the four, the small group of maoists could not unite and the troops kept making their advance undaunted by the dangers that loomed. The heavy fire of the troops forced the maoists to flee in the available direction. When the leader tried to flee the four brave troopers encircled him and an intermittent exchange of fire took place. To end this encounter the troops made an ingenious plan. While two of the brave troopers kept the maoist engaged the other two moved from different directions and overpowered him and snatched his weapon in the rare act of raw courage and bravery. On spot interrogation the apprehended maoist was identified as Krishna Ahir @ "Prasad Jee" and following 'arms and ammunition were' recovered from his possession:-

(1)AK-47 rifle with magazine and one round loaded in chamber, (2)Black and Khaki Pithu with plastic sheet cover (3)Black combat dress, (4)Detonator, (5) 49 rounds of ammunitions, (6)Cash Rs 24,500/- and Other daily use items.

The operation was planned and executed in a surgical manner wherein a top ranked rnaoist leader was apprehended without suffering of any loss by the troops.

In this encounter S/Shri Satish Kumar, Second-in-Command, Rakesh Kumar Mishra, Dy. Commandant, S Karunakaran, Constable and Mukhtiyar Ahmed Khan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 160-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. G. S. Bhandari,
Assistant Commandant

02. Sanjay Kumar,
Assistant Commandant

03. K. Shashikant,
Constable

04. Dharmendra Kumar Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An intelligence input was received by the State Police about the movement of Nitish Kumar Yadav @ Atin @ Mantri Ji (Sub Zonal Secretary of Simdega Sub Zone of CPI Maoist) along with other members of dasta in the general area of villages Keorkatta, Sanaidih and Kanrebera under PS-Palkot, Distt- Gumla (Jharkhand). Based on the information, an operation codenamed "Mars Spear-24" was Planned and launched by joint troops of 218 Bn CRPF and State Police. The joint party which consisted Quick Action Team of 218 Bn CRPF under the command of Shri G S Bhandari, Asst. Commandant and Shri Sanjay Kumar, Asst. Commandant and the Special Action Team of State Police under the command of Shri Pawan Kumar Singh, ASP (Ops), Gumla surreptitiously moved out of the base camp on 23/02/2016 at 0200 hrs in vehicles and de-boarded the vehicles at a secluded place near village Pithatoli. From there, the joint team navigated tactically negotiating the rough terrain under pitch darkness and reached to the vicinity of their first target i.e. village Keorkatta, which was the most likely place to be used by the maoists for shelter. The troops tactically cordoned the village and conducted the search before first light but the maoists were not present in the village. Thereafter, the troops moved to their second target i.e., Village Sanaidih but again the maoists could not be traced. Without losing hearts for not making the contact with the maoists, the troops embarked on another mission i.e., to conduct search of village Kanrebera. Traversing through the thick forest and keeping their movement a surprise, the troops reached at village Kanrebera by 1100 hrs and laid a cordon around it. As the search party which comprised of the Commanders and their buddies was getting ready to launch the search, it noticed a motorcycle coming towards the village. Immediately the search party members moved towards the road but before they could position themselves and cover the road, the man sitting pillion noticed their movement and instantly opened fire at the troops. Thereafter that man jumped from the running vehicle, took position behind a boulder and again fired at the troops to stop their movement and make good his escape. The search party consisting of mainly Sh. Pawan Kumar Singh, Addl SP (OPS), Sh. G.S.Bhandari, Asstt. Comdt., Sh. Sanjay Kumar, Asstt. Comdt., Inspector J.S. Murmu (State Police), CT/GD Dharmendra Kumar Singh and CT/GD K. Shashikant had a narrow escape as the bullets just missed the target. But without getting scared of the life threatening situation, where fierce fire was coming at them, the search party retaliated but in controlled manner due to the presence of villagers in the vicinity.

Emboldened by the controlled fire of the Search Party, the maoist rained heavy bullets at them to further pin them down and flee towards the jungle. But his presumption was instantly proved wrong by the Search Party as it immediately got divided into two and crawled towards the maoist position ignoring the bullets which whizzed passed by them. Sh. G.S. Bhandari, Asstt. Comdt., Insp J.S. Murmu (State Police), CT/GD Dharmendra Kumar Singh and CT/GD K. Shashi Kant moved from the left flank while Addl. SP (OPS) Sh. Pawan Kumar Singh along with Sh. Sanjay Kumar, Asstt. Comdt., HC Saroj and Ct Sunil Kumar Rai (both from State Police) moved from the right flank. Failing to stop the advance of the brave troops, the maoist then lobbed a grenade and ran towards the jungle while firing aimlessly at the troops. Seeing the fleeing maoist, Sh. G S Bhandari, Asst. Comdt., Insp J. S. Murmu (State Police), Ct Dharmendra Kumar Singh and Ct K Shashikant moved out of their covers and chased him. The maoist seeing that he was still being followed, opened a burst fire aiming at the following troops but ignoring the fire, the brave troops retaliated and hit the maoist. The maoist fell down but even after getting injured he positioned himself behind a tree and kept firing at the troops. As the troops under command Sh. G S Bhandari, Asst. Comdt. were in direct line of the fire of the maoist and were finding it difficult to move ahead, the second group which comprised Addl SP (OPS) Sh. Pawan Kumar Singh, Sh. Sanjay Kumar, Asstt. Comdt., HC Saroj and Ct Sunil Kumar Rai (both from State Police) moved ahead taking a circular route and fired at the maoist. The joint fire from the two directions resulted in the killing of the maoist.

During the search of the area troops recovered dead body of a maoist which was later identified as of Nitish Kumar Yadav @ Atin @ Mantri Ji (Sub Zonal Secretary, Simdega Sub Zone of CPI [Maoist]) along with one loaded 9 mm carbine,

one 9 mm loaded pistol, 66 rounds of ammunition, cash Rs 2,00,000/-, nine mobiles with 12 SIM cards, three levy collection books and one American Tourister Bag containing maoist literature and daily use items. The killing of the dreaded maoist dented the morale of the CPI (Maoist) faction in the area.

In this encounter, S/Shri G. S. Bhandari, Assistant Commandant, Sanjay Kumar, Assistant Commandant, K. Shashikant, Constable and Dharmendra Kumar Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/02/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 161-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Abhishek Chaudhary,
Assistant Commandant

02. Shinde Manoj Gorakh,
Constable

03. Kohok Adinath Gulab,
Constable

4. Sanjeet Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On getting specific intelligence input about presence of PLFI Zonal Commander Ashisan Soy along with other cadres in the general area of villages Bagri and Parasu under PS Arki, Distt: Khunti, Jharkhand, an inter-battalion operation was launched which comprised troops of 157 Bn CRPF, 94 Bn CRPF and State Police. Three teams were formed and separate area for combing was given to each team i.e. Team No. 1 comprising troops of 157 Bn, Team No. 2 comprising troops of 94 Bn and Team No. 3 comprising troops of State Police. Team No. 1 was given the area falling between villages Korwa and Parasu. To strike the target in the early hours, Team No. 1 under command Shri Abhishek Chaudhary, Assistant Commandant, moved in the wee hours of the morning of 28 August 2015 under cover of darkness. As the team was heading towards the target area through forest and hilly terrain, an intelligence input was again received by Shri Abhishek Chaudhary, Assistant Commandant informing, the presence of maoists near village Madhatu. He immediately reshaped his strategy after analyzing the terrain around the village on map. The village was located at the base of a hill and surrounded with thick jungle from three sides. The hill seemed to be a perfect tactical place for hiding. As part of operational strategy, Sh. Abhishek Chaudhary, Asst. Comdt. divided his team into two and sent one of the groups to lay cut-off on the route connecting the village to the hill. While he himself led the second group and advanced towards the hilltop with complete stealth and secrecy. Moving uphill with the possibility of presence of enemy at the top was always fraught with danger and involved risk of life. Nevertheless, Sh. Abhishek Chaudhary, Asst. Comdt. moved ahead with CT/GD Shinde Manoj Gorakh, CT/GD Kohok Adinath Gulab and CT/GD Sanjeet Singh forming the scout while the other team members followed. As the team reached close to the hilltop, the maoists positioned behind secured covers opened indiscriminate fire on them. The commander and his troops were prepared for such a surprise attack and without caring for the flying bullets retaliated while moving tactically towards the enemy in a bold and courageous manner. The scouts displayed utter disregard to their personal safety as they advanced using tactics of fire and move to launch a final assault. Facing the brave and bold onslaught of the scouts, the maoists blasted a series of IEDs planted in their defence and lobbed successive grenades. The multiple blasts forced the troops to halt and taking the advantage maoists began to slip from the area one by one. The commander did not want to lose the opportunity which had come after tracking the movement of maoists for over a month. To prevent their escape he threw all precautions in air and moved out of his cover to fire from standing position. Following their commander's bravery the other team members too moved out and launched a ferocious attack at the maoists.

The heavy volume of fire forced the maoists to duck behind covers and taking the advantage Sh. Abhishek Chaudhary, Asst. Comdt., CT/GD Shinde Manoj Gorakh, CT/GD Kohok Adinath Gulab and CT/GD Sanjeet Singh moved

ahead under supportive fire of other team members. On reaching closer they noticed two maoists incessantly firing at their direction from behind a tree. Without losing precious time the brave troopers gunned down one of them with their accurate and aimed fire. Seeing the fate of one of their cadres most of the maoists hurried their withdrawal while some still stood to stop the advance of troops. After gunning down one of the two maoists entrenched behind the tree, Sh. Abhishek Chaudahry, Asst. Comdt. took along Constable Shinde Manoj Gorakh and they crawled to their left to gain an appropriate angle for fire. Meanwhile Constable Kohok Adinath Gulab and Constable Sanjeet Singh engaged the maoist and did not give him an opportunity to flee from the area. With their precise fire the commander and his buddy neutralized the second maoist also. After gunning down the two maoists the troops moved ahead and chased the fleeing maoists but they managed to escape taking the advantage of hilly terrain, dense jungle and pre-decided escape routes.

During the search of the area dead bodies of two dreaded PLFI commanders namely Ashisan Soy (Zonal Commander-East Chota Nagpur Zone) and Sanika Purty (Area Commander) was recovered along with recovery of one AK 47 Rifle, two .315 Rifles, three magazines, 40 rounds of ammunition, 7 mobile phones, 12 SIM cards, 1 binocular, mobile accessories, Rs. 34,581/- , combat uniform, maoist literature and other daily used items.

It was because of the indomitable courage displayed by Shri Abhishek Chaudhary, Assistant Commandant, CT/GD Shinde Manoj Gorakh, CT/GD Kohok Adinath Gulab and CT/GD Sanjeet Singh during the encounter that the maoists failed to inflict any loss on the troops despite being in fortified positions. Their raw courage, unparallel bravery and tactical acumen not only resulted in neutralization of two dreaded PLFI commanders but have also set an example of successful small team operation.

In this encounter S/Shri Abhishek Chaudhary, Assistant Commandant, Shinde Manoj Gorakh, Constable, Kohok Adinath Gulab, Constable and Sanjeet Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/08/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 162-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Devendra Singh Kaswa,
Dy. Commandant

02. Rajendra Prasad Raigar,
Assistant Commandant

03. Kumar Brajesh,
Assistant Commandant

04. Azad Singh,
Inspector

05. Suva Lal Koke,
Head Constable

06. Chellathurai Murugan,
Constable

07. Raja Imba Kumar,
Constable

08. Dula Ram,
Constbale

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on an intelligence input regarding presence of top CPI(Maoist) leaders led by Arvind Ji, Kishan da alongwith their 250-300 active dasta members conducting a meeting in the dense forest near village Sibil and Saksari, under PS-Chainpur, Distt-Gumla (Jharkhand) for planning to undertake some subversive activities, a special Ops "Vijay" was planned on 12/3/2013 with an objective to search and annihilate Naxal camps near village Sibil under PS Chainpur, Gumla(Jharkhand). 18 specialized teams each of 203 and 209 CoBRA, 04 Assault Group of Jharkhand Jaguar alongwith adequate number of civil police components were involved for the operation.

As per operation plan, STRIKE-01 comprised six(06) teams of 203 CoBRA, STRIKE-02, comprised six team of 209 CoBRA & two AGs of J, RESERVE-1, comprised four teams of 209 CoBRA along with 01 AG of JJ & RESERVE-02, comprised 04 teams of 203 CoBRA under overall command of Shri P.S. Dharmshaktu, Comdt.209 CoBRA were formed.

On 13/3/2013, the troops reached to the respective targets at 0300 hrs. Strike-I of 203 Cobra was assigned the task to seek and destroy naxal Camps in the area where top Maoist leaders Arvind Ji and Kisan Da were reportedly camping along with their 250-300 hard core PLGA cadres to hold the meeting. Shri D.S. Kaswa, DC of 203 was in the lead with his team. When strike party reached at height-974, they found a naxal Camp having 50-60 morchas made up of boulders/ stones and wooden logs. Strike-I immediately secured the area. At about 1315 hrs when the Strike-I was searching the hilly forested area between village Sibil and Saskari, they came to know that rear party (AG-16 of JJ) was ambushed by Naxals. Shri D.S. Kaswa, DC who was in the lead, on getting information regarding ambush on rear party and injury of two JJ, moved amidst heavy firing and blasts, towards the rear party along with Sh P.V.Tiwari and few selected personnel for reinforcement/rescue. Position of naxals and their strength was unknown and it was very difficult and there was life threatening situation in reinforcing the rear party. But without caring for their personal safety, Shri D.S. Kaswa, DC and CT/GD Dula Ram moved tactically towards the ambushed party crawling amidst heavy firing by Naxals. CT/GD Dula Ram immediately fired few UBGL and simultaneously Shri Kaswa and other personnel fired heavily on the naxals who were also firing heavily on the reinforcement party. In this offensive action, four naxals were seen falling down and for a while naxal fire was stopped. Highest order of leadership and irrepressible courage and determination by Sh Kaswa and CT/GD Dula Ram forced the naxals to retreat. They managed to get the two injured personnel to safer location. On taking account of JJ personnel, it was established one more CT of JJ Manga Baxla was missing. Then again Shri Kaswa with support of his team advanced towards the area where the firing was being done by Naxals. Again Naxals started firing on men supplemented by IED explosion. Taking highest degrees of risk to life Shri Kaswa and CT Dula Ram showed highest degree of bravery and managed to bring body of Constable Manoj Baxla who was carrying 81 MM Mortar and 51 MM Mortar HE bombs. In this fight, they killed one Naxal who was firing from about 25 mtrs. After evacuating the dead body of CT Manoj Baxla to a secured place, they again attempted amidst heavy firing to recover dead body of killed Naxal, as it had already started to get down in the evening. They took up with remaining strike party with intention to retrieve dead body of killed Naxal early morning next day. Around 2030 hrs Naxals attacked the strike party from all directions which was repulsed effectively. At around 2330 hrs firing from Naxals stopped as they could not dent the morale of security forces, who fought gallantly entering the den and tactfully retaliated on any attempt to cause damage.

Next day on 14/03/2013 at about 0700 hrs, the Comdt 209 CoBRA alongwith troops of 209 CoBRA which was placed at strategic height (point 999) moved in to open the route for safe recovery of dead body of the martyr and evacuation of injured JJ personnel. At the time of evacuation, the naxals again opened fire and engaged troops of 209 CoBRA. Sh Rajendra Prasad Raigar, AC of 209 Bn was leading his team. When his team was advancing towards height 974, the team came under heavy fire from the Maoist holding stronghold on the hillocks all around. The Naxals were in advantageous position to repel any kind of attack and assault. They also triggered almost 15-20 IEDs simultaneously to inflict casualties on the security forces and to deter their morale and determination. Retaliating immediately to the situation, Shri Raigar directed his team to take cover and retaliated with flat trajectory as well as area weapons. Sh Raigar tactically spread his team and directed them to advance towards the hillock. During close quarter battle, the officer sustained bullet injury on his middle finger of left hand and splinter injury on chin. Despite injuries, the officer showed highest degree of leadership and courage and directed Insp/GD Azad Singh to provide back up. Accordingly, Insp/GD Azad Singh alongwith HC/GD Suva Lal Koke of 209 CoBRA covered the left flank. Both of them took risk of their lives and mounted heavy assault on the enemy in position with grenades. The cohesion of combined action by Insp/GD Azad Singh and HC/GD Suva Lal Koke resulted in destruction of the Morcha from they were being targeted. Some Naxals were badly injured and amidst heavy firing and explosion of IEDs they managed to retreat.

Meanwhile, Shri Kumar Brajesh, AC of 209 Bn realized the attack on front party and decided to move ahead alongwith his buddy to provide support. Sh Kumar Brajesh used his technical know-how and spotted a series of IEDs planted on the approach to the Morchas held by Maoists. By effective use of hand grenade he forced the Naxals holding the Morchas to flee and conquered their Morcha where he found a dynamo connected for triggering a series of IEDs. After careful examination of IEDs and placing troops under cover, he triggered 20 claymore and 15 land mines and cleared the area. The operational acumen and bravery of Shri Kumar Brajesh saved many precious lives.

CT/GD C. Murugan was associated with team No. 4 under command Insp/GD Azad Singh and was advancing as Scout at 4th position. When firing from Naxals with automatic weapons posed stiff opposition and stalled advancing of troops, CT/GD C.Murugan with utter disregard to his personal safety, charged at the Maoists and took the team to an advantageous position despite coming under hail of bullets being fired by Maoists. This daredevil act of CT/GD C.Murugan provided critical firm base for the troops. Fighting valiantly, he fired 36 rounds from his AK 47 and 4 shells from UBGL and foiled the nefarious motive of naxals.

In this operation, role of CT/GD R.Imba Kumar of 209(Team No.16) was also remarkable. He advanced towards the hillock; under cover and retaliated to heavy firing from the naxals. In the hail of bullets, he without caring for his personal safety, fired 27 rds from his AK 47 while charging at the Maoists.

203 Strike teams also advanced towards that encounter side from the other directions and firing heavily on Naxal position with small arms and UBGL. Naxals came on fire from both the directions which forced them to flee the area.

After the firing stopped at 1330 hrs, the place of encounter was searched thoroughly by troops. Blood stains & IEDs/claymore mines were found all over the area. More than 70-80 IED claymore Mines were destroyed and the injured were evacuated to the safe ground (Height 999). Helicopter was requisitioned and all the injured/dead body was evacuated to Ranchi by Chopper. Since Naxals had already left the area, troops de-inducted after an extremely successful operation late in the night.

The entire operation was executed in an exemplary manner which is an epitome in the annals of successful operations. This successful operation has elevated the morale of security personnel and will continue to inspire the generation to come. The lead, support, cohesion and tandem were splendidly designed and executed to write another saga of success. The naxals who were in advantageous and well fortified position were repelled and compelled to abandon their well established camp. They escaped from their location leaving behind good quantity of explosives and other belongings. The operation inflicted an unprecedented calamity on the morale of naxals.

Recoveries made :-

Cordex wire-40 mts,

Electric detonator-03 Nos,

Wrought iron hand grenades (country made)-15 Nos,

Electric wire 100 mtrs

Liquid in container of 15 ltr capacity.

Land Mines 05 Cane Bomb 02 Kgs weight & 05 Cane Bombs 10 Kgs weight.

In this encounter S/Shri Devendra Singh Kaswa, Dy. Commandant, Rajendra Prasad Raigar, Assistant Commandant, Kumar Brajesh, Assistant Commandant, Azad Singh, Inspector, Suva Lal Koke, Head Constable, Chellathurai Murugan, Constable, Raja Imba Kumar, Constable and Dula Ram, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/03/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 163-Pres/2016—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

| | | |
|---|---|---|
| 01. | Subhash Chandra,<br>Inspector | (PPMG) |
| 02. | Virender Singh,<br>Head Constable | (PPMG) |
| 03. | Sunil Bisht,<br>Constable | (PPMG) |

| | | |
|---|---|---|
| 04. | Sandip Ghosh,<br>Constable | (PMG) |
| 05. | Harinandan Gururani,<br>Constable | (PMG) |
| 06. | Satish Kumar,<br>Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

Insp/GD Subhash Chandra, HC/GD Virender Singh, CT/GD Sunil Bisht, CT/GD Sandip Ghosh, CT/GD Harinandan Gururani and CT/BB Satish Kumar, the qualified commandos, were selected for the sensitive and important assignment of security of Consulate General of India (CGI) at Mazar-e-Sharif in Afghanistan.

On 3rd January, 2016, at around 2028 hours, a group of armed Fidayeens attacked the CGI, Mazar-e-Sharif with Rocket Propelled Grenades (RPGs) followed by heavy brust fire from automatic weapons. The Guard Commander and sentries on duty, HC/GD Virender Singh, CT/GD Sunil Bisht, CT/GD Sandip Ghosh and CT/GD Harinandan Gururani immediately retaliated fire with their automatic weapons and alerted post commander and other troops. CT/BB Satish Kumar acted as reinforcement (who manoeuvred himself into firing position).

At about 2030 hrs, Insp/GD Subhash Chandra not only reached the Sentry Post which was directly under attack but also directed his deputy to evacuate CG and other Consulate staff to the safe house. The group of Fidayeens tried to breach the boundary wall and main gate by resorting to heavy Gun fire and Grenade lobbing, but HC/GD Virender Singh, CT/GD Sunil Bisht, CT/GD Sandip Ghosh, CT/GD Harinandan Gururani and CT/BB Satish Kumar under direct command of Post commander Insp/GD Subhash Chandra (who manoeuvred himself into position)displayed conspicuous act of gallantry, valour and grit in the face of dreaded terrorist attack; shifted their positions and with their precise shooting skills, fired on the group of Fidayeens which resulted into killing and injuring of one Fidayeen each and amongst four determined and dreaded hardcore Fidayeens. Such a quick and vigilant action from the post, forced the remaining Fidayeens to retreat to safer place, this timely act of bravery by ITBP men, thwarted the plan of Fidayeens to take hostage of Consulate General and the staff.

The vigilant and quick reaction shown by HC/GD Virender Singh, CT/GD Sunil Bisht, CT/GD Sandip Ghosh, CT/GD Harinandan Gururani, CT/BB Satish Kumar and exemplary command of Insp/GD Subhash Chandra with total disregard to their own safety and braving intense hostile gun and rocket fire; resulted in elimination and injury to terrorists and compelled other Fidayeens to run for shelter in adjacent buildings. By that time, Afghan Forces (QRF) arrived and engaged attacking terrorist by surrounding the building. The encounter continued till 042145 Hrs. In a joint Combing operation by Afghan Quick Reaction Forces and support fire by ITBP, remaining Fidayeens were also eliminated.

In the entire operation, Insp/GD Subhash Chandra, HC/GD Virender Singh, CT/GD Sunil Bisht, CT/GD Sandip Ghosh, CT/GD Harinandan Gururani and CT/BB Satish Kumar showed conspicuous act of bravery by killing one Fidayeen and inflicting fatal injuries to another; thus preventing the other terrorists from entering into CGI premises there by averting a severe mishap. The quick decision making, precise sharp shooting skills and the astute courage and combat resoluteness in highly risky anti terror combat operation demonstrated by above mentioned "Six Himveers" speaks about the highest level of bravery and true professionalism

In this encounter, S/Shri Subhash Chandra, Inspector, Virender Singh, Head Constable, Sunil Bisht, Constable, Sandip Ghosh, Constable, Harinandan Gururani, Constable and Satish Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/01/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 164-Pres/2016—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Dinesh Sharma,
Inspector

02. Mohardhwaj,
Head Constable

03. Ravindra Singh,
Constable

04. Bhoopendra Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

INSP/GD Dinesh Sharma, HC/GD Mohardhwaj, CT/GD Ravindra Singh and CT/GD Bhoopendra Singh, the qualified commandos, were selected for the sensitive and important assignment of security of Consulate General of India (CGI) at Jalalabad in Afghanistan.

On 02 March 2016, at around 1158 hours, a group of armed Fidayeens attacked the CGI, Jalalabad by Firstly detonating explosive laden car (VVIED) and then resorting on heavy gun fire and lobbing of grenades, they try to overrun ANP post established for the security of Consulate. At the time of explosion of VVIED which happened right in front of sentry post in which HC/GD Mohardhwaj was performing his sentry duly. He immediately alerted post commander and other troops and exercised exemplary fire discipline and valour by not retaliating with in-discriminatory fire. His post came under direct line of fire but he demonstrated exemplary courage and held his post till the end of enraged fight between attacking Fidayeens and ANSF (QRF). Insp/GD Dinesh Sharma immediately along with his team of CT/GD Ravindra Singh and CT/GD Bhoopendra Singh rushed towards main gate and sealed it from inside. After then, he and his team evacuated CG and his civil staff safely to (inside safe room). This all was done by the team of Insp/GD Dinesh Sharma, CT/GD Ravindra Singh and CT/GD Bhoopendra Singh in a very swift manner and at the time when the compound of CGI were attacked by lobbing of Grenades, falling of stray bullet and amidst rain of splinters from VVIED explosion. After that, he along with his team rushed to a vintage point which (incidentally) was a makeshift, morcha of sand bags and from there he and his team responded against attacking terrorists. The party of three exercised exemplary fire discipline and valour by not retaliating with in-discriminatory fire (which is common in such situation) otherwise such; action would have definitely invited collateral loss to the friendly force/ANP. Make shift morcha came under direct line of fire but the "Himaveers" demonstrated exemplary courage and held the morcha till the end of enraged combat/firing between attacking Fidayeens and ANSF (QRF).

Insp/GD Dinesh Sharma, HC/GD Mohardhawaj, CT/GD Ravinder Singh and CT/GD Bhoopendra Singh displayed conspicuous act of Chivalry, valour and grit in the face of dreaded terrorist attack. The vigilante and valiant action shown by Insp/GD Dinesh Sharma, HC/GD Mohardhwaj, CT/GD Ravindra Singh and CT/GD Bhoopendra Singh, with total disregard to their own safety and braving intense hostile gun and rocket fire, displayed conspicuous bravery, astute courage and exemplary professionalism which saved the lives of Consulate General of India, Jalalabad and its staff.

Recovery: AK- 47- 4 Nos. Magazines- 14 Nos. 9 mm pistol-02 Nos, Loaded Magazines- 04, Bayonet-04 Nos. Shape Charges, Grenades-16, Suicidal vest-01 ( in the custody of ANSF.)

In this encounter S/Shri Dinesh Sharma, Inspector, Mohardhwaj, Head Constable, Ravindra Singh, Constable and Bhoopendra Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/03/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 165-Pres/2016—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Ministry of Home Affairs:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Chandra Sen Singh,
ACIO-II

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Chandra Sen Singh joined Intelligence Bureau as ACIO-II/G in 1995. He was posted at Kargil check post in the year 1999. During his posting there, he was extremely effective in generating intelligence through his sources. He had

informed the higher formations, in advance, about infiltration by Pakistan Army in Kargil Sector. Subsequently, he was also instrumental in providing actual locations about infiltrations of Pakistan Army in Kargil sector. This information was generated by the officer at grave risk to his life by trekking along the inhospitable and dangerous border, to see with his own eyes, the presence of infiltrators and the areas captured by them. On contact of senior formations, he repeatedly recceed the area on foot and was also able to extract the exact number of infiltrators and the total area of intrusion. The information thus gathered about which the Indian Army at that point of time, was unaware, greatly helped the government to calibrate its response. The continuous act of bravery by the officer continued and he faced intensive and repeated shelling from Pakistan side, while the Indian Army was yet to move in for counter action. The check post was repeatedly shelled and reduced to a rubble. He was the lone Indian officer present at the border, observing the border during repeated shelling despite the fact that the whole infrastructure of the outpost along with his personal belongings was totally damaged. Extracting a wireless set, Shri Singh, along with Shri Mastan Singh, Security Assistant shifted to a makeshift bunker but did not retreat from his place of duty, which reflects his high sense of duty with regard to the nation. All other government officials retreat from their post at this point of time, while Shri Singh was the sole point of contact for the whole country and security establishments, vis-a-vis the Kargil war, and was communicating from the extracted wireless set from a makeshift bunker. The shelling from Pak troops resulted in damage of all ration store and petrol available and hence Shri Chandra Sen Singh along with Mastan Singh, stayed for 18 days on limited ration of rice and nothing else, not even salt. Despite all adversity, he kept his morale high and remained in touch with higher formations. Repeated shelling had brought his life and that of a staff in danger, as the outpost was the special target of the enemy forces, as location of his communication set was being monitored/targeted by the enemy. In those moments of national crisis and despite grave difficulty and danger to his life, Shri Singh remained steadfast in his determination to discharge his duties. This clearly shows the strength of character of the officer and his sense of discharging his duties and responsibility, which is of higher order. Despite grave danger to his life, he remained at the border for 58 days under constant shelling, as the lone representative of the government and kept informing about the events unfolding in Kargil sector

In this action Shri Chandra Sen Singh, ACIO-II displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 9th June, 1999.

A. RAI
Officer on Special Duty

---

The 15 th November 2016

No. 166-Pres/2016 – The following amendment is made in the Hindi version of this Secretariat Notification No. 41-Pres/2015, dated the 26th January, 2015 published in Part I Section 1 of the Gazette of India on the 25th July, 2015 relating to the award of President's Police Medal for Distinguished Service:-

At. S. No. 80

For — Shri Annalamada Sunil Achcha

Read — Shri Annalamada Sunil Achaya

A. RAI
Officer on Special Duty

---

No. 167-Pres/2016 – The following amendment is made in the Hindi version of this Secretariat Notification No. 42-Pres/2015, dated the 26th January, 2015 published in Part I Section 1 of the Gazette of India on the 25th July, 2015 relating to the award of Police Medal for Meritorious Service:-

At S. No. 624

For – Shri Desh De

Read - Shri Debesh Dey

A. RAI
Officer on Special Duty

MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE

(DEPARTMENT OF AGRICULTURE, CO-OPERATION & FARMERS WELFARE)

New Delhi, the 3rd October 2016

R E S O L U T I O N

Consequent upon Shri Mansukh L. Mandaviya, Member of Parliament ( Rajya Sabha) sworn as Union State Minister, in partial modification of resolution of even number dated 24th August, 2016 regarding constitution of the Joint Hindi Salahkar Samiti of the Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, Shri Ram Vichar Netam, Member of Parliament (Rajya Sabha) has been nominated as member in his place.

ORDER

A copy of this Resolution may be forwarded to all State Government and Union Territories Administrations, All Ministries and Department of the Government of India, President Sectt., Prime Minister's Office, Cabinet Sectt., Lok/Rajya Sabha Sectt., Niti Aayog, Parliamentary Committee on Official Language, Comptroller and Auditor General of India.

This Resolution may be published in the Gazette of India for information of the public.

RAJESH KUMAR SINGH,
Joint Secretary

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय, एन.आई.टी. फरीदाबाद में अपलोड एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा ई-प्रकाशित, 2016

UPLOADED BY DIRECTORATE OF PRINTING AT GOVERNMENT OF INDIA PRESS, N.I.T. FARIDABAD AND E-PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2016

www.dop.nic.in